राजस्थानी साहित्य अकादमी क्यूं नीं ?

लारला केई बरसां सूं राजस्थानी साहित्य अकादमी री मांग व्हेती रैयी है। अकादमी री मांग रौ ई कोई अेकठ सँजोर रूप हाल नीं उभरयौ है, नतीजौ सिन्धी अर उर्दू अकादमी री घोसणावां व्हियां पछै ई आ वात रैयगी के राजस्थानी सारू भी विचार व्है रैयौ है। केई वार विचार करणियौ, विचारां में इत्तौ ऊंडौ पूग जावै के सोरै सांस वारै नीं आवै। मूंडौ उंचाय'र निकळ तौ जावै, पण जावणौ कठै; इणरौ पतौ नीं रैवै।

इत्तौ लम्बै-चवड़ै फैलियोड़ै राजस्थान री, चार करोड़ नैड़ा लोगां रै प्रांत री मायड़-भासा राजस्थानी री कोई अकादमी कोनी, है इचरज री वात ! अकादमी री स्थापना सारू अपनायोड़ै इण रुख नै देखतां राजस्थानी री दूजी जरूरतां नै पूरी करण में कित्तौ वगत लागैला, इणरौ अंदाजौ लगायौ जाय सकै।

तीन विस्वविद्यालयां अर अनेक राजस्थानी संस्थावां नै—राजस्थानी रै नांव माथै वड़ा-वड़ा आयोजन करण वाळां नै ई राजस्थानी अकादमी री जरूरत नै पैल देवणी पड़ैला। पोथ्यां रै प्रकासण अर विक्री री व्यवस्था वैठावणी पड़ैला। मांनण नै मानी जा सकै के राजस्थानी भासा साहित्य संगम अेक विकल्प है इज, अौ ई रूप कालै अकादमी रै नांव माथै थरप्यौ जा सकै ! मन रै मानण नै कांई नीं मान्यौ जा सकै, पण मां री गरज मासी सूं नीं पळै। अवार इत्तौ इज।

— अरजुन

भूत व्हियोड़ा टावरां नै
न्हवावै धोवावै
घर-आळी ओढै
काढ'र व्याव आळी चूनड़ी
अर मेळा रा भोंपू बाजै जठीनै
नीसर जावै वै सगळा
जूथ रा जूथ
हाथां में लियां खाली थैलियां।

टावर मांगै
चमचम करती दूकानां कांनी
करता आंगळी
खावण-खेलण री चीजां
घर-वाळयां
रंग-विरंगी चीजां देखावै,
पण दुतकारा देवै वांनै
हरेक दुकानदार—चीजां रा भाव बतावतां।

वै पाछा भागै
टावरां नै विलमावता
घर कांनी
खूंजा रै खालीपणै माथै
वांनै किड़किड़ी आवै
माळीपन्ना सगळा
उतर जावै
सपना रा सगळा रंग
उड़ जावै
अर आंख्यां रै सांमी रैय जावै
फाटोड़ी गूदड़ियां—
घुआंधोर व्हियोड़ी
चूल्हा रै चारूं मेर,
पाछी

गैळीजती
सपनां में भरम्योड़ी,

राख रे रंग री—बुझती
डूबती आंख्यां
सूनी धुआंधोर व्हियोड़ी
बेबस उदास,
डब डब करती आंख्यां !

विडरूप, मिचमिची
कंजर आंख्यां,
नकली मुळक मुळकती
धोखेबाज, बेईमान आंख्यां
लीली चैर, चोर
चम-चम करती आंख्यां !

पण
इत्ती अटख रंग री
राती लाल
बळती, खूंखार
आंख्यां चिणगारचां चिटकाती
जिकी म्हारै देस री सड़कां माथै
जगा-जगा बिखरचोड़ी है आज
म्हैं कदै ई नीं देखी ।

• • •

कप-प्लेट

जुगल परिहार

•

[अंधारो। अेक उजास रो घेरो घूमतो-घूमतो मेज माथै पड़िया कम-प्लेट माथै केन्द्रित व्हे। उजास धीमै-धीमै मगसो पड़तो जावै। इण रै बाद मंच सैंचन्नण व्है जावै।

अेक ठीकसर कमरो। सांमी जीवणी कांनी अेक दरवाजो—घर सूं बारै जावण वास्तै। डावै हाथ कांनी रसोई रो रस्तो अर जीवणै हाथ कांनी बाथरूम रो। कमरो ठीक-ठाक सजियोड़ो। बिच्चै अेक मेज अर दो-तीन कुड़सियां।

सामलै दरवाजै सूं धणी कमरा में बड़ै। थाको-थूको। चिंता में डूबोड़ो। आवाज सुण'र रसोई सूं निकळ नै लुगाई आवै।]

लुगाई—आयग्या ?

धणी—(चुप)।

[धणी कुड़सी खिसका'र बैठ जावै। मेज माथै पड़िया कप-प्लेट माथै उण री नीजर जावै दीठ है जठै इज थिर व्है जावै।]

लुगाई—(एक मिनट चुप रैय नै) कंई व्हियो ?

धणी—(कीं सोचतो थको) कीं नीं।

लुगाई—कंई कैयो ?

लुगाई—थे कोई वात साफ क्यूं नीं कैवौ ?
धणी—कीं समझ में नीं आवै, कंई कैवूं ?
लुगाई—थाकौड़ा हौ ? चाय वणावूं ? ढ़ूळढ़ुळतौ अेक कप। तेज पत्ती।
धणी—औ ई अेक नसौ है।
लुगाई—क्यूं ?
धणी—और नीं तौ कांई ? कंई फायदौ व्है ?
लुगाई—क्यूं ? चाय सूं ई गया..........
धणी—पीवण री इज तौ संतोस है।
लुगाई—थे कैवणी चावौ जिकौ खोल'र क्यूं नीं कैवौ ?
धणी—छोड इण वातां नै।
लुगाई—क्यूं वोलो कनी—चाय, दूध, खांड.......... । वोलौ कनी !
धणी—(चुप)।
लुगाई—(अेकटक देखती थकी) क्यूं ? नीं पीवौला ?
धणी—(चुपचाप देखै)।
लुगाई—क्यूं के.......... । क्यूं के आदत है नीं। सोरैसास थोड़ेई छूटैला। क्यूं है नीं ?
धणी—(चुप)।
लुगाई—अेक वात पूछूं ?
धणी—कांई ?
लुगाई—थे सिगरेट पीवणी कीकर छोड़ दी ?
धणी—यूंई।
लुगाई—यूंई क्यूं ?
धणी—नुकसांण करै। फेफड़ा कमजोर व्है। कैंसर रौ खतरौ रैवै।
लुगाई—अै वातां आं दिनां ई दिमाग में आई। पैला मालूम नीं ही।
धणी—थारौ मतलब कई है आखिर ?
लुगाई—थे साच वात इज क्यूं नीं कैय दौ ?
धणी—(चेहरै माथै तणाव री स्थिति)।
लुगाई—म्हैं कीं समझूं नीं, है'क ? थे म्हनै भाटा री पूतळी क्यूं समझ राखी ही आखिर ? (ढब'र) म्हैं ई आखिर इनसान हूं। थे वोल'र नीं कैवौ तौ कांई व्हियौ। म्हैं अेक-अेक वात जांणूं हूं। समझूं हूं। लखांण करूं हूं। अेक-अेक वात.........

धणी—कंई व्हियौ ?

लुगाई—कप-प्लेट फोड़ दिया दीसै ।

[जमीं माथै पड़िया कप-प्लेट रै टुकड़ां कांनी इसारौ करै । पछै टुकड़ा भेळा कर'र मेज माथै धरै ।]

धणी—कठी गयौ ?

लुगाई—चारै न्हाट ग्यो ।

धणी—कीं वात नीं । दूजा कप-प्लेट व्हे ई नीं ?

लुगाई—दो जोड़ी रैया है ।

धणी—(चुपचाप उण री तरफ देखै) ।

[लुगाई पाछी रसोई में जावै अर दूजा कप-प्लेट में चाय लेय'र आवै ।]

धणी—बबलू पीय ली ?

लुगाई—पी ले'ई । पड़ी है ।

धणी—थूं पीवै कोनीं ।

लुगाई—पी ले'वूं । अवार इंछा कोनी नीं ।

[धणी कुड़सी माथै बैठ'र चुपचाप चाय पीवै । लुगाई दूजोड़ी कुड़सी निरका'र बैठ जावै । धणी चाय पीय'र कप-प्लेट मेज माथै रख देवै । लुगाई कप-प्लेट लेय'र रसोई कांनी जावै ।]

धणी—बबलू नै हेलौ पाड़ूं कंई ?

लुगाई—थोड़ी देर सूं आ जावैला अपणै आप ।

[लुगाई रसोई में जावै परी । धणी ऊठ'र दरवाजै तक जावै अर पाछो आय नै कुड़सी माथै बैठ जावै । लुगाई पाछी आ जावै ।]

लुगाई—(नजीक आय'र) वैम है ?

धणी—क्यूं ?

लुगाई—तो पछै ?

धणी—यूं ई ।

लुगाई—यूं ई कंई ?

धणी—चोखौ नीं लागै ।

लुगाई—क्यूं ?

धणी—यूं ई ।

धणी —उण दिन कितो मारची हो।

लुगाई—नुकसाण करै जणै कांई करूं !

धणी—वडा सूं नुकसाण नीं व्है ?

लुगाई—रीस में कीं ठा नीं पड़ै।

धणी—मार कैड़ी लागै ? कदेई मैसूसी ?

लुगाई—म्हैं वीं री मां हूं।

धणी—टाबर है। कित्ती दूखती व्हैला !

लुगाई—म्हैं आ थां सूं ज्यादा जांणूं।

धणी—कास ! मां अठै व्हेती।

लुगाई—म्हैं वां वै काढी ?

धणी—बबलू री चीत लाड राखती।

लुगाई—म्हैं वां नै रोकती ? मना करती ?

धणी—वीं नै नीं पसंद हो..........

लुगाई—म्हारी..........

धणी—लोगां री सुणणी। जिंदगी में कदेई सुणियौ नीं।

लुगाई—मां नीं सुणियो तो लारै बेटो ई क्यूं सुणै ? क्यूं ??

[धणी लुगाई री चेहरौ देखै ! लुगाई मूंडो फेर लै।]

धणी—आ बात नीं है।

लुगाई—और नीं तो कांई है ?

धणी—दूजां रै मन री कुण जांणै ?

लुगाई—(चुप)।

धणी—परिस्थितियां आदमी नै कांई सूं कांई बणाय दै, कुण जांणै ?

लुगाई—तो म्हैं कांई करूं ? थेई कैवो कनी, म्हैं कंई करूं ?

धणी—बबलू हाल आयो नीं ?

लुगाई—नीं जांणै कठै जाय नै छिपियो ?

धणी—(गैरी सांस लेय'र) छोटी-छोटी चीजां रै वास्तै ई तरसतो रैवै।

लुगाई—आखिर कंई करां ?

धणी—याद है लारलै साल मदन आयो हो। परवार समेत !

लुगाई—याद है।

धणी—बबलू नै चारांनी दी ही।

लुगाई—अर वो चारांनी री कुलफी खाई।

मंटो रौ कागद / अमृता प्रीतम

म्हारी छोरी केई दिनां सूं बीमार ही। म्हैं उणनै नेम सूं घरै छोड़'र नौकरी माथै जावती ही। जे नीं जावती तौ उण दिन रा पईसा म्हनै नीं मिळता। अर दवायां घणी मूंघी ही। छोरी फेर जिद की अर म्हैं उणनै पोटावण सारू थळी सूं मुड़णाळी इज ही के पोस्टमैन म्हनै दोय कागद झिलायगौ।

छोरा री जिद पूरी व्हैगी अर म्हैं दोय मिनट सारू ठैरगी। अेक कागद किणी हमदरद रौ हौ—"म्हनै घणौ ई अफसोस है अमृता के थारी किताब किणी परीक्षा सारू नीं लागी। योग्यता री आं दिनां कीं कदर कोनी, सिफारिस चाइजै। पण थारी सिफारिस नीं पुगावण रौ नियम म्हैं समझ नीं सक्यौ।" म्हैं छोरा नै खाली लिफाफा माथै सूं टिगट उतारण में लगाय दियौ अर खुद इण अन्याव माथै संतोख करती दूजौ लिफाफौ खोल्यौ। औ मंटो रौ कागद हौ—

"अमृता! म्हैं जिदगानी में फकत दोय वार रोयौ हूं। पैली वार खुद रै टावर री मिरतु माथै अर दूजी वार आज, जद के म्हारौ अेक दोस्त थारी कविता पढ़ रैयौ हौ................"

म्हनै लखायौ के म्हारी पुस्तक री हजारूं प्रतियां विकगी है। आज म्हारी नौकरी पक्की व्हैगी अर आज म्हारा छोरा रौ बुखार उतरगौ। दूजै दिन म्हैं मंटो नै कागद लिख्यौ अर हाल उणरौ जवाब नीं आयौ हौ के म्हनै कोई आय'र बतायौ—"मंटो मरगौ................।"

['मंटो : एक स्याह लकीर' सूं]

अेक वार जिगर मुरादाबादी अेक बुलावा माथै लाहोर पूगा। वांरै स्वागत सारू उठै केई नामी-गिरामी लिखारा भेळा व्हियोड़ा हा। अेक ओळखाण करावणियौ मंटो सूं वांनै मिळवाय'र बोल्यौ—"आप है जिगर मुरादाबादी। मुरादाबाद रा जिगर।"

पछै वौ जिगर सा'ब कांनी मुड़्यौ अर कीं बोलै इणसूं पैली'ज मंटो बोल्यौ—"बंदा नै सहादत हसन मंटो कैवै। लाहोर रौ गुरदौ।" अर इण समचै ई चारूंमेर हंसी बिखरगी।

इणी घर/इणी खाट
      साथै लै
      नींद/जाग
रिस्तां री डोर वंध्यौ
      दौड़ती ई रैयौ हूं म्हैं।

रिस्तां नै पोखण नै
गळियां के मारग के चौरावै
      मुड़तौ ई रैयौ हूं
समैसार/वगतमार मजबूरी वंध्योड़ौ
मन रै मतीरै नै फोड़तौ ई रैयौ हूं।

• • •

उतरास / आनन्द 'प्रिय'

पांच-दस
सैंस्तर वरसां विच्चै,
      जुग-जुगान्तर,
      व्है कळियां—
            फैलावती रैयी सौरम,
      जुगां री फेर—
      कळियां ऊपर,
            टूटगौ,
            टिड्डी दळ, अर,
            कळियां अमूझ'र
            डांखळै सूं
            उतरगी,
            धरती माथै;

सांय-सांय उवीजै,
उवाच,
पवन री—
—गंगा—
समन्दर में
उतरतां
उतरतां
खारी—जैर—व्हेगी।

• • •

म्हैं अर कविता / आत्माराम

हां हां, कालै इज अेक कविता लिखी ही
म्हैं, म्हारै वेलियां रै नांव
साथी मायनां रै नांव
अेक कविता—
म्हारै नांव।

कविता जिकी म्हैं कालै लिखी ही
नदी कोनी
अर नीं ई नदी रो पाणी है,
कविता
पाणी री उणियारी है,
उणियारां पड़ियोड़ी चितरामां है
कविता लिलाड़ माथै अेक
धूड़ री नक्सी है
हां, जाणै अेक—
धूड़ री नक्सी है

काम / ओंकार श्री

रैईजै कोनी
कंई
कैईजै कोनी
डील
सूं
डील
मिलै—
मिनख
लुगाई
आरंपार आपोआप
काम करै
तौ
काम सरै।
काम वेग
पवित्र
रस मूळ
जो भोगै
सो
निहाल !
म्हारा
माईतां
थांरै ई
पगोपग
लगोलग
म्हूं
जोग साधूं
भोगवान
म्हूं
भगवान
सूं
भगवती
कामाणु
नाचै
म्हारै रूं रूं में
रूप री रासलीला
रंगदार मेळ
रस-रसीजती धकापेल
म्हूं
प्रेमी आदमी
आदमण
प्रेमिका म्हारी
काम ! काम !! काम !!!

• • •

• अपरंच री रचनावां
आपनै कैड़ी लागी ?
आपरी प्रतिक्रियावां
री संपादक नै उडीक
रैवैला।

गै इणी अमनियत नै आधार बणावतां राजस्थानी में दोय नुंवा उपन्यास निगैज्या — मेवै रा रूंख (अन्नाराम सुदामा) अर खुलती गांठां (पारस अरोड़ा)।

गांवांई जीवण में महाजन री भूमिका उण मेवै रै रूंख समान है जिणसूं सदा मीठै फळ री उम्मीद बंध्योड़ी रैवै अर इणी उम्मीद में लोग आपरै खाद-पाणी सूं उणरी जड़ां पोखता रैवै। रूंख इण सार-संभाळ अर खाद-पाणी सूं दिनोदिन वधतो-फळतो रैवै पण फळ री उम्मीद कदेई पूरी नीं व्है, कीं लोग इण रूंख सूं आंती ई आवै, भरम टूटै, जड़ां पोखता थाक ई जावै, पण इणसूं उम्मीद राखणियां री गिणती वधती इज जावै। सुदामाजी रूंख रै इणी चावै प्रतीक रै जरियै गांवांई जीवण री मौजूदा हालत नै अेक सुथरै कथाऊ तांणै-वांणै में सांमी राखी है।

उपन्यास री कथा नायक सिनाथ अेक मध्यम-वरगी गरीब किसान-परिवार रो मुखियो अर गांव में आपरै नेक सुभाव रै कारण अेक मानीजतो आदमी है। साथै ई अेक सावचेत करसै रै रूप में वो आपरै गांव री समस्यावां अर लोगां री नीजू अवखायां नै मेटण में ई पूरी रुची लेवै। वो लोगां री मजबूरी अर गांव रा महाजनां री मायली नीयत सूं ई गैरी पिछाण राखै आपरी वणती कोसिस गरीब लोगां नै महाजनां रै चंगुळ सूं अलग रैवण री ई सल्ला देवै। गांव रा महाजन धनजी अर हजारीमल ई सिनाथ रै सभाव अर व्यवहार सूं पूरी तरै वाकफ अर हुंसियार। हमेंस वै इणी फिराक में रैवै के किणी तरै गांव में सिनाथ रो असर कीं कम व्है के गांव रा कीं लोगां सूं उणरी दुस्मणी बंध जावै, जिणसूं उणनै दुस्मणी अर कोट-कचेड़ियां में उळझायां पछै गांव में वांरो कारोबार अर दवदवो आछी तरै सूं कायम व्है सकै। महाजनां री इण ओछी मनस्या अर साजिस में गांव रो पटवारी अर कीं ओछी अकल रा दुरव्यसनी लोग ई सामिल व्है जावै, जिकां में सिनाथ रो लंगोटियो ईसरसिंह ई एक व्है। ईसरसिंह आं लोगां रै कैयां मुजब खेत में सिनाथ माथै लाठी सूं हमलो करै, आपरै बचाव अर जवाबी कारवाई में सिनाथ रो दातरो ईसरसिंह नै ई घायल कर देवै। इण भांत दोनूं घायल व्हेय'र अस्पताळ पूगै, पण सिनाथ री हुंसियारी अर सूझ-बूझ सूं इण झगड़ै रो फायदो दूजां नीं पूगै अर अस्पताल में सिनाथ ईसरसिंह नै माफ कर गळै लगाय लै। महाजनां अर पटवारी रो ओ वार खाली जावै। दूजी कांनी गांव में वांरी अमनियत चोड़ै व्है जावै, पण गांव रा आरथिक हालात अर व्यवस्था रो रूप वो ई वण्यो रैवण रै कारण वांरा कारोबार में कीं खास अंतोळो नीं आवै अर इणी हद पूग'र ओ उपन्यास पूरो व्है जावै। स्यात् इण वास्तै के

आय ऊमग री तजुरवो है। रचना री विसै-वस्तु, भाव-भोम, संवेदना अर भास
हर तरै सूं पारस पाठक नै अेक नुवैं अनुभव रै सांमी लावै अर उणनै विसै अर भा
दोनां रै माथै नुवैं सिरै सूं सोचण नै मजबूर करै। म्हारो मकसद अठै दोनूं उ
न्यासां री किणी अरथ तुलना करण सूं नीं है अर नीं उणरी खास जरूरत ई है
मकसद फगत औ ई के अेक इज वगत अर अेक इज सामाजिक परिवेस नै आध
वणाय'र लिखीज्योड़ा अै दो उपन्यास आज रै जीवण यथार्थ नै किण रूप पाठ
रै सांमी राखै अर पाठक आं सूं कांई नतीजा हासिल कर सकै।

'खुलती गांठां' युवा पात्रां री अेक चरित-प्रधान उपन्यास है। आपसी संबं
री जिण कंवळी गांठ सूं उपन्यास सरू व्है, उणरा तांता घटणा-परसंगां री पळे
में उळझता जावै। उपन्यास रो चरित-नायक गांव रूपाळू रै सेठ लाभजी रो बे
सूरज गांव रै पंडित ओमा म्हाराज री वाळ-विधवा वेटी तारा सूं सहज रूप
प्रेम रो रिस्तो कायम कर लेवै, पण समाजू मानतावां अर माईतां रै निरणै
वदळण री हिम्मत नीं व्हैणै रै कारण उणनै सैर-गांव अर संकळप-विकळप
दोगाचींती में अरसै तांई अवखणी पड़ै। इणी प्रेम-कथा रै अेड़ै-छेड़ै उपन्यास
दूजा पात्रां रै जीवण-व्यवहार री जाणकारी पाठकां नै व्है। चालतै वगत री
दूजी धाराऊ समस्यावां अर समाजू हालतां माथै ई उजास पड़ै। ओमा म्हारा
सोम अर निरमळा जैड़ा जीवंत पात्रां सूं पाठकां री गैरी पिछांण व्है अर अ
जरियै आज रै जीवण यथार्थ नै समझण में मदद मिळै।

जीवण रा केई पख, पहलू अर समाजू-व्यवहार रा न्यारा-न्यारा दायरा व्हि
करै। कीं लोग मानवी-समाज नै ऊमर रै आधार माथै वाळ, मोटयार अर वूढां
स्रेणियां में वांट देवै अर पछै ई स्रेणियां अेक वरग रो रूप धारण कर लेवै
युवा-मानसिकता अर युवा-वरग इणी समझ सूं उपज्योड़ी धारणावां है
वुनियादी मानवी भाव-व्रतियां री निजर सूं देखां तौ अेक हद तांई अै वरगीकर
वाजव ई लाग सकै, जद के थोड़ी गैराई सूं विचार कियां आ वात सांप्र
लखावैला के युवा-वरग में ई सगळा युवक अेक इज मानसिकता अर अेक
समाजू हितां रा हिमायती नीं व्है, वल्कि अेक दूजै सूं विरोधी हितां में ऊ
दीखैला। औ फरक 'खुलती गांठां' रा युवा चरित्रां में ई देख्यो जाय सकै
जद के लेखक उपन्यास में युवा चरित्रां रै मेळ रो दायरो इत्तो मोटो राख्यो
के उणमें सूरज, सोम, रतन, तेजसिंघ, निरमळा, स्यामा अर तारा सगळा न्यारै
न्यारी सामाजिक-आरथिक हालतां सूं आयोड़ा युवक-युवतियां अेक ई मानसिक

आंट पारस री निजू खासियत है। हरेक चरित री भासा-व्यवहार उणरी न्यारी इमेज बणावै—उणरै सुभाव मुजब ई भासा रौ ओपतौ प्रयोग, चरित नै न्यारी व्यक्तित्व देवै। खासकर गांवांई परिवेस रौ चितरण करती बगत भासा रौ सहज प्रवाह निस्चै ई इण उपन्यास री अेक बोलती खासियत कैय सकां।

आं दोनूं उपन्यासां री अठै अेकठ चरचा महज अेक संजोग ही है, यूं दोनूं उपन्यासां री भाव-भोम, परिपेख अर रचनाकाळ तकरीबन अेक व्हेतां थकां ई दोनां री विसै-वस्तु, केन्द्रीय संवेदना अर रचना-सरूप में खासौ फरक है। भावधारा री दीठ सूं पारस अरोड़ा अर अन्नाराम सुदामा दोनूं आधुनिक यथार्थवादी भावधारा रा रचनाकार है अर दोनूं मोटै तौर माथै उत्पीड़ित वरग रा हिमायती, बल्कि इण अरथ में पारस रौ जुड़ाव अलबत सीधौ अर मुखर है।

राजस्थानी कथा-साहित्य में आधुनिक जीवण-व्यवहार माथै यथार्थवादी ढंग सूं सोचण-विचारण री सूझ देवण में आं दोनूं उपन्यासां री भूमिका निस्चै ई निरणाऊ साबित व्है सकै, जिणरी आज आपांनै गाढी जरूरत है। ■

पोथ्यां—मेवै रा रूंख/अन्नाराम सुदामा/धरती प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर/पेज–150/मोल : पन्द्रै रिपिया।

—खुलती गांठां/पारस अरोड़ा/जुगत प्रकासण, कबूतरां रौ चौक, जोधपुर/पेज–84/मोल : आठ रिपिया।

आपसूं उम्मीद करां—

- आप 'अपरंच' रा सालाना ग्राहक बणोला अर बणावोला।
- 'अपरंच' सारू आपरी अप्रकासित रचनावां भेजोला। लम्बी रचना सारू संपादक नै आगूंच पूछोला।
- 'अपरंच' नै विग्यापन देय'र नै दिरवाय'र लूंठी मदद पुगावोला।
- 'अपरंच' में समीक्षा सारू आपरी पोथ्यां भेजोला।
- 'अपरंच' रै हरेक अंक माथै आपरी खुलासा राय देवोला।

—संपादक

लावौ। उपदेस देणै री वजाय विवादू हालात प्रगट करौ। अंतरविरोधां नै उकसावौ। ....हरेक वौ काम करौ जिणसूं थारै वरग (मजूर) नै सगती मिळै। श्रौ काम सगळी मानवता रै हित सूं जुड़ियोड़ौ है। ....मत भूलौ के थै अेकला नीं लड़ रैया हौ, थांरा पाठक ई लड़ैला. जे थै वां में पूरौ उत्साह भर दियौ। थै अेकला इज समाधान नीं देखोला, वांनै ई हल निजर आवण लागैला।"

ब्रेख्त रौ श्रौ इज रंग वांरी कवितावां में ई देख्यौ जाय सकै। अठै म्हां अेकठ रूप सूं वांरी कीं कवितावां दे रैया हां। 'अपरंच' रै हरेक अंक में विस्व रै अेक चावै कवि री कीं अेकठ कवितावां देणै री निरणै लियौ हां, जिणरी सरूवात ब्रेख्त सूं करां हां। —संपादक]

आगली पीढी सारू

• १ •

साचांणी म्हैं अंधारै में जीवूं हूं !
वफादारी गैलपणौ है अर सपाट माथै रौ मतलब
वेखवरी। हंसणिया लोगां तांई
हाल भयानक खवरां नीं पूगी हैं
कैड़ौ जमानौ है के—
रूंखड़ां री वावत वातचीत ई ज्यूं जुलम है
कारण घणाकरा जुलमां रै वारै में चुप हां म्हां।

वौ जिकौ सड़कां माथै चुपचाप जा रैयौ है
खतरा में पड़्या उणरा साथी
कांई उण तांई कत्तई नीं पूग सकै ?
औ सत्य है के म्हैं आपरी रोजी कमावूं हूं
पण विस्वास करौ औ फगत अेक संजोग है
अैड़ौ कीं नीं के म्हैं म्हारी पेट भराई री
सही व्हेणौ सिद्ध कर सकूं;
म्हनै इत्तफाक सूं छोड दियौ गयौ है
(किस्मत खराव व्हेला तौ म्हारौ खातमौ व्हैला इज)

सड़कां दलदल कांनी जाती म्हारै जुग री
भासा नागी करियौ म्हनै हत्यारां रै बीच
म्हैं मामूली कीं कर सकतौ हौ
इणसूं सासक सुरक्छित बैठैला म्हारै विना
म्हैं उम्मीद की—म्हारौ जुग ग्रैड़ौ इज गुजरयौ
जिकौ म्हनै दुनियां सूं मिळियौ !

सगत्यां ही ओछी अर मंजिल ही ग्राघी
दीखती ही साव सफीट
पण म्हारौ पूगणौ मुस्किल इज हौ
म्हारौ जुग ग्रैड़ौ इज गुजरयौ
जिकौ म्हनै दुनियां सूं मिळियौ !

• ३ •

इण वाढ़ सूं ग्रेकाग्रेक उपज्योड़ा थै
के जिकां में डूब ग्यैया हां म्हैं
जद म्हांणी कमजोरयां अर अंधारै जुग रै
वारै में सोचौ—जिणसूं के थै बच निकळौ
जूतां सूं बत्ता देस बदळता
वरगां री जिद-वैर सूं गुजरयोड़ा म्हां
दुखी, जठै अन्याव रै खिलाफ कीं रुकावट नीं ही
साथै ई म्हांनै जाण लेवणी चाइजै कमीणा सारू
ग्रैड़ी घिरणा के थोबड़ा विगड़ जावै
अन्याव रै खिलाफ गुस्सौ के गळा में घुट जावै आवाज
ओह म्हां, जिका भाईचारै री जमीं त्यार करणी
चावता हा । खुद इज अजाण हा भाईचारै सूं
पण थै, जद उण हालत तांई पूगौ
के आदमी, आदमी री मददगार व्है
म्हांणै वारै में सोचौ, तौ रियायत सूं सोचजौ !!

• • •

मुहावरा

म्हनै भरोसौ कोनीं थांरी आंख्यां माथै
कोनीं थांरा कांनां माथै ई भरोसौ
थै जिणनै अंधारौ देखौ हौ
वा स्यात् रोसणी है।

•

जद म्हैं भटकतौ हौ आवारा
म्हारै कनै कीं गिणावणजोग नीं हौ
ठा नीं कठै म्हारौ टोप पड़ियौ हौ
पतौ नीं कठै लारला सात महीनां। [अनु. पारस]

(मोहन थपलियाल रै मूळ जर्मन सूं हिन्दी में कियोड़ा अर 'पहल' तथा 'जनयुग' में छप्योड़ा अनुवाद सूं।)

लेखक अर राजनीतिग्य/जार्ज लुकाच

सवाल—साम्यवादी देसां रा लेखकां अर राजनीतिग्यां रा संवंधां रै वारै में आपरा कांई विचार है ?

लुकाच—राजनीतिग्य नै साहित्य रो अेक पाठक वणणौ चाहीजै। अेक अच्छौ राजनीतिग्य वणण वास्तै साहित्य री समीक्षक वणणौ जरूरी कोनी। किणी रचना अथवा कलाकृति रै वारै में अेक राजनेता री खुद री पसंद-नापसंद व्है सकै, पण उणनै साहित्य री कसौटी वणाय देवणी अर जन-समाज माथै लाद देवणी, ठीक वात कोनीं। अेक वार युवकां री अेक गोस्ठी में लेनिन आपरी निजू पसंद वतावतां कैयौ के मायकोवस्की सूं पुस्किन घणौ चोखौ लिखै। पण वै आपरी इण राय नै कदेई राजनीति में नीं आवण दी। उणरै अलावा साम्यवाद-विरोधी लेखकां अर दारसणिकां नै पढणौ ई जरूरी है। जे आपां कांट री दरसण-पद्धति नै नीं पढांला, तौ उणरौ खंडन कीकर करांला ? म्हारै वास्तै अरस्तू, हेगल अर मार्क्स, अै तीनूं दारसणिक सवसूं वत्ता महताऊ है।

[अेक भारतीय पत्रकार नै दियोड़ै इंटरव्यू सूं]

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

डॉ. मोतीलाल मेनारिया

डॉ. अगस्तिनो नेतो

री महताऊ मानवी अर साहित्यिक
सेवावां नै मांन देवतां—

—अपरंच परिवार

आपरा कागद

'अपरंच' री पैली-पड़त मिली, घणो हरख हुयो। वधाई। राजस्थानी भासा नै एकरूपता देणै री दीठ सूं वै ही सबद अर किरियावा उपयोग में ल्याणी चाहीजै जका संसकिरत रै नैड़ा है। नुंवै साहित रै नांव पर जनवादी साहित कै नारै लारै खोखली रचनावां नहीं छपै ईं री ध्यान 'अपरंच' राखसी, इसी आसा करूं हूं। वणती भासा रै लिखारै वास्तै आ जरूरी है 'क वो पाठक नै आपरी रचना लिखती वगत मन में राखै। —**कन्हैयालाल सेठिया, कळकत्ता** • 'अपरंच' सूं राजस्थानी भासा रै नुंवै स्रजण री जांणकारी, वीं पर चरचा अर चिन्तण री नुंवी सरुआत व्ही है। राजस्थानी भासा सारू आ गरब जोग वात है कै इण भासा में घणकरी पत्रिकावां साहित सूं इज सपकण राखै। हिन्दी भासा में पत्रिकावां तो घणी पण खालिस साहित रै पांण जीवणवाळी पत्रिकावां री टोटी है। अपरंच रै पांण ई वात आगै वधैला, औ विस्वास है। —**सत्येन जोसी, जोधपुर** • अपरंच आपरी 'अपरंच' माथै अंजस, घणो अंजस। राजस्थानी मांयला इण सरणाटा नै तोड़ण री कोसीस अर अेक हद तांई तोड़ण सारू म्हारी घणी-घणी वधाई। 'अपरंच' नुंवी चेतणा री सवळी ओळखांण है अर वणी रैवैला, इणरी भरोसो व्हैग्यो। पारसजी रा ब्रेख्त रा अनुवाद अर अरजुनजी रो अकादमी वावत संपादकी खूब दाय आया। —**चंद्रप्रकास देवल, अजमेर** • 'अपरंच' पढ़ी। दाय आई। राजस्थानी में तो लोक संस्कृति, हरावळ, दीठ अर जागती जोत (जोधाजी रै संपादकेड़ा अंक) पछै अपरंच ही ढंग-ढाळै री लागै।....रचनावां री संकलन भोत आछो है। वी. आर. री कवितावां काळजै लग पूगती, दरद नै जगाय जीवण रो हौंसलो वधावै। जुगल री कप-प्लेट ई नुंई संभावणा जगावै। काव्य-गोस्ठी में आतमाराम अर ओंकार श्री गुदड़ी रा लाल नीसरया।....दोन्यां उपन्यासां री समीक्षा ई नंद चोखी करी। —**भंवरसिंघ सामौर, चूरू** • पत्रिका री ले-आउट आप भोत ई पुख्ता वणायी है। रिसोरसेज री इत्ती कमी होतां ई इसी साज-सज्जा सागै पत्रिका को आवणी साचांई मोदावण आळी वात है। जग-वांणी स्तंभ भोत टीक है। —**विनोद कोठारी, सादूळपुर**

कांई कर सकौ ? तौ ई आं सगळी वातां सूं निवड़'र अंक आपरै हाथ में।

पत्रिका री रूप-रेखा बणावतां तै कियौ के अेकल पाठ में किणी अेड़ै नुंवै कवी री कवितावां व्है, जिणरी कोई संकलन छप्योड़ौ नीं व्है—इणी दीठ वी. आर. रै पछै स्यामसुंदर भारती। काव्य-गोस्ठी अेक खुली मंच है, गोस्ठी में आगला पाछला भेळा वैठै। गोस्ठी रै अनुरूप इज नुंवा कवी क्रम में पैली है। जग-वांणी में किणी जग-चावै प्रतिवद्ध कवी री कवितावां छापण रै निरणै मुजब व्रेख्त रै पछै इण अंक में नाजिम हिकमत री कवितावां दे रैया हां। इणी दिनां अफ्रीका रा जुंझारू कवि अर अंगोला रा राष्ट्रपति अगस्तिनो नेतो री इंतकाळ व्हेगौ। वांरी अेक कविता 'रचौ' घणै मांन दे रैयां हां, जिकी 'युग परिवोध' दिल्ली सूं साभार ली है। लेख, कहाणी, लघु अेकांकी अर रिपोट रै रूप में गद्य-पद्य ई संतुलित रूप सूं दिरीज्यौ है। औ निरणै आपनै करणी है के अंक कैड़ौ रैयौ ?

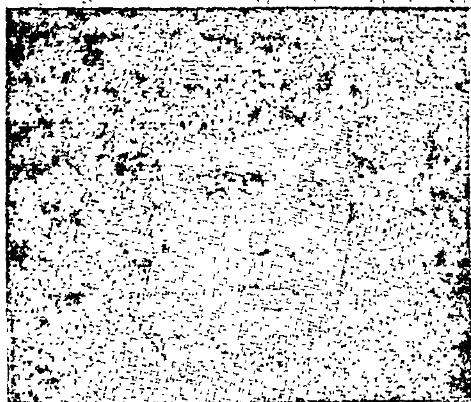
●

राजस्थानी अर सरकारू उदासी

भासा अर साहित रै मामलै में सरकारू पख सदाई उदास रैयौ। अकादमियां अर विभागां री घोसणावां कर वौ आपरी दल-गत राजनीति में लोप व्हेतौ रैयौ। आजादी रा आंदोलन में भाग लेवणिया केई नेतावां राजस्थानी नै जन-संपरक अर जन-चेतना सारू वापरी, पण आजादी पछै वै इण कांनी इत्ती संजीदगी सूं ध्यांन नीं दियौ। हां, चुणावां में जनता रै सांमी जावतां, वै वरोवर जन-भासा राजस्थानी नै संपरक सारू सिकारता रैया। राज-नेता राजस्थानी नै आपरी खुद री भासा मान'र उण रै विकास सारू योजनावां नीं थरपी। जे राजस्थानी रा हिमायती के लिखारा राजस्थानी भासा साहित री कोई सवाल लैय'र कदैई आंरै कनै पूगा तौ आंरा आस्वासनां अर मीठा वोलां में इत्ता गैरा डूवा के पाछौ खुड़कौ ई नीं सुणीजै।

सरकारू विभाग अथवा अकादमी रै रूप में जिका काम व्हिया, वै अेक चलताऊ नजरियै रै मारफत व्हिया। राजस्थानी री छोटी सूं

अेकल पाठ रा कवी



गठीलै बदन, पक्कै रंग अर हंसमुख निजर आवगियै कवी स्यामसुंदर भारती री नाव नुंवी व्हेता सांतर ई वांरी कवितावां नै देखतां अेक भरोसैमंद नांव कैयी जा सकै। लारलै कीं समै तांई राजस्थानी, हिन्दी अर उर्दू री न्यारी-न्यारी विधावां में सिरजण करतां भारती इण वात नै गैराई सूं मैसूस करी के किणी रचनाकार री सारथक लेखण फगत उणरी मायड़भासा में इज व्है सकै। इणी वात नै ध्यांन में राख'र वै आं दिनां राजस्थानी में जम'र लिखण में लागोड़ा है। वांरी अेक पोथी 'दर्द भरी गज़लें' रै नांव सूं छप चुकी है।

गुणतीस वरस रा स्यामजी स्नातक तांई री भणाई करचां पछै अध्यापक रै रूप में नौकरी कर रैया है। पहलवानी रा सौकीन भारती री कवितावां ई विचार-दीठ पूरी स्वस्थ अर मानवी संवेदना सूं जुड़योड़ी लखावै। इण वावत पाठकां री राय री उडीक रैवैला।

गैली पाडा लावतो हो—
अवै गळो कटावै है।

नै कुण जाणै
किण वगत
किण नै
किण माथै भरोसो आय जावै !
(देखौ तो सरी,
मौत ई कैड़ा-कैड़ा रूप धरै)

तो—
इणी सारू, के—
भळै कोई भरोसै में नीं मारचौ जावै
थुड़ूं हूं
खपूं हूं
भागूं हूं
अर इणी खातर
रातां-रातां जागूं हूं।

•

ाजड़ी

पगां री व्यांवां इज नीं
अेक तिरसी अर
साव सूकोड़ी नाडी ज्यूं
सगळी डील फाटोड़ो;

लोही रा आंसुवां री गळाई

उण कंवारी गरीबण
दोयां-जीवायती री
पलकां माथै ठैरयोड़ा हा;

म्हैं थनै
थारै मोवणै रूप नै
कदै ई
नैण भर निरख नीं सक्यौ

क्यूं के—
म्हारा नैण तौ
जेठ री लाय में
जगजगता खीरां रै उनमांन
वळती डामर री सड़क माथै
साव उरभाणै पगां दौड़ती
हांफती—
भूख नै देखण में लागोड़ा हा;

क्यूं के—
म्हारा नैण तौ वां
ढस्योड़ा ढावां ज्यूं
धंस्योड़ी आंख्यां
सूकोड़ी नाडी रै उनमांन
ऊंडौ पेट
सड़क री पटड़ी माथै आवतै-जावतै रै
पगां हाथ लगाय-लगाय
पेट माथै हाथ मार-मार नै
मांगतै उण
हाडकां रै माळै नै देखण में लागोड़ा हा;

म्हैं कदै ई—
थारा मीठा बोल नीं सुण सक्यौ

क्यूं के—
म्हारा हाथ तो
वगत रै विकराळ
दांत रै पगां हेठै दव्योड़ा हा;

म्हैं थनै कदै ई
म्हारै होठां सूं
प्रीत रा दोय बोल नीं कैय सक्यौ

क्यूं के—
म्हारै होठां माथै तो
आडै आंसुवां रोवती
साव उघाड़ी
लाज सूं अठी-उठी होवती
भूखी नै रूखी कहाणी रा
कंकाल वैठ्या हा;

क्यूं के—
म्हारै होठां माथै तो
विडरूप
समै री जैर पियोड़ी कविता रा
झाग आयोड़ा हा;

अर
अे सुभली
म्हैं थनै
आज तांई कीं नीं देय सक्यौ;

क्यूं के—
(साची वात तो आ है)
थनै देवण जोग म्हारै कनै
हो ई कांई ! (अर है ई कांई ?)

• • •

आधुनिक राजस्थानी कविता : दौर अर दायरौ

नंद भारद्वाज

राजस्थानी में नुंवी कविता रौ इतिहास घणौ लांबौ कोनी, जे नुंवै संवेदूपण अर आधुनिक भाव-बोध री दीठ सूं परखां तौ आ म्याद सायत् औरूं छोटी व्हेय'र फगत लारला बीस-पच्चीस वरसां तांई रैय जावैली। पण इण सूं राजस्थानी कविता रै मोल-महत माथै कोई खास असर नीं पड़ै। हां, आ जरूर है के इण कविता री तुलना दुनियां री वां भासावां री काव्य-सिरजणा सूं करणी जरूर गैर-वाजिब व्है जावैला जिणां रै बारै में आधुनिक काव्य-सिरजणा रौ डोढ़-दो सौ वरसां रौ इतिहास बोलै।

राजस्थान इण देस रौ अेक अैड़ौ प्रांत है जठै सामंती समाज-व्यवस्था री जड़ां घणी ऊंडी पूग्योड़ी रैयी है। आज ई जठै रौ गांवाई जीवण सामंती संस्कारां, मरजादावां अर कांण-कायदां सूं पूरी तरै जकड़ीज्योड़ौ है, हालांकि वींरौ आरथिक ढांचौ आजादी पछै कीं-कीं बदळण लाग्यौ है, पण हाल औ बदळाव पूरै प्रांत में, खास कर आथूण-उतराद रेगिस्तानी भू-भाग रै जीवण में घणौ खुलै रूप में उजागर नीं व्है सक्यौ, उठै ओजूं सामंत-जुग री अरथ-व्यवस्था रौ ऊंडौ असर है। जठै ओजूं अेक सीयाळू साख अर पसु-पाळण जीवण-निरवाह रा खास आधार है। अैड़ी जीवण-हालतां में लोगां'री सिक्सा रै विकास अर सांस्क्रतिक तरक्की री जैड़ी गत वणै, अभिव्यक्ति रा न्यारा-न्यारा कळा-माध्यमां री कहाणी वां सूं न्यारी

साहित्य अर रचनाधर्मिता नै जोखण री अवार तांई दो खास पद्धतियां साहित्य रा आलोचकां रै विच्चै चालती रैयी है—पैली है, वस्तु-जगत अर देसकाळ-सापेख जीवण-हालतां रै आधार माथै साहित्य रौ विस्लेसण; अर दूजी, उपलब्ध साहित्य-सिरजण रै आधारमाथै वस्तु-जगत अर जीवण-हालतां री खोज अर विस्लेसण। आं दोनूं ई पद्धतियां में जित्ती दूर तांई मानवी-विवेक अर व्यापक मानवी हितां नै ध्यान में राखतां साहित्य-चिंतण व्हियौ है, उठै तांई नतीजा तक-रीवन अेक जैड़ा ई निकळया है, पण जठै कठैई बारला दबाव हावी व्हिया है उठै विस्लेसण अर नतीजा दोनूं ई खोटा व्हेग्या। यूं ई विस्लेसण री इण दूजी पद्धति री कीं आपरी सींवां रैयी है, क्यूं कै उठै उपलब्ध साहित्य-सिरजण ई विस्लेसण रौ खास आधार रैयौ है, जद कै इतिहास रै दौर में केई दफै अैड़ा मौका अर हालतां ई आवती रैयी है जिकां रै बारै में साहित्य अेकदम मून साध लीवी, कितौ ई अदीठ अर अकथ छूटतौ रैयौ, पण जिणरी जांणकारी कीं छोटा-मोटा संकेतां सूं मिळती रैयी, अैड़ै में विस्लेसण री पैली पद्धति ज्यादा भरोसैमंद और सही सावित व्हिया करै। समाजवादी आलोचणा इणी पद्धति नै आधार बणाय'र चालै।

राजस्थानी साहित्य-रचना रै छेत्र में हाल इण दीठ सूं घणी विचार-चरचा नीं व्ही। आलोचणा या समीक्सा रै नांव माथै हाल अठै मौजूदा साहित्य-सिरजण नै ई आधार बणाय'र विचार-चिंतण री पद्धति अपणाई गई है। नतीजन इण प्रांत री बुनियादी जीवण-हालतां अर अठै रै जीवण में चालता कला-माध्यमां रै सरूप री विस्लेसण बौत कम ई व्है सक्यौ। आ ई वजै है के राजस्थानी कविता अर साहित्य माथै विचार करण वाळा लोग अमूमन हिन्दी अर समकालीन साहित्य-बोध रै आधार माथै बण्योड़ा प्रतिमानां सूं राजस्थानी कविता अर साहित्य-रचना नै आंकण लागै अर केई तरै री बारली अपेक्सावां में ऊळझ'र राजस्थानी बाबत अफसोस दर-सावण लागै। इण वास्तै आधुनिक काव्य-रचना माथै विचार करतां आपांनै इण बात माथै खास ध्यान देवण री जरूरत है के रचना नै उणरै पूरै परि-वेस अर जीवण-यथार्थ सूं जोड़तां थकां उणरी मांयली बुणगट रौ विस्लेसण कियौ जावै, तद ई आपां उण रचना रौ सही अर सारथक मूल्यांकन कर सकांला।

इण बात माथै बहस करणी गैर-जरूरी है कै राजस्थानी में आधुनिक काव्य-रचना री सरूआत कद सूं मानी जावै। कला-संस्कृति अर जीवण रा मानसिक तळ माथै व्हेण वाळा बदळाव यूं ई इत्ता अपरतख अर सूछम धरातळां माथै घटित व्है के वांनै सोरै-सांस जांण लेवणी तावै नीं आवै। आधुनिक काव्य-सिरजणा रै खास पख —आधुनिक भाव-बोध अर यथार्थवादी निजरियै सूं देखां तौ ऊमरदान रै सिरजण में

इण दौर री कवितावां में अेक नुंवीपण व्हेतां थकां ई काव्यानुभूति री बुणगट माथै लारलै डिंगळ-काव्य-सिल्प रौ गैरौ असर हौ। जनकवि उस्ताद री आजादी सूं पैली री कवितावां इणरी ओपती मिसाल है—

आ जमीं सिरां रै मोल साथी, इणरौ भारी तोल
बंदा मैनत री जै बोल।
धर-मजलां परदेसी आया, किवी चाकरी चोखी
सूतोड़ां री गरदन काटी, सरम पगांत्ये नांखी
औ रजवाड़ां रौ डौळ साथी, कोरी छोरा रोळ,
बंदा मैनत री जै बोल।

अठै 'जमीं सिरां रै मोल' मुहावरौ उणी डिंगळ-काव्य-परम्परा री याद दिरावै। इणी भांत 'माथा देणा पड़सी मुलक नै मोटयारां', 'साथियां जागण रौ दिन आयौ', 'मरदां आगै हालो', 'औसर वीत्यो जाय', 'परण्या डरे मती' इत्याद कवितावां में उस्ताद रौ वौ उद्‌बोधन वाळौ सुर मुखरित व्हियौ। इण राजनैतिक चेतना रै साथै ई उस्ताद सामाजिक जन-जागरण री अनेक कवितावां लिखी, जिकां में वां सामाजिक गैर-बराबरी, रूढ़ियां अर पाखंड माथै खूब खुली चोट करी—

अरे बुभागड़
थारा जोतख-जंतर अणुबम
कोरी फाड़-उधेड़ बेंतणी, कम सीणौ है
जग लखग्यौ पिंडताई री परघै काची, पींदै तीणौ है।

यूं राजनैतिक चेतना सूं उपज्योड़ी उस्ताद री कविता रा केई रंग है। हिन्दुस्तान में आजादी कायम करण रै साथै उस्ताद मुलक रा आगीवाणां सूं जिकी उम्मीदां बांध राखी ही अर आजाद भारत रा जैड़ा सपना वां आपरी मनगत अर चेतना में संजोया, वां सपनां रै उछाव में उस्ताद जठै अलेखूं विकास गीत अर निरत-रूपक लिख्या, उठै ई आं सपनां सूं उल्टी मुलक री बिगड़ती हालत देख'र वै वांई आगीवाणां सूं जिण ढाळै नाउम्मीद व्हिया अर आजादी रा दस-बारै बरसां पछै वांरी कवितावां में जिको फटकार अर पिछतावै रौ सुर उभरयौ, उण उस्ताद रै कवि-व्यक्तित्व अर राजस्थानी री नुंवी कविता नै ऊंचाई री अेक नुंवी मंजिल दीवी।

आजादी रै अेड़ै-छेड़ै उभरता दूजी कवियां में युवा कवी मनुज देपावत रौ नांव खास आदर सूं लिरीजै। हालांके देपावत री बौत कम राजस्थानी कवितावां

चारूं कांनी नवी चेतना, नवा कदम है आस रा
मंडता जावै धरती माथै, पग मंडणा इतिहास रा !
सूरज उगतो करै सिलांमी, तारा हंसै अकास रा !

रेवतदान चारण री भांत कवी गजानन वरमा ई उण दौर में किसानां री चेतना अर वांरै रोजीना रै जीवण-व्यवहार रा कीं टाळवां गीत लिख्या, जिकां री राजस्थानी काव्य-जातरा में अेक अैतिहासिक महत्व है, यूं आ दूजी बात है के वै आपरी इण काव्य-संवेदणा री निभाव आगै री कविता-जातरा में नीं कर सक्या।

इणी राजनीतिक अर सामाजिक जन-जागरण रै माहौल में समूचै देस रै सांस्क्रतिक धरातळ माथै अेक लूंठै जन-माध्यम रै रूप में मंच री संभावनावां उजागर व्हेय'र सांमी आ रैयी ही। जन-सभावां री सरगरमी रै साथै ई मोटा नगरां अर कस्बां में कवी-सम्मेलण दिनों-दिन चावा व्है रैया हा। सरुआत में हिन्दी रा आं कवी-सम्मेलनां में कीं इण्या-गिण्या राजस्थानी कवी ई पूग्या अर वां महानगरां में रैवण वाळा प्रवासी राजस्थानियां नै वां खूब उछाव अर चाव सूं आपरी कवितावां सुणाई अर लोगां वांनै खूब पसंद करी। इण बात रौ असर इण छेत्र में कविता लिखण री कोसीस करण वाळा नुंवा कवियां माथै पड़णौ सुभाविक हो। आं कवी-सम्मेलणां रै स्रोता-वरग नै दाय आवण वाळी कवितावां री कीं किसमां व्हिया करती, जिकां नै आं कवियां समझी अर उणी माफक कवितावां रच'र सुणावणी सरू करी। इण कोसीस में केई कवियां मंच माथै आपरौ आछौ नांव कमायौ। यूं राजस्थानी कविता रौ आम-जनता तांई पूगण रौ लोकप्रिय अर सुलभ तरीकौ औ ई हो। राजस्थानी कविता रै साथै पाठक रौ रिस्तौ घणौ पछै कायम व्हियौ, जद कविता छपाई री विगस्योड़ी सुविधावां रै विच्चै ओपतै छापै री गत में लोगां रै हाथां में पूगी अर लोगां में जुग री बदळती जरूरतां रै मुजब छप्योड़ी सामग्री नै पढण री आदत विगसण लागी। इणरै बावजूद मंच रै जरियै कविता री सीधी आस्वादन वांरै वास्तै ज्यादा सुविधाजनक हो—अैड़ै में जिका कवियां जनता री जुबान, उणरा ई काव्य-संस्कार अर पसन्दगी मुजब कवितावां रचणी अर सुणावणी सरू कीवी, वांनै मंच माथै भरपूर कामयाबी मिळी अर लोगां वांनै बडै उछाव अर चाव सूं सुण्या। राजस्थानी मंच माथै 'सैनांणी' रै सिरजणहार मेघराज मुकुल रै चावैपण रौ खास कारण औ ई हो, जिकां राजस्थानी स्रोतावां रै सांमी वांरै काव्य-संस्कार—वीरता, ओज अर सुन्दरता री धारणा मुजब अलेखूं कवितावां रची अर लोगां रै विच्चै वांरो असराऊ ढंग सूं सस्वर पाठ कियौ। मुकुल रै साथै मंच माथै कीं संजीदा अर संवेदणसील रचनाधरमी इण तरै रा ई रैया, जिकां

मंचीय कवितावां रै इण दौर में सत्यप्रकास जोसी री काव्य-जातरा खास चरचा री विसै रैयी है। अरसै तांई जोसीजी खुद मंच माथै अेक चावा कवी रै रूप में जम्योड़ा रैया है अर स्रोतावां में वांरी कविता नै लेय'र अेक निरवाळी इमेज ई वण्योड़ी रैयी है। जोसीजी आपरी मंचीय कवितावां (जिकी के वै मंच माथै अमूमन पढ़ता रैया है अर स्रोतावां री वां कवितावां बाबत विसेख मांग वण्योड़ी रैयी है) रै जरियै राजस्थानी स्रोतावां नै रीझावण रै साथै कीं ओपता संस्कार ई दिया है अर वांनै मंच रै साथै-साथै साहित्य अर कळा सूं जोड़ण रौ महताऊ काम कियौ है।

सन् 1960 में 'राधा' रै प्रकासण रै वाद सत्यप्रकास जोसी री सन् 1950 नूं लेय'र सन् 1962 तांई री टाळवीं राजस्थानी कवितावां रौ दूजौ संग्रै 'दीवा कांपै क्यूं' सन् 1962 में प्रकासित व्हियौ। इण संग्रै री घणकरी कवितावां राजस्थानी कविता री बहस में खासी चावी अर चरचित रैयी है। इण संग्रै रा घणकरा गीत प्रेम री भाव-भोम माथै सिरज्योड़ा प्रेम-गीत है, जिका प्रेमी अर प्रेमिका री मांयली मनगत सूं पाठक अर स्रोता री गैरी पिछांण करावै। 'नाव री गीत', 'विरखा रौ गीत', 'जुगल-गीत', 'फागण रौ रास', 'मुगधा री मांड', 'सोवन माछळी', 'सपनां री लूरां', 'ढळती रात रौ गीत', 'रूप नै सीख', 'ओळूं', मुळक', 'विणजारौ', 'हर' इत्याद इणी भाव-भोम माथै सिरज्योड़ा गीत है, जिकां में संजोग-विजोग अर रीझ-मनवार रा अलेखूं प्रेम-परसंगां अर मनोभावां री सरस अभिव्यक्ति अेक नुंवै भाव-बोध री ओळख देवै, जिकी पारंपरिक प्रेम-गीतां सूं न्यारी अर घणी ताजी है। आं रै अलावा 'सीख', 'जांमण रौ सपनौ', 'वीरौ' इत्याद कीं अैड़ा गीत है जिका राजस्थानी लोक-जीवण रा घरेलू रिस्तां री अपणायत अर आपसी लगाव नै गैरा संवेदू परसंगां साथै रूपावै।

जीवण-दरसण अर जीवण-व्यवहार बाबत अेक व्यापक मानवी दीठ रै समचै जोसीजी जीवण में संघर्स री हिमायत करतां संग्रै री सिरैनांव पण 'दीवा कांपै क्यूं' राख्यौ, जिणरौ मूळ सुर है—

वळणौ सगळी रात, दीवा कांपै क्यूं !

अर वां दीवै नै जीवण-संघस रौ प्रतीक दरसावतां 'लांवी वात', 'दीया-पतंगा रा दूहा', 'धरती रा दीया', 'जीवण रा दीया' इत्याद इणी भाव-बोध रा कीं और गीत ई लिख्या। साथै ई आजादी पछै हिन्दुस्तान रा कवियां में अेक नुंवौ उछाव ई पैदा व्हियौ अर नव-निरमाण सारू आम्-जनता नै उद्‌बोधन देवण री अेक लैर-सी चाल पड़ी ही—लागै, उणरौ कीं असर सत्यप्रकास जोसी री काव्य-सिरजणा माथै ई रैयौ अर वां 'म्हारौ देस', 'जागण रौ गीत', 'जै मांनखा', 'खेतड़ला ललकारै', 'आज

दिरीज सकै। 'हेमाणी' अंक पेटै जद वांनूं इण बाबत लरचा व्ही तो वां कैयो ई—"जुग री मोटी अबखाई वा है जिण माथै आदमी रौ जोर कोनी चालै अर जिणमें उणनै बेकसूर पीसीज जावण री हरमेस खतरो बण्यो रैवै। अैड़ी ई अबखायां में सूं मोटी अबखाई है—जुद्ध। वो जुद्ध, जिणमें अेक घड़ी में सईकड़ूं-हजारूं ई नीं; लाखूं मिनख अेक-साथै हार-मोर व्है जावै—अणुबम रै अेक ई धमाकै रै साथै पूरो मुलक उजड़ जावै।" हिन्दुस्तान री दूजी भारती-भासावां अर समकालीन विस्व-साहित्य में ई इण जुद्ध-विरोधी भावना नै लेय'र अकूत साहित्य री सिरजणा व्ही है, अर इणमें अेक लूंठो सुर औ राजस्थानी कवी सत्यप्रकास जोसी रो ई—

मन रा मीत कान्हा रे—
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तो
भाई पर भाई करसी वार
आपस में लड़सी मरसी मांनखौ!

निस्चै ई जोसीजी री आं कवितावां री आत्मीय लैजो अर कथणी रो अंदाज पाठक नै प्रभावित करै पण दूजी तमाम जुद्ध-विरोधी कवितावां री भांत वांई इण सवाल माथै इकतरफा रवैयो ई राख्यो के गळती भलांई किणी पख री व्हो, जुद्ध बुरी चीज है अर फेर वै जुद्ध रा भयानक नतीजां नै सांमी राख, मानवी धरातळ माथै आ चेतना पैदा करणी चावै के दुनियां री सगळी समस्यावां रो निदांन बिना जुद्ध रै ई व्हेणो चाईजे। यूं सुणण अर कवण में तो आ बात निस्चै ई घणी ओपती अर सुहावती लागै पण न्यारा-न्यारा दो विरोधी वरगां में बंटयोड़ी इण दुनियां नै भयानक आणविक जुद्ध रै खतरै सूं किण भांत उबारी जा सकै, इणरी ठोस रूपरेखा दुनियां रै किणी मुलक, दारसनिक या कवी-कलाकार कनै कोनी। जद तांई उत्पादन रा सगळा साधनां अर सगती रा ठिकाणां माथै मालिक वरग रो कबजो कायम है अर जनता री ताकत टुकड़ां में बंटयोड़ी है—तमाम लोकतंत्री नाटकां रै बावजूद दुनियां में अमन-चैन कायम व्हेणो असंभव है; मालिक वरग री आपसी होड रा जुद्धां में मांनखो इणी भांत बेकसूर पीसीजतो अर मरतो रैवैला—आ आपांरै जुग री वाकेई अेक मोटी अर दुखदाई त्रासदी है।

खैर, तो बात सत्यप्रकास जोसी री काव्य-सिरजणा रै परसंग में है अर जैड़ी के जोसीजी री कवितावां अर विस्लेसण सूं बात साफ व्हो, अठै तांई के वांरी इण जुद्ध-विरोधी भावना रै लारै ई यथार्थ-बोध री बजाय अेक नुंवी किसम री रूमानियत ई हावी रैयी। निस्चै ई वांरी मूळ काव्य-संवेदना गीतात्मक रैयी है, जिणरी सांप्रत असर 'राधा', 'बोल भारमली' अर 'सिसकता नाथमैं' री कवितावां माथै खासो रैयो।

विरखा या वादळां रौ वरणन या वखांण करणौ नीं हौ, वरन् मरुधरा रै जीवण में वापरचोड़ी उण मांयली तिरस नै उजागर करणौ हौ, जिकी वगत माथै विरखा नीं व्हियां साल्ं-साल अेक समस्या रै रूप में वण्योड़ी रैवै। जड़, चेतण अर अचेतण सगळा ई जीवणा चावै—सुख अर संतोख रौ जीवण अर असाढ़ रौ आवणौ जांणै अेड़ै ई सुखदाई जीवण री सरूआत कांनी सैन करै—

जीवण नै सह तरसिया,
वजर भखड़ वाढ़;
वरसै भोळी वादळी,
आयौ आज असाढ़।

राजस्थानी काव्य-परंपरा रै दूहा छंद में रच्योड़ै इण भाव-प्रवंध रै रचनाकार री काव्यानुभूति नै समभ्रण सारू उणरै नीजू संवेदनाऊ इतिहास अर चौफेर नै ध्यान में राखणौ जरूरी है। अेक राजपूत खानदान में जलम लेवण रै कारण कुंवर चन्द्रसिंघ रौ इण जात अर संस्कारां, परंपरावां अर आचार-विचारां सूं गैरौ संपरक रैयौ। साथै ई उण वगत री पढाई-लिखाई रै जरियै सूं वांनै अेड़ै-छेड़ै रा हालात अर जातीय संस्कारां री सींवां अर खिमतावां नै समभ्रण-परखण रौ मौकौ ई मिल्यौ। राजपूती वीरता री दरवारी वखांण वांनै आछौ तौ लाग सकै हौ पण वस्तु-जगत् में उणरी असलियत कांई-कीं रैयगी ही, या उण वगत वीरता दरसावण री कांई स्थिति रैयगी हौ, इणसूं ई वै साव अजांण नीं हा, अर आ ई वजै ही के कुंवर चन्द्रसिंघ नै परंपरागत वीर-काव्य सूं छेड़ौ लेवणौ पड़्यौ। दूजी तरफ समाज री रूढियां अर इन्याव रै खिलाफ फक्कड़ाना अंदाज में लिखीजण वाळी कवितावां ई कवी चन्द्रसिंघ रै मिजाज अर सुभाव रै माफक नीं पड़ी, क्यूंके उठै जातीय-संस्कारां रौ पख प्रवळ व्हेण रै कारण आं विसयां री मांयली पकड़ अर कथणी री ढाळौ वांरै बूतै सूं वारै री वात ही।

यूं अेक कारण औ ई विचारणजोग है के उण वगत भारती-भासावां रै समकालीन साहित्य अर विदेसी भासावां री काव्य-सिरजणा में प्रकृती री सुन्दरता वावत अेक खास रुभ्रांण च्यारूंमेर देखण नै मिलै हौ अर इण रुभ्रांण रौ परोख असर कुंवर चन्द्रसिंघ री रचनासीलता माथै पड़णौ सुभाविक हौ। 'हेमांणी' अंक रै सिलसिलै में जद कवी सूं इण संदरभ में वात व्ही, तौ इण प्रभाव नै वां खुलै तौर सूं कवूल ई कियौ। कुंवर चन्द्रसिंघ री रचनासीलता रौ अैतिहासिक महत् इणी वात में सांप्रत है के वां आधुनिक राजस्थानी कविता रै सरूआती दौर में अेक सरल अर सहज काव्य-सिल्प रै जरियै लोक-मंगळ री भावना सूं प्रेरित व्हेय'र इण

ही. आ ई वजै है के 'कळप' रा गीत लिखती वगत वांनै आज रै जीवरण री सगळी मूं मोटी अर निरणाऊ अवखाई मिनख रौ 'मॉरल क्राइसिस' ई निजर आयौ। यूं वै सरू सूं ई समाजू-वदळाव सूं तकरीवन निरपेख ई रैवरण री कोसीस करता रैया। खुद वांरी मानरणी है के चौपासनी इसकूल, जठै वांरी सरूआती भरणाई व्ही, रै वातावरण मे समाजू वदळाव रौ गाढौ अंदाज नीं व्हेतौ। इरण इसकूल में जिका जीवरण-मोल पोखीजता वै मध्य-जुग रा कांण-कायदां री कूड़ी दिखावट सूं तिरियां-मिरियां हा। नुंवै वदळाव नै अथिर मानीजतौ अर सक री निजर सूं देखीजतौ—अठै तांई के भाटीजी नै आजादी आवरण री ई कोई खास बोध नीं व्हियौ, जैड़ौ के तेजसिंघ जोधा रै साथै व्ही भेंट-वारता में वां कवूल कियौ—'आजादी रौ आवणौ नीं भूंडी ई लागै हो. नीं घणौ उछांछळा करै जैड़ौ! कोई अणूती हलचल म्हारै मांय इरण वदळाव रै समचै आई व्है, अैड़ौ नीं हौ।' साथै ई वै इरण हकीकत सूं वाकिफ परण व्है चुक्या हा के—'हैसियत रै हिसाव सूं छुटभायां में हा, सो आजादी आवरण सूं आपांरौ कोई राज जाई परो के जागीर खुस जावैला, अैड़ौ खतरौ ई आपां नै कदेई नीं लखायौ।' अर इरणी समचै वांरा सवदां में अेक संतोख रै साथै ई समाजू वदळाव वावत गाढी उदासी रौ भाव परगट व्है—अठीनली कीं नुंवी कवितावां में वां इरण उदासी नै सायास तोड़रण री कोसीस ई करी परण उत्ती कामयावी नीं मिळी अर वै पाछा अतीत रै रोमानी भाव-वोध में विलमग्या।

इतिहासू चरितां नै आधार वरणाय'र काव्य-रचना करणी आधुनिक राजस्थानी रै सरूआती दौर री अेक मुखर प्रव्रति रैयी है। मेघराज मुकुल री 'सैनांणी', 'दुर्गावती', 'कोडमदे' इत्याद कवितावां, सत्यनारायण अमन री 'सीसदान' अर कन्हैयालाल सेठिया री 'पातळ अर पीथळ' इरण दीठ सूं खास उल्लेखजोगी कवितावां रैयी है।

कुंवर चंद्रसिंघ अर नारायणसिंघ भाटी री भाव-भोम सूं थोड़ौ न्यारौ रंग लियोड़ा, डिंगळ री वीर काव्य परंपरा रै क्रम में आंरा ई समकालीन कवी हरणवंत सिंघ देवड़ा री जिकर अठै प्रासंगिक व्हैला, जिकां आपरा विखरयोड़ा गीतां, 'सूरा दीवा देस रा' अर 'सरसत-शतक' जैड़ी रचनावां में जिकौ यथारथवादी आतम-विस्लेसण रौ सुर साध्यौ वौ आधुनिक भाव-वोध सूं खासौ-कीं मिळतौ-जुळतौ रैयौ—भलांई औ वांरी रचनासीलता रौ प्रमुख सुर नीं वरण सक्यौ व्है, परण इरण हलकै री अेक सामान्य नारी अर अेक निस्ठावान वीर री पीड़ा नै वां जिरण मारमिक भाव अर पारंपरिक छंदां में वांध'र राखी वा आज ई साहित्य री पटेती अर अवेती लोगां माथै आपरी निजू छाप छोड़ै—

इणी दौर में राजस्थानी भासा में निकळण वाळी केई साहित्यिक पत्रिकावां रै मारफत कीं युवा रचनाकार औरूं सांमी आ रैया हा। दूजै कांनी भारतीय भासावां अर हिन्दी कवितावां री देखादेख मुगत छंद में कविता लिखणी अेक रिवाज सो बणती जा रैयौ हौ, पण मांवौमांय छंद तोड़ण री सही समझ ई विगस रैयी ही। सन् 1971 में तेजसिंघ जोधा 'राजस्थानी-अेक' री संपादकी में आधुनिक राजस्थानी कविता रै इण पैलै दौर अर दूजै दौर री सरूआती कवितावां नै 'हांफळां' अर 'ठैराव' री जिण मनोगत-व्याख्या में समेटण री कोसीस करी, वा राजस्थानी री नुंवी कविता रै रुतबै नै गळत ढंग सूं थरपण री मनोभावना रौ ई नतीजौ हौ। जिणरै वास्तै वां तरक अर ठोस विस्लेसण री जिग्यां आपरै कवी-सुभाव मुजब नाटकी-सिल्प रौ स्यारौ लियौ। आई वजै है के वां जिका अपरिपक्व नतीजा निका-ळ्या वां रौ आधुनिक राजस्थानी कविता रै सही विकास-क्रम सूं कोई ताळ-मेळ नीं बैठ सक्यौ अर नीं वां ताळमेळ बिठावणौ जरूरी ई समझ्यौ। जिणरी खासी कीं सफाई वांनै जांणै-अणजांणै ई 'हेमांणी' अंक रै दरम्यान देवणी पड़ी। हालांकै आ बात ई सही है के सन् 1960 रै पछै राजस्थानी कविता रै छेत्र में अेक महताऊ बदळाव आयौ—बारला हालात बदळण रै साथै ई दोनूं दौर रा कवियां री काव्य-संवेदणा अर रचना-सिल्प में ई अेक बुनियादी फरक साफ देख्यौ जा सकै। आ ई वजै हौ के पैलै दौर री मुख्य काव्य-धारा रा प्रतिनिधी कवी ई नुंवै काव्य-सिल्प में आपरै उणी भाव-बोध अर संवेदणा नै अजमावण री कोसीस करता दीखै—सत्य प्रकास जोसी री 'राधा', 'लस्कर ना थमै', नारायणसिंघ भाटी री 'जीवण-धन', अन्नाराम सुदामा री 'पिरोळ में कुत्ती ब्याई', सत्यनारायण अमन री 'चूंठिया' अर गिरधारीसिंघ पड़िहार री 'मांनखौ' इत्याद रचनावां इणी बदळाव रौ बोध करावै, हालांकै इण बात सूं ई इनकार नीं कियौ जा सकै के इण बदळाव माथै समकालीन भारतीय भासावां अर उण वगत री हिन्दी काव्य-जातरा रौ ई परोख असर जरूर पड़्यौ, जद के इणी दौर में उभरण वाळा युवा कवियां री काव्य-संवेदणा अर रचना-सिल्प आं लारली कवितावां सूं साव अलग तरै री दीखै। आं युवा कवियां समकालीन जीवण-यथारथ रा जिका जगता अर जीवंत सवाल कवितावां रै जरियै उठाया, राजस्थान रै गांवाई जीवण री जिकी मांयली अवखायां कांनी पैली वार लोगां रौ ध्यान खींच्यौ, उणसूं आं नुंवा कवियां अर इण नुंवी कविता री आपरी अेक न्यारी पिछांण कायम व्ही।

आं युवा राजस्थानी रचनाकारां री काव्य-संवेदणा अर मानसिकता रै निर-मांण में लारला राजस्थानी काव्य-संस्कारां, धारणावां अर रचना-सिल्प री ठावी

पांच कवितावां

• सुधीर राखेचा • चंद्रसेखर अरोड़ा • विक्रमसिंघ गुंदोज
• सांवर दइया • पुरसोत्तम छंगाणी

कठीनै हौ थै / सुधीर राखेचा

मूठी भर लोगां री
आ बांण पड़गी/के वै
नित नुंवा तमासा करै,
सोधै मोहरा/आपस में लड़ावै
किणी वारी/के झरोखै में बैठा
देखै रगत रौ उफाण
नीं उफण्यां
आंच देय उफणावै
पीवता प्याला/बिस्कुट कुतरता
हंसै अर हंसता इज जावै
मन विलमावै ।

नुचियोड़ी/खिरियोड़ी
पांखां रै विच्चै बैठ'र
पंख व्हैणै री याद करणी

वळै/राख व्है जावै
बणो अेक अगनी/अेक तत्व/अेक सत्य
अेक लपट बणो
अर बणणै सूं पैली औ तै करो
कठीनै हौ थै ?
क्यूं मारो खुद नै
यूं अकारथ ओलावै ?

कूकड़ै री बांग सूं नीं ऊगै दिन
उजास किरणी री बापोती कोनी
उणनै आवणौ है आपां रै बिच्चै
अर वौ जरूर आवैला ।
इणसूं पैली
के आपां फगत फोस्टर बण
पराई जूण जीवां/सोचौ···सोचौ
आपांनै लगावणौ है
तमासबीणां रै खिलाफ/मारू मोरचौ
अर थांनै तै करणौ है
कठीनै हौ थै ?

• • •

माळा मांयला
कितरा मणका
कुण जांणै पोवीजिया
कितरी दांण ।

जद-जद टूटी
टेक माळा री
फेरूं पोयी
लैय नुंवौ डोरौ ।

पण, माळा रौ फेरणहार
औ कीं नीं जाणै
भलांई वौ मणका कित्ताई
बींध दिया अणवींध्या
पोय दिया अणपोया ।

उणरै तौ हाथ
माळा व्हेणी चाइजै
जिणरा मणका, वौ
मन परवांण फेर सकै ।

• • •

जोवौ तौ सरी / पुरसोत्तम छंगाणी

जोवौ तौ सरी
सांमली डूंगरी माथै ऊभा वावनिया
म्हांणै तांई पूठ कर
गटागट पीवै है
सगळौ आकास
अर म्हां दरड़ में
ठूंठ ज्यूं अडिग हाथ ऊंचायां
सूखती जीभ सूं लगाया करां
तिरस अर पांणी रौ गुणा-भाग
म्हांणी निजरां फगत
उणरी गटागट री बारखड़ी ई जांणै ।

जोवौ तौ सरी
आभै रा सगळा चिलकता तारा
उणरै मुगट में कैद है
सीतळ चांद री चांदणी
पिंड माथै अणूंती थेथड़
वौ फूटी आंख्यां रै डोळां री जगै
सूरज नै वैठाय दियौ है
अर म्हां उणरी
सूरजमुखी आंख्यां रै उजास में
उघाड़ै डील, पगां उरभाणा
तर-तर वधती चीसां सूं लगाया करां
तावड़ै-छियां री जोड़-बाकी
म्हाणी उसासां फगत
उणरी पिंड वाळी चांदणी रौ पावड़ौ ई जांणै
जोवौ तौ सरी ।

• • •

पोळी व्हे जावै, गणित-सास्त्री माथा पकड़'र बैठ जावै अर कविता री मोल आंकणियां री समझ में ई नीं आवै के करां कांई ?

म्हनै कैंवीजैला के म्हैं खुलियोड़ा दरवाजा खटखटाय रैयो हूं, के ओ तौ सब साफ इज है। हरगिज नीं।

तुकबंदी रै सगळै कूड़ै-कचरै री अस्सी प्रतिसत कोरो इण कारण छपै के या तौ संपादकां नै पूरवली कविता री कीं समझ कोनीं, अथवा इण कारण के वांनै इण वात री ग्यांन इज कोनी के कविता किण वास्तै व्हिया करै।
संपादक फगत इत्तो इज कैय सकै के, "म्हनै चोखी लागी," अथवा "म्हनै चोखी नीं लागी।" वै भूल जावै के रसानुभूति रौ ई विकास व्है सकै अर वो वांनै करणो चाइजै। म्हारा ओळखीता करीब सगळा ई संपादकां सिकायत करी है के वांरी समझ में नीं आवै के वै कवितावां री हस्तलिखित प्रतियां कीकर पाछी करै अर उण बगत कांई कैवै।

समझदार संपादक नै कवी सूं कैवणो चाइजै, "आपरी कविता बिल्कुल ठीक है, या ओदोवस्की (सैंगेली, गेच आद) री काव्य-रचना निरदेसिका रै तीजै संस्करण रै अनुरूप लिखीज्योड़ी है; आपरी सगळी तुकां ठीक है अर लम्बै अरसै सूं चलतै न. अब्रायोव रै संपूरण रूसी तुकांत सबद-कोस में मौजूद है। क्यूं के अवार म्हारै कनै कोई चोखी कविता कोनी, इण वास्तै आपरी कविता घणै हरख सूं स्वीकार कर लेवूं'ला अर जे आप तीन प्रतियां दिवी तौ आपनै अेकदम सही-सच्ची नकल-नवीसी री दर सूं तीन रूबल प्रति पेज री मैणतानी देवूं'ला।

कवी महोदय नै कोई आसरी नीं रैवैला। कवी या तौ कविता लिखणो छोड देवैला या कविता नै अेक अैड़ौ काम समझ'र करैला, जिण सारू खूब करड़ी मैणत री जरूरत है। कीं ई व्हौ, कवी अेक मैणती संवाददाता रै सांमी, जिणनै अेक संवाद सारू—जिणमें कम सूं कम ताजी सूचना तौ व्है, तीन रूबल मिळै; गप हांकणी बंद कर देवैला। लड़ाई-झगड़ा अर आगजनी री वारदातां री खबर लावण में लाई संवाददाता रै जूतां रा तळिया घिस जावै, जद के म्हांरा कवी महोदय पांनौ पलटण में कोरी थूक इज खरच करै।

जे कविता नै ऊंचै गुणां री खासियत हासल करणी है, जे उणनै भविस्य में पनपणी है, तौ म्हांनै चाइजै के उणनै फोरो-पतळो काम समझ'र दूजी सगळी किसम री मानवी-मैणत सूं न्यारी करणी छोड़ दां।

('कवितावां कीकर बणाइजै' री अेक अंस)

सोहनलाल—करमराज सा नै कांई करम पूछियो। उणा री रग-रग जाणूं।
निसरमा कठैई रा। बूढापै में तीजौ व्याव कियौ।

भूराराम—इणसूं आपां नै कांई ? आपां दोनूं·····

सोहनलाल—थै कैवणी चावो के भणिया-गुणिया हां। न्यात री मीट आपांणै कांनी है। सुधार आपां नीं करां तौ करैला कुण ?

भूराराम—सही फरमावो सा।

सोहनलाल—धूड़ सही। म्हारै मोटोड़ै कंवर रै टांणै वैवाई जी इसारो समझगा। वै ई समाज-सुधारकां मांय सूं है। बोलिया नीं चालिया। आंपरी हस्ती सूं वत्ती दियौ। नै सैंग जणा वाह-वाह करी।

भूराराम—पण···········

सोहनलाल—पण-वण कीं नीं। आप कोई टावर कोनीं। अकलमंद नै इसारो घणो।

फूलां—धा मा कैवता के म्हारी तो लाख रिपिया री बेटी हाथ सूं गयी। नीं खावै, नीं पीवै, नीं कॉलेज जावै। फूल कुमळीजगो।

सोहनलाल—फर्स्ट क्लास छोरी।

फूलां—म्हांणै तो कीं नीं जोइजै। छोरा री मन तौ राखणो चाइजतो।

सोहनलाल—साची वात ! आप देखणी चावो तो देख लिरावो, मोटोड़ी वहु री दायजै री सैंग घर-विकरी उणरै कमरै में इज पड़ी है।

भूराराम—म्हनै इण सूं कांई मतलब ? मातवर लोगां री मोटी वातां।

सोहनलाल—वा तो है इज सा ! म्हूं दिल सूं चावूं के न्यात में सुधार व्है। आपनै कदाच मालूम नीं व्हैला के म्हांणा फूलांवाई न्यात रा नोहरा में महिला-मंडल री सभा में दायजै रै दुरगुणां माथै सागीड़ो भासण दैय'र आया। छापां में फोटू छपिया ने लोग वधाई देवण नै आया।

फूलां—हां जीसा ! म्हारै भासण सूं केई छोरियां प्रण लीनी के म्हां दायजो लेवण वाळा छोरां सूं लगन नीं करांला।

सोहनलाल—देखियौ भूराराम सा ! म्हाणो तो आखो घर इज प्रगतिसील विचारां रो है। पण आपनै ई जमाना री रुख देखणो चाइजै। औ तो ठीक है के म्हारो छोरो अमेरिका जावण री वात करै कोनी। नै धारो के करै तो आपरी बेटी री भलाई वास्तै। म्हनै कैवतां संको व्है·······अंटी आपनै इज ढीली करणी पड़ैला।

भूराराम—सा···········!

सोहनलाल—लोग पड़िया खाडा में ।

फूलां—म्हांनै न्यात री नीं पड़ी । समभिया सा !

भूराराम—सैंग समभगी सा ! अबै आप करणौ कांई चावौ ?

सोहनलाल—औ इज तौ दुख है । पण अेकर तौ आप अठै सूं वहीर व्हौ, लारै सूं कागद देवूंला ।

भूराराम—(गैलौ व्है ज्यूं) लारै सूं ठा पड़ जासी । लारै सूं ठा पड़ जासी । सीख करूं सा । राम राम ।

सोहनलाल—राम-राम ! अरे नीलकंठ ! रात रा कीकर जावैला लाई । आपांणी मोटर में छोड़ तौ आव आंनै । ●

अपरंच

आपरै हाथां में, जरूर दाय आई व्हैला

तौ

- आपनै सगळां पैली 'अपरंच' री सालाना चंदौ आठ रिपिया प्रकासक, जुगत प्रकासण, मेहता भवन, कबूतरां री चौक, जोधपुर रै ठिकाणै सूं भेजणौ है, औ पैलौ काम ।
- जे आप लेखक हौ, तौ रचना घणै मांन आमंत्रित है, पण 'अपरंच' रै लेखक नै 'अपरंच' री ग्राहक व्हेणौ ई जरूरी है ।
- 'अपरंच' युवा लेखकां री अेकठ काम अर अेकठ स्वर है, आप ई जुड़ौ । फेर आप ई सोचौ के आप इण सारू कांई कर सकौ—ग्राहक बणा सकौ, विग्यापन दिराय सकौ, अपरंच री रचनावां बाबत लिख सकौ ?....................

इण सिनेमा रै सांमी इण जमावड़ै रै आखती-पाखती अेक धैसत पसरयोड़ी रैवै। अठी री हवा में आं लोगां री मौजूदगी वोलै। इण हिस्सै में आं लोगां रै इसारै विना कोई लड़ाई-झगड़ो नीं व्है। लड़ाई तौ लड़ाई, कोई दूजौ अठै ऊंचै सुर में वोल नीं सकै। अै लोग अर आं रा चमचा इज आपस में लड़-भिड़'र आपरी दादागिरी कायम राखै। इण वैंच रा सिरदारां मांय सूं दो-चारेक खास-खास लोगां रै वारै में म्हैं ई थोड़ौ-घणौ जाणूं। आं लोगां रै वारै में केई वातां तौ मदन वताय दी, कीं दूजां सूं सुणली अर कीं म्हैं आख्यां देखली।

अै ऊपर सूं नीचै तांई काळी पोसाक धारण कियोड़ा, छाती रा रूंगता वतावता, राती-चोळ आंख्या वाळा किणी ठाकर सा रा कंवर है। आं रै वाप री जागीर तौ सरकार खोस ली पण कंवर सा आ वैंच री जागीरी वणाय ली। दूजा, अै खाकी कपड़ा पैरियोड़ा—डामर रौ ढोल, गोळ-मटोळ अर अस्टपौर किणी सांड ज्यूं वासतौ डील—अै केप्टन रै नांव सूं ओळखीजै। अेकला जीव, किणी वगत भूल सूं मिलट्री में भरती व्हेगा, पछै फौज रा कायदा-कानून सूं फड़फड़ाय'र मुस्किल सूं उण नौकरी नै छैली सलामी कर पाछा आया। वरदी हाल ई खाकी पैरै अर केप्टन कैवीजै। असल नाम भैंराराम, कौम राजपूत, पण राजपूत किस्या, आ खुद नै ई ठा कोनी। अै तीजोड़ा वुगला भगत तीसूं दिन धौळा-धट कपड़ा पैरै। किणी ऊंचै आदमी री सिफारिस सूं आप अेक सिरकारू दफतर में आपरी हाजरी री चिड़ी मांडण री नौकरी करै। नेतागिरी में ई टांग राखै। रिस्वत खावण अर दिरावण रै काम रा माहिर गिणीजै। आपरी मांनणौ है के रिस्वत-गिरी किणी वकील रै काम सूं कम हुंसियारी रौ काम नीं है, हरेक नीं कर सकै।

आं तीन तिलंगां रै अेड़ै-छेड़ै कीं सिनेमा रा व्लेकिया अर कीं दूजा वूकिया देखावता दरवारी हमेंस हाजरी में मौजूद रैवै। मदन री दुकान माथै आवतां-जावतां आं लोगां री वहादुरी रा कीं कारनामा म्हनै ई देखण नै मिळिया। ज्यूं होटल री चाय आंनै दाय नीं आई तौ कंवर सा कप-प्लेट फेंक दिया। कोई गरीव व्याजूणा लियोड़ा रिपिया वगतसर नीं दे सक्यौ तौ केप्टन साव सिरै वजार उणनै गाळियां काढ़ता गावड़ पकड़ लिवी। कोई मैली-कुचैली भिखारी छोरी हाथ पसारयां आंरै कनै पूगगी तौ अै वुगला भगत उणरै लात जमाय'र आपरी धौळी पेंट देखैला के कोई दाग तौ नीं लागगौ। सांमला सिनेमा में नुंवी फिलम लागैला तौ आधै सूं वत्ता टिगट आंरै कनै पूग जावैला। व्लैक-वुकिंग खतम व्हियां पछै अै लोग लेखू री होटल में पुलिस वाळां रै साथै वैठा लाधैला।

करणी तेवड़ली । पछै तौ भचाभच वाजी अर वाजी । भाटा फोड़णिया जद भचा-भच हाड़ फोड़ण लागा तद दरवारियां री नाक नै खतरौ वधगौ अर पछै वै 'कठी गयौ, कठी गयौ' करता गळी में घुस'र भाग छूटा । लड़णियां रा माथा फूटगा अर देखणियां नै मजा आयगा । चारूमेर लोगां में मजूरां री तारीफां व्हेवती ही । दरवारी भाग छूटा हा, पण मजूरणियां हाल ई गळी कांनी मूंडा कर हाथ नचावती भारी-भारी तुलवां गाळियां चेप रैयी ही । दोयेक घायल मजूर होटल सूं पांणी लेय'र नकसीर आद री खून धोयी । आपरा इज कपड़ा फाड़ पाटियां वांधी अर उठै सूं वहीर व्हेगा । वांरै गयां पछै म्हैं अेकर निजर घुमाय'र चारूमेर देख्यौ । इण वगत अठै अेक-दोयेक पुलिस वाळौ रोजीना ऊभौ रैवै पण आज अेक ई नीं हौ ।

लड़णिया दोनूं कांनी रा गया परा हा, पण लड़ाई री चरचा हाल लोगां रै मूंडै ही । कोई केवतौ—'आज सेर नै सवा सेर मिळिया भई ।' तौ कोई केवतौ—'देख लिया । हराम रौ माल खाय-खाय'र वणायोड़ौ सरीर कित्तौ वोदौ व्है । नै आं लाई मजूरां नै अैड़ौ खावण नै कंई मिळै ? पण मैणत सूं ढळियोड़ौ सरीर है भई । अै तौ अै मुस्तंडा भाग छूटा, नीं तौ अेकौअेक अस्पताळ पूगतौ ।' अर दूजा लोग ई इण वात रै सही व्हेण रौ हांकारौ भरण लागा ।

अठी नै यूं वातां चल इज रैयी ही के हाकौ फूटी के वै वदमास गळी सूं गळी में व्हेय'र पाछा आगै जाय पूगा अर मजूरां सूं वांरी पाछी भिड़ंत व्हेगी है । लोग 'वार-सीन' देखण नै दवादव दौड़िया, म्हैं ई तेजी सूं आगै वधियौ । मन में मजूरां री चिन्ता व्हेण लागी । आं वदमासां रौ कंई है, किणी नै चक्कू मार सकै । पण अैड़ी जगै सूं आघौ इज रैवणौ, लड़ाई में लाडू नीं वंटै । अै सगळी भली वातां सोचतौ कीं वातां करता लोगां रै नैड़ौ जाय पूगौ । सुणी के वदमास अेक दूजी गळी रै नुक्कड़ माथै पाछौ ताक'र अेक मजूर माथै हमलौ कियौ अर लोह रै सिरियै सूं उण रौ माथौ फाड़'र पाछा गळी में घुसगा । साथौ-साथ आ ई सुणी के वदमासां मांय सूं ई अेक जणै रौ थोवड़ौ लाल व्हेगौ । मजूर आपरा घायल साथी नै अस्पताळ लेगा है । जावता मजूर गळी रै नाकै ऊभ'र वदमासां नै चेतावणी दिवी है के मरद रा वच्चा व्हौ तौ कालै इणी सड़क माथै इणी वगत रा लाध जाइजौ अर वहादुरी वताय दीजौ । अरे लूला-पांगळा नीं करदां तौ म्हां ई मजूर री औलाद नीं ।

दूजै दिन दसेक मिनट पैली पूगौ के अैड़ी नीं व्है के मरद आपरौ मरदानगी वतायगा व्है । आज रै लोकल पेपर में ई इण झगड़ै रा समाचार छपिया हा अर पुलिस अेक-अेक आदमी दोनां कांनी रौ पकड़ियौ हौ । मदन सूं ठा पड़ी

जमनाप्रसाद ठाड़ा 'राही'

कलम न्हं चळै जद, गजल कांई मांडू
न्हं आखर मलै जद, गजल कांई मांडूं।
सेठां की वस्ती में, धरती पै सूता,
मनखड़ा तळै जद, गजल कांई मांडूं॥
चांदी की खाटां पै, आंधी का घर में,
गंडखड़ा पळै जद, गजल कांई मांडूं।
जुवांनां नै रस्तौ वताऊं तौ उल्टी,
मसखर्‌यां रळै जद गजल कांई मांडूं॥
उघाड़ी उवाणूं फरूं गभ दुपहरी,
पगतळयां वळै जद गजल कांई मांडूं।
फटी गोदड़ी में कटै चिल्लौ जाड़ौ,
टपोर्‌या गळै जद गजल कांई मांडूं।
अंधेरी गुवाड़ी में सीलरण, घुटरण हौ,
न्हं दीयौ जळै जद गजल कांई मांडूं।
कई वार कागद नै लिख-लिख के फाड़ूं,
या स्याही छळै जद गजल कांई मांडूं॥

• • •

आदर्स अर यथारथ रै बीच झोला खावतौ : नैणां खूट्यो नीर

जुगल परिहार

•

आथूणै गांवां रै लोगां री अभावां अर विखा सूं भरियोड़ी जिनगाणी री अंकण करणिया वैजनाथ पंवार री 'नणां खूट्यो नीर' तीजी किताब है। चवदै कहाणियां रै इण संग्रै में आधी सूं वत्ती कहाणियां गांव री परिवेस लियोड़ी है। पंवार खुद जिणगाणी रा घणकरा दिन गांवां में विताया है। इण वास्तै गांवां री जिनगाणी आप सूं असैंधी या अछानी कोय नीं।

वैजनाथजी मूळतः आदर्सवादी है। सरू-सरू में आप खासा भावुक रैया। पण ज्यूं-ज्यूं जिनगाणी नै नजीक सूं देखी, त्यूं-त्यूं आप रै आदर्स री मोहभंग सरू व्हियौ। यथारथ री मार सूं आप रौ चिंतन झकझोरीजण लागौ। तौ ई आदर्सवाद री मोह हाल गयौ नीं है। वीच-वीच में आप री रंग दिखा इज जावै, जिकौ इण कहाणी संग्रह में देख्यौ जा सकै।

'चीणी हमला री नींव माथै खड़ी करियोड़ी 'लिछमां वाई' अेक फिल्मी कहाणी इज लागै। आदर्सवाद री मोह अर देस-प्रेम री उफाण इण कहाणी नै ऊंची ई कोनीं आवण दी। कहाणी में उण टेम री सामाजिक स्थिति री चित्रण नीं होवण सूं अर पात्रां रै अन्तर्द्वन्द्वां रै उचित उजागर नीं व्हेणै सूं कहाणी विलकुल ई संवेदनसीळ नीं वण सकी। वरसां पैली लिखियोड़ी हिन्दी कहाणी

'चोटी गो रहस्य' अेक हळकी-फुळकी कहाणी है, जिकी के 'क्लाइमेक्स' लग आवतां उद्देसपूरण लखावै। पण लेखक आज रै इण भ्रिस्ट रै बावत कीं कैवण री साहस नीं कर सकियो।

आवास-समस्या माथै लिखियोड़ी कहाणी 'हिरणी' चोखी कहाणी है। सैरां में कम तिनखा वाळा लोगां नै नीं तौ चोखौ घर ई मिळ सकै अर नीं ई वै जिंदगी नै जिंदगी री दाई जीव सकै। साथै ई बेरोजगारी री समस्या ई है जिण रै कारण आदमी घर छोड'र नीं जाणै कठै-कठै भटकता फिरै। गांव री हिरणी सैर री बंद कोठरी में जीव नीं सकै अर अेक दिन वा मरजा, जद'क धणी दूजो घर देख'र आवतो व्है।

पुनरजनम नै लेय'र लिखियोड़ी कहाणी 'तीजी लुगाई' साधारण है। जे लेखक इण माथै थोड़ी भळै मैणत करतौ तौ सायत् आ अेक चोखी रचना बण सकती ही। पण गोड़ी बदरी राधा रै प्रेम-प्रस्ताव नै पाप कैय'र ठुकराय दै। राधा री मौत व्है जावै। पंदरै साल बाद जद वौ तीजी लुगाई लावै तौ मूंडो देख'र वौ चिमकजा। वा सागै राधा इज व्है।

'पा'सो' वां लोगां री कहाणी है जिका के मोटा घराणा अर मोटी मरियादावां में इज हाल तांई अळूझियोड़ा है, जदै'क मांय सूं वै बिलकुल टूट चुकिया है। कहाणी में बीनणी उण झूठी मरियादावां रौ पासौ पलटै अर यथारथ में जीवण रै वास्तै प्रेरित करै। कहाणी साधारण है।

'माइत' कहाणी में लेखक वां माइनां री चितराम मांडियौ है जिका के आपरै टाबरां नै हरेक खुसी दैय'र पाळै-पोसै अर वै इज टाबर बुढापै में वां री कीं गिनरत नीं करै। वां री आसावां-इंछावां माथै पाणी फेरै। हिन्दी कहाणी 'वापसी' री दाई इण कहाणी रौ बीड़ी वाळौ बाबौ बेटां रै साथै रैवण नै तैयार नीं है। कहाणी अच्छी है।

रेखाचित्र टाइप कहाणी 'धापी भूवा' अेक बूढी लुगाई री हिम्मत री कहाणी है, जिकी के अकाळ में दौड़-दौड़ नै इन्सानां सूं लेय'र जिनावरां लग री सेवा करै। ऊंच-नीच छूत-छात सैं की छोड'र नै आखिर में लोगां री सेवा करती करती दूजो लोक नैड़ो करै। लेखक इण कहाणी नै लिखतां आप रै 'उपदेसक' माथै काबू राखियौ है।

प्रस्तुत कहाणी संग्रै री सब सूं अलग-थलग कहाणी है 'रूपाळी लूपां'। तकनीक री दीठ सूं ई लेखक अेक अैड़ी स्त्री रौ चारित्र पेस करियौ है जिकी के

नाजिम हिकमत

(१९०१-१९६३)

[अपरंच रै पैलै अंक में इण जग-वांणी सूं अेक सिलसिलौ म्हां उण विस्व-कविता री ओळखांण रौ सरू कियौ, जिकी साम्राज्यवादी अर तानासाही घेरै-वंदी रै खिलाफ जुझारू जंग लड़ी। पैलै अंक में व्रतोल्त ब्रेख्त सूं जिकी सरुवात की, उणी सिलसिलै में इण दूजै-तीजै जुड़वां अंक में तुरकी रा जगचावा कवी नाजिम हिकमत री कीं टाळवीं कवितावां दे रैया हां।

कविता सूं क्रांती भलाईं नीं व्है, पण वा अेक गलत व्यवस्था रै खिलाफ कित्तौ खतरनाक अर जुझारू रूप अख्तियार कर लिया करै, इणरौ खरौ सबूत नाजिम हिकमत री कवितावां है। वत्तीस वरस री उमर में हिकमत नै वांरी कवितावां रै कारण पांच वरस री सख्त कैद री सजा सुणाइजी। आ तौ व्यवस्था री नाजिम सूं वदळौ लेवण री सरुवात ही। सन् 1938 में पाछी अट्ठाईस वरसां री सजा व्ही अर पछै देस निकाळौ।

देस निकाळा पछै हिकमत सोवियत रूस गया पर अर उठै इज वसगा। हिकमत तुरकी री जुझारू जनता नै दुनियां री प्रगतिसील सगत्यां सूं जोड़ दी। तुरकी री जनता नै अेक नवौ दिसा-वोध दियौ। तानासाही सरकार नाजिम री अेकौ-अेक कविता माथै रोक लगाय दी। अर नतीजौ, नाजिम हिकमत री कवितावां अेकौ-अेक तुरक री जवान माथै पूगगी। संपादक]

थे दावौ कर सकौ के हरेक नै जीवणौ चाईजै
अेक आंक, अेक कड़ी या औजार रै रूप में नीं
पण अेक मिनख रै रूप में,
उण वगत वै अेकाअेक
थांरै हाथां में हथकड़ियां घाल सकै।

थे आजाद हौ गिरफ्तार व्हेण नै
कैद भुगतण नै
अर अठै तकात फांसी माथै लटकाया जावण नै

थांरी जिनगाणी में लो, लक्कड़
के पतळै रेसम रौ कोई पड़दौ नीं
कोई जरूत ई नीं आजादी चुणण री
थे आजाद हौ
पण इण भांत री आजादी
अेक गतवायरी हालत है तारां री छीयां में!



आपणा टाबरां नै सीख

वण्योड़ा रैवौ नटखट, वौ स्सै ठीक है
चढ जावौ ऊभी दीवारां,
दरखतां रा ऊंचा सिखरां माथै।

अेक वूढै कप्तान री भांत
थांरा हाथां नै थांरी साईकल री रफ्तार
अर पंथ माथै कावू राखण दौ

अर उण पैंसिल सूं
जिकी धारमिक ग्यांन रै इधकारी रा कारटून वणावै

म्हैं आयौ, रुकियौ म्हैं
म्हैं मुळक्यौ
म्हैं मरग्यौ।

• • •

सब सूं सुन्दर

सब सूं सुंदर
समदर वौ है
जिकौ म्हां देख्यौ कोनी

सब सूं सुन्दर बाळक
हाल तांई बडौ नीं व्हियौ
सगळां सूं प्यारौ दिन है वौ
जिणनै हाल तांई भोग्यौ नीं म्हां

अर वै खूब उम्दा बातां
जिकी थांनै सुणावणी चावूं
हाल
कैवणी बाकी है।

• • •

वौ खूब वातां कर रैयौ है—तारंता वावू
क्यूं के वौ
खूब डरचौड़ो है।

दसवां कागद

कित्तौ अजीव है, तारंता वावू
म्हांणी'ज जमीं माथै म्हांणी हत्या सारू
वै उडीक रैया है वाट, म्हांणा वसंत रै किलकणै री
कित्ती अजीव वात है के नीं तारंता वावू !
के इण वरस अफ्रीका में
वरसात रौ अंत
आवणौ
तमाम सुगंधियां अर रंगा रौ, उतरतां
आकास सूं धुनां ज्यूं
गाल्ला री ताम्बई नारी ज्यूं
सूरज रै नीचै पसरचोड़ी आली धरती—
सगळा मिरतु लावैला म्हांणै वास्तै
उणी वगत
जद थांरौ मधुर अंतस
कुणमणावणौ सरू करैला
कित्तौ अजीव, तारंता वावू
वा मिरतु
म्हांणां दरवाजां सांमी सूं गुजरैला
आपरा साम्राज्यवादी टोप में
वसंत रौ अेक फूल खसोलती।

उल्थौ—पारस
('पहल' अर 'अंतत:' सूं साभार)

अर खोटाई सामी तिरस्कार,
बूंद-बूंद वीरतां भरौ
अर निवळा तंतुआं में हरख
रचौ
रचौ
अर आंख्यां नै सूखी इज रैवण दौ
रचौ
रचौ
तारां छायौ आकास रचौ
धरती नै सुख-सांयत दौ
रोवतै टाबर सारू लोरी
पसीना-घांण गुलाम नै आराम दौ
घिरणा नै आधी करौ
जुद्ध रा सस्तर
अर खूनी किरोध रौ नास करौ
रचौ
रचौ
अर आंख्यां नै सूखी इज रैवण दौ
रचौ
रचौ
जठै खोटाई अर भै है
उठै प्रेम
जठै सांकळां री हेवा खणक है
उठै आजादी
जठै पवन सूळी माथै हिंडावै सरीर
उठै जीवन
रचौ
आजादी, जीवन अर प्रेम
रचौ
अर आंख्यां नै सूखी इज रैवण दौ

• • •

कांपण लाग जावै। पारलू गांव रौ अेक किसान नेमाराम, जिणरै परवार में सगळा मिळाय'र उगणीस जणा हा। वाढ़ में सतरै जणा वैयगा, जिणरी अंदाजो खुद नेमाराम नैं तीन दिन पछै लागौ। जद उणनैं पांणी री घेरावंदी सूं वारै काढियौ। कनाना गांव में साठ नैड़ा गरीव खेत-मजूर टावर-टोळी समेत वैयगा। नीं जांणै अैड़ा कित्ता नेमाराम व्हेला, जिका इण जळ विपदा में उजड़गा! लूणी रै रेल-पुळ माथै सूं आठ फुट ऊपर पाणी चढ़ियौ। रेल रा चइला मैंण रा व्है ज्यूं आंटा खायगा। तीन सौ घरां री वस्ती सतलाना अेक हरड़ाटै में वैयगी।

वरसां री मैंणत अर करोड़ां री लागत सूं जिकी जमीन जोतण जोगी व्ही अर छोटा-मोटा रुजगार जमण जोगा व्हिया, वै सगळा इण वैवतै पांणी रै साथै वैयगा। जठै कालै हरियळ खेत हा, आज के तौ मोटा-मोटा गैरा खाडा पड़गा है के वीस-वीस फुट ऊंचा रेतरा टीवा वणगा है। कूवा अर पम्प-सेट नीं जाणै किण-किण टीवां हेटै वुरीजगा। वरसां री मैंणत सूं जिका हौंसला वुलंद व्हिया हा, वै तीन दिन में टूटगा। करीव 50 हजार क्विटल अनाज रौ सफायौ व्हेगौ। पक्का अर ऊंचाई माथै वण्योड़ा मकान तौ फेर ई वचगा पण ढळास में आयोड़ा कच्चा मकानां अर झूंपड़ां रा तौ निसांण ई नीं रैया। गरीब तवका री हालत वत्ती खराव व्हेगी, नीं रोटी री ठिकाणौ, नीं रोजी री। अेक नुंवी औद्योगिक इकाई रै रूप में गिणीजण वाळी छेत्र वालोतरा जठै कपड़ा री रंगाई-छपाई अर दूजा लघु-उद्योगां री मिळाय'र 135 इकायां काम करती ही, अवै ठप्प व्हेगी है अर अर सोरै-सांस वांरै पाछी सरू व्हेणै री उम्मीद नीं है। वालोतरा रै उत्तराद में आयोड़ी पचपदरा-साल्ट री तीन सौ नेड़ी लूण री खानां वाढ़ री रेत सूं दवगी अर ढाई लाख क्विटल तैयार लूण वैयगौ। सरकारी आंकड़ां मुजव कुल अेक अरव सोळा करोड़ रिपियां रौ नुकसांण व्हियौ अर सहायता रै रूप में केन्द्र सरकार चवदै करोड़ रिपिया अर राज्य सरकार तीन करोड़ रिपिया री घोसणावां की है।

मुसीवत रै इण करड़ै वगत में वाढ़ग्रस्त इलाकै सूं कीं सरमनाक समाचार ई मिळचा। ज्यूं उण इलाकै रा वौपारी आम जरूरत री चीजां रा भाव दूणा-चौगणा कर दिया। कीं लोग पांणी में वेय'र आयोड़ी ल्हासां रा अंग काट'र गैणा उतार लिया। सवसूं खोटी वात तौ आ रैयी के वाढ़ री वगत सरकारी नेतावां री ध्यान दिल्ली री राजनीति में अटक्योड़ौ हौ। जे सरकार री तरफ सूं आगूंच सूचना मिलगी व्हेती तौ जान-माल री नुकसाण इत्तौ नीं व्हेतौ। पण अफसर आपरी अफसरी री नींद में रैयगा अर नेता लोग राजनीति री वाढ़ सूं आपरी कुड़स्यां वचावण में लागोड़ा हा।

—वी. आर. प्रजापति



बाढ में टूटोडौ जग्गी नदी रौ पुळ

आगूंच

आगूंच क्यूं ?

संपादकी

स्यांणा पाठकां रै मन में औ सवाल उपज सकै के आज जद'क साहित्यिक पत्र-पत्रिकावां यूं ई पड़ती-गुड़ती निसरै, तद आ अेक फेर पत्रिका क्यूं ? अर राजस्थांनी में यूं ई लोग पत्र-पत्रिकावां कित्ताक पढै ? राजस्थांनी री अैड़ी केई पत्र-पत्रिकावां रा नांव गिणाया जा सकै, जिकी के वगत-वगत माथै सरू व्ही अर कीं दिनां प्रकासित व्हे'र सेवट बंद व्हैगी। जियां— जांणकारी, जलम भोम, म्हारौ देस, दीठ, ओळमौ, लाडेसर, ओळखांण, चांमळ, मरवण इत्याद। अर हरावळ, मरुवांणी अर हेलौ रा लंबे अरसै सूं कीं समचार कोनी। बाकी रैयी अपरंच, राजस्थळी, बतळावण, मनवार अर जागती-जोत, सो देर—सवेर प्रकासित व्हे ई जावै। कदै-कदैई तौ नवा अंक इत्ता मोड़ा निकळै के उम्मीद ई धीरज छोड दै। लारलै दिनां ई 'जागती जोत' रौ छह महीणां पैली रौ अंक जारी व्हियौ, वौ ई तीन महीणां रौ भेळौ। इण वास्तै अकादमी वधाई री पात्र है, क्यूंकै चंदा रा पइसा तौ पाठकां हूवत खातै में ई लिख लिया हा। 'अपरंच' अर 'राजस्थळी' री कठणायां तौ फेर समझ में ई आवै। अेक तौ साहितकार अर दूजै पछै पत्रिका रौ प्रकासण, दोसनी बात है के आरथिक रूप सूं हदभांत जूझणौ पड़ै। बाळ पत्रिका रै रूप में 'जुगनुजुगियौ' ई तीनेक बरसां पैली सरू व्हियौ, पण हाल आपरी स्थिती मजबूत नीं बणाय सकियौ।

खैर, वरस-सवा वरस पैली जनगणना व्ही। उण वगत वौत ई तेज राजस्थांनी आंदोलण री लैर चाली। अर 'जनगणना में राजस्थांनी लिखावौ' अभियान ई चाल्यौ। केई संस्थावां अर पत्र-पत्रिकावां इण आंदोलण नैं तेज गती देवण सारू सांमी आई। पण जनगणना रौ कोई ठोस नतीजौ हाल तांई तौ सांमी आयौ कोनीं।

जनवरी १९८१ सूं व्यवसायिक स्तर माथै जोधपुर सूं अेक पारिवारिक मासिक पत्रिका 'माणक' सरू व्ही। न्यारा-न्यारा लोगां रा न्यारा-न्यारा विचार व्है सकै, पण आ बात निस्चित है के राजस्थांनी भासा अर साहित रै विकास में इणरी लूंठी भूमिका रैसी। अर लारलै दिनां ई जोधपुर सूं ई अेक हफ्तैवार 'आगीवांण' पाठकां रै सांमी आयौ। हाल तांई बरोबर निकळ रैयौ

यान तौ छोडी. चंद सुविधावां सारू ई ओसियाळौ रैवणौ पड़ै, मूंडौ ताकणौ पड़ै । अर जे बेसरम व्हेय'र 'जी-हजूरी' माथै उतर सकौ, तौ व्हे सकै आपनै भागतै भूत री लंगोटी मिळ ई जावै ।

आज री मांनखौ सबसूं वत्तौ जिण सूं जुड़ियोड़ौ है, वौ है आकासवांणी अर फिलमां । पण सरम री बात है के जन-जन सारू प्रसारण करणवाळी आकासवांणी आपरै पूरै प्रसारण समै में राजस्थांनी सारू कित्ती वगत दै ? राजस्थांनी में समचार फगत चौबीस घंटां में अेक वळा । या पछै घूम-फिरनै वैई घिसिया-पिटिया अर पोस्ट मारटम करियोड़ा लोक गीत । अर ओमजी-भोमजी ने घासीरांम-पूसारांम री वारतावां । अर पछै आकासवांणी रा धणियां री मैरबांनी माथै जीवता साहितकारां री साहितिक रचनावां— आप आपरी छाळियां नै दूधां-दळियी पावूं न्हारियो आवै तौ भाया सोटा री धमकाऊं । फिलमां बाबत तौ बात करणी ई बिरथा । बारै बरस सूं बावौ बोलयौ —बेटा पड़नौ काळ । सो लंबै अंतराल रै बाद राजस्थांनी फिलमां बणणी पाछी सरू व्ही तौ बणी—'सुपातर बीनणी' अर 'सती-सुहागण' दुनिया बिग्यानिक जुग में पूगगी है, पण अठै हाल 'अस्सीकळी रै घाघरै' सूं । ई ऊपर नीं उठिया है । जे आधुनिक 'जेनरेशन' नै राजस्थांनी फिलमां अंगेजण सारू बाध्य करणौ है तौ साफ-सुथरी, मनोरंजक अर साहितिक फिलमां बणावण री जरूत है । क्यूंकै आज रै जुग में फिलमां ई भासा रौ अेक सबळौ 'मीडियो' है । राजस्थान सरकार अबार की सुविधावां री घोसणा ई करी ही राजस्थांनी फिलमां सारू । बस, उम्मीद आ ई राखां के राजस्थांनी में बणी-बणी फिलमां बणै, पण साफ-सुथरी ।

नौ बात सरू होई ही के आगूंच क्यूं ? सो जवाब औ ई के आगूंच नीं ई होवती तौ की फरक नीं पड़तौ क्यूंकै हरेक चीज री आपरी जागा असतित है । अर आगूंच री ई आपरी न्यारी-निरवाळौ असतित है । बिना किणी वाद सूं जुड़ियौ 'आगूंच' सगळां रौ है । सगळां नै ई 'आगूंच' रौ पूरौ-पूरौ मांन-सनमांन मिळसी । साथै ई, आप सगळां रो हेत-अपणास ई 'आगूंच' नै बरोबर मिळती रैसी ।

इणी उम्मीद रै साथै—

--मीठेश निरमोही

वो मांचा नै ठिरड़ नै वारै गळी में लिआयो। वारै अलबत तपत तो कम ही पण गडूरां अर गिडकड़ां री पूरी री पूरी दैण ही। वो लाठी सिरांणै राख'र आडो व्हैग्यो।



उण बरस असाढ उतरतो मज्झ हळोतियो व्हियो हो। सूनम (असाढ सुद नौमी) रै सै दिन इंदरराजा अरड़ाय नै पड़ची। दसम नै जमीन आली व्हैगी ही अर ग्यारस नै आयग्यो अगतो सो बारस रै दिन तारां थकां हळ खेतां में पूगा। वो ई आपरो हळ-संज लेय नै खेत पूगो तो पगां री भाळ माथै आयगी। कोई खेत रा खूणां में बाड़ तोड नै सेरी पाड़ दियो हो अर मांयनै बळद गाडियां अर हळां री गियाडी रा चइला मंड्या हा। देखतां ई उणनै जांण पड़गी के औ कांम मुकनियै रा। गो साल ई उणरी माजनो पाड़ियो हो के वो खेत में चइला नीं पाड़ै पण बवाड़ी तो इणीं'ज दी है। आज सिझ्यां रा उण री बातां है।

अर सिझ्यां रा रीस में तंबोळ व्हियोड़ो वो मुकना रै घरां पूगो उण वखत मुकनो बळदां नै चारो नीरतो हो।

वो जावतां ई पूछ्यो-"कांई रै मुकनिया ! म्हारै खेत री बाड़ तोड़नै चइलो थे पाड़ियो?'

"बाड़ तो लाबू काका म्हैं नीं तोड़ी। सेरी पैला इज कियोड़ी ही। चइला माथै म्हैं गियाड़ो जरूर खड़ियो।"

"पण क्यूं लेयग्यो गियाड़ी उठी होय नै ? खेत थारै बाप री है ? म्हैं थारी गई साल ई माजनो पाड़ियो के म्हारै खेत में होय नै हळ मत लिजाया कर। पण नकटा मिनख रै सरम कठै ? कदीम रा मारग सूं पोत-पोता रा खेतां में क्यूं नीं मरी ?"

"लाबू काका, पैलै हळोतियै रो मौको है। नुंवै दिन थोड़ी जबांन संभाल नै बोलो। इत्ती सीक बात वास्तै थांनै इत्तरो नाराज नीं व्हैणो चाइजै पुगता आदमी हो, आ बात थे ई आछी तरियां जांणो के कदीम रा मारग में उन्हाळा बायरा सूं टणको घोरो चढग्यो है। इण वास्तै इज ऊपरलां खेतां

सूगला री ! वौ डांगड़ी संभाई जितरै तौ कुत्तै ठेका दिया । पंण च्या:रू मेर ग्रेक सूगली गिव फैनगी । कुतिया रै सरीर में ग्रंगांई सड़ीज नै रसी पड़गी ही । मूगल वाड़ो करतौ फिरै । वौ नाक पकड़ लियौ । वौ खासी ताळ बैठो बैठो थाकग्यौ तौ पाछौ सूयग्यौ ।

........ग्रर थोड़ाक दिनां पछै मुकनियौ सांचाणी बखड़ी में ग्रायग्यौ हो । पण वातड़ी वणतां–वणतां फेर विगड़गी । मुकनै रै ग्रेक गाय ही ग्रव्वल रुळियार । वां मौकौ पातां ईं वाड़ा में सूं ठेका देय जावती ग्रर रात भर खेतां कानीं चर नै दिनूंगा पैली पाछी ठाया माथै पूग जावती । उण दिन वौ तारौ उग्यां वाढियोड़ी वाजरी री बाथां भेळी करण नै खेत में पूगौ ज्यूं तौ ग्रागै ग्वार री खळी माथै मुकनै री रुळियार गावड़ी त्यार । सूखां-खणांक पाकोड़ा ग्वार नै गावड़ी विखेर नै गघा-गाहणौ कर नांख्यौ । खायौ उण सूं वेसी विगाड़ कियौ । ग्रणूंतौ नुकसांण देख'र उणरै ग्रंग-ग्रंग में भाळ छूटगी । हाथ में उणरै तारां सूं गंठियोड़ी सांगो-पांग लाठी ही, सो भाल नै मचकाई जोर सूं तौ वडंद करतो ग्रेक सींग टूटग्यौ ग्रर खेजड़ी री खोखौ लटकै ज्यूं ग्रेक कांनी लटकग्यौ ।

ग्रबकाळै गांव में इज नीं पण पूरा चौखाळा में इण वात री चरचा व्ही......रांम-रांम ! गऊ माता पूजनीक गिणीजै, ग्रर यूं देखौ तौ गूंगी जिनावर, समझ व्है तौ खेत में जावै इज क्यूं ? उणरी सींग तोड़ नाखणौ सफा नाजोगापणौ ।

मिनखां रै मूंडा ग्राडो हाथ दिरीजै कोनीं । जितरा मूंडा उत्तरी वातां सुण-सुण नै उणरो माथौ फिरग्यौ । ऊपर सूं मुकनै न्याव पंचायत में दावौ फेर वत्ताई सूं करदियौ ।

उण दिन सूं वौ पक्की तेवड़ली के भलांई घर वरवाद व्हौ पर मुकनियै री वट तौ काढणौ ।

◆ ◆ ◆

......उधवजी करमां री गत न्यारी
मूरख राजा राज करत है
पिंडत फिरत भिखारी...उधवजी
वेस्या ग्रोढै साल –दूसाला
पतिव्रता फिरै उघाड़ी....उधवजी

उण नैं लखायो के उणरो पिंजर सफा ढीलो पड़ग्यो है काया में अंग ई गाढ नीं अर गाढ व्हेतो ई कठै सूं? घर में अंगांई थाकेलो अर खुराक में कीं कस नीं।

छोकरा दोन्यूं आपसरी में लड़-भिड़ नैं न्यारा व्हैग्या। घर में घाटो आय जावै तद वीं सूं टंटा पैदा व्है। यूं सुखी मुकनो ई कोनीं हो वो ई सफा बरबाद व्हेग्यो हो। पण बरड़ी वळी तोई हाल बट गयो कोनीं।

............सहो वात आ है के मुकनो चावै तो अबै ई राजीपो बैठ सकै.........अर अबै राजीपै में इज सार है...........यूं भगडता रैवां तो तीन जनम ई इण मुकदमाबाजी रो तो छेह आवै कोनीं। इण वासतै खैर आज री पेसी तो करवाणीज है। पण अबै भाई सैण नैं बीच में नांख नैं राजीपै री कोसिस करणी पड़सी।

वो थैलो खांधै में लटकाय नैं वकील रै घर कांनी व्हीर व्हियो अर चालतो-चालतो सोचण लाग्यो, म्हूं उण दिन उण जरासीक बात माथै भगड़ो नीं करतो तो औ तिरणा सूं भारत क्यूं बणतो?



कोनीं लेवै ना। आज सूं गांव री ठाकर म्हैं नीं गांव रा सगळा थे लोग हो। म्हैं आप सगळां रै सांमी हाथ पांणी लेवूं के आज सूं दारू ई कोनीं पीवूंलो, दूजां री बैन-बेटियां नै आपरी बैन-बेटियां सूं वत्ती मानूंलो। लाटा लाटणा तो बरसां सूं ई बंद है। आज सूं रावळी पोळ रै आगै सूं मिनख उघाड़ै माथै निकळ सकैला, लुगायां पगरख्या पैर'र निकळ सकैला अर म्हांरी ठकुराणियां जिकी आज लग परदै में रैय'र खेतां में कांम कर रह्यी ही आज सूं वांनै ई खावण-कमावण अर जीवण री पूरी-पूरी सुतन्तरता।

ठाकरां री आं सगळी बातां माथै गांव रा बिचिया नै ई विसवास नीं व्है रह्यो हो। सगळा मिनखां में खळबळी मचगी के कठैई अैड़ी बायरियो तो नीं व्हैगो के सगला रा कांन बोळा व्हेग्या, के बुधी-बल कठैई भटकगी है या के म्हैं सगळा रा सगला भेळा व्हेय'र अैड़ै ठाकर री कळपणा कर रह्या हां ?

पण घणी वेळा वीत्यां सगळा नै विसवास करणो पड़ियो के अै ठाकरसा ई गांव रै बीचै सुखा सूं माफी मांगवा ऊभा हा।

कीं कुचमादी अर नूंवी पिढी रा मिनख माय-मांय ई कैय रह्या हा के ठाकर सा रै माफी मांगण सूं फेर कीं दूजी चारो ई नीं रह्यो है के वै अर वां री परवार जेळ जावण सूं बच सकै।

ठाकर अर वां रै परवार री करतूतां वां लोगां सूं छांनी कोनी ही।

वै सगळा बातां नै दोराय रह्या हा-सुखारै साथै लारलै दिना रावळी पोळ आगै उघाड़ै माथै जावण रै कारणै मारपीट करीजी अर जे वीं री हाथ ठाकरां रै सांमी ऊठियो तो वीं रा परवा नै जीवतै जी होमण सारू वीं री गवाड़ी में ई लाय लगा दी ही। बापड़ै री पच्चीस मण धांन अर दो बकरियां बळ मरी वत्ताई में। लाय री लपटां नै बुझावण आलो अेक दो भला मिनख हीमत कर आज सुखा रै कांनी बोलण लाग्या, ठाकरसा, आप तो माफी मांग'र पिंड छुड़ालेस्यो पण थांनै ठा व्हेणी चाइजै के सुखा अर वीं रा टाबरां नै म्हां लोग कियां लाय री लपटां सूं निकाळिया हा। अबै आपरो ओ इत्याचार घणा दिना लग नीं चलसी। कीं मिनख वां नै हाथ पकड़ पकड़'र बैठाय रह्या हा। पण वां ठाकरां रो ओ इत्याचार इण परगनै में चावो व्हैगो हो।

ठाकरसा ई घटणा नै लेय'र पांच हजार रिपिया थांणैदार नै देय

 हाळ ताई

दिनां रै वाद गांव री सरतां मुजब कचौड़ी में ई वीं नै राजीपौ करणौ पड़्यौ।



राजीपै रै दो-तीन महीणां वीत्यां पछै गांव रै गांव भांवी रै वेटै री व्याव व्हियौ। गांव भांवी रौ वेटौ भणियौ-लिखियौ हौ, वीं रै लुगाई ई भणी-पढ़ी मिळी। सताजोग वा अेक दिन रावळी पोळ रै आगै सूं पगरख्या पैर'र निकळ रही ही, रावळी पोळ आगै गांव नाईं रै साथै ऊभा ठाकरसा नाई रै इसारै सूं ईं विण गांव भांवी रै वेटै री वहू रौ माजनौ पाड़्या अर साथै ओ हुकम ई के आज सूं रावळी पोळ रै सामी सूं निकळणौ व्है तौ पगरख्या हाथ में लियां ईं निकळ सकै। अर रावळी पोळ री परम्परावां कायम रहसी।

गांव भांवी रै वेटै री नूंवी बींनणी रै साथै करयै गयै सलूक री खवर गांव रै खुणा खुणा—पूगगी। कीं मिनख-लुगाईयां ठाकरां री हाजरी वजा रह्या हा तौ कीं नूंवी पीढी रा मिनख लुगायां वां रौ विरोध कर रह्या हा।

गांव में वात घणी चावी व्ही तौ गांव भांवी रै वेटै री वहू दूजै ई दिन पगरख्यां पैरियां रावळी पोळ रै आगै सूं उघाड़ै घूंघटै निकळवा लागी।

ठाकरसा रा कंवर पोळ आगै निकळती नै देख रहिया हा अर आ कैवता के भांवण थारी हिम्मत के रावळै रै वरजतांई थूं पगरख्यां पैर'र निकळ रही है.... कैवता-कैवता वै आगै सूं वारै व्हेग्या अर गाळियां निकालता वीं री पुणची पकड़'र वीं नै रावळी पोळ रै अेकांनी लेजा'र जोर जवरदस्ती करग्या। ईंण दुराचार नै लेया'र गांव री पंचायत मंडी तौ फैसलौ दियौ के, "गांव भांवी जैड़ा जुम्मैदार मिनख रै वेटै री वहू पोळ आगै पगरख्यां पैर'र निकळी, जिण सूं आ वात वणी। नीं तौ नीं वणती। कंवर सा री ई में कीं दोस कोनीं गांव भांवी रै वेटै नै दो मण धांन कवूतरां नै नांखणौ पड़सी।

गांव भांवी रै वेटै रै कांनां खवर पूगी तौ झाळ—झाळ ऊठगी अर फैसलै नै ना करगी, पण वीं रौ वाप रावळै री वाजरी खाय रह्यौ हौ गळती मानता थकां हामळ भरगौ।

वात रावळै अर गांव भांवी रै इज्जत री वणगी ही। कीं दिनां लग वात नै खींच-ताण में विसरग्या। पण रावळै सूं सामंतवाद री वू हाल तांईं

 हाल तांईं

कहांणी

बिसाहारयौ



मनोहर सिंघ राठौड़

सारां जड़ी ओढणी हवा में फरर-फरर उड़वा लाग रैयी ही। बळदां रै गळै बंध्यां घूघरां री रुण-झुण-रुण-झुण साथै अेक गाडी मारग बगै ही। आ रुण-झुण आज री नीं लारला तीस बरसां सूं बरोबर हो रह्यी ही। कदै किणीं जागा आ गाडी दस-बीस दिनां टपरी रौ रूप ले लेवै, कदै लूंठौ गांव धकै आयां गाडी झूंपड़ी बण ज्यावै। गाडी रै चौफेर जद-जद लिछमी आपरा हाथां सूं डोली काढ आंगणौ नींपै, तद औ छोटो घर ऊंडी नींव री लखावै। पण गाडी रै नींव कठै? नीवां तौ काची-पाकी धकै आंवती सड़कां के गांव-गांव रा गुवाड़।

'रेमती' लुवार कणा बळदां रै ठोकर अड़ावै, कणा टिचकारै, नै कणा पुचकारै। लिछमी ऊगतै 'सूरज' धकै अवतै गांव री उडीक में ऊकड़ू बैठै कणा गोडी ढळै। बळदां री रुण-झुण भेळी अेक झीणी सुधरी सुर गाडी रै डावै छेड़ै री गूदड़ी सूं सुणीजै। रेमती छोरी लालूड़ी नै बरजती कैवण लाग्यौ "छोरी! बोलणी बंद कर अे! सावळ सुणवा दै रांड! मोरिया बोलण'रै भेळौ दूजौ रांम भेळौ सुणीजै।"

लिछमी सावळ बैठगी—"छोरी! ऊतावळी सी अेक मटकियौ पांणी रौ ल्याय न्हाकी। थारौ बापू बळदां नै चारौ न्हाकसी, हथोड़ी सांभसी, आपां चाय उकाळ लेवां—आपां आवै हा तद म्हैं बापू चौधरण रै घरै गयी। वीं रै मांय आठ आंना बाकी हा। चौधरण घणी बड़ी हेली में रैवै, पण आपां रै व्हीर होवण

रेमतौ गाडी ने चोड़ै चौगांन में ढाब दी। आज ई कांई रेमतौ मिनख जमारौ लियौ जकै दिन सू आपरौ घर चौड़ै-चौगांन नै समझ्यौ। अबै कुण नै ओळमौ ? क्यां री मन में गळगळी होवणी ?

पीपळ हेठै ऊभा लोग देखबौ करिया। नेताजी आप री जीत में खंखारौ करता बोल्या-"थे लुवार नै पैली कोनीं वरज्यौ ? मिंदर रै साव सांमी ढ्यै हौ। लोग बिन बोल्यां ऊभा हा। नेताजी रै गयां पछै बतळाया-"ई रै कठै अड़ै ही ? बापड़ै गरीब नै अेक पसवाड़ै भींत री स्हारौ मिळ ज्यातौ। आपां बोल्या कोनीं। फेर कठैई उळभाय दै, ई री कांई भरोसौ ? करै जियां करणद्यौ।"

दूजौ बोल्यौ—जांणा ई भळै आदमी नै। चुणाव पंचायतां रा होवौ, भलांई कोई दूजा, भैर पारटी जीतौ नै भलांई हौरौ ओ जीप में ढीठियौ ल्हादै। इण रीं नीं तौ पारटी अर नीं ई ठांव ठीकांणौ। कदै कोई री काट करै, कदै कोई री। लोगां रा कांम करावे तद चौखी चळण लागै। आपां नै कीं कांम करवाणौ है नीं तौ अबार ई टीडी खां री पालिस उतार देतौ।"

लोग बतळायां गया। दिन ऊगै आज लुवार री वात जणै-जणै रै मूंडै चालण लागी। आं दिनां खेती री कीं कांम नीं ही। रेमतौ बळदां नै चारौ न्हाखयौ पछै लो-लकड़ सांभळ फों-फों कर वाला चूल्हा नै चलाय दियौ। लालूड़ी पांणी लियाई। चाय री चुसक्यां लेवण लागी।

अेक जणौ स्याणफ बिखेरी-"अै ऊतावळा आपरौ कांम सरू कर लेवै, घणां ऊतावळा होवै। देखौ ! चाय पीवण लाग्या। पेट में कीं गेरियौ होवै ने तातै पांणी सू काळजौ बाळै, पण चाय री सुवाद सगळां नै पड़ग्यौ।

आं लोगां नै कांई ठा-बापड़ै रेमतै लारला दिन कियां काढ्या ? कनै कांई कोनीं अेक मुरदी गाय सगळै दिन ढोकां नै तरसै। दांतळी ने चीपटा त्यार होयां बिना लिछमी दूजां रै बारणै दो रोटी री आटौ किण मूंडां सूं मांगै ? अेक-दो चीज त्यार होयां पछै आंगणै बीचै रखनै मोल-भाव करतां-करतां कोई नीं खरीदै, तद लिछमी हुंस्यारगी सूं कैवै—"म्हानै दो रोटी री आटौ घालौ मायतां ! म्हैं हाल ई डेरा दिया हां, दिन में कीं विक्यां ई धांन री बापरत होई। थां ई कांम कराय लीज्यौ।"

अेक-दो दिनां में कस्सी, दांतळी, चालणां ने चींपटां विज्यां धांन री

जे भी माड्यांणी छेड़-छाड़ करी तौ ताता लो रा खिस्लां सूं माथौ भांग राळ्ंळा।

"लालूड़ी रा बापू ! थे अणूता वैम करौ। थां के सुभाव रै कांई' व्हैगौ ? गैली वातां क्यूं सोच्या करौ ?" कैवण में राजी-राजी कैय दियौ, पण मन में लालूड़ी री मां खुद नेताजी सूं घणी डरती।

इण गांव में श्रायी साल श्रावै वा रांमलीला पारटी, दसरावै सूं पैली श्रायगी। गांव रै वारै तंबू लगा दियौ। रोजीना जाय-जाय दोन्यूं मां-वेटी सगळी रांमलीला देखी।

इण रांमलीला रा चाव में घणौ कांम श्रदखळौ रैयग्यौ। लालूड़ी री मां श्राखै दिन पूरै जोर सूं कांम करै लागी। दिन श्रांथतां साव थाक लोथ व्है ज्यावती। रोटी खाय,पड़तां साथ नौ गाडा नींद श्राय पड़ती।

रांमलीला पछै सांतरा-सांतरा ख्याल होवण सरु होया। श्रेक दिन राजा भरतरी री ख्याल हो। लालूड़ी मां नै घणी मनाई–मां ! श्रौ ख्याल देखलै, चाल-चालां ! मां काठी थाक्कोड़ी ही। नट्या गई, पछै वोली—'थूं देख्या ! वेगी श्रा ज्याई।" लालूड़ी घणी राजी होई।

श्रेकली जांवण री सोच डरी पछै सोच्यौ - "श्रत्ता दिन मां-वेटी रांमलीला देखवा जाती, जणां घणीं लुगायां री साथ मिळती श्राज ई मिळ ज्याई।"

लालूड़ी जा पूगी। नाटक सरू होयौ। दुख रा दरसाव में घणीं जण्यां श्रांसू ढळकावण लागी। नेताजी फिर-घिर पड़ता श्रांसुवां नै देखै हा श्रर लोगां रा रिपियां री जै बुलावै हा। नाटक श्राखरी ही। लोगां रै कैवण सूं नाटक पछै, नाच-गांणा सरू होया। वीच-वीच में लोग रांमलीला पारटी नै गात्रा, वांन श्रर रिपिया देवै हा।

लालूड़ी सोच्यौ-श्राज श्रापां रै साथै जावै जकी लुगायां कोई कोनीं श्राई। मोड़ौ होवै श्रवै घरां चालणौ ठीक। ऊतावळी-ऊतावळी व्हीर होयगी। नेताजी री तेज निजरां पैली देख चुकी के लालूड़ी श्रेकली श्राई है। लारै-रै लारै व्हीर होयग्या। थोड़ी ताळ में लालूड़ी नैड़ै जाय पूगा। लालूड़ी पग धीमा कर लिया। सोच्यौ....नेताजी नै श्रागै जावण दां। वीं नै कांई ठा ही के नेताजी

 दिसाहारचौ

कांई ? दिन ऊगयां सुणजी बोई आप आपरा मन आई बातां विजोसी थूं मुण–सुण कायौ होय जासी। दूजी बात, ईं नेता रौ कांई भरोसौ-कोई दूजौ जाळ फैलाय उळजाय देवै। छोरी री इज्जत रौ सवाल न्यारौ। थूं भोळौ पंछी मिनख, मांमजौ थांणै पूग्यां ठा नीं कियां सळटै ?

रेमतौ पुळिस री वरदी सूं डर्‌या करतौ। निसकारौ न्हाक बोल्यौ "मायतां थां रै आसरै पड़ियौ हौ, अबै दूजौ गांव भाळणौ पड़सी।" झटौ-झट पूर-गूदड़ा लाद बळद जोत्या। घणां में पइसा बाकी रैयग्या।

मां-बेटी बगनी होयोड़ी गाडी में चढगी। रेमतौ अेकर गरज्यौ-"रांड ! थनै कित्ती बरजी, कांई ख्याल देवै ही ? म्हारी खाल उधड़वायदी। सगळै गांव में चोरी री लोपी लाग्यौ।" पछै दूखता डील माथै हाथ फेरतौ ठौर होयग्यौ।

रांमलीला पारटी आपरा तंवू स्हारै सूती ही। स्हारै सूं निकळतां रेमतै नै वां सगळां माथै रीस आयी। सांस धीमी पड़गी। मन में सोच्यौ-आं नालायकां रै कारण आ गत बणी, गांव छूट्यौ। लिछमी नीची धूण घाल्यां बैठी ही। लालूड़ी ऊंची होय देखण लागी सांमै रांमलीला रौ मसखरौ अेक पसवाड़ै सूती ही। मसखरौ दीखतांई वा सगळी बात भूलगी अर वीं मसखरै री अेक-अेक बात याद करी तौ हंसी आयी। मां-बाप सूं डरती चुप होय नस नीची करली।

बळद घर मजलां, घर कूचां चाल्या जावै हा। गाडी री रुण-झुण सरू होयगी। रेमतौ अेक गांव छोड़ दूजै गांव री मारग झट पकड़ लेवतौ। आज सगळौ डील पाकयोड़ा गूमड़ा री जियां कुळै ही। च्यारूं कांनी घोर अंधारी रीजै ही। रेमतै नै बळदां रै गळै बंध्या घूघरा अर गाडी री रुण-झुण घणी आंतरी सुणै ही। गाडी माथै बैठा तीनूं जीव बिन बोल्यां ऊंडा सोच में भेळा हाया बैठ्या। रेमतौ तीस बरसा में पैली वार सोचण लाग्यौ। गाडी नै कुण सी दिसां में ले ज्यावां। अबै कठी नै चालां ?



इण मतवाळ परबारी
गांवेती गोरियां रा
उरोज घट ई
कदै-कदास
वूरीयोड़ै मतीरै री मिठास ज्यूं
सीता री उमंग नै रसांण देवै।

पण हमै-
इण ऊजळै दूध रै ई
लागण वाळी है रंग री रूमड़ी
सड़क-सड़क सूं तीजै है नाड़ां
इकळास धरती री धुराल ढाळां सूं,
सैर-सैर वैठी स्यारां सारै है
करसणिय मरदां रै मोब रौ सार।

हम अे गांरियां ई
गिणियां दिनां में दुधारु होवणी है
सपणीजतै सैर नैं सूंघतै
गोगै री गरज मुजब
दपटियोड़ी दाखां री खीर सारू।

कुरियोड़ा कागदिया

(रिपिया रा नोट)

अे ! रूपै रै मिस
रिजक री आब अवेरणिया
कुरियोड़ा कागदिया
सासता कांम नै धरम रा धांम थां सूं सधै
पण हमै थारी आबरू
रात रा वधै ने दिन रा घटै।

पूरी पीढी तप तापियौ
तद
कठै-कठै आसोजां रा तावड़िया
फाल आंणियौ,
उण फाल आगै वसंत री मींजर
हमेस मोळी रह्यी
झोळां री झीणी झकोर
माह में ई आवती रह्यी ।

भारत री संपत रौ सासतौ नग
सुखलीणी लाजाळू रै नखां सूं
नव रस रास रचायोड़ी
नवग्रही कळाई केवटती रह्यी,
साळू पर रुत रै कलावै
री रीझ
जाझै जतनां चढ़ती रह्यी ।

जुग वीत्या
पण उण जड़ाव री जोवरली ओप
आज दिन तांई री परणेतण
रै डील में
ओळखांण काढै ।

स्वयंवर नीं सही
'वर नै खासै धीजै सूं चंवरी चाढै
पण हमै औ धीजौ धड़कतौ लागै ।



ले आव पांच पइसा रौ लूण
च्यार आंना रौ तेल
अर उतरी ई मिरचां
अर पावलै रा गुळ किरचा

अर हां–
आंना आठ री चाय-पत्तो सक्कर
भूलजै मती वीरा,
अर खूंजै सूं रम जावै परसेत्रै री
पाई/कमाई
छोरौ नागौ-धड़ंग
न्हाटै वैन रै सेलंग/दुकांन कांनो
आवै पाछौ-
हाथां में कीं पुड़किया थांम
मां चूल्है मांय
जगावै आंच
जतावै सांच/के सगळी वस्ती मांय
धुंऔ घणोई उठै अर
सगळां रा काळजियां रोजीना धुकै।

गरीव री घांटी हेटी व्हैती जावै
ज्यूं उणरी छोरी
मोटी व्हैती जावै
वो इण वस्ती रा
कीं लोफरां रा
अै सुणतांई वोल....
औ वरजूड़ी री वाप ....!

याद करो.......
म्हारी मां, म्हनै
चींपियै सूं मारती
थांरी भेंट नै
भाटां सूं भांगती

अर-थे
फेरूं ईं नुंवी कचकोळियां लाय'र
कंचन कर देवता
वातरौ म्यांनौ साफ है
घणौ चौड़ौ कोनीं
सांमली दुकांन तांईं रौ हिसाब है

इयां ईं वरजूड़ी रा
दिन-रात मैंगा व्हेग्या है
पोलकै अर घाघरै रै मोल सूं
दुकांनदार री निजरां रै तोल सूं
अर वौ घणौ ध्यांन देवै
सपनां री पुड़कियां नै
पैली सूं मोटी वांधै
इणी तरां अै कचकोळियां किणीं रा-
सपनां वणगी है

ठबको ती लागैलाई
किरच-किरच व्है जासी
अै सगळी कचकोळियां
धूड़ मांय जासी आपांरी माथौ
अर किणी रा सपनां
पण जमांनौ जवांनी नै
घणी व्हैगी पिछांणै/दूतकारै
आ कुण सोचै/कुण जांणै ?
कैवती जावै वीं री मां

दो कवितावां अर हाइकू

● सांवर दइया

सांमै मंड्यां पछै

थर-थर कांपै हौ-रूं रूं
लुकण खातर
ना तौ ही रजाई
ना लुगाई
सांमै सीनौ तांण्या ऊभौ हौ सीयाळौ

कंपकंपी में ई किड़किड़ी खायी
लुकण री छोड़
साथळ ठोक
सांमै मंड्यौ
सीयां मरतौ धूजण लाग्यौ सीयाळौ ।

घांणी में जुत्यां पछै

ऊमर रै जादूगरियै
केसां रै कर नांखी
चांदी री कळी
पांण आयोड़ै डील माथै
पड़ग्या सळ
ढीला हुय'र लटकग्या
डूंगरिया उठाव
इण घांणी में जुत्यां पछै
कुण जांणै किसी गळी
नाठग्या उमाव

रसो कूड़ कट्यो
बीच सड़क साच
कवीर कथ्यो !

सांमै स्सै साचा
कदेई ओळै-छांनै
परखो म्हांनै !

वारै ऊजळा
साथै रैयां ठा पड़ी
मांय सूं मैला

सगळा काज
विगाड़ै का सुधारै
रोटी रौ राज !

गंगा किनारै
तिरसा मरग्या म्हे
थांरै राज में !

दाव्यां नीं दवै
धरती फाड़ ऊगै
वागी व्है बीज !

लटकावता
खुद लटक्योड़ा है
लाई 'हैंगर' !

लघुकथावां

सैधरमी

● जगदीश कश्यप

वो म्हारी कांनी अेहसांण मंद निजरां सूं देखतौ बोल्यौ—"साब, आप बीच-बचाव नीं करता तो आज आ भीड़ म्हारो कचूमर नीकाळ लेवती। आप सोचौ—म्हैं बाळ-बच्चां दार आदमी भलां कियां जेब काट सकूं ?" अर आपरै होठां लाग्योड़ै रगत नै आंगळी सूं पूंछतां थकां कैवण लाग्यो—"कांई साब ! म्हारै साथै अेक कप चाय पीस्यौ ? म्हैं विण री विणती नै टाळ नीं सकियो।"

चाय पीवण रै बगत वो बतायो के 'वीं री लुगाई असफळता घणी पतिवरता है। विणरी तीनूं छोकरियां-'कुंठा', 'निरासा', 'भग्नासा' जवांन व्हैगी अर भाग फूटोड़ा के सोळवीं तांई भणाई-लिखाई रै बाद ई वीं रो 'दुरभाग्य' नांवरो छोरो अणकमाऊ है। म्हांनै अचरज व्हियो के वो हू····ब····हू····म्हारी इज कहांणी सुणाय रैयो हो।

झटकौ

● डॉ० कमल चोपड़ा

"म्हनै पाछी सत्ता में आवणी ई है।" "बापजी, आप इज आवोला आगलीवार।" "बातां सूं नीं···कीं करणो है।" "कांई, मांई...बाप ?" "मास्टर सतनारायण नै सरगलोक पुगाय दो····।" "पण मालकां,····वो बापड़ो···· गरीब···· पांच-पांच मेना टाबरां रो बाप। वो····बेकसूर···· वो किणी पारटी रो ई तो नीं।"

"इणीं वास्तै के वो बेकसूर, सरीफ, ईमांनदार गरीब, मिनख है ने किणीं पारटी रो नीं····अर नीं ई सत्ता आळी पारटी रो है।" "पण क्यूं ?" "इण बापड़ै, बेकसूरवार अर ईमांनदार गरीब मिनख रै कतल व्हिया घणो हाहाकार मचसी अर इण तरां मौजूदा व्यवस्था रै फेल व्हैणै अर जुलम करणै रो दरजो दियो जासी····"

"विण री मौत रै वास्तै आपां प्रदरसण करस्यां....।"

कुदड़का मारता फिरता-आज मंडोर तो काले कायलांएं अर दिन भर कूटता रै'ता तास। पछै पास हुवै तो कीकर? फस्ट-ईयर रा छै माही इमत्यांन में अंगरेजी री परचो कीं निसेस बिगड़ियो। जरै आप लड़ाई डौड अकल! आ तो हजरत नै ठा इज ही के कौपियां अंगरेजी पढावणिया प्रौफेसर सुक्ला जी कनै गई है अर हाल वां रा कमरा री अलमारी में पड़ी है। उणीं दिन मौको देख' र आप सुक्ला जी रै कमरै में बड़' र अेकै ढकियोड़ी बारी री चिटकणियां ऊंची चढाय' र आयगा। सुक्ला जी घंटी खतम व्हेतांई कमरा री ताळी दे'र रोज मुजब व्हीर व्हेगा। छोरा भी सारा खेल रा मैदांन में पूग गिया। जद थोड़ी झुट-पुटी हुवो तो हजरत कमरा री बारी रै धक्को मार नै कूदगा मांयै कांनी। खोली अलमारी नै काडी आपरी कौपी नै लागा किताब री मदद सूं उत्तर सुधारण नै। वै जांणियो के सुक्लां जी तो गया घरै पण देवजोग सूं वै 'प्रिंसिपल' रा दपतर मांयै ई बैठा हा नै कोई जरूरी फाइल लेवण नै उणीं वगत पाछा आया कमरा कांनी। आडो खोलतांई देखै तो मांयै हजरत फटाफट कौपियां रै बंडल में आप री कौपी घुसेड़ रैया है! आडो खुलतो देख नै चोर बावजी जल्दी घणी ई करी पण कौपियां पाछी धरी जित्तै तो पकड़ीजगा! 'प्रौफेसर' साव हाका-चाक! ने चोर बावजी री हालत माड़ी! झट देती रा पड़िया सुक्ला जी रै पगां में नै लागा गिड़गिड़ाय'र माफी मांगण नै! पण सुक्ला जी अैड़ा खतरनाक आदमी नैं कीकर माफ करता? आजकाल री छोरा-रोळ थोड़ै ई ही उण जमांनै में? वै तो लेगिया पकड़ बाहूड़ो नै प्रिंसिपल कनै अर चोर बावजी अेक बरस रै वास्तै गया गत्तै सूं! अैड़ा फोड़ा पड़िया डौड हुंसियारी सूं!

५

अेक किस्सो आजादी रै बाद रो भी सुणावो। वां दिनां, म्हैं अेक कौलेज में लेक्चरार हो। आजादी आतां ही कौलेजां में छोरां री यूनियनां बणणी ही ने वां रा हौसला बुलंद हुवण लाग गिया हा। ई रै सागै ई दादागिरी रा अंकुवा भी फूटण लागा। वां दिनां सैकंड ईयर में अेक डौड हुंसियार पढतो हो, जिण रै मन में आ बात घर करियोड़ी ही के प्रौफेसरां सूं कदैई दबणो नीं। जो दबै वीं नै वै बत्तो दबाया करै है। उत्तर प्रदेस सूं दादागिरी रा अणुभव ले' र आयोड़ो ठावी रकम हो। आप अठै किणीं दपतर में नौकरी भी करता हा अर आपरी अेकाअेक आंख नै काळा चस्मा में छिपायां मगळै रौब झाड़ता फिरता। सालाना इमत्यांन में अेकर' र म्हारी ड्यूटी

दूजै दिन म्हां री पारटी अेक डूंगो लेय नै डल झील में घूमण न निकळी। अेक केसर री वौपारी सिकारा में आयौ अर केसर दिखावण लागौ। म्हां माइलैंन बाईसा नै आगै कर दिया। वै आप रा हाथ सूं वीं रै डब्बा मांय सूं केसर री पांखड़िया काड.नै आप रा ढंग सूं टैस्ट कर नै देखी। वौ भी जांच कर नै दिखाई तौ वौ तीन चार वार वां पांखड़ियां नै पांणी में घोळ-घोळ'र अेक म्मान मार्थ असल केसरिया रंग चढा'र दिखा दियौ। बाईसा केसर असली होवण री फतवौ दे दियौ। भाव-ताव हुवण लागा अर वौपारी पच्चीस रिपिया तोळा सूं गुड़ती-गुड़ती चवदा रिपिया तोळा तक आय पूगौ। जद म्हैं अैम्पोरियम रै भाव सूं इतरै फरक री कारण पूछियौ तौ वौ बोलियौ म्हांरा तौ खुद रा खेत है सा, ने आप लोग सांवठी केसर खरीदोला जिण सूं नीचा भाव पर भी पोसा जावै। सारी छायावां मिळ'र कोई ४०-५० तोळा केसर खरीद ली। म्हैं वी वातावरण सूं प्रभावित हूय'र दो तोळा केसर भळै लेली। क्यूं के अेकाध मुलाकाती भी मंगाई ही पण घरै आयां पछै कांम लेय'र देखी तौ दूध में नीं तौ कोई रंग आयौ, नै नीं कोई सौरम! रंगता डोरा रा टुकड़ा व्हे ज्यूं वा तौ दिखती ही रैगी औ फळ मिळियौ डोड हुंसियारां रै फैर में पड़ण रौ

यूं देखौ तौ भूलिया-भटकिया सगळाई कदैई न कदैई डौड हुंसियारी रै फैर में पड़ै इज। अेकवार म्हांई डौड हुंसियारी दिखावण सूं को चूकिया नीं। कास्मीर सूं पाछा आवती वेळा कंसेसन रै कारण म्हांनै अम्रतसर व्हेनै आवण री इजाजत बाबू लोगां दी कोनीं क्यूं के वौ मारग लंबौ पड़ै। ईं सूं म्हांनै पठांन कोट सूं कास्मीर मेल में बैठणौ पड़ियौ। वीं गाड़ी मांयै विना रिजरवेसन री तीजै दरजै री डब्बौ सिरफ अेक ही लागतौ हौ, जौ में देखौ तौ आगै आदमी, लारै आदमी, बैठा आदमी, ऊभा आदमी, नीचै आदमी, ऊपर आदमी, आदमी माथै आदमी ने आदमी माथै आदमी! हमै घसां तौ कठै? अठीनै चालीसेक छोरियां न्यारी साथै ही! वां नै तौ कीकर ही गाड़ी जिनांनै डब्बै में, पण म्हांरा रांम तौ सूता जावणौ चावता हा, सो जगा कठै? इतरा में म्हनै सारा सूं आगला डब्बा में भीड़ भी कम दीखी अर अेक ऊपर ली वरथ भी खाली निजर आई। डब्बौ हौ पठांनकोट सूं कालका री ने म्हांनै उतरणौ हौ अम्बालै क्यूं के भाखरा-नांगल जावण री प्रोग्रांम हौ। म्हैं देखियौ जमियौ कांम। लगायौ विस्तर ईं में, अम्बाला में उतर जावांला तद अेक कुळी कैयौ के औ डब्बौ जालंधर में ईं कट जासी अर आगै दूजी

बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघियां

— मीठेश निरमोही

संग्रै रा कवी डॉ० नारायणसिंघ भाटी आधुनिक जुग में राजस्थांनी रा अैड़ा आगीवांण कवी, जिणां री काव्य जड़ां जठै राजस्थांन री लोक संस्क्रती रै मिरै तत्वां सूं पोखीजी, उठै ई भारत रा घणमूंगा अेनांण ई उण में फूटता दीसै। वां री इण काव्य क्रती में अठारी धरती, प्रक्रती अर नारी सौंदर्य री लैरां वाळी लोच सूं लूम-झूम व्हियोड़ा सिणगारिक गीत वां रै जीवण रै अणुभवां रै साथै लूंठै रूप में अरथ देवता कैवै—

थांरै नींदाळू नैणां री नेह/म्हांरै कोयां री जोगण जोतड़ी/विन वैणां रैणां री उडीक/काजळिया पथरणां में उठ-उठ औजकै/विलखी पिणघट पीळोड़ै परभात—उमावां रा ठाला घट ऊंचाया नीसरै। (उगणीस)

विन बादळ म्हे नाच्या मोर ज्यूं/थे मोरणी वण आया/म्हांरै नैणां नेह भर्‌यो/थे चुग-चुग मन विलमाया/डीगा डागळा मिळै न पाछा/ वे कळाव मन भाया। (सात)

इण गीतां में कवी पुरांणी परम्परावां नै आपरै हियै में पचाय आज रै जुग री जमीं माथै सासती अेक नूंवी परम्परा अपणाई है। नूंवी ढळत रै इण गीतां री प्रस्ठ भोमका सिणगारिक है, वठै ई जीवण रा उतार चढाव आप-आपरी जागा व्यक्त व्हिया है। साथै ई सौन्दय बोध, प्रेम अर प्रक्रती राजस्थांनी संस्क्रती रै ओळै-दोळै आं तरां सूं मिळ'र परगट व्ही के वौत वार तौ औ कैवणौ मुसकिल व्है जावै के कवी प्रेम री वखांण करै के प्रक्रती री अैड़ी 'संसलिस्ट' वरणन राजस्थांनी में ई कांई हिन्दी में ई कम देखण में मिळै—

उगूणी मधवा मैड़ी में गींधीं रम रे वयार/धण रै उजळायै चेरै जांणै/झीणी-झीणी मुलमुलियो रूमाल/ लुळतां झड़गी मोतीड़ां री माळ/सुहाग सिंदूरै किरणाई टाळ/अलक आसरै ऊभी हुई धण/उसा सळवट दुपटी संभाळ। (छाईस)

गवरल नथ रै मोती गै निजारो/परभाते री झीणी-झीणी पीर/ऊने सूं ठाडो होतो दूधियो उफांण/थरकण मिस थिरकती अंगां री ओछाड़/उसांसिये पवन री पाछली पुळक में/रातोकी रंवाई छण कटाछां नीझरै। (सताईस)

नातां ने रुमाय/कायल होया नीं कोळावण रै लांबै लैरकां/वेगा ही वट ज्यू. कमरबंध बांधियां । (बराण)

इण तरै री सबळी रचनावां राजस्थांनी में आज रै जुग में लिखीजै तौ निस्चै ई भासा री मांन वधसी अर नूंवी कविता में गैराई साथै अेक नूंवी गती आसी। केन्द्रीय साहित अकादमी इण क्रती नै पुरस्क्रत कर सांचाणी राजस्थांनी री अेक महती उपलब्धी नै ओपती मांनता दीवी। इण तरै री प्रांत रै जीवण अर संस्क्रती सूं जुड़ियोड़ी क्रती नै महाविद्यालयां रै अध्ययन में राखणी चाइजै।

बरसां रां डीगोड़ा डूंगर लांघियां (काव्य) : डॉ. नारायणसिंघ भाटी
पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर। मूल्य : वीस रिपिया

राजस्थली प्रगतीसील कविता विसेसांक

— आईदानसिंघ भाटी

'राजस्थळी री अप्रेल-अक्टूबर १९८१ अंक आठवै दसक री प्रगतीसील कविता विसेसांक रै रूप में सांमी आयौ। प्रगतीसीलता रै अैड़ै-छेड़ै इण अंक री कवितावां जठै-जठै सिरजण री दरसाव करायौ है, वै जगावां सरावण जोग है। यूं प्रगतीसीलता वायरी कविता, कविता व्हिया करै, म्हैं नीं जांणू अर आंपाणी राजस्थांनी री नूंवी दीठ तौ यूं इज घणी इतियासू वात नीं है।

राजस्थळी री आं कीं कवितावां में आज रै जुग री आक्रोस अेक सरोकार रै रूप में सांमी आयौ है, अबै इण धरती रा गीत मुधरै सुर में गावण सूं कीं घाट जाडो नीं पड़ै। आजादी रै पैंतीस वरस पछै तांई औ गीत मांदो क्यू है, औ सवाल रै-रै इण कवी रै आगै-आगै दौड़ै। गांव री कूंन सूं तर गाळियां सांमली ढाणी सूं आवता भूखा टावरां रा कुरलाटा उणरा कांन फाड़ै।

आज री कवी अबै देख-देख'र निसकारा नीं नांखै, उणरै मन में वा वात साफ व्हैगी है, जिकी उणनै जुग-जुग सूं ठठाती आयी है। वौ छळा री जुबांन री आंटी साफ जांणग्यौ है, जिकी माळी-पनां में आज तांई

अनुवादक रै मार्थ अेलीजी रा वै बत्तीसूं छंद बरोबर दबाव डालता रैया, जिका जांणै वां रै जीवण रै लखाणां नै उजागर करै हा। "असल में मांनखै री आसावां तो व्है लंबी, ने ऊमर व्है ओछी। इण तरै सगळी रांमत खातर रात लागै है तोछी। तारां छाई रात रा आभै में मोतियां रौ जड़ाव, ने पूनम रै चांद री ई कितरीक जेज पड़ाव ! समै री चक्की आठूं पौर चालै, सो कुण जांणै काळ किण पुळ आय घूमर घालै ! दिल रौ दरद ई आखरां में रस घोळै, ने ओळू री उफेळ आसुवां री अरघ ढोळै। वेळा बीत जावै, ने बातां रह जावै।"

तौ इण भांत अनुवादक री 'अेलीजी' सूं लगाव हद भांत रैयौ। अर अेक लंबै अंतराळ, २०-२२ बरस, रै बाद ई वौ जुड़ाव कम नीं व्हियौ। कवियाजी इणरौ अनुवाद सन् १९५८ में ई कर चुकिया हा, पण पोथी रूप में छपण री जोग अबै आयौ। केई रचनावां सासती व्है। काळ, जगै अर वातावरण री सींवां तोड़ती अै मिनख मात्र रै हीयै रै तारां नै परस करै अर छेड़ै। अैड़ी रचनावां रौ अनुवाद व्हेणौ घणै हरख री बात।

'अेलीजी' अमूमन किणीं ई आतमपरक या भावपरक रचना नै कैईजै। फेरूं ई आ अेक सोकगीत या मरसियौ व्है, जिकौ के खास करनै किणी बीत ई नजीकी रिस्तैदार री मिरतू रै दुख में लिखीजै। सन् १७४९ में लिखियोड़ी टामस ग्रे (१७१६-१७७१) री आ 'अेलीजी' अेक अैड़ी ही निसासां भरी कृती है, जिकौ वां सगळां सैंधा अर असैंधा मरियोड़ा लोगां री याद में रचियोड़ी है, जिकां री के महांन बणण री संचियोड़ी इंछावां ओसर रै अभाव में अधूरी इज रैयगी। ग्रे री इण अेलीजी सूं तौ लोग इत्ता प्रभावित व्हिया के 'ग्रेवयार्ड स्कूल' नांव सूं अैड़ी कवितावां री अेक छोटी-सी परपंरा ई चाल पड़ी। अणमणास, कुम्हळास, पीड़ितां रै साथै सहानुभूती, रोमैंटिक सैली री बरताव, उपदेसात्मकता अर विचारोत्पादकता लियोड़ी हदभांत सुंदर, सफळ, साहितिक अर लोकचावती आ रचना 'ग्रेवयार्ड स्कूल' री सिरै रचना गिणीजै। यूं मिल्टन री 'लिसिडस', सैली री 'अेडोनेस', टेनीसन री 'इन मेमोरियम' अर मैथ्यू आरनल्ड री 'थिरसिस' ई बीत चावी 'अेलीजीज' है।

शक्तिदांनजी कविया राजस्थांनी रा गैरा जांणकार। अनुवाद रै इण कांम नै वै केई-केई रातां जाग'र जिण लगन अर मैणत सूं करियौ, वधाई जोग। 'अेलीजी' रै भाव माफक रोळा छंद री चुणाव मूळ कविता री आतमा

राजस्थांनी में लिखै । हिन्दी में दाळ नीं गळी तौ भट राजस्थांनी में आयग्या । अर सैं सूं बत्ता घातक वै है जिकांरीके सबद खिमता कमजोर है अर जिकाके आडै ई कट संस्कृत अर हिन्दी रा सबद कांम में लेवै अर मजै री बात आ के ऊपर सूं टांग न्यारी ऊंची करै के हरैक भारतीय भासा संस्कृत सूं सबद लियाई करै । आपरी कमी छिपावण री इण सूं लूंठी कांई मिसाल । सबद किणीं भासा में उण वगत लिरीज्या करै जद'क उणरै कनै नीं होवै, अर वै ई उण भासा रै मिजाज में ढाळ' र । जे सबद आपां री भासा में पैली सूं ई है अर जांणकारी रै अभाव में दूजी भासावां सूं ले' र कोई उणनै सही बतावणौ साबित करणौ भौत खतरनाक होवै । अैड़ा सगस' भासा-घातक' अर 'सबदहंता' होवै । वै मायड़ भासा रै 'स्ट्रक्चर' नै तौ विगाड़ै ई साथै ई मायड़ भासा रै मूळ सबदां नै ई खतम करै । अैड़ा लोगां सूं ई भासा रै सरूप री टंटो खड़ौ होवै । अर 'स्टैंडर्ड फार्म' बणण में अड़चणां आवै । न्यारा-न्यारा भंडां लियां सूं नतीजो औ होवै के सातां री मां नै हियाळिया घींसै । विदवांन पाठकां नै इण बाबत गैराई सूं सोचण -विचारण री जरूरत ।

अबार लिखीज रैये साहित बाबत तौ औई कैवणौ है के ठोस कम है कचरौ घणौ । म्हां-थां लिख' र भलांई राजी हो जावां, पण आंवण वाळौ वगत कसौटी माथै कसतां किणीं नै ई नीं बख्सैला अर सगळौ कचरौ साफ कर देवैला ।

साहित अकादमी : प्रकासण, जळसा अर पुरस्कार

आज राजस्थांनी भासा साहित नै आगै लावण री सब सूं महतपूरण 'रोल' जिणरी होवणौ चाहिजै वा है अकादमी । पण सरकार री घोसणा रै पछै ई हालतांई अकादमी री थरपणा नीं हुयी अर राजस्थांन साहित अकादमी उदैपुर री अेक विभाग बीकानेर में राजस्थांनी भासा साहित संगम रै नांव सूं कांम करै । केड़ी करै आप सैं सूं छानौ नीं । पण, नीं नीं करतांई उणं कनै साधन है । वा कीं कर ई सकै पण भौत ई दुख अर सरम री बात है के सबसूं फोरौ प्रकासण अकादमी री पत्रिक 'जागती जोत' री रैयौ है । 'स्टैंडर्ड फार्म' री बात तौ बीजी अेक पेज में आपनै पच्चीस सूंई बेसी गळतियां पत्रिकां नै खोलतांई निगै आवैला, रचनावां रै चुणाव अर वां री प्रस्तुति री तौ बात करणी ई बिरथा । अर आज तांई जिण पोथ्यां री प्रकासण करियौ है, वौई किणीं सूं छिप्यौ नीं है अर इणीं भांत अकादमी रै जळसा

जोधपुर विस्वविद्यालै री साख गिरै अर नीं ई आ चावू'ला क' अेम० अे० नांव मायै राजस्थांनी री भणाई सरू कर'र वगदी पढ़ायी जावै। अेम०अे० कोई अैड़ी-वैड़ी डिगरी नीं है। उणरै वास्तै पाट्यक्रम वैड़ौ ई होवणौ चाहिजै जेड़ौ के दूजी-दूजी भासावां रौ है। यूं ई आधुनिक राजस्थांनी में ठोस साहित रौ सिरजण कम है। घांसीरांम - पूसारांम अर मूरीयै – जमालियै री रचनावां अेम० अे० में भणाइजण लागसी तौ पछै व्हा है। यूं राजस्थांनी विभाग आज तांई कित्ता वांवळ खांगां करिया आ वात किणीं सूं छिपी ही कोनीं है। जद' क भासा अर साहित छेत्र में सवसूं मोटौ अर महताऊ अर सिरै 'रोल' ई विस्वविद्यालै रौ होवै। आज लग औ विभाग नीं तौ राजस्थांनी भासा रै 'स्टेंडर्ड फार्म' खातर कीं करियौ है अर नीं ई साहित री न्यारी-न्यारी विधावां रै इतियास अर माप–दंडां खातर ई। ओर तौ ओर वरतणी ई तै नीं कर सक्यौ। अर बी०अे०रै तीनूं वरसा रै 'कोर्स' नै जांचा-परखां तौ केई वातां सांमी आसी। ज्यूं के-कांई भासा–विग्यान नै ध्यांन में राखतां थकां आं रौ चुणाव करीज्यौ ? कांई रचनावां रौ चुणाव करतां साहितिक माप-दण्डा अर स्तर रौ ध्यांन राखीज्यौ है ? जिकौ पाठ्यक्रम राखीज्यौ है, उणसूं संवंधित सामग्री उपलब्ध है ? अर नीं है तौ कांई विभाग इण वावत कीं कर्‌यौ है ? इत्याद निरा ई सवाल पैदा होवै। जे नींव ई कमजोर होवैला तौ मकांन कैड़ौ वणैला, आ वतावण री जरूत नीं। तरस तौ जोधपुर विस्वविद्यालै माथै उण टैम इत्तौ आयौ, जिण टैम अेक राजस्थांनी रौ परचौ देखियौ। अेक विस्वविद्यालै सारू इण सूं मोटी सरम री वात कांई हो' ई के उणरै अठै रै परचै में अलेखूं गळतियां होवै। 'ळ' ध्वनी राजस्थांनी री ज्यांन है औ कोई अैड़ी 'टाइप' नीं है के कठै मिळ ई नीं सकै। अर जे नीं ई मिळतौ होवै तौ दो रस्ता ई है। अेक तौ 'ल' रै नीचै मींडी (ल़) लगाय'र अर दूजौ आधौ 'व' अर 'ठ' मिळाय, (ठ) 'ळ' वणायौ जा सकै। किणीं भासा रै परचै री सवसूं मोटी मांग होवै उणी भासा में सगळै सवालां रै होवण री जे आप उण भासा में ई परचा नीं देय सकौ तौ इणसूं खूटयोड़ी दूजी वातई कौनीं क्यूंकै, कीं परचा अेड़ा ई देखण में आया जिण में सवाल हिन्दी भासा में पूछ्या गया हा ! छेहलै, राजस्थांनी विभाग सूं आई उमीद राखां के अेम०अे० राजस्थांनी नै पतासियौ नीं वणाय दै कै हर कोई गप कर जावै अर ऊपर सूं 'सियावर रांम चन्द्र री जै' वोलै। म्हारी तौ आई राय के अेक' र इण पाठ्यक्रम

कन्हैयालाल सेठिया, कलकत्ता-१ 'आगूंच' री पैली पड़त मिली, घणौ हरख हुयौ। सुभ आसीस। म्हैं 'आगूंच' री बधोतरी चावूं हूं। स्याम-महरसि संपादक 'राजस्थळी' डूंगरगढ़(चूरू)-'आगूंच' घणी साफ-सुथरी अर रचनावां सूं सबळी लागी। राजस्थांनी भासा अर साहित इण पत्रिकारै माध्यम सूं घणी गतिमांन हुसी, इसी म्हनै आस है। इण प्रकासण माथै 'राजस्थळी' परिवार री मोकळी बधायां। किसोर कल्पना कांत, संपादक 'ओळमौ', रतनगढ़-'आगूंच' री प्रवेसांक पढ'र जीव घणौ सोयरौ होयौ। अंक री सगळी रचनावां अर स्तम्भ म्हांनै घणां दाय आया। आगूंच' नै म्हारी हियतणी री मंगळकामनावां अरपण। आसा के अेक दिन आगूंच मातभासा री मनोकामना पूरण करवावण रौ सैंठौ आधार बणसी। रामेस्वरदयाल-श्रीमाळी, जवाळी (पाली)-'आगूंच-१' मिळ्यौ। चोखौ लागौ। आपरी लगन पार लागसी, भरोसौ है। कमर मेवाड़ी, 'संपादक' 'संबोधन' कांकरोली -'आगूंच' रौ प्रवेसांक रचनावां सूं आछौ लागौ। बधायां स्वीकारौ। रतनसाह, उपप्रधानमंत्री, अ०भा० मारवाड़ी सम्मैलण, १४ चांदणी चौक स्ट्रीट कलकत्ता–'आगूंच' रौ प्रवेसांक साहित जगत में सरावण जोग है। म्हनै भरोसौ क' आज जठै राजस्थांनी पत्रिकावां री घणी जरूत है, 'आगूंच' वा जागा पूरी करसी। इण री सफळता रौ पूरौ भरोसौ राखूं। रावत सारस्वत, जैपर–आज रै जमांनै में अखबार कै पत्रिका काढ़णी घणी बहादुरी रौ कांम है। आप मोटी हिम्मत करी है। 'आगूंच' रै प्रवेसांक में टाळवी रचनावां ली हौ। राजेन्द्र बोहरा, आकासवाणी, जैपर 'आगूंच' रौ प्रवेसांक सरावण जोग है। अंक रा सगळां लिखारां नै म्हारी कांनी सूं धिनवाद। भंवर भादानी, बीकानेर-'आगूंच रै प्रकासण री बधाई। 'आगूंच' री संपादकी रौ हेलौ घणौ ओपतौ है। बिना लाग लपेट साच'र अेक बात (.म) कैवूं–रचनावां री दीठ सूं औ प्रवेसांक घणौ लूंठौ नीं बणनवयौ अेकाध कहांणी अर अेकाध कविता नै छोड़'र अंक भरताऊ लागै। पण इण सूं 'आगूंच' रौ महत्व की कम नीं होवै। अर भरोसौ क' 'आगूंच' आपरी भूमिका री बिगत 'आगूंच' ई बणासी। डॉ सकुन्तला किरण, अेच. अेल. रामगोपाल. मदारगेट, 'अजमेर–'आगूंच' पढ़तां घणौ हरक हुयौ। आपरी मीनत, लगन अर साहस रौ दरपण है 'आगूंच'। संपादकी रै मांय आपरी स्पस्ट बातां अर कुंभारु तैवर भोत कीं कह देवै। घणौ बळ है ई में। रचनावां रौ चुणाव घणौ चोखौ अर लूंठौ। सलीम सेख

'अपनी बोली को माथे पर बैठाया जा रहा है। मेरे पास दो-तीन पत्रिकाएँ नियमित आ रही हैं। और मैं उनको ध्यान से देख रहा हूँ। यह प्रयत्न जारी रहना चाहिये कि प्रकाशित साहित्य में सच्चे जनतांत्रिक मूल्यों का और प्रदेश की जनता का मुक्ति संघर्ष सामने आ सकें। हमारी शुभकामनाएँ हमेशा ऐसे प्रयासों के साथ है। डॉ० केशुभाई देसाई तलोद, गुजरात 'आगूंच' का प्रथम अंक मिला। पढ़ लिया। एक बहुत बड़ा साहस है। लगता है आप राजस्थानी कलमनवेश खूंखार योद्धा की अदा से मातृभाषाके अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह सांस्कृतिक धर्मयुद्ध है, जो इतिहास बन कर अमर हो जाएगा। पड़ौसी भाषा के साहित्यकार के नाते व राजस्थानी कला-साहित्य व संस्कृति के चाहक के नाते मेरी शुभकामनाएँ। प्रादेशिक 'अस्मिता' की ज्योत जलाने वाले सभी ज्यतिर्धरों को मैं आदर-पूर्ण दृष्टि से देखता आया हूँ। यह बड़े गौर की बात है कि भौतिकता के इस युग में भाषा की आह सुनने वाले भी जिन्दा हैं! उत्तर गुजरात की जनता के प्रतिनिधि के रूप में मैं अपनी भगिनी भाषा के अस्तित्व संघर्ष में इस पत्र द्वारा हृदय से हाथ बँटा रहा हूँ। 'आगूंच' का सुंदर साहित्य चयन, एवं साफ-सुथरी छपाई इसके भव्य भावि के शुभ संकेत हैं।

थोथ

दिन भर
मिंदर में वैठौ करूं
रामायण, गीता अर
हड़मांन-चाळीसा रा पाठ,
रात रै अंधारै में औ पग
चुपचाप व्हीर व्हे जावै
रंडी-वाजारां कांनी !

सपनां में विचरूं
वाग-वगीचां, महलां में
इमरत-फळ तोड़-तोड़ खावूं
चुस्की-चुस्की पीवूं व्हिस्की
मद-मस्त फिरूं-गावूं गीत;
जागता ई पकड़ै
म्हारौ कंठ, भूख रौ भूत
म्हारौ दम घुटै !

च्यारूं मेर
मगसौ अंधारौ
पगडांडी ऊपर वधता औ पग
मन जाणै असवाड़ै-पसवाड़ै
कोई सांप करै है लारौ म्हारौ
औ जीव चमकै घड़ी-घड़ी !
पांच वरस रा पागोथिया ऊपर
ऊभौ कोई म्हनै
देवै हेलौ,
ज्यूं कोई सपनां में दौड़ै
म्हैं दौड़ लगावूं,
पगोथियां पर ऊक-चूक व्हे तौ

म्हारा नैण
चांनणै री अेक किरण सारू
गोटीजै
तर-तर जित्तौ घणौ धुंवौ
धुटीजतौ जीव
तड़फती तागत सागै
तोड़ै ला सगळा दरवाजा ।

अवै तौ पसरै है
सगळै आभै में
म्हारै मन है गीतां री अं
मुदरी कड़ियां

पीड़ सूं फड़फड़ावता
पसवाड़ा फेरतै
वगत रा कांन ऊभा व्है,
मांय ई मांय
डुसक्यां भरती
रात चुप व्हैगी है ।

कसूमल-सो सुहावणौ
फूटतौ पसरै ऊजाळौ
पुरवाई रै सागै-सागै
धीमै-धीमै झरती आवै
म्हारै इज मनड़ै रै वां-
गीतां री राग ।

कद तांई ढकैला
थूं सगळा दरवाजा
कद तांई वांधैला—
हथाळी सूं किरणां ?
पून झकोरां नै वांधैला
कद तांई थूं ??

दो कवितावां

● आईदानसिंघ भाटी

अरथावती ओळखांण

डांफरती रातां रा मिजाज
खोळता-जोवता आगळ अर आडा,
पगां री धरती री कराती अेसास
ऊगतै दिन री ऊकळती किरणां
कड़कड़तौ दुपारै री तावड़ौ,
मचकोळता मूंडा,
अर विफरयौड़ी आंख्यां
कठै'ई कांई अनरथ व्हेग्यौ ।

गुवाड़ रा गिडक
भालता पींड्यां
चालती सड़कां, घमचोळीजता आंगण
पसरीयौड़ा पीड़ावां रा परवत
वतळायां नीं वोलै ।

'औ किसौ वायरौ वाज्यौ
च्यारूं मेर भुर-भुरी'मेर भरणाटौ
औ कुण, किणनै, कांई ओड़ौ देग्यौ ?
लगोलग आखड़ता आदमी
जोवता पगां कांनी
खनै सूं नीसर जावै
म्हारै पगां नीचै सूं जमी धसकै
यां नै कुण कांई आंखड़ी कैग्यौ ?
पूछै अलेखूं आंख्यां

खांचता सीधी लीक
म्हारै हिम्मती हाथ ।

"के इण जीभ आदमी नै आदमी के दीनौ,
उणरौ फूटरौ उणियारौ
खुदो-खुद जोयलीनौ
थांरै विन वतळायां ।

कोरौ सवाल

अज तांई औ कोरौ सवाल है
परभात रै पौर रै उजास ज्यूं निरमळ
अटकल वाजियां सूं अळगौ
ऊजळौ धवळौ दूध
फूलां ज्यूं कंवळौ अर फूटरौ
इण सवाल रौ उणियारौ
समदर री छौळां ज्यूं
गरजण-तरजण करतौ इण रौ साद
घुड़ सवार ज्यूं अचपळौ–
उतावळौ, वावळौ
पवन सूं वातां करतौ ।

अलेखूं आकास गंगावां
अर सैंस तारां में
इणरी पड़ूतर सोधौला ?
के खळखळाते वरसाती नाळां
मरुथल री पाळां
अर अगंन री भाळा में
जोवौला उणरौ उणियारौ ।

मैरां अर गांवां रै विच्चै
मोधौला इणरी डौळ
के जोवौला ख्रिस्टी री सै ठौड़ ।

निरमळ
आछी नीर ।

परभात रै पौर री उजास
तपतौ दुपारौ नीं बण जावै
धवळै दूध में कोई कुचमाद नीं कर नांखै
सोचौ-पूरी तौर सूं इणरौ पडूत्तर
जोवौ गांवां री गळियां
सैरां री सड़कां रा फैलाव
सोधौ औ सगळौ संसार ।

चितां रै चैंजै में
पूरी दीठ सूं आखर बारै आवण दौ
जीभ नै सैंस बोलां सूं
नूंवा गीत रचावण दौ
गावण दौ गाळ्यां, मंगळगारयां नै
वधावण दौ उण री उणियारौ
कैवण दौ आडी रा अरथाव
लोपण दौ घेरा सूनै अरथां रा
वाजण दौ गैराता आटंक
ठोकण दौ सिल्पी हाथां सूं करमां री मेख ।

परभात रै पौर रै इण उजास में
दीखण दौ ऊजळा उणियारां
धोळा-धट दिन में
ऊकळता आखर नै मत वरजौ
गावण दौ सिंधु री कड़ियां
वाजण दौ मारु अर म्रदंग
क्यूंक अजै तांई
औ है कोरौ सवाल
चमकतौ मुळकतौ/पळकतौ परभात्यै तारै ज्यूं
आदमीपणै री ओळखांण री आसा में
अटक्योड़ौ
अडिग-ध्रुव तारै ज्यूं ।

लारला पन्द्रै-बीस दिनां सूं ऊन कमती आवरणै री वजै सूं वा ठाळप भुगतै ही । घरां बैठी रौ वीं रौ दर मन नीं लागतौ । मांय सूं काळजौ बळतौ ।

हमीद रौ धंधौ ई आज-काल मंदो इज चालै हो । घर री हालत खस्ता ही ।

हमीद ढाळिया मांय आयग्यौ कमीज गळै में घालतौ थकौ वौ कैवै हो-"के करां ? अेक कांनी तौ धंधौ मोळौ अर दूजी कांनी मैंगीवाड़ौ; जिरखा भी कठै हुयी । काळ रौ सिर फूटै तौ मैंगीवाड़ौ कीं तौ कमती हुवै । सै चीजां मैंगी, गरीब कियां जीवै ?"

गरीब पेट री भूख सलीमा रौ आंख्यां तांई आयी ही, पण वा संभळगी । वा बोली- "अल्ला-मियां सूणसी ।"

लांबी सांस लेय'र परी हमीद बोल्यौ-"देखौ ! रिछपाळ करै, बेगम!"

सलीमा कीं सोची तौ ही, पण बोली कोनीं । हमीद कमीज पै'र बीड़ी सिळगाई । खाट माथै बैठ परी पीवै लागौ ।

हमीद कोई पच्चीसेक बरसां रौ हौ, सलीमा वीं सूं पांच बर'स छोटी ही, पण भूख सूं खासी मोटी लखावै ही । रात रा इज वा अेक रोटी खाय'र पांणी पीय'र संतोख लेय'र सोयी ही, पण सुबै तौ वा भी नीं । टाबरियै नैं गोदी में लियां वा आंगणै माथै खाट रै कनै बैठी ही । हमीद आडौ हुयग्यौ हौ, पण वीं रौ चैरौ कैवै हौ, के वौ कीं सोच में हौ । माथै पर खींचीज्योड़ी सळवटां भी अबोली नीं ही । कदै बीड़ी रौ जोर सूं सूट सारतौ तौ कीं ठावौ पड़तौ । सलीमा नीची नाड़ कर्‌यां बैठी ही ।

चांण चूकै वीं रै दिमाग में कोई बात आई अर वौ बीड़ी बुझाय'र ऊभौ हुवतौ थकौ बोल्यौ, "बैठ्यां कियां पार पड़सी ? चालूं ! दाळ-रोटी रौ जुगाड़ करूं ।"...... कैवतौ-कैवतौ वौ बारै आयग्यौ । ढाळियै रै स्हारै लाग्योड़ी आपरी सूळीनुमा पत्नी री बण्योड़ी 'मूवेबल' दूकांन आपरै कांधै रै लगा लीनी । जद वौ आगै पग मेलण लाग्यौ तौ लारै सूं आवाज वीं रै कांनां में पूगी-"आवती वेळा चून पकायत लाज्यौ ।

गिरणावती खूंटे तांई आयगी फेर हाथ पर गदगदावरी करती काख में गदगदावरी करै लागी । टावर बैलग्यो । बो खेलै लागो । सलीमा आपरो दरद उतारै ही ।

वींनै खुद री तो चिंता कोनीं ही, पण टावर नै विलविलावतो देख'र वीं रै मांय बैठी मां रोवण लाग जावती । वां मांय ई_मांय टूटण लाग रैयी ही, पण किणी नै इण री ठा नीं ही ।

o o o o

हमीद सौदो लेय'र आपरी दुकांन जचाई पाछो आय'र बो बोल्यो, 'हां तो सेठ साब, कित्तां रो हुयो माल ?'

सेठ कैवे हो-पन्द्रै रिपियां रा ढम्भू, पैंतीस रा चस्मा, वीस री पींपाड़ियां अर पच्चीस रा डमरू, इणतरां सगळां रो मोल पिच्याणवै रिपिया ।

वही वन्द करतो बो बोल्यो—"आज वड़ो जळसो है, इतरो तो निकळ ई जासी ।

देखो ! कैय'र बो ढम्भू फूला फूलाय'र टांगै लागो । आपरी दुकांन आछी तरियां सजाय'र पींपाड़ी वजावतो चाल पड़्यो ।

नगर में आज मुख्यमंत्रीजी आवण आळा हा । नुंवी स्कूल रै भवन रो उद्घाटण हो । स्कूल भवन रै वारै ठाड़ी भीड़ ही । नगर री बीजी स्कूलां रा टावर ई उछव देखण नै आयोड़ा हा । भीड़ नै देख'र लागै हो जांणै आखो नगर ई उळट आयो हुवै ।

माईक पकड़ै एक मिनख बोलै हो—मुख्यमंत्रीजी अवै पधारण आळा है, आप सै लोगां सूं पंडाळ मांय आय'र बैठणै री अरज है ।

पण लोग सुणा ईज करै हा नीं, मुख्यमंत्री आयां विना वै मांय जावण री दर सोचै ई कोनीं हा । फेरूं भी घणसारा लोग मांय भी बैठ्या हा ।

आकास में वादळा हा । पींपाड़ी वजावतो हमीद स्कूल रै कनै पूग्यो तो अेक ठाडो मूंटो आयो । लारै आंधी ही । मांय छांटां । हमीद झटदणी भाज'र सांमै प्रेस रै दरुजै मांय वड़्यो । अवार वीं रो माल भीग जावतो । केई ढम्भू फूट जावता । समांन रो नास हुय जावतो ।

विरखा वरसै लागी । प्रेस री गेट लोगां सूं भरग्यो । आवण आळा

इतरै में मुख्यमंत्री री कार सांमै सूं नीसरी । वरसतै मेह में केई लोग भाग्या, दरुजै मांय कीं छोड़ हुयी ।

दिन छिप्यौ तौ मुख्यमंत्री जी तौ व्हीर हुया, पण विरखा नीं ठमीं । दरुजै मांय खड़्या लोग भींजतां थकां वारै जावै लागा । थोड़ी ताळ पछै तौ दरुजै मांय फगत दो इज आदमी रैयग्या हा । अेक हमीद अर दूजोड़ो सबीर ।

सड़क माथै भींजता थकां लोग जावै हा । टावरिया भागता दीखै हा ।

सबीर कैवै हो, "भाई, अब तौ आ होरी नीं थमती लागै....आज तौ मार्‌या गया ।"

"तूं तौ सुवै भी कीं तौ कमायौ हुसी, अठै तौ आज टकौ भी नीं कमाय सक्यौ ।

"कांय हुयग्यौ हुसी ?"

"रमजांन री छोरौ बैमार हौ । वौ वारै ग्योड़ौ हो । सुवै-सुवै वीं री वहू आयगी । छोरी री तबीयत घणी खराब ही । मोटै अस्पताळ लेय'र गयी"

"अबै तौ ठीक है ?"

"ठीक है ।"

"टेम पड़िया आप आळा ही आडा आवै, हमीद भाई ।"

हमीद कैवै हो—"कांई करूं यार आजकाल कोटड़ियां में वी करम री ऊन कोनीं आवै, नीं तौ थारली भावी ही कीं लै आवै, अर अठीनै वंवेरा हाल है, सो तूं जाणै ई है ।"

"जोर के ? किणनै कैवां ? सुणै भी कुण, हमीद भाई !"

हमीद अर सबीर सब्बर करयां ऊभा हा । पण विरखा को थमी नीं । आखर में सबीर धीरज छोड़ दीन्यौ वी बोल्यौ—"हमीद भाई , अब तौ चालणै में ई सार है विरखा थमै ली नीं ।"

"तूं चाल साबीर म्हैं तौ बताय कियां चालूं ? समांन खराब हुयग्यौ तौ सेठ रा पीसा कियां चुकैला ?"

सबीर चल्यौ गयौ । प्रेस रै दरुजै मांय खड़्यौ हमीद विरखा रै

बिरखा सूं रास्ता-पांणी भरीजग्या हा। कांधै माथै पीपो लियां हमीद चालै हो अर बिरखा नाचै ही धरती पर, वीं माथै। पांणी ई पांणी हो सगळी जगा।

घरां पूग्यो तो सलीमा टाबरियै नै छाती रै चेप्यां बैठी ही, पण भूखो टाबर रोवै हो। सलीमा री आंतड़ियां में दरद हो। ढाळियै बड़तो हमीद कैवै हो-"आज तो अल्ला-मियां कठै ई गुमग्यो बेगम, फेरूं ई चून तो लो आयो हूं।"

सलीमा रै मुंडै सूं आवाज नीं उपड़ी। पीपो मेल'र हमीद मांचै माथै बैठग्यो। वो कैवै हो- "झूपड़ी मांय तो पांणी भरग्यो दीखै। जद वीरै चूल्है री विचार आयो तो मुस्कल है। बिरखा बीतो नीं थाकी हालतांईं। जाणै आज तो भूखो ई रैवणो लिख्यो है।"

"नीं।" सलीमा बोली, "म्है रोटी पकाय देस्यूं।"

"क्यां सूं पकासी ? बळीतो भी तो भीजगो है अर चूल्हो भी।

सांस लेय'र वो बोल्यो, "बेगम, आज तो चून ई पांणी में घोल'र पील्यां। पैला तूं पीलै, छोरो भूखो है।"

"नीं, म्हैं रोटी बणा देस्यूं, ""अठै ई ईंटा मेल लेस्यूं।"

"पण बाळसी के ?"

कीं सोच'र सलीमा गुदड़ी कांनी हाथ काढ्यो अर बोली "आ के कांम आसी ?"

"तो बिछावणो नीं चावै ?"

"पैला पेट री सोचो।"

हमीद री आंख्यां सांमै गुदड़ी बळै ही सलीमा रोट्यां सेकी, पण हमीद रै गळै ही को उतरी नीं।

भूखो टाबरियो रोवै हो।

सुबै छापा में खबर छपी बीबीपुर मांय पैली बिरखा-लोगां चैन री सांस लेयी।

देवो आपरै घरै लेय जावो। पछै आप म्हांनै दोसांण मत देजो।"

अेक वार तौ मंगळ बाबू सोच्यो के वा छो करती काळो मूंडो। नीतर अठै घरै लाय'नै रोज री माथाकूट न्यारी ! आजू-बाजू रै सगळां मिनखां री वातां सुण-सुण नै कांन पाक जावैला। नीं तौ खायो अंगै लागैला अर नीं ई कांम करण में जीव लागैला।

इण विचारां रै बिचै मंगळ बाबू औ तै करियौ के वै सुगणा नै लेवण नै नीं जावैला। पण थोड़ी जेज पछै ई उणां रै सांमी रगत रो संबंध आडो आय नै ऊभो व्हैग्यो। बेटी उणां री है । साळ-संभाळ तौ लेवणी चाईजै। आ बात मगज में आवतां ई उणां री आंख्यां में पांणी आग्यो। .... पण हाल तांई मांचो नीं छोड़्यो।

अेकाअेक उणा नै धांसी आवण लागी। दो मिन्ट तांई वै धांसता रैया तौ उणां री लुगाई आय नै मोरां माथै हाथ फेरण लागी । लारलै दो वरसां सूं उणां नै धांसी री सिकायत ही । पण वै सफाखांनै जावणो पसंद नीं करै हा। अबै सुगणा रै वारै में आयोड़ो लिफाफो उणां रो जीव फेर दुखावण लागो। अेकाअेक मंगळ बाबू कैवा लागा-"सुण री है ?"

"कांई है ?"

"सुगणा रै बारै में कांई करणो है ?"

"आप नै कांई जचै ?"

"म्हारो मन तौ कैवै के सुगणा नै ले आवूं ।"

"ठीक है, पण लेवण आज नीं जावणो, क्यूं के वार ठण्डो है । कालै परा जावजो ।"

"ठीक है, कालै ई सई। अेक दिन में कीं खाटो मोळो नीं व्है।" अर पछै मंगळ बाबू मांचा सूं ऊठग्या। सुवै रै कांमां सूं निवट नै पोता रै कमरा मांय आय नै कुरसी माथै बैठग्या। बैठा-बैठा सोचै हा, सुगणा अठै ही, कीं दाग नीं लगायो। सासरै गयां नै हाल वरस ई कित्ता व्हिया है उणनै ! इण दो वरसां मांय सुगणा इतरी कीकर बदलगी ? पोता रै सवाल रो पड़ूत्तर खुद ई देवै हा—के दुनिया में सगळी वातां व्है सकै है, पण कांम बणावणो घणो दोरो है अर कांम बिगाड़णो घणो ई सोरो। केई वरसां

तनै घर रा सगळा मिल नै म्हनै मार दै । सायत् घर रा सगळा म्हनै मारण खातर कीं बायनौ ढूंढ रह्या हा । अबै उणां नै बायनौ मिल गयौ है । म्हारी उघाड़ू झूठी फोटू....., म्हनै मारनै वै सगळा औ इज केवैला साळी आतमघात करी । औ खोटौ कियौ ।

पण बाबूजी म्हैं आतमघात जैड़ौ कायरपणौ नीं करूंला, क्यूंके म्हैं तौ साव सांची हूं । अेकदम निरदोस । म्हैं मरणौ नीं चावूं । हालतांई जग देखणौ बाकी है । औ कागद पढतां ईं पैली गाडी सूं व्हीर व्है जौ । अठै सगळा म्हारा जै'र लाग रह्या है । नींतर पछै म्हनै अठी सूं भाग नै कठैई भी जावणौ पड़ैला । पछै दोसांण मारा मत काढ़जौ ...... क्यूंके म्हैं जीवणौ चावूं हूं । आतमघात तौ कायर करै । जीवण सूं डरै जिकौ आतमघात करै । बाबूजी म्हैं कायर कोनीं । जीवण सूं लड़णौ चावू हूं ।

मंगळ बाबू कागद पढनै सुगणा नै लेवण जावण खातर उतावळा व्है रैया है जोर सूं सुगणा री बाई नै हेलौ पाड़ियौ । सुगणा री बाई आय नै उणां रै सांमी ऊभी व्ही । वै केवण लाग्या - "बांच, सुगणां रौ औ कागद । कांईं लिख्यौ है इणमें ? म्हनै आज ई वीं नै लेवण जावणौ है । नींतर कांईं ठा काल तांईं उण री माटी ठण्डी तकात व्है जावै । पछै ठण्डौ वार आड़ी कोनीं आवैला ।"

कागद वांचता-वांचता सुगणां री मां री आंख्यां सूं आंसूं बरसण लाग्या । मंगळ बाबू कैयौ—"रोवण सूं कीं कोनीं व्हैला । म्हारै लेवण जावण री तैयारी आज ई कर, वा पोता रौ पेट तौ अठै भर ई लेवैला । पढी लिखी छोरी है । नौकरी करता लाज कोनीं करैला ।"

दूजी लुगाई बोली - "आगै सी भी तो कोई सूरमां वाळी ई जावै ? बिनां रोयां तो मां भी बोबो को देवै नीं। सो राज-तेज नै भी कोई जा'र कैवै जद ठा पड़ै उणां नै कोई सुपनो थोड़ो इज आवै है के फलांणै गांव में पांणी री घणी अबखाई है।

गाव री अ ेक बेटी, जिकी काल ही आपरै सासरै सूं अठै आई ही बोली "म्हारै सासरै में तो बापड़ा गांव रा मिनख पांणी अर बिजळी री बौत सांतरो इन्तजांम कर राख्यो है! गुलाबो सिरैपंच अबकै तो हारग्यो, पण जित्तै सिरै पंच रैयो गांव रै कांम सारू अेक टांग रै पांण हाजर रैयो।"

जदी सारै गांव में सुख कर दियो। अठै अेक-अेक चळू पांणी खातर तरसणो पड़ै। बठै गांव री गिन्नांणी पांणी सूं भरी रैवै। आटै री दो चक्की है। गांव सूं ठेठ सदर तांई सड़क हुगी। दो-दो मोटरां दोन्यूं टैम गांव रै बीचो बीच आवै-जावै। रात नै आखो गांव बिजळी सूं सैंचनण रहवै।" अेक बीनणी जिण री पीहर भोजासर हो गुमरेज अर मोसो मारती बोली - "अठै पांणी रो फोड़ो है जिको तो है ई, जे संहर जाणो हुवै तो प.च कोस जा'र बस पकड़ो। गांव में किण रै कीं अबखाई हुज्यावै तो कोई पुड़ियो इज देवणियो कोनीं। नाठ'र अठै सूं आठ कोस जावो जद वैद मिळै, इत्तै में तो बेमार बापड़ो आग लो घर सांकड़ो करै।"

बडिया रै लुगायां री अै बातां सुण'र चिणसो तो लाग्यो, पण हुवै कांई! इंडूणी संभाळती बोली- "इण खारेढ़ा रो तो रांम इज रुखाळो है। तीस बरस हुग्या बोट देवता। बोटां री टेम तो अरण-बरण रा नेता भेळा हो'र घणांई काच रा महल दिखावै अर कैवै के बस अबकै अबकै म्हानै बोट देदयो तो थांरै गांव में टूंटी, बिजळी लगा देस्यां, भोभर लगा देस्यां, पण हाल तांई पीवण रै पांणी रो इज इन्तजांम नीं कर सक्या है। अबकै आवणं-द्यो बोट लेवण नै। हूं इसी सतेवड़ी करस्यूं के खा रे कुत्ता खीर। बा रिसांणी हो'र नेतावां नै इस्या सीठणां सुणावण नै ढूंकी तो ठमी इज नीं।

टीकू गुवाड़ में पूग्यो तो बारड पंच, सिरै पंच अर केई दूजा-दूजा मोतबर मिनख बैठ्या हा। सगळा लादू सुथार नै घेर राख्यो। उण नै कुवो जोड़णै सारू खोमै लादू आपरी मजबूरी अर लाचारी बतावै। सिरै पंच लादू नै बूझ्यो-"अरे लादू! क्यूं आखै गांव नै तिरसां मारै रै बेटी रा बाप!

टीकू बोल्यो, "तूं लोट रोकै तो दियो गोरू। पण लोट है कठै ? गांव में किण रै कनै तनै लोट दीखै है ? ओ काळ रो समो ! सै तेल दै, 'तेल दै' करै है। बळती बाजै। काळो उन्याळो। लोटां रा तो दरसण ही कठै ? अर अेक स्यारी काढणी भी कित्ती ओखी ? अेक स्यारी पर दो ऊंट, अेक वारियो, दो कोलिया अर - लाव कोस रो भाड़ो चाहीजै। आखो मिला'र लोट अढाई सै रा हुवै जद स्यारी नीसरै।"

गोरू- "तो सा ! चायै थारै जचै ज्यूं करो। हूं तो लादू सुथार रै स्यारी काढणै सूं पैली स्यारी को काढूनीं।"

सिरैपंच गोरू रो सिर बुचकारतो बोल्यो के लाडी ! तूं स्याणो है। अयां नीं कर्‌या करै है। तूं लादू रो कांईं इसको करै ? वापड़ै रा भैत अणसारा है।

गोरू नस रो झटको दे'र बोल्यो - "हम्बै ! अै पोमांवणा ओर कठै ई करो। हूं तो स्यारी को काढूनीं। कै'र उठ्यो अर आपरै घर कांनी व्हीर पड़्यो।

गोरू रो जावणो लोगड़ां नै घणो अखर्‌यो। ओ तो आखै गांव रो अपमांन है। आज जे ओ स्यारी नीं काढैलो तो दूजो भळै कीकर काढसी ? इस्यै निसरडै मिनख नै तो गांव सूं काढणो ई चाहीजै। पैलां दूजी स्यारी रो इन्तजांम करो भळै इणनै डंडणै री तजवीज करणी है।" टीकू बोल्यो।

"थे कांईं डंडस्यो ? थारी नरमाई तो गांव री डोळ बिगाड़ राख्यो है। नीं तो कांईं मजाक है जिको गुवाड़ में कोई इण तरियां आखी पंचायत नै नाट'र घरै नाठ जावै।" मोसा मारतो अेक जुवांन टीकू कांनी कांवळ्यो।

टीकू, "भई ! गांव में सारा एक सरीखा मिनख को हुवै नीं। कोई भोळा - स्यांणा भी हुया करै है ! सगळां नै केवटणा पड़ै।" सुणतां ईं पांच सात जुवांन रिसांणा हो'र बोल्या, "तो थे इणां रै थूप खेवो। म्है भी म्हारी स्यारी कोनीं काढांला। कोई तिस मरैतो मरै तो मरो। आप-आप री खींचो अर ओढो ! कै'र वै भी बूढियै पंचां नै बिसरावतां तेतीसा देग्या।

नई ताळ री मून भाजती टीकू बोल्यौ, "हां तौ सिरै पंच, अब कुवौ कीकर जुड़ै ? गांव तौ सारौ खिलाफ हुवतौ जा रैयौ है।" वै जांणै के आपणै बाप रौ ओसार बिगड़ै है, सो आपणै पर ही चढ़्या जावै है।

सिरै पंच रुआंसौ हु'र बोल्यौ के गांव में अब कीं री कैयौ-सुणणौ रैयौ कोनीं। आखी मांन-मरजाद बिगड़गी। सै आपमती हुय रैया है। कोई किणनै गिणैनीं, आदरै नीं। घर-घर में चौधरी हुयग्या। सै कैवै है के म्हारी मारगोड़ी तेरहवैं पताळ में जावै है। पण गांव रौ कांम करतां जोर आवै। स्कूल रा डागळिया खिडग्या, उणनै कोई सुधारी ? मिन्दर रौ सभा मंडप फूटगौ पड़्यौ है। बिरखा हुवतांई धड़ाक धम हुज्यासी, पण किणनै परवाह है। आ इज हालत कुवै री है। नाळ थोथी होई पड़ी है। कोठी बिठायै बिनां मांय घुवराळा घल रैया है। औ कुवौ के दिन धिकसी ? गांव में केई मीनां री पीह बाकी पड़ी है। कइयां कनै चुकावण नै दांम कोनीं तौ केई ठूंठा बण्या बैठ्या है। वै हेलौ मारै है के किण री मां सूंठ खाई है तौ म्हां सूं पीह चूका लैवौ। लारली साल गांव में पटवार खानौ बणायौ हौ, जिणरौ हिसाब आज तांई कोनीं। औ गांव रा कांम कांई है गोधा दूजणां है। चौमासौ सिर पर है। गांव में अेक ढंग सिर रौ खोर (भैंसौ हौ जिकौ मरग्यौ, अब दूजै री किणनै फिकर है। गांव रौ सांड है, जिण री कुण रखवाळी करै ? उण नै गुंवार, गुड़ अर घी टैम सर मिलै तौ थाकै कोनीं। गांवाऊ खोरा अर सांड जे थाकल हुय ज्यासी तौ गाय-भैंस ठाळप रै ज्यासी। गांव में कित्तौ हरजावौ पड़सी ?

इत्तै में उतरांधी गळी सूं कोई बीस-तीस लोगां रौ जळूस-सो आंवतौ दीख्यौ। सिरै पंच री नास हो 'सिरै पंच मुड़दाबाद' रा रोळा सुणीज्या। नेड़ै आया तौ ठा पड़्यौ के लादू सुथार आप रै लारी बीस-तीस लोगां नै लियां सिरै पंच री खै बोलतौ आवै है। गुवाड़ में पूगतांई सिरैपंच कांनी मूंडौ कर'र बोल्यौ के अब आ नादरसाई नीं चालैली। अब तांई म्हे मून बण्या थारी कैयी करै हा, अब नहीं करांला।

टीकू विचाळै ही बोल्यौ, "भाया बहोत चोखी बात है। थे कैयौ नीं मानौला, पण आपसरी री आ टक्कर चोखी कोनीं। इण टकराव सूं गांव री घणौ नुकसांण है। इण तरियां गांव नै भिड़ावणौ खोटौ है। आ फांटाफांटी आछी कोनीं। थे जुवांन आदमी आगीवांण हुय'र गांव री कांम

राजस्थांनी उपन्यास

● जुगल परिहार

उपन्यास विधा री चरचा आवतां ई' अेक विराट कैनवास आंख्यां सांमी ऊभी हो जावै, कारण के विस्व साहित में आज उपन्यास विधा रौ महतपूरण स्थांन है अर सबसूं वेसी उपन्यास साहित ई लिख्यौ जा रैयौ है।

जुगां-जुगां तांई' दुनियां में काव्य री अेक छत्र राज रैयौ अर आ विधा इत्ती फळी-फूली के जिण री हद नीं। साहित रै अलावा ग्यांन-विग्यांन री पोथ्यां तकात कविता में लिखीजी। पण लारली कीं सदियां सूं उपन्यास विधा अेकाअेक उभरनै सांमी आई अर साहित-जगत में आपरी सिरै जगै बणाय लीवी। उपन्यास साहित रै इण गति सूं पनपण रै लारै केई कारण रैया जिणरै तहत सामाजिक, आरथिक अर राजनीतिक कारणां रै अलावा औद्योगिक क्रान्ती अर वैग्यानिक प्रगति ई रैयी। जिण भांत औद्योगिक क्रान्ती वैग्यानिक प्रगती सूं नित नवा-नवा अर वेगा-वेगा बदळाव आवता रैया, उणी भांत उपन्यास विधा में ई' नित नवा-नवा अर वेगा-वेगा बदळाव आवता रैया। विसै, कथ्य अर सिल्प रै आधार माथै उपन्यास विधा चौत ई वेगी समरिधता हासल करली अेक कांनी ज्यां 'क्रिस्तोफ', 'वार अेण्ड-पीस' जैड़ा विसाळकाय उपन्यास लिखीजिया तौ दूजी कांनी 'दी ओल्ड मैन अेण्ड दी सी' जैड़ा लघुकाय उपन्यासां री सिरजण ई होयौ। अर महत री बात आ के हर भांत रा अै उपन्यास आप-आप री निजू विसेसतावां रै पांण साहित जगत में सिरै मांनीज्या।

अेक तरफ तौ विस्व-साहित में उपन्यासां री स्थिति जबरदस्त मजबूत है, दूजी तरफ राजस्थांनी री उपन्यास जातरा हाल सरू ई होई है। जद राजस्थांनी उपन्यासां बाबत बात चालै, तौ अेकाअेक चुप रै जावणी पड़ै। वजै आ के राजस्थांनी री उपन्यास-संपदा हाल चौत ई कम है। विसाळकाय उपन्यासां री कल्पना तौ हाल अळगी है, पण लघुकाय उपन्यासां में ई हाल कोई खास उपलब्धी नीं हो सकी। आंगळियां माथै गिणा जित्ता तौ उपन्यास

बिनां होवणी चाहिजै के वै वाकई उपन्यास है के नीं। तद ई राजस्थांनी बाबत अेक साफ-सुथरी स्थिती बणैला।

पण इण बाबत ई केई दिक्कतां पेस आवै अर साधनां रै अभाव में स्थिती ज्यूं री त्यूं रै जावै। सबसूं मोटी दिक्कत है सगळै राजस्थांनी उपन्यासां री अेक जगै या अेक सावै उपलब्ध होवणी। कीं तौ अैड़ा है के सिवाय किणी अेकाद जगै रै, किणी लाइब्रेरी या सोध-संस्थांन में, कठैई नीं मिलै। सिवाय वां रा उल्लेख या चरचा रै, वां रै बाबत कीं जांणकारी हासल नीं होवै। दूजी दिक्कत है धारावाहिक रूप में छप्यै उपन्यासां रै पत्र-पत्रिकावां री पूरी-री-पूरी फाइलां रै नीं मिलण री अै फाइलां यूं मिलणी नामुमकिन तौ नीं, पण कठण जरूर है। हो सकै किणी सोध संस्थांन के लाइब्रेरी में उपलब्ध होवै। फेरूं ई, है वौत मैणत अर धीरज री काम।

आ रै अलावा अेक जिकी दूजी समस्या उपन्यासां री चरचा करतां आवै वा है विजैदांन देथा रै लिख्योड़ै अर 'बातां री फुलवाड़ी' में छप्यै मोटै मोटै किस्सां री। 'तीडो राव', 'ईस्टू खां', 'आठ राजकंवर', 'सांच री भरम' 'मां रो बदळो' इत्याद री। आं नै उपन्यास विधा रै तहत गिणणी चाहिजै के नी ?—आ समस्या हाल तांई केइयां रै सांमी वणियोड़ी है। केई जगा आ नै लोककथावां माथै आधारित होवण सूं उपन्यास नीं मांनै, तौ केई जगा आं नै उपन्यास रौ दरजौ देवै। म्हारै निजू विचार सूं विसुद्ध उपन्यासां री चरचा करतां, सिवाय 'तीडो राव' रै, आं नै टाळ देवणा चाहिजै बाकी सगळा लोक उपन्यास है अर आं नै लोक साहित रै तहत राखणा चाहिजै। 'तीडो राव' में दरअसल व्यंग री 'टॉन' है, इण वास्तै इणनै उपन्यासां में गिण सकां। ज्यूं के स्पेनिस में 'डॉन क्विक्जोट' अर अंगरेजी में 'गुलीवर ट्रेवल्स' लिखीज्या।

अबै आवौ, राजस्थांनी उपन्यासां री बात करां। बिना किणी विवाद रै 'कनक सुंदर' राजस्थांनी रौ पैली उपन्यास है। सन् १९१५ में छपियै इण उपन्यास रा लेखक है सिवचंद भरतिया। आ बात ध्यांन देवणजोग है के लेखक आपरी इण क्रती सारू 'उपन्यास सब्द रौ प्रयोग नीं कर'र गुजराती में चालण वाळै 'नवल कथा' सबद रौ प्रयोग कर्‌यौ है। भरतियाजी रै प्रयोग कर्‌योड़ै इण सबद रौ इस्तैमाल आगै नीं हो सकियौ अर बाद रा

१६. कुण समर्भ चंवरी कौल/सीतारांम महरसी
१७. तिरसंकू/छत्रपति सिंघ
१८. कजळो दाग/माधव सरमा
१९. न्हुलती गांठां/पारस अरोड़ा
२०. सेळी छांव खज्यूर की/प्रेमजी प्रेम
२१. काळ भैरवी/रांमनिवास सरमा
२२. भोर रा पगलिया/भंवरलाल सुथार
२३. मिनख रा खोज/बी. अेल माळी 'असांत'
२४. भोळावण/मालचंद तिवाड़ी

आं रै अलावा दो उपन्यास धारावाहिक निकळ्या। दीनदयाळ 'कुंदन' रौ 'गवार पाठो' मासिक 'हरावल' में अर रांमदत्त सांकृत्य रौ 'आभळदे' पाक्सिक में। जुगल परिहार रो आवण वाळै कम्प्यूटर-संस्क्रती माथै वैग्यानिक उपन्यास 'सूपर माइंड' हफ्तैवार 'आगीवांण' में धारावाहिक निकळ रैयो है।

लक्ष्मीनिवास बिड़ला रौ 'पदमणी रौ सराप' अर किसोर कल्पनाकांत रो 'धाड़वी' धारावाहिक सरू होया हा, पण पूरा छप्या के नीं, इणरी वैम है।

कीं क्रतियां अैड़ी है, जिणनै के केई जणा उपन्यासां रो दरजो देवै, पण वास्तव में जिका के उपन्यास है नीं। मूलचंद 'प्राणेस' री 'परदेसी री गोरड़ी', बद्रीदास साकरिया री 'अनोखी आंन' अर दो पुरांणी वातां 'कुंवरसी सांखलो' अर 'राहिब-साहिब'। अै उपन्यास कत्तई नीं है अर आंने उपन्यास गिणणा ई नीं चाहिजै।

इण भांत आपां देखां के राजस्थांनी उपन्यासां री जातरा हाल पैलै दौर में है अर विसै, कथ्य अर सिल्प रै आधार माथै हाल कीं नीं होयो है, सारो होवणो बाकी है। अबै कीं-कीं स्थिती मजबूत होवण रा आसार दीस रैया है। विसवास राखां के आवण वाळै समै में राजस्थांनी उपन्यास आपरी स्थिती मजबूत करसी।

●

संभावना

अमृत सिंघ पंवार
री
कविता



इण स्तंभ रा कवी श्री अमृतसिंघ पंवार जोधपुर विस्वविद्यालै सूं अेम. अे. पास करी। हिन्दी अर राजस्थांनी दोनूं भासावां में लिखै। हिन्दी में मोकळी रचनावां छप चुकी है, राजस्थांनी में छपण वाळी आ पैली रचना है। आपरा दो हिन्दी उपन्यास अर अेक कविता संग्रै छापैखानै में है। इण वगत आप अध्यापकी रै साथै-साथै जोधपुर विस्वविद्यालै सूं डा० विमल रै निरदेसण में हिन्दी साहित में सोध कर रैया है।

आभै री वौपार

इण आभै री अणंत ऊंचाइयां
आ कैड़ी हांफळ
हुयगी धुंवाधोर/लोही भांण
आभै री सूरत

उड़ता काग, चीलां अर गिरज
वांट लियो आखै आभै नैं
भांत-भांत रा पंखेरू
डरियोड़ा जोवै खुद रा ठांव
कठैई नीं लागै वां री दांव

वांट लियो आखै आभै नैं
अर करण लाग्या है अै वौपार
आं नैं परतख देखतां

वणाय लोही रा ठांण
तणाय हाड़खा री टाल
आं रा तीखा दांत-पंजा सांतरा
कांपै पंखेरू करता साथै जातरा

कुण यां सांमी आंख उठावै
आं री औ वौपार
औ वंटयोड़ो अकास/
यां री वपौती वणगी
जमियोड़ी जाजमां लागै लोही री
रेवणां वणगी

वगत ग्रर परम्परा ● सुरेश गुप्त

दादी री मिरतू रै दसवैं दिन सुद्धिकरण सारू नातै-रिस्तैदारां नैं जीमण दिरीज्यो। सगळां रै जीमण सारू पंगत मंडगी। जीमण सूं पैली सगळा ई अेक-अेक कौर निकाळ'र पत्तळ में राखता गया। म्हारा बापू उण पत्तळ नै उठाय'र दरवाजै बैठै अेक गरीब नै दे आ'र पंगत में बैठग्या।

अेक रिस्तैदार नैं वां रै सिधोई पंगत में बैठणो ग्रटपटो लाग्यो, वो बोल्यो-"ग्रवै देस होत तो नहाय के बैठै का परत।"

समाज री परम्परा टूटणै रै डर सूं सगळां रा हाथ ठमग्या। बापू कैवण लाग्या-"इणी खातिर तो ग्रापां लोग देस छोड़'र ग्राया हां।" ग्रर इतरो सुणतांई लोगां रै चैरै माथै संतोख झळकण लाग्यो हो।

सहयोग ● किशोर पहाड़ी

म्हां लोगां री परिसद कानीं सूं ग्रागलै इतवार नै रास्ट्रीय बाळ वरस रै ग्रवसर माथै ग्रेक बाळ मेळै रो ग्रायोजन करियो जा रह्यो है, म्हां लोगां री इच्छा है के इण बाळ वौपार मेळै रा खाज मिजमांन ग्राप वो। "चोखी बात है, म्हैं जरूर ग्रा जास्यूं"-मंत्री केयो "धनवाद ! थोड़ी पीसा टक्का री मदद।"

म्हैं ग्रागूंच ई समझग्यो हो के ग्राप म्हनैं खास मिजमांन बणाय'र मदद लेवणा चावो। जद मदद री जरूरत पड़ै, तद ई लोग म्हारै कनै ग्रावै। नींतर नीं।

"पण ग्राप ई तो......।" ग्राछी बात, "सिंझ्या पांच वजतांई ग्राय जास्यो।" मंत्री री इत्तोक पड़ूत्तर हो।

उल्थो : विक्रमसिंघ गुन्दोज



अमूंजणी री दवा माटी सूं मजाक

जद कोई रचना इण सारू लिखीजै क' उण सूं वा भासा पुष्ट व्हे'ई तो उणनै अंगेजणी उण भासा री वरग व्है, पण भासा सूं आगै जद कोई रचना साहित नै पुष्ट करीजण सारू लिखीजै तो उण माथै विचार करणी लाजमी व्हे जावै । मिनख भासा नै वणावै अर साहित 'मिनख' नै या यूं कैवणी ठीक रैई क' अेक सामूहिक रूप सूं उपजै ने दूजो व्यक्तिगत रूप सूं, या यूं कैवूं क' भासा मिनखां सूं वणै ने साहित मिनख सूं । साहित अर लोक-साहित रो भेद कांई इण आधार माथै व्हे सकै ? औ सवाल भी ऊभो व्है । अठै आ वात मानण में कोई अंतराज कोनीं क' भासा सूं साहित वणै अर साहित सूं भासा ।

पण जद कोई आदमी जीव अमूंजण री इलाज निवन्ध(?) लिखण में सोधै तो उण री कोई कांईं कर सकै । वी. अेल. माळी 'अशान्त' आपरै निवंध संग्रै (?) 'माटी सूं मजाक में आपरी अमूंजणी री 'दवाई सोधै । उण पोथी रै पैलै पाठ में ई वै कैवै क' "लारला केई दिनां सूं मेरी जी कियां ई कर रैयो है, जक नीं पड़ै, ठाह नीं क्यूं अमूंजै ! आ वात जरूर है के मैं सोचतो रैवूं, पण जिया म्हैं सोचूं उण तरियां तो भोत पैली सूं हुवतो रैयो है, भोत पैला सूं मतळब स्रिष्टी रै सरू सूं ही", इण रै साथै ई वैं जकां सोचै वो वताणो सरू कर देवै ।

निवन्ध लिखण रा दो तरीका देखण में आवै अेक में निवंधकार पैली निवन्ध रो सार सूत्र रूप में लिख'र उणरी व्याख्या कर उण नै विस्तार देवै अर दूजै में सवसूं आखिर में सगळी वात नै समेट सूत्र रूप में पाठकां रै साम्ही रख देवै । पण वी अेल. माळी 'अशांत' आं दोनूं स्थितियां सूं न्यारी आपरी तीजी लीक वणावण री कोसिस करी अर आपरै उण रचनाकर्म जिणनै वै निवन्ध कैवै, रै साम्ही अेक सवाली सैनांण ऊभो कर दियो ।

निवन्ध लिखण सारू तथ्य अर तरक दोनां री जरूरत पड़ै फगत भावनावां सूं कांम नीं चालै । जे कोई फगत भावनावां नै उकैरणी चावै तो पछै वो जको कीं लिखै उणनै निवन्ध मान लेवणो वाजिव कोनीं, क्यूं क'

तूं बदळ ! मेरी मजदूरी नै पिछांण, मेरी बात नै सुण ।...." (पेज ३८)

"मिनख तूं हीमत राख, गुणतौ रैय अेक अर अेक दिन तो तेरै सुवाल री सही उत्तर पकायत आवैली, हीमत राखजै, मिनख ! लिछमण चायैला, भरत चायैला, शत्रुघन भी चायैला, अर्जुन अर भीम भी चायैला ! तूं हीमत मतना हारजै ! थारै में सूं वणैला अै ! तूं गुणीजतौ रैय ! गुणीजतौ रैय !! गुणीजतौ रैय !!!" (पेज ६३)

म्हनै लेखक री समझ माथै कोई संका कोनीं, पण इण पोथी मांय केई अैड़ी गळतियां देखण नै मिळै क' पढ़णियै नै लेखक री समझ माथै सवालिया सैनांण लगाणौ पड़ै, सबसूं पै'ली गळती तौ आ क' लेखक पूरी पोथी में कठैई आदमी अर मिनख रै फरक नै स्पष्ट नीं करै–

"म्हैं दुबळौ हुवतौ जा रैयौ हूं यानि आदमी ।" (पेज ७)

"पण मेरी भूख नीं मरै यानि मिनख री भूख ।" (पेज १५)

"आदमी झूठ में जीव रैयौ है ।" (पेज १५) "आदमी हाल तांई व्यवस्था रै नेड़ै ही कोनीं गियौ - मिनख (पेज १९)"आदमी तनै रांम बणणौ पड़सी ।"(पेज १५)

"पण आदमी चुप है, मिनख मून धारण कर मेली है ।"(पेज २२)

"कठै सीक आदमी चेत रै या है मिनख बोल रै या है ।"(पेज २२)

आं सगळां नै पढ़िया तौ आ बात लागै क' लेखक कनै सबद कम है इण सारू कठैई आदमी अर कठैई मिनख लिख'र आपरी भरती भरी ? म्हैं ई इण बात नै मांन लेवतौ, पण आं दोनां मांय लेखक खुद फरक करै, जदै ई तौ वो लिखै–"दुनिया री मिनख आदमी रौ सुभाव बदळणै में समर्थ नीं है ।" (पेज १०)

"राजा भी आपरी नाक कटवा लीनी-यानि मिनख, मंत्री भी नकटा हुयग्या - यानि आदमी"(पेज ४८)

आं नुवां अरथां सारू लेखक नै बधाई देय सकूं धिन भाग है राजस्थांनी रा ।

इणीं तरै सूं सबदां री दुरुपयोग अर गळत प्रयोग पूरी पोथी में ठौड़-ठौड़ मिलै अेक सबद कर्मी नै सबदां रै प्रति खास लगाव व्हैणौ चाइजै अर सबदां रै इस्तैमाल नै लेय'र सावचेत रैवणौ चाइजै, पण वी. अेल. माळी 'अशांत' सबदां रै अैड़ै 'प्रयोग' रै सागै गळत संरचना भी करता रैवै । एक बानगी देखौ–

जाणै लेख री नांव धरण में कीं चूक हुगी व्है। भासा रै तालकै जकी बांता री उठीक रागोजै वा मांय सूं घण करी नदारद है। राजस्थांनी भासा री निकेवळी पिछांण, उण री खास ठसकाई, व्याकरण, संग्या, क्रिया, लिंग सबदां री बिणगत अर व्युत्पति सूं जुड़ी थकी बातां सारू लेख में चिन्याक बानड़ ई नीं नाथै। साहित सूं जुड़ियौ थकौ लेख ई पैलांई डा० माहेस्वरी रै लिखोड़ी पोथी रौ छोटौ रूप लखावै। हां इण लेख में अबार रा राजस्थानी साहितकारां रा नांव लिखण सूं नवादी बात जरूर जुड़गी। डा० माहेस्वरी जेड़ा टाळका लिखारा सूं राजस्थांनी भासा सूं जुड़ी थकी खास उथकायां रै खुलासै बखांण री आस ही जकी इणं छोटैसेक लेख सूं नी पूरीजै।

डा० मनोहर सरमा लारला पचास बरसां सूं राजस्थांनी रै लोक साहित रै बुगचियै मूं काड-काड अर कीं न कीं बात लोगां सांमी धर रैया है। श्री मोहनलालजी पुरोहित रै साजै में लिख्योड़ै 'राजस्थांनी लोक साहित' लेख में डा० मनोहर सरमा राजस्थांनी लोकगीत; मेह सूं जुड़ी थकी कहावतां, लोक देवता, आडियां; हियाळियां, क्रीडा, लोक कथावां इत्याद री सींतरी बखांण करियौ है, पण सगळै लोक साहित री चिन्यौ-चिन्यौक झांकी बतावण सारु सगळै लोक साहित नै अेक लेख में भेळौ ठूंसण बिचै लोक साहित रै किणी खास मुद्दै माथै लेख लिखीजतौ तौ सरमाजी री जांणकारी रौ घणौ फायदौ पठाकां तांई पूग सकतौ।

'सांस्कृतिक राजस्थांन' रौ तीजौ लेख 'मन्दिर स्थापत्य' डा० रांमनाथ रै लिख्यौ थकौ। राजस्थांन रै स्थापत्य माथै डा० रांमनाथ री पूरी पकड़ अर ऊंडी पूग इण लेख में बात-बात रै समचै लखावै। म्हैं आप लारला बीस बरसां मूं विस्वविद्यालै सूं जुड़ियोड़ौ हूं। पग-पग माथै आ बात लखावै क' टाड साब अर बीजा विलायतिया राजस्थांनी इतियास लिखारा ने कण-कण धरमोपोली अर घर-घर में लियौनीडाज आळी अेड़ी झाट भेळाई क' वा पीढी दर पीढी रै घटोघट बैठगी। अजै घणकरा वा इज घाई बांधियोड़ा। राजस्थांन रै इतियास री कीं भणक पड़ी अर भाई लोग सूरमाई अर दातारी रा च्यारैक बोलां सारु फरां-फरां होट फुरकाय दै अरै गटागट पातळ, पीतळ, भामासा का दुर्गे बावै रा नांव उछळण ढूकै। असल में बापड़ा विलायतिया इण मुलक री रग-रग नै कद ओळखता हा। आजं आळा सैलांणी घूमर अर गिणगौर नांव रै अेयर कंडीसन डाक बंगळां में

मिनी कवितावां

निजर

मिनख री
निजरां में
लुगाई अर टावर
करज रा दो आखर!

वजट

नफो ओछो
नुकसांण वतो-
वतावो
अर
नुं'वा-नुं'वा-
कर लगावो!

कारज

अै
आजकल
देस सेवा री कारज
इण भांत कर रैया है
दोय लम्बर री
धंधौ करण वाळां रै वास्तै
दस लम्बरी
तैयार कर रैया है!

● रमेश मयंक

राष्ट्रीय पर्व स्वाधीनता दिवस पर

- नगर विकास न्यास, बीकानेर नगर के सुनियोजित विकास के लिए आपके सक्रिय सहयोग व योगदान का स्वागत करता है।
- न्यास की जयनारायण व्यास नगर, नागनेचीजी, जवाहर नगर एवं विभिन्न योजनाओं में आवासीय एवं व्यावसायिक भू खण्ड नीलामी से खरीद कर लाभ उठावें।
- नगर के सुनियोजित विकास में न्यास की भूमि पर अनाधिकृत अतिक्रमण रोकने के लिए न्यास को अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें।
- जन साधारण विशेषकर पिछड़े क्षेत्रों में समस्याओं के समाधान के प्रति जाग्रत विश्वास।

नगर के चहुमुखी विकास में सन्नद्ध

इस संस्था की कतिपय उपलब्धियां

- गत वर्ष में १,०३,८०,२४९-०० रुपये व्यय कर निर्माण और विकास कार्यों की रफ्तार को तेज किया।
- न्यास ने हुड़को से बाढ़ पीड़ित व्यक्तियों को भवन निर्माण हेतु ऋण स्वीकृत कराया है।
- पच्चास कच्ची वस्तियों के जरूरतमंद नागरिकों को १-१-८२ से पूर्व का हजारों कब्जों का नियमन--
- पर्यावरण सुधार योजना के तहत न्यास ने अभी तक २३ कच्ची वस्तियों में ३९६३ लाख रुपये इन वस्तियों में सड़कों व नालियों, पानी, बिजली की लाईन लगाने हेतु विकास कार्य सम्पन्न किया गया। ११ कच्ची वस्तियों के लिए राज्य सरकार से १३,१२,५०० रुपये का अनुदान पर्यावरण सुधार योजना के तहत प्राप्त हुआ। इन वस्तियों में विकास कार्य की प्रक्रिया चालू हैं।

सी. के. सदाशिवन	भवानीशंकर शर्मा
सचिव	अध्यक्ष
नगर विकास न्यास, बीकानेर	नगर विकास न्यास, बीकानेर

मुनाहवी सैयद मनवर अली । इण सम्मैलण रा खास मिजमांन राजस्थांन साहित अकादमी रा अध्यक्ष प्रकास 'आतुर' हा, पण स्वीकृति दिया रै पछै ई नीं पूगा । जिणनूं अठारा लिखारां में गैरो रोस है । इणी कार्यक्रम रै तैत हिंदी दिवस नै उ. मा. वि. स्तर माथै 'वादविवाद प्रतियोगिता' रो आयोजण ई होयो जिणमें राजेंद्र रतनू पैलै लम्बर अर सिवानी दीक्सित दूजै लम्बर रैयी । अध्यक्षता टंडन जी रै नेड़ै रा सयोगी चिरंजीव लालजी भट्ट करी । संयोजण श्री वी. अेम. व्यास करयो ।

–पुस्पा पुरोहित

जोधपुर/ हिंदी दिवस री सिंझ्या प्रगतिसील साहित संगम कांनी सूं जोधपुर विस्वविद्यालै हिंदी विभाग री अध्यक्ष डॉ. इन्दिरा जोसी री अध्यक्षता अर डॉ. रामप्रसाद दाधीच रै संयोजण में काव्य गोस्ठी रो आयोजण होयो । गोस्ठी में सरवश्री डॉ. सक्तिदांन कविया, रामप्रसाद दाधीच, मीठेस निरमोही, डॉ. कमल मोणोत, डॉ. तारा गेहलोत, नारायणसिंघ पीथळ, सैयद मनवरअली, डॉ. इन्दिरा अग्रवाळ, प्रभासचन्द्र जोसी 'पंकज,' सत्येन व्यास, अम्रतसिंघ पंवार, पुस्पा पुरोहित, प्रभूप्रकास सोळंकी, कांति वोड़ा अर के. सी. छंगाणी इत्याद काव्य पाठ करयो ।

–प्रितेंद्र कायस्थ

वीकानेर/ साहितिक संस्था 'उपनिसद' कांनी सूं श्री अरजुनदेव चारण रै अेकळ काव्य पाठ रो आयोजण आंणद निकेतण में उरदू रा चावा-ठावा साहितकार सीन. काफ. निजाम री अध्यक्षता अर अजीज आजाद रै संचालण में होयो । इण सूं पैली संस्था रा अध्यक्ष श्री हरीस भादाणी अतिथि कवी रो परिचै करायो । सवाअेक घण्टै तांई होयै इण अेकळ काव्य पाठ में नगर रा सगळा मोजीज साहितकार हाजिर हा अर सगळा ई श्री चारण री रचनांवां री घणी-घणी सरावणा करी ।

–सुसील पुरोहित

स्वाधीनता दिवस पर आपका हार्दिक स्वागत

कार्यालय नगर सुधार न्यास, जोधपुर

नगर सुधार न्यास, जोधपुर की महत्वकांशी योजना बरकतुल्ला खां स्टेडियम

मुख्य आकर्षण :

- इण्डोर स्टेडियम
- कल्ब हाऊस
- क्रय विक्रय केन्द्र
- तरण ताल
- खिलाड़ी आवास सुविधा

व्यय :

- अनुमानित विकास व्यय ३ करोड़
- निर्माण क्षेत्र ३० एकड़
- दर्शकों के बैठकों की सं ३० हजार

बरकतुल्ला खां स्टेड़ियम निर्माण में आप सभी का आर्थिक सहयोग वांछित है

मानजी का हत्था व्यवसायिक योजना में छविगृह निर्माण हेतु भूखण्ड की माह सितम्बर में नीलामी प्रस्तावित है ।

अन्य योजनाएं :—

१- ट्रक टरमिनस व्यवसायिक योजनाएं
२- कबीर नगर रहवासी योजना
३- नगर के प्रमुख चौराहों का सौन्दर्यकरण एवं विकास

सुधीर पंचोली
सचिव एवं अधिशासी अभियन्ता

मानसिंह देवड़ा
अध्यक्ष

आगूंच पांच में-

कन्हैया लाल सेठिया, सत्य प्रकास जोसी, डा. नारायण सिंघ भाटी, चन्द्रसिंघ, गजानन वरमा, तेजसिंघ जोधा, जुगल परिहार, प्रेमजी प्रेम, स्याम महाऋसि, पुरुसोतम छंगाणी, भागीरथ सिंघ भाग्य, विक्रम सिंघ गुंदोज, रमेस मयंक, चेतन स्वामी, राजेन्द्र बोहरा, सुधीर राखेचा इत्याद री कवितावां

अर

जैपर में आयोजित अखिल भारतीय प्रगतिसीळ लेखक संघ रै वासिक अधिवेसण री रपट/फारूक आफरीदी

संपादक

अभिनंदण

अखिल भारतीय
प्रगतिसीळ
लेखक महासंघ
कांनी सूं जैपर में आयोजित
वासिक अधिवेसण
रै
ओसर माथ
पधारिया
सगळा साहितकारां
नै आगूंच परिवार
कांनी सूं घणै मांन अभिनंदण

सबसूं पैली अर मोटी बात तौ आ है के राजस्थानी कविता नै हिन्दी कविता जित्ती लम्बी जात्रा कोनीं करणी पड़ी। अर अेक लंबै अंतराळ तांईं तौ साव सांयत रैयी। इणरी खास वजै ही राजनीतिक उथळ-पुथळ अर जन-चेतना री कमी। अै ई कारण रैया के राजस्थांनी कविता रौ सांगौपांग विकास नीं होय सकियौ।

आधुनिक राजस्थानी कविता रौ श्रीगणेस होवै कविवर ऊमरदानजी सूं। पण वां री कविता पूरण रूप सूं नीं तौ आधु-निक ई है अर नीं ई ठेठ परंपरावादी ई। आं नै आपां सधिकाळ रा कवि कैय सकां, जिका के भावां अर विचारां रै स्तर माथै तौ घणै तेवर रै साथै आया, पण छंद अर सिल्प रै मांमले में ठेठ परंपराऊ ई रैगा। नतीजौ औ होयौ के वांरी कविता पूरी तरियां सूं आधुनिक नीं वण'र बीज रूप में ईं सांमी आई। अर इणरै बाद जिका सवसूं सबळै रूप में सांमी आया, वै हा जनकवि गणेसी लाल व्यास 'उस्ताद'। उस्ताद वाकैई आधुनिक राजस्थानी कविता रा पैला सिमरथ अर सबळा कवि है। वां री कविता आज ई आपां नै उत्ती ई 'अपील' करै इणरै लारै केई कारण है अर वै कारण ई वां नै इण रूप में थरपै। उस्ताद री सवसूं मोटी विसे-सता आ ही के वै साव सरल अर सीधी-सादी भासा में कविता करी अर गैरी सूं गैरी वातां वां में कैयी। देस री आजादी, वैग्यानिक विकास अर विस्व राजनीति रौ वदळतौ रूप रौ चितण वां नै केई मोहां सूं तोड़ियां अर नूंवीं चेतना जगाई। आ बात वां री कविता में सुभट लखावै। साथै अर लारै का कवियां री सिरजणाऊं दीठ नै कमती अर वत्तै रूप में इण नूंवी चेतना नै अंगेजी है।

सिणगार अर वीर रस री भावनावां सूं जुड़ियोड़ी राजस्थानी कविता परंपरागत नीं रैय'र कदैई नूंवौ मोड़ लियौ

चाणाऊ दीठ सूं सगळी ई रचनावां नै परखां तौ पगस लियां विगर ई कैय सकां के राजस्थानी री आधुनिक कविता बीजी भारतीय भासावां सूं किणी रूप में उत्ती लारै कोनीं जितरौ के कैयौ जा रैयौ है।

आज राजस्थानी रा आधुनिक कविता में कविताई प्रयोग दूजी भासावां सूं असरदार अर सिरै मौड़ लखावण लाग्यौ है, अर रचनाकारां री सिरजणाऊ दीठ में परंपरावां सूं हट'र नूवैं प्रयोगां अर प्रसगां में वदळतै परिवेस रौ सबळौ पसराव सांमी आय रैयौ है, पण आ वात आलोचकां अर अनुवादकां री कमी रै कारणे सांमी नीं आ रैयी है जद के हिन्दी अर दूजी भारतीय भासावां में औ कारज-आंदोलन रै रूप में होय रैयौ है। इतरौ होवण रै पछै ई आठवें दसक रै छेलं लागै के आ खांमी पूरी होय रैयी है अर नूंवी दीठ लियां आलोचक अर कवि इण आंदोलण सूं जुड़ता जा रैया है।

आधुनिक कविता रै छठै सातवै अर आटवै दसक तांई पूग'र पारखी दीठ सूं गैराई सूं मूल्यांकन करियौ जावै तौ लागै सिरजण हार आपरै सिरजण धरम नै आपरै वूतै रै मुजब निभाय रैया है अर इण में घणौ वदळाव आयौ है। आज राजस्थानी कविता आपरी ओळखांण वणावण में सिमरथ है। इण भांत आठवै दसक में पूग तांई लखावै क' प्रगतिसीळ अर जनवादी काव्य जात्रा री राजस्थानी कविता में सांगौ-पांग विकास हौ रैयौ है। अर औ काव्य सिरजण प्रगतिसीळ साहित आंदोलण री विकास जात्रा रौ सैंठो आधार वणसी।

— मीठेश निरमोही

खास मिजमांन रै रूप में प्रांतीय महामंत्री श्री वेद व्यास संघ री गतिविधियां बाबत जांणकारी दीवी अर बतायौ क' राजस्थान रा 18 जिलां में प्रगतिसीळ लेखक संघ री साखांवां सक्रिय है अर लोगां में चेतना जागी है।

जळसै रै दूजै दिन डा० एस० डी० कपूर रै संयोजन अर श्री मरुधर मृदुल री अध्यक्षता में "राजनीति अर साहित" विसै माथै संगोस्ठी व्ही। इण संगोष्ठी में डा० सावित्री डागा, डा० एस० के० लाल परचा भणिया अर सरवश्री मनमोहन, लादूराम जोसी, रामचन्द्र बोड़ा, कांति बोड़ा, मनहर कल्ला, नारायणदान देपावत, हितैस, व्यास, खुसालनाथ 'घीर' आपरा विचार राखिया।

जळसै रै दूजै दिन ई मानीता कहांणीकार श्री विजयदान देथा, री अध्यक्षता अर श्री अबीरचंद ओझा रै संयोजण में कथा गोष्ठी रौ आयोजण व्हियौ। सरवश्री विस्णु प्रभाकर, विजयदान देथा, हसनजमाल, मीठेस निरमोही, डा० यस गोयल, अबीरचंद ओझा, प्रभुप्रकास सोळंकी, बाड़मेर रा ओम प्रकास गरग "मधुप" पोकरण रा भागीरथ रंगा, फलौदी रा मोहन पुरोहित "त्यागी" आद आपरी कहाणियां सुणायी।

सिंझ्या अेक काव्य गोस्ठी री आयोजण श्री सत्येन जोसी री अध्यक्षता अर श्री सुरेस राही रै संयोजण में व्हियौ। काव्य गोस्ठी में डा० सावित्री डागा, एम. ए. गफ्फार "राज", सत्येन जोसी, सुरेस राही, सोन. काफ. निजाम, अरजुनदेव चारण, बी. आर. प्रजापति, ए. डी. राही, मीठेस निरमोही, सैयद मुनव्वर अली, सत्येन व्यास, मदनमोहन परिहार, श्रीमती कृष्णा भटनागर, असोक कुमार दवे, रागिनी राजावत, कांति बोड़ा, सक्तिदान कविया, स्यामसुन्दर भारती, श्रीमती विद्या भारती, श्रीवल्लभ घोस, रईस जोधपुरी, सुसील पुरोहित. श्रीमती पुस्पा पुरोहित, प्रभुप्रकास सोलंकी, केसरीमल सर्मा "विमल", दलपत परिहार, हितैस व्यास, खुसाल नाथ धीर, ओमप्रकास गरग "मधुप", गोकुलेस पथिक, जगदीस दहिया, सत्यदेव सर्मा "चूरा", मोहन पुरोहित "त्यागी" आपरी हिन्दी, राजस्थानी अर उर्दू में रचनावां सुणाई।

इण मौके पीपुल्स बुक सेंटर, जोधपुर कांनी सूं पौथी प्रदर्सनी रौ आयोजण ई व्हियौ, जिणमें प्रगतिसीळ साहितकारां री पोथियां राखीजी।

जळसै नै सन् 1982 रौ जोधपुर में सबसूं मेहताऊ साहितिक आयोजण कह्यौ जा सकै, जिणमें प्रांत अर जोधपुर अंचळ रा मनीता लिखारा घणाकारी संख्या में पधारियां।

— फारूक आफरीदी

चालां हां दो आंगळ
मांडां हां कोस चार
सांमी कद आंवरा दां,
खुदनै, खुदरै म्हां
जाणां हां पोल-तैंग
गावां में नागा हां,
ना ...गा कर नागाई
सांवट नै मेल-भूल
भूल गया....भूलां हा....भूलांला
भूल्यां ई पार पड़ै
ऊब ताळ लोटै में
चिवकी कुण मार सकै ?

गुचळकी डुबावैला
गुचळकी पुगावैला
सुरगां रै दुरवाजै
ओसीस्या अधर पड़्या
सुपनां रा वेला दो
जीवतड़ां रा सुपनां
मरियोड़ां रा सुपनां
सुपनां ई जीवरा है
सुपनां ई मिरतू है
करमठोक कमतर में
हाडकियां भांग रया
भागतड़ै जीवरा री
जनपतरी फाड़-फाड़
मिरतू रा हलकारा
टसकै है ! टसकै है !

फेर अेक पसवाड़ी
अटक्योडी उळझ रयी
गीतां री कड़ियां में
आखर व्है ऊड़थूड़

आवै कुरा
गावै कुरा

बीज

— पारस अरोड़ा

अठै इज
    इण जमीं माथै
    खड़ै वौ खेत
    बोवै बीज
    कैसी चीज औ दांणौ ।
सूखौ
    चाटलै के बाढ़ दै वैवाय
    कुण जांणै
जरा लौ देख
    नैड़ा आय

छ्यारा कविताबां

ओंकार श्री

1

रंजी री वीन
ब्रह्म मरजाद
मनै अर तनै
चावै और कांई ?

2

छप्पनियो छींको
टूट्यो कोनीं
कागजां नै भींको
सुणो होनीं !

3

तखत विछाओ
तखता ऊंचाओ
तखतमलजी !
अठी नै तो आओ !

4

अणु/ईस्वर
स्वर
साक्षर संग निरक्षर !

5

क्रान्ति री डफोळ संख
राज अर अकाज !

6

जमानो
ठोठ रोकड़ियो
जलम-मरण रो !

टावर रौ सुभाव

नंद भारद्वाज

अवखा अर अबोट सवालां में
अणजांणै हाथ घालणौ
टावर री आदत व्है—
आगूंच वौ अंदाजै कोनीं
अवखाई री अंत—
अर थाग लेवण
ऊतरती जावै अंधारी वावड़ियां !

टावर रा
वां तीखा सवालां रौ
वौ कांई पड़ूत्तर देवै
जिका-आभा-चूक
हलक सूं वारै आय
ऊभ जावै सांमी
अर हालात सूं
वाथेड़ी करण नै मजवूर करै—

जीसा !
आपां क्यूं जोवां कोई रै सांमी,
क्यूं चाईजै आपांनै कोईरी मेहरवांणी,
क्यूं ऊभणौ पड़ै अकारथ
राजमारग रै अेड़ै-छेड़ै,
वोलां क्यूं अणूंती जै-जैकार—
अर क्यूं अवोला वैठणौ पड़ै
आपांनै मरजी परवारै ?
केड़ी अणचींती दुविधा है;
अेकांनी टावर री अलेखूं भोळी इंछावां
स्यांणी संकावां—

ऊभ-घड़ी आंबा ऊगावै
बाळपणौ विलमावण खातर
जैर घुळियोड़ी वांणी सूं
हालरिया गावै,
फांफां खावता फिरै
मिनख ऊजड़-उरभांणा-
अै सांमी जोवै
मुळकै-
अर फीटा पड़ जावै !

भारी वंदोवस्त
जावतौ व्हेतां सांतर
इचरज व्है आंनै उठती आवाजां माथै
'समझहीण' लोगां सूं सेवट गैळ छुडावण
सवद उधारा मांग
दिलासां री डौढी चढ जावै !

गरज व्हियां
चालै उप्पाळा-उरभांणा अै
अपणांयत दरसावै डौढी
पगडांडयां सूं मेळ वधावै,
वात उगेरै आदरसां री ऊभ-घड़ी
करसै रै कांधै हाथ राख
फोटू खिचवावै !

सरणाटै में ढळग्यौ तीजौ पौर
सईकौ तीजी पांत उतरग्यौ
पड़गी मौळी अंधारै री मार
वायरा ओजूं चालै
ऊगूणै आभै में उठती लाय
पखेरू निरभै निरखै,
धोरां रै उपरांखर उठती आंधी
काटकती वीजळियां री गाज
गढां री नींवां धूजै-
पण ओजूं करड़ावण वाकी है
आतमघाती वगत सिरकतौ आवै नैड़ौ
पोत उघड़ग्या च्यारूं कांनी

जिकौ-कीं जांण्यौ-बूझ्यौ
उणरौ अणभव सूं उल्टौ ढाळौ है–
वणाया जिणनै मोवी आगीवांण
सरायौ भाग
दीखता कारज वांरा उत्ता ई पोचा है,
मोकळा नेम वतावणहार
ऊजळा संत
खुद री नीयत रै समचै
उतरता उत्ता ई ओछा
–इण जुग री आ लाचारी है !

यूं वरसां रै अणभव रौ
अंतौ सार
वौ इणी नतीजै पूग्यौ दुनियादार :
भाग री भरम
फगत आपै रौ स्हारौ है,
मन नै धीजावण सारू
माईतां री सूंपियोड़ी सीख
अेक भोळौ विसवास
सुख री कामना !

आंगै ढळियोड़ी
मीठौ मानवी वैवार
अंतस में दवियोड़ी ऊंडी वेदना !

मिनख री भाग
मुलक सूं न्यारौ कोनीं व्है
नीं सरीखा रैवै हरमेस
दोजखी रा दिन
जिका उतारै पिरथी री भार
वै आभै सूं कोनीं अवतरै
नीं जमीं नै फोड़ ऊगै
सिरजण हार–
वै हेत राखै हाथ सूं
जमीं सूं वधियोड़ी राखै आस
मैणत नै ऊंचौ मांण देवै मरदमी !

अर/वांचतौ रैवै जू'नै जुगां रौ इतियास
अणथक, अणतूट लियां नू'वै इतियास री आस
हांफतौ रै ! हांफतौ रै !! हांफतौ रै !!!

करसौ-दो

जोत्यां हळ
हांकता बळदां
बीजतौ किसमत
रासां रै फणकारा
ऊरतौ ऊमरै-ऊमरै
आपरौ इतियास ।

करसौ-तीन

लूं सूं-
लिपटियोड़ौ
बतूळियौ
काटतौ पेट
करजै रौ मारयौ
बांटतौ तन
उपजाय-उपजाय अणूंतौ अंन
अंजळ रौ अवतार
वांचतौ आपरौ ऊजळौ इतियास ।

क्यूं नीं जांणै मांनखौ

तावड़ै री तेड़ां
पिगळती उणरी डील
बतूळियौ बण
हिवड़ै नै हरसावै
परसेवै रा टपका
इमरत भोग बण
आवलौ रचावै
धरती री मांग भरै
निपजावण लागै मोती

नित-नेम

हरीश भादानी

थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै वाथेड़ा करां !

ञायली आंधी
पीयली लूआं
पूंछलै मूंडै लाग्योड़ौ झूठ
रगड़ हथाळयां
झाड़लै चैरै चेंटोज्या
काळा-पीळा लेवड़ा
थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै वाथेड़ा करां !

वीज्योड़ी बाजरी
मतीरां, मोठां नै
लांपौ देग्यौ काळ
आ, लूरलां
जाळ क' खेजड़ी रौ डील
छाल नै कूट
पोयलां टिक्कड़
सिजोयलां सिरियौ
बांधा, बंधै जियांई बांधा–
पेट रै पाटी
थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै बाथेड़ा करां !

आव चालां
राज रै मोटै थांन
बणै तमोळा-मेड़्यां

सूकौ सून्याड़
बरसां-बरसां
बादळ री लीरी तक रौ नीं पासंग

साची
काच री देखी कैयो
पण दीठ नै दीसै
सूकै सरणाट में
जागती बैठी
तावड़ियौ साच
क' बादळ रै बसू नीं रैयी

म्हारी जूंण
देखती आयी है सूरज बाप
म्हारा, हां म्हारा कमतर
धर मजलां धर कूंचां
दनूंगै-सिझ्या
ना पूगै पत्ताळ
भरलै बोरै में
खळ-खळ नांखदै देगां में

आडा आयोड़ा काच
उतारै दीठ
म्हारै पणीढै
कांसीरी थाळी
म्हारी आंख्यां में हिलकती दीसै
नीलम आभौ
आभै पसरयोड़ी हरियल बेलां
बेलां में पांणी
पांणी सूं तिरिया-मिरिया
म्हारी हेमांणी जूंण !

तुरत तोड़ी म्हारी मूरत
बंद करौ म्हारौ वौपार

मूरत मांडणा रौ चाव पाळौ
तौ ऊभी करौ
'हैवानियत' री मूरत
पैरावौ फूल पांनड़ा
नित-नेम
पछै काटौ च्यारूं मेर चकरा
चढावौ रंग-रंग री रगत
मुगत करौ म्हारी आतमा
पोत दौ डंमर अेड़ी हरेक मूरत माथै

म्हारी कविता

म्हारी कविता
मारग ढूंढ रैयी है उण रौ
कठै है वौ
जिण खनै गिरवी राख्योड़ी है
ईमान री पोटळी

म्हारी कविता
जूझ रैयी है उण सूं
जकौ वौपारी है
मिनख रै रगत रौ
वगत रौ

म्हारी कविता
रोक रैयी है वै पगल्या
जका 'जनून' सूं भरयोड़ा है
विसर रैयी है
रतांदी रै मांदां नै

म्हारी कविता
कोरी पगडंडियां कोनीं
जठै जकौ आवै, गुजर जावै
अठै सूं वौ ई गुजर सकै
जकौ धरती सूं जुड़योड़ौ है

परकोटा

— अर्जुनदेव चारण

थे ई भळै पूजीजता हा
थांनै ई कोई पूछती ही
भई मांनणी नीं आवै
कांई ही थांरै कनै

ऊंचै भाखर
ऊभा रैवता
निरखता आवता-जावता मिनख
वस
आय वैठता-उडता पंखेरू
उणारी मोद है
किणनै फुरसत अठै
दूजै कांनीं जोवण री
सगळा दौड़ै है सोधण नै
अेक रूंख
अेक चिड़ी
अेक आंख
जीतण मारू जुद्ध

थे तौ जणियोड़ा ही
भाखर जड़ियोड़ा हौ
दौड़-दौड़ सूं भाग गिया
तोई करडांण
आय गिया भूसाक जी
म्हैं परकोटा हां
हां
हां म्हैं परकोटा हां
जुगां-जुगां सूं

म्हांरा घाव देख
हंसो मती
काळै
थांनै
अठै ई ऊमणी है

कांमणेण

नीचलै पागोटै ऊभी म्हैं
म्हनै ओळवा री दाभ मत दै कांमणी
ताच-ताच रा घर
ताच ताच रा आंगणा
छींगां सूं ऊपर है आभौ
लुण जांणै
छीणां रै ऊपर व्है कांईं
कुण रैवै
मूंन धार
थूं छात वणी
म्हैं आंगणौ

अंधारौ चापळतौ आवै
छिप जावै किण खूंणै-खांचरै
सोधूं म्हैं
वायरियौ हांकरतौ आवै
पसरै लेय भुंजावां पूरी
भोगै थूं
म्हैं सोधूं-थूं भागै
म्हनै ओलवा री दाभ मत दै कांमणी

विडी री मरजाद जांणती थूं ऊभी
विडी री औकात जांणती थूं ऊभी
म्हैं थारी औकात
पगां वायरी
माव निपूती
आगत री सराप ओढियां
नेधम मूती

लेय कटारी इमरत री

गुडियौ राजा

श्यामसुन्दर भारती

सूरज-
डूबग्यौ काळीधार
दिन रै अंधारै में
अर इतकी आसंग कों' नीं म्हारै में
उण नै वारै काढ लूं
क्यूं के म्हारा हाथ-
म्हांरी आंतां में अळूझियोड़ा है
पग कळीजियोड़ा है कादा में
अर माथौ दबियोड़ौ है-
कुड़सी रा पागां हेटै
पछै आ काळस कुण मेटै ?
कुण भगावै अंधारा रौ भूत
कुण कीलै फुंफकारा मारती नागण रौ मुंडौ
कुण धरै जूत ?
यूं-
सगळा जांणै-
अर आछी तरै पिछांणै
के जनानी ड्योढी माथै-
नाजरियां रा पौरा लागै है
पण काथौ पियोड़ा नै
ताळी रा तटका कद दौरा लागै है।
तौ-
भूवाजी फिरग्या है चारूं खूंट
परवारगी है सगळी रांमत
अबै—
के डाकण भलां ई छुरी मलावती व्हौ
गुडियौ राजा तौ जागै है।

परखौ
ने ओळखौ
के किण री है आ तस्वीर

अर सोचौ-
किंया विगड़ी आ तस्वीर !
कुणं विगाड़ी आ तसवीर ! !
ओळखौ-
पिछांणौ आप री खिमता
ने समझौ-
के जठां तक छाती रा पुड़ियां हेटै
भट्टी धुकै है-
थां लाय लगा सकौ

वारूद रै तौ-
अेक चिणगारी घणी व्है ।

सगळा जीवता जीव
अेक दूजा रौ अर आपी आप रौ
भग नेम
न्यारा-न्यारा तेवांरां रै हरख-उछाव
नाचै कूदै-आवै गावै
आपरा दाणां कमावै
जूंण भूगत मसाणां समावै
कोई आंनै पकड़ाय गियौ हौ

जांत री पूंछड़ी
धरम पुन री पग
कोई दे दियौ हौ मंतर आंने
क' जात गंगा
अर गांव राम है
उण दिन सूं आज दिन लग
गांव रा न्याव सूं मरै
अर जात गंगा सूं मरै

रूंख

म्हैं रूंख सूं पूछ्यौ
उणरै डाळां री बोझ
उण फगत
फर-फर आपरा पान बजाया
जांणै म्हारै सवाल माथै हंसतौ व्है

म्हैं जड़ां सूं पूछ्यौ
वांनै आवना जोर री म्यानौ
म्हारी बात रै कांनौ नीं देय
जोर सूं जमी नै पकड़ी तांतां सूं
जांणै वै वांरी आंगळियां व्है
अर लांबी सांस रै मिस
जमीं सूं मंदवाय खैंचती री

खैंचती ई री
पछै नर साफ म्हारा सवाल
वठै रा वठै डाळां सूं लटक्या रह्या

दल्ली नी टाढ़

ज्योति पुञ्ज

हेत्ताअे देस ना
गरीबं ना परेवा थकी
बणावेला बम भडाका
दल्ली में फोड़ौ

ने बोलौ-
"अमारू भारत गरीबं थकी वण्यु
अेक धनवान देस है
जोवौ त' जोईलौ

दल्ली केवी समकै
हेत्ताअे देस मे आवीस्
सकमक समकती
ऊजवारी विरजीअे
ने ऊंसी-ऊंसी पांस पांस तारा वारी
होटलै ने बंगला है

कड़कती टाढ़ में
फूटा थापडां
ने आकोडिया ना भडलँ नी भेतै
टाड़ाई गयी है

ने अेणा टाल्ला अअें
टाड़ायलौ रूपौ आपड़ी वड़री नै
कै/के "बेट्टी दल्ली अुहे
कोरेक जुवी पड़ै
अें टाढ़ नैं पड़ती अुहे के हूं ?

बीजी बाइयै भली न
साड़िये करें, अेणीं सीता हरकी
सम्पा नै बातें-बातें मअ्रें
नेसी पाड़वा मकर्कें नै नजरें मअ्रें हूं
उतारवा घणीं तपड़ी
कान भर्या झूटी-झूटी वाता उड़ाड़ी
पण कोणै विस्वा नें करै
ने सम्पा नी भंडो ऊंसोस् रैं
तारै थुड़क दाडैं पूटें
अेक वाई धुणें
ने धुणती-धुणती कै/के
मूं डावणी हूं जुणें मारा चक्कर में
आवी जाय अेनै मुं साई जऊं
मारू नाव-'सम्पा' है

ई रातर नै आजनो दाड़ो
बापड़ी सम्पा डाकणी थई गयी
गाम मअ्रें कुणें नती बुलतू अेनै
हामी पड़ै त' मनकें वेगरें जअ्रें/सुरें नाई जअ्रें
ने घणी कूटें/आम करम फूटै ।

काईं व्हियौ म्हारा लाल ...काईं दीस्यौ ?

वै मूंडा पर
डूबती-तिरती लैरां
संकीजतौ, सुकड़ीजतौ मन
अदीठ भविस री भै
अर थूं
पाछौ भाग्यौ हौ
इणी मारग रै असवाड़ै-पसवाड़ै जोवतौ
म्हारा गमियोड़ा सपनां
हांफीजतौ-कांपीजतौ !

भाई !
मारग पड़ी मोहर कुण छोड़ै
विखरयोड़ा दाणां नै
क्यूं नीं चुगै-अै भूखा पंछीड़ा
जद कोई ठगीजै
सांपरतै अेक आखर सूं
क्यूं नीं ठगै वांनै
अै-कोरा कूड़ सवदां रा व्योपारी ?
म्हैं थ्हारौ हाल पिछांणतौ
म्हनै ना कियौ हौ-
मत भाग वीरा! ...पाछौ मत भाग !

गमियोड़ौ धन
पाछौ घणौ दोरौ लाधै !
आव भाई !
म्हारै साथै आव
आपां दूजा सपनां घड़ां
सांचा व्हैता सपनां
ज्यां में-टावर नीं दीसै
भूखा, तिरसा अर उघाड़ा
मां
मांय री मांय नीं पिसै
पाळती रिसता, रगवगीजता घाव
भविस
नीं व्है- मिरगा री कूड़ तिसणा !

सड़कां ऊपर लाठी-चार्ज/क्यूं चाली गोळियां
हड़ताळी मजूरां अर
स्कूल-कालेज रै टाबर-छोरां ऊपर
इण तरै लोथां ऊपर लोथां बिछणी
चोखी कोनीं !

म्हैं कांई करूं ?
क्लब री मीटिंग में आज
म्हैं जरूर कैवूंला जोरदार सुर में-
भायां दो लंबर री रकम रौ
बजट बधाओ
अर बांटौ सस्ता कांबळ-खांणौ-पीणौ
सगळां गरीबां नै !
यूं नीं मरणा चाहीजै मिनख
फुटपाथां ऊपर ।
म्हैं जरूर कैवूंला-म्हारा भायां !
मजूरां री मंहगाई भत्तौ बधणौ
स्कूलां-कालेजां में
किताबां अर कामिक्स बांटणा
घणा जरूरी है !

यूं आयै दिन
हड़ताळां नी व्हैणी चाहीजै
देस रौ भलौ
यां चीजां सूं नीं व्हैय सकै !
म्हैं कांई करूं ?
देस रौ भलौ कियां व्हैय सकै ?
आखी रात म्हैं
सोचूं, जागूं सोचूं
देस रा दुख सूं
आवटतौ-तूटतौ,
गरम रजाई में मूंडौ ढकतौ
मन-ही-मन रोवूं झांझरकै !
मिंदर में जद बाजै झींझा
हड़ताळां-हाका-मौत
सूं डरतौ

जिन्नगांणी

डा. मदन केवलिया

वगत री आवाज हूं/हमेसा
अेक ईमांनदार मिनख दाईं सुणी है
पण, म्हनै ईयैरी सजा/हमेसाई भुगतणी पड़ी है
कास/हूं सीख लैवतो
चापलूस चमचां सरीखी नाटकीयता
वणा लैवतो
नाटक रै पातरां दाईं ठाणपूर चैरो
तद इत्तो पिछड़तो नीं
सीटियां बजांवती पूनां सूं इत्ती दूर नीं भागतो
अर ठीमर जिनगांणी जीवतो-

पण ईं लखणां री कमियां
म्हनै कठै री भी नीं राख छोड़्यौ
अहं नै सरै आम/ नीलाम करण रै वाद भी
हूं आज ठरकेल ज्यूं
पड़्यो हूं अेक खुणै मांय-

म्हारै कनै दरद री हिसाब कोनीं
क्यू के सांसां री हिसाब राखणो सोरो कोनीं
आपणी वेहिसाव असफळतावां म्हनै
जिनगी रै ऊं अठाण माथै लाव ऊभो कर्‌यो है
जठै हर कामयाव मिनख
म्हनै/ आपणो दुसमण निजर आवै
अर अेक ईमांनदार मिनख में निजर आवै
म्हनै खुद सरीखै असफळ मिनख री चितरांम।

हूं चावूं हूं के अबै हूं
सराफत अर ईमांनदारी जिसै गुनावां सूं
दूर हटनै, अेक चोखै मिनख जियां
जिनगांणी रा बाकी दिन गुजार दूं।

घर-आंगण तरसे
भींतां रै नूंवै पलस्तरां मांय लुकयोड़ी
ठेकळणां री परतां किण देखी है ??

सरणाटा पीवती गळियां
टाबरां रै सोर सूं चौक जावै कदै-कदास
अर म्यूजियम रै चौकीदार ज्यूं
टूट जावै मांय सूं कदै-कदै
नाड़ियां सूं जुड़या दरद रै प्रवाह नै/किण देख्यौ है ??

फसलां री सोनलिया भळभळ नै
कोठार बंद/राखण री ।

छूट कोनी तो
फगत आजादी रै दुरुपयोग री
वै सगळा/करै है
दुरुपयोग आजादी री
जिका
सींचै है कीड़ी नगरी/खोल राखी है
खिड़क्यां/मिटावण अमूजो

देस-द्रोही है
वै सगळा
जिका नाच नीं सकै/तवलै री थाप
बांसरी री धुन
मिंदर रै टंकोरां
अर
चांदी री रमझोळा साथै ।

जानलेऊ है
वै वापड़ा/नागडा
जिका/धूंओ पीवै
अर
फूंक सूं/ओट्योड़ी
आग सुळगावै ।

कुणकैवै
म्हांनै
आजादी कोनीं
बोलण री ?

आ
कैवणिया साव ई
झूठा/साखी है
बींमोगतै सूरज
अर
अवसरवादी चांद री ।

कै औ/न्याव
पांणी मायै तंरती/त्रूड़ी उतार
मछल्यां सारू
छोटोड़ी रै गळै
लटकती तलवार व्है।

थूं जांणै है, प्रभू !
कै औ न्याव/औरूं कीं कोनीं
धींगामस्ती/अर/मरजी है
वडोड़ी 'व्हैल' री
आ वात तौ थूं भी जांणै
कै औ न्याव/सेवट/छोटोड़ी मछल्यां री मौत
अर/मगरमच्छां रै मोटै पेट री
थोथ भरण खातर व्है ।

पण
म्हारा ग्यान गुरु/थारी लीला है अपरंपार
म्हनै इण री ग्यांन वतळाव
कै'
पांणी री औ न्याव
थे कींयां पूंचायौ
म्हारै इण/पसरचौड़ै थार तांईं ?

थे

थांरी/परसादी रै वतौर
पीणा सांप/कींयां पूगाया अठै ?
जिका/आदमी सूं मूंडी भिड़ा'र
पी जावै/उणां री सांस-भरोसौ
अर रैय जावै/वाकी उणां री ल्हास ।

थूं थारी सागर मुदरा
तोड़'र/म्हनै वता/औ भेद ।

मिनी री छांनै सूं पी जांणी
जिनावर ई जद आदमी री
मजबुरियां वधावै
म्हारी अंती कुरळावै
पूछै मेहकती सुवास नै–
थारी सुवास म्हारै तांई हीज है
कै उण जागा भी है
जठै कबीरी अेकलो ऊभी है

बाळ'र आपरी आसरी
जठै जैर रा प्याला
लाग्योड़ा है होठां सूं
बींव्योड़ा है हिवड़ा
थारी पसराव है कांई उण जागा
जठै अै अण होणियां कुरळाई
मुळकता फूल पीड़ नै चावजावै
भरियोड़ी आंख्यां तिरतै पांणी नै
मांय री मांय ही'ज पी जावै।

आंख्यां में अवकाई आवै–
आंतरा री लाय री सिळगती अंगारी
अदीठ लावी
भोभर सूं दबियोड़ी कुण देखै
क्यूं कर देखै ?
पण मेहकता फूलां री सुवास
सगळा ही चावै/सरावै।

आदमी री निजू वातां री
कुण ठा राखै ?
कुण पळटै सुवकता पानां पोथ्यांरा ?
जठै मीरां री पीड़ा
दाझयोड़ा हिवड़ा गावै।

कितरां छोड़्या है सैंज फूलड़ा
मिनख री भासा सारू
म्हारै हियै रै हिलोरां
मेहकता फूलां री पसराव

थारा जद खोज्या म्हैं खोज
थूं अंधारै मांह् अलोपग्यो ।
कितरां री पीढ़ा रा लोम्हा
परतख थांम
थूं किनरां नै हूंसावण ऊभी गोरवै
मळां मगरां, ताळ
रुकियाणी धर री कोरणी
थूं दे जावै दरसाव
तपतै तावड़ै, हेताळू घण हेत सूं

हे म्हारा भव-भव रा नेही नेह
थूं पग-पग बधायी धीज
ठाकर खावतां ।
पग-पग माथै झाली है म्हारी बांह्
भूल जावतां ।
म्हारी आंख्यां री काढ़्यी गीड
थूं म्हारै नैणां में सुरमो सारियो
म्हारै रूं-रूं में बोल पिरोय
बतायो मारग मिनखां जूणरो ।

थूं राख्यो जुग-जुग सूं ख्याल
ऊजड़ मारगां ।
आज इण चमकीला परलाटां बीच
म्हैं ऊभो हूं अेका-अेकलो ।
अेकर तो आय'र करलै बात
बतावै पाछो पळकतो दरियाव
म्हारो ठांव-
जिण जागा आय'र
बळती पगथलियां भूलज्या ।
म्हैं भूल्यो हूं अैनाड़, म्हारा हेज !
अेकर तो बतादे सांचा बोल
परतख पीड़रा ।
अमूजणी अर पळकतै तारां रै इण
भोभरियै जंजाळ सूं
थूं आय'र बारै काढ़ ।
बतादै बाही'ज दीठ

आ मा !

— मोहन आलोक

आ मा !
आ !!
आपरी ममताळू छाती पर
जुद्धां रा सेल
झेलती आ !

उतार
थारी श्री रणचंडी री सस्त्र सिणगार
हाथ मांय झाल्योड़ी
औ खप्पर छोड !
परियां छोड !!

क्यूं मा ?
क्यूं पांगरी था मांय
आ तातो रगत पीवण री होड ?

कुण रो रगत मा ?
दूजो कूण हो ?
क्यां तांईं मा ?
अंत क्यां तांईं भरया थूं
आप क्योडै
निसास अर हारतै
हाथां सूं तलवार वगा'र
वरां सिधारतै–
मिनख रै चेतना रा चूंटिया ।

क्यां तांईं ?
अंत क्यां तांईं ?
थूं फेरूं, फेरूं अर फेरूं
थमाई/निबळै हाथां मांय सबळ कटार

तो ओळी रचीजै
ओळी–
जणां विरथ हू जावै
भाव री भोम उपर
तो वात कयीजै ।

वात–
जणां कैय नीं सकै
वात रै मांयली वात
तो कविता आवै
अर आपरै परतीकां, बिंबां, उपमावां–
रै जरियै
अरथ नै पूग'र
'अेक सबद' हू जावै ।

इणी भांत खुद नै
दुरावणो है
आपै-थापै
बणावणो है।

अर हां
इण वास्तै म्हनै
आंख्यां सूं भाटै नै
सींचणो पड़सी
मांभा री डोर सूं पांणी नै
खींचणो पड़सी
मिन्या नै सुवै री रूप–
देवनां-देवतां।
जद फळतै विसवास सूं
'भाटो' गळैला-पिगळैला
म्हारी बोवणी अर सींचणी सूं
हरियो-भरियो व्हैला–
म्हारो हेत !

उणी वगत
म्हारै हिरदै री हूंस
व्हैला पूरी
अेक बदळतै/संवरतै
इतियास रै नांव
केई मांडणां
मंडैला फेरूं-फेर
मंडता रैवैला।

बदळाव

म्हैं सुणियो के
आज फेरूं अेक ढांणी नै
कस्बै री-अर
कस्बै नै सेहर री नांव

पग उठावतै मिनख नै
वापरतां घरै/लखावै जांणै
कै सांप रा फण
फु फकारा मारै का
मोटै अजगर री/फाटोडी वाकी

प्रीत री खांण
अपणांपो निपजांण
फूलां री कंवळाई अर
मुळकतै उणियारै री
चोपाळ अर चौंवठै में
भाईचारै री भाव उमड़ावती
परोटती/परोसती
जीवण री आधार
पीवती/मोवती
अेक तार ढांणी

सेहर दाई जठै
नीं रमै मुतळब
नीं लाधै अेक दूजै रै
खंवै माथै हाथ देय
हंसाय/भरमाय
अर धक्को देय'र धक्कै
ठेट धक्कै दौड़ जांणी
छि-छि कोनीं
मिनखपणै री जड़ वाढती
ओछी हरकतां री
वापरै कोनीं चिन्योक ई
ढांणी री प्राकृत पांणी।

आराम सूं रैवण लागग्या तौ
थांरी नींद
हराम हुय जावैला !

सूरज री साखी

धूड़ उडावता आया
काळै घोड़ां रा काळा असवार
काळो....काळो....इस्सो कीं काळो....

काळा गाभा
काळा मूंडा
काळा हाथ
काळी बंदूकां री
काळी गोळयां री
काळी बौछाड़
मिनखां नै गंडकां दांई दुत्कार
लातां सूं तोड़ किवाड़
घरां में बड़ग्या

डावड़यां रै डील सूं
धोळो-दोपारा उतारया गाभा
मसळी-चूसी-चींथी
बोटी-बोटी
गळी में पूग्यी छापी
चौफेर मचग्यी हाकौ–
आंधौ राज
हाय-हाय !
जोर-जुलम-जब्बर जिन्ना
हाय-हाय !

देखौ-देखौ—
नारायणपुर में नागौ नाच
देखौ-देखौ–
पारस बीधा-पिपरा में
पांधरै पीळै पापां रा पात
देखौ-देखौ–

दीठ-अदीठ

चंद्रशेखर अरोड़ा

अेका-अेक हाको, गूंजै कानां में
हिरदै में रम्मत सरू व्है
अेक फाली
फूटै अर भरीजै
(बायोड़ा बीज तो फूटैला इज)

म्हैं
अदीठ नै अंवेरतो रैयो
इण अलख-जातरा में
पावंडा-पावंडा
तूटतो रैयो मायाजाळ
लोग
छिपावै प्रीत अर पीड़
अर भळै
तरसै बतळावण नै
छटपटीजै
पण कदै भरीजै तीणां वाळो मटको

इण जातरा रै बीच
रोज रोजी अर रोटी
आंधैपणै में बी आ उमर आखी
आ उमर
जांणै कुड़क व्हेती जमीं
जांणै गोफण सूं बेमतळब छूटियोड़ी भाटो
जांणै बनूळियै में फंसियोड़ी तिणको

अदीठ में भटकण रै बावजूद
दीठ में आवै
दुकानां कसायां री–

क्यूं छोड़ दी म्हैं
परकम्मा देणी उणां री
सोचूं
किण करजै रै वदळै
आज तांई अडांणै पड़ियौ हौं
मांनीजता मिनखां रै हाथां मांय
उणां री रम्मत सारू

उपरांखर उडियौ जद आजे
पिसतावौ नीं रैयौ
इण निरणै रौ
चैरा पिछांण लिया
ओळख लियौ असली सरूप
जांण लियौ
के अंधारौ
केई मिनखां री जड़ां में जमियोड़ौ है
अर
सरतिया आंधा इज व्है
अंधारै सूं जलमियोड़ा विसवास

[illegible] में

[illegible] के 'धोमीय सम्मेलन' के

[illegible] पर, हमारी हार्दिक शुभकामनाएं



मै० खेतसी दास गंगाराम

सिलीगुड़ी (दार्जीलिंग) प० बंगाल



असल गारन्टेड रोडवेज

३०/३१, कलाकार स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

किणी भी भाषा रै साहित्यकार नै उणरै साहित्य रै प्रति ईमानदार बण्यो रैवण में कोई मोटी अवखाई हुवै तो उण भाषा री संरक्षक कोई सरकारी संस्थान के अळवाड़ो उतारण वाळी वै संस्थावां जकी बरसाऊ एक मोटो जळसो करै अर किणी अेक लेखक माथै मेहरबान हुयनै बगसीस देय'र आपरो अळवाड़ो उतार नांखै. खासकर राजस्थानी भाषा अर राजस्थानी भाषारै साहित्यकारां सागै तो आ बात खरी ऊतरै.

राजस्थानी भाषा रो लेखक 'मतो' कर'र लिखै. उणरै लिखती बगत आंख्यां आगै लिखी जावणवाळी चीज रो 'प्लाट' नीं फगत दोय बातां साम्ही ऊभी रेवै, अेक तो आ कै इता नान्हा–मोटा पुरस्कार है कोई न कोई तो मिलैला ई, दूसरी–कीं पांच-सात सौ सायता सरूप संगम ई दे देवैला ? जिण लेखक रै दिमाग माथै इण तरै री पंगु वृति हावी रेवै वो पाठक सागै किण तरै रो न्याव करै आ तो सोचण री बात है. पोथी लिखिज्यां–छपीज्यां पछै सरू हुवै 'अप्रोच' भिड़ावण रो दौर । क़ैवतां कोई संको नीं करणो चाहीजै कै राजस्थानी भाषा रा लेखक तो खाली ईनाम वास्तै ई लिखै.

पोथी लिखतां ई ईनाम री कांयखा राखणवाळा लेखक कदैई ईमानदारी सूं आ नीं सोचै कै उण आपरी पोथी नै पढ़ण सारू पाठक किताक त्यार किया है अर उणरी आ पोथी आम पाठक रै कितीक नजीक है. राजस्थान में ई जायो–जलम्यो अर भण्यो-गुण्यो मिनख राजस्थानी री पोथी सूं उभखाण क्यूं करै ? आपां रो इण में कितोक दोस है इण माथै गंभीरता सूं विचार करां जणां हुवै.

□ चेतन स्वामी

— संपादकीय —



❀ मालचन्द तिवाड़ी

जलम : १९ मार्च १९५८

प्रकाशक री उडीक में छपण खातर त्यार पोथ्यां—राज बोलता (हिंदी उपन्यास) जय अंधकार (हिंदी नाटक) सुबह सुहानी (हिंदी कविता संग्रह) समझ (हिंदी कहाणी संग्रह) धोरिया (राजस्थानी-कहाणी संग्रह) कस्बा सेरगढ़ (लघु हिंदी उपन्यासिका) भोळावण (राजस्थानी उपन्यास) चौथमल री जीप (राजस्थानी बाळ कहाणियां)

छप्योड़ी फुटकर रचनावां—दैनिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, सारिका, योजना, आजकल, समाज कल्याण, कथाराज, इतवारी पत्रिका, मधुमती, ओळमो, राजस्थली, जागती जोत आद पत्र पत्रिकावां.

सम्प्रति : लाख कठनायां रै बावजूद हिंदी राजस्थानी में सुतंतर लेखण.

"खातर-खातरी ठा कोनी हूं कदे ई कूड़ी केऊं कांई..." कैय'र वै हाथ रो लटको करयो अर आगै लंघग्या. हूं दोय-तीन हेला वांनै करया पण वै दिया नुणै.

× × ×

हूं जद सूं समझ पकड़ी, मदजी नैं गेला ई देख्या. म्हारै आ मोजूं समझ में को आई नीं कै वै गेला है कठै सूं ? वांरै इतिहास रै नांव माथै मां-बापू रै अलावा केई मुंहड़ां सूं न्यारा-न्यारा बखाण सुण्या. कोई केवै कै भायां धन रै लोभ में आं पर जादू-टूणां करवाय दिया. कोई केवै आंरो अेक छोरो मोटर नीचै आय'र मरग्यो. वीरै बाद आंरो दिमाग चीले सूं उतरग्यो. ओर घणी ई तरै-तरै री काण्यां जकी अबै मनै याद को रैयी नीं।

एक तरै सूं कैय सकूं कै मदजी अर म्हारो आखो दिन सागै ई व्यतीत हुवै. हूं बजार में वीं ई पींपळियै सामी पान बीड़ी री दूकान करूं जिकै पर ऊभ'र लोगां रै कैयै मुजब मदजी आपरी गूंग बिखेरै. मनै ई साचेई घणी दफै आ लखावै कै ई पींपाळियै में कोई जिन्न-प्रेत रो वासो है. जकोई रै नीचै आंवता ई वां में बड़ जावै अर दै चारूं कूंटा में खीरा उछाळण लाग जावै. म्हारै सामैं ओ सिलसिलो चितो ई पुराणो है, जितो पुराणी म्हारी आ दूकानदारी है.

मनै दूकान रो ठाठियो बैठायां कांई ठा किता दिन हुया कै मदजी नै मैं पींपाळियै पर परगटतां पैली दफै देख्या. सिझ्यां पड़गी ही, असवाड़ली पसवाड़ली होटलां री भट्टयां दूसर सिलगावण सूं चौफेर बजार में पीळो पीळो धुंओ मंडरावै हो. आखै दिन रो गर्दड़ो ई बाजार रै चेरै माथै छायोड़ो सो हो मैंधै मुंहडै रा दा ग्राहकां सारू हूं पान लगावै हो अर वां सागै हथाई करै हो. तद ई उतरावै पासै आळी पौ कनै तुळ माचीज्यो, सैग निजरां एकै समचै हुयगी. मदजी कणाई जीवणो अर कणाई डावड़ा हाथ जमीं कानी कर'र मुंहडै छूट गाळयां काढ़ता. आंपरा उभाणा पगां नै खासा फासलै सूं धरता भागता ई आवै हा अर लारै लारै तीन चार टीगर ई हा. मैं मदजी नैं जाणतो तो सरू सूं ई हो, पण बजार में वांरो ओ रूप पैली दफै देखै हो. स्यात सैंग सूं बढ'र कौतक म्हारी आंख्यां में ई हो, म्हारी खाती बगती निजरां हेठै जिता चेरा आया, मैं देख्यो, सगळां पर अेक मुळक कै मदजी री इण गत रो सुवादियो

कांई तात्लुक हुय सकै. मन्नै ओर भी घणो अचंभो तो जद हुयो कै कोई बरस खंड पछै स्कूल रो चपरासी भियाराम साचै ई स्कूल में गैर कानूनी दारू बणावण रै अपराध में पकड़ीजग्यो.

× × ×

ई घटना रै बाद कांई हुयो कै हूं मदजी री अेक-अेक बात पर गौर देवण लागग्यो, इयां वै आप ई रस्तै बैंवतै ने बतळाय लेवै, "कुण भाया, ओळखयो कोनी, कीरो बेटो लाडी ?" पण मैं आप ई अबै वांनै पैल कर'र बतळावण लागग्यो, घणी दफै वै मन्नै ओळख लै अर घणी दफै फुर'र पूछ ई लेवै, कदेई-र तो म्हागूं वै खासा ई हियांस सूं बोलै, अेक दिन दूकान वढा'र हूं घरै जावै हो, सियाळै रा दिन हा, नव-दस वजी ई रात साव सूनी लखावै ही, तीन गळचां बजार री पार करयां पछै सूनी अर नगरपालिका रै खंभा पर लटकतै फ्यूज लोटियां रै अंधारै में दब्योड़ी गळचां में म्हारै हियै रो च्यानणो अर पगां रो अभ्यास म्हारै सागै हो, कानदान जी री हेली कनैकर निकळचो'र का आवाज आई, "कुण है रे भाई !"

हूं पग थाम'र अंधारै में गौर सूं देखण लागग्यो.

'बोल्यो कोनी. कुण है भाई !' अबकै हूं मदजी री आवाज ओळख ली.

'मदजी ! 'हूं बोल्यो,' ओ तो मैं हूं; सज्जन ·· जाणग्या ?'

'हां-हां बीरा··· जाणग्यो-जाणग्यो-'आवाज रै सागै-सागै अंधारै मांय सूं मदजी सिटक'र आंवता लखाया. मन्नै अचंभो हुयो मदजी धोळै-दुपारै ई म्हारै बतळाया ओळखै कोयनी जका ई अंधारै में फकत अेकर बोल्यां ई मन्नै ओळख कींकर लियो ?

'अबै घरै ?' मदजी अेन नजीक पूगग्या.

'हां हू तो घरै जाऊं, पण थै अठै अंधारै में ?'

'सेठां री हवेली रुखाळूं···' मन्नै वांरै कैवणै सागै ई अहसास हुयो के वांरै चैरै माथै व्यंग्य री लकीर अवस खिंची हुवैला.

'क्यों, थांरो कांई घरघोड़ो है ?' मैं मजाक करण मत्तै बोल्यो'-का थांनै चौकीदारी री तिणखा देसी ?'

नंगी कर'र छाती रै चेप राखी ही''' भेणऽऽ''' बस छाती रै ई चेप राखी'''
हुवै कांई है ?' मदजी अेकर थम'र देख्यो जाणै सगळां रो ध्यान वांरी बात कानी है कै नहीं. फेर लग हुयग्या, 'मांस वेचै, मांस''' गाय रो मांस''' थांनै ठा है ई री लखपताई रो राज ? कुत्तो कठैई रो''' मिलटरी नै मांस री सप्लाई रा ठेका अो अहिंसा रो पुजारी सेठ कानदान !

मदजी रै गळै री नाडां दीखण लागगी. ललाट माथै पसेवो आयग्यो गट्टै पर गड्या-खड्या पसवाड़ा फेरता वै बोल्यां गया, 'खायग्या दुनिया नै''' अरे ! आंनै पकड़ो''' मार दो जान सूं अै मिनख नीं है''' जरख है, जरख. थांरा लेवै टाबर गिटणआळी जरख'''

मदजी कांई ठा कठै लग बोलता, तद ई अेक उगाड़ै डील रो जाडो सो मिनख कांई ठा कठै सूं निकळ'र आयो अर गट्टै पर चढ़ग्यो वींरी आंख्यां मांय सूं खीरा उछळै हा. वो जाय'र मदजी री नाड़ आपरै चवड़ै पंजै में पकड़ी अर जोर रो टिप्पो देय दियो. मदजी सीधा सड़क माथै आंवता ठम्या. लारै रो लारै वो उतरग्यो अर पाछा ऊभा हुंवता मदजी रै अेक पूरै हाथ री मेल दी. इत्तै में तो गल्लै री दूकान मांय सूं केशरो जी उठ'र दौड्या. हूं, तो जाणै म्हारी ठौड़ ई चिपग्यो. मदजी नै इत्ता रोळां-गाळचां रै बावजूद आज लग कूटीजतां कदै ई नीं देख्या. वीं कुटणआळै रो डील देख'र तो लखायो कै ईं री अेक पड्यां पछै मदजी में की ऊबरचो ई नीं हुवैला, पण केशरो जी आय'र वींनै अळगो करचो, अठीनै मदजी खड़ा हुय'र वींरै सामीं मडग्या, 'मार''' मार भेण''' मन्नै ठा है, तूं दिनूगै सूं म्हारै लारै है''' तूं तो सेठ री भोळावण रो ध्यान राख''' पण आव ! तू मारसी कै मरसी''' लड्यां ई ठा पड़सी'''

वो केसरोजी अर इत्ती देर में दूजा दूकानदारां रै पूग'र ढ़ावणै सूं डम्योड़ो खड़्यो हो. पण वींरी मोटी-मोटी आंख्यां रीस में औरूं ई छीदी हुयोड़ी दीसै ही.

'कुण है तू ?' कोई वींनै पूछै हो.

'अो तो गेलो है. ई रै कैया कांई हुवै. 'केशरोजी स्यात वींनै ओळख लियो हो.

मदजी केई ताळ वठैई खड़ा-खड़ा वींनै ललकारता रैया, फेर भाटो सोधण तांई नीचै लुळ्या अर मुंहडै-ई-मुंहडै में बड़बड़ांवता अेकै कानी बईर हुयग्या.

जो हुवै. मदजी नैं याद करतां-करतां जीव दोलड़ीजण लागग्यो. मैं पक्को करग्यो कै हुवै नीं हुवै आज हूं वांरै घरै जाऊंलो··· कम सूं कम वठै लग तो हूं वांरी खोज-खबर लेय ई सकूं ! चिलको-सो दिन रैयो जणा हूं दूकान बढ़ावण लागग्यो. म्हारी दुकानदारी सरू हुयां पछै ओ पैलो दिन हो कै हूं टैम सूं पैली म्हारी दूकान बढ़ाई.

'कियां, सजन ! आज वेगो ई ?' पान खावण रै मतै सूं 'क्लोथ स्टोर' आळो नन्दू मैं ताळो देवै हो जणा पूग्यो.

'हां··· आज घरै थोड़ो काम है···' मैं केयो.

'पान तो खवां जा···' वीं अरदास-सी करी.

मैं अेकर मतो करयो कै अबै आयोड़ां नैं तो हाथ रो उत्तर देय दूं, पण फेर तुरत ई म्हारी आंख्यां आगै मदजी रै घर रो अंधारो अर वांरै आसरै तांई पूगण रै मारग में ठौड़-ठौड़ भाटा-दगड़ां अर खाडा-खोचरां री अवखायां घूमगी. सुरजी ऊंडा बैठ्यां जावै हा. मैं झट जीव काठो कर'र नटग्यो, 'नीं यार··· बापू रो जीव सोरो कोयनी···' फेर वो कीं नीं बोल्यो. मैं ताळो देयर टुरग्यो. म्हारा पग ताता-ताता उठै हा, जाणै साचै ई बापू रै जीवसोरो नीं हुवणै री चिन्ता में ई हूं घरै जाय रैयो हूं. दिन ओजूं पूरी तरै बिसूंज्यो नीं हो.

मदजी रै घर कनली गळी में हूं पूग्यो जद सूनसान नीं वापरी ही. अेकाधी लुगाई आपरै चौतरियै मा'रै बैठी बरतन मांजै ही अर टींगर कोई रम्मत मांट राखी ही. मैं देख्यां, अंधारो अबै हेठो उतरण आळो ई है, पण म्हारै जीव में फेर ई सको वड़ग्यो. कांई ठा अै देखणिया कांई जाणसी ? इणनै ई गेलै मदजी सूं कांई कमतर है ? पण मैं जाणतो कै उडीकयां मोड़ो घणो हुय जावैला संकोच रा टूजा हटाय'र हूं मदजी रै घर री टूटोड़ी पाळ उलांघग्यो. बिच ठै कीं जमीं छोड़ोड़ी ही, जिणमें खाडा-खोचरां रै बिचाळै-२ नांव-बेनांव पौधां अर बेलां रो जंगळ हो. जिकै नैं अेक सबद में आपां अळसीड़ो कैय सकां. परलै छेड़ै अेक भींत नानभगेसे-सी खड़ी ही जकी में लाग्योड़ी बिना बारणै री चौखट मांयकर पड़ोड़ा आसरां रै भाटै-माटी रो ढूह दीखतो. हूं चोर दांई हवळै-२ चौखट में मुंहडो घाल्यो. जीवणै हाथ कानी अेक आसरो साबत दीख्यो. ई में आगलै पासी लुळ-योड़ो बारणो ढकयोड़ो हो. मैं हिम्मत कर'र हेलो करयो, 'मदजी··· ओ मदजी !' म्हारी आवाज मैं साव नीची राखी कै कोई पाड़ौसी नीं सुणलै ? पण कोई पडुत्तर नीं आयो. छेवट मैं डरतो-डरतो चौखट रै मांय पग मेल्यो अर बारणै रै

नें करदी. लो उपड़तेई अेक पीळो चांदणों वीं. मसाण से माहोल में झप–झप करण लागग्यो. मदजी साव निचेताई सूं लो कीं मांदी करी अर ऊपर गोळो मेल'र लालटेण उठाय ली.

चांदणें में मैं मदजी नैं गौर सूं देख्या. धोती सदा दांई मैली अर लांग जमीं पर लटकै पण आज मदजी रो डील उघाड़ो हो. वारैं डांफर वाजै ही. मठै चावैं फूट्योड़ी ही सही. भीतां रो ओटो हो...पण फैर भी सियाळो तो सियाळो ई. म्हारी निजर मदजी रैं चैरैं पर ठैरगी. लालटेण रे चांदणें में हूं देख्यो, वांरैं अेक गाल पर दाढ़ी वध्योड़ी अर दूजै पर छड़्या वीछड़्या केश रैयोड़ा, पण मुरझ्योड़ी. मदजी रो चैरो अजब सो लागै हो...कैय सकां कै डरावणो सो !

"आव अबै आयज्या..." कैय'र मदजी लालटेण ऊंची करी अर पैली आप आसरैं में बड़ग्या फेर मनैं रस्तो दिखावण तांई फुर'र ऊभग्या.

मैं ओजूं ई पेशोपेश में हो...जाणैं मदजी रैं घर री सुनैड़ म्हारी छाती पर चढ़'र बैठगी ही म्हारा पग नीं उठ रैया हा. छैवट मैं पिंड छुडावण री धुन में बोल्यो. "नहीं, मांय को आऊं नीं मोड़ो हुवै..."

"क्यूं...?" मदजी री आवाज बैठगी." अबै अंधारो कठै है. चांदणैं में ई डरै है कांई ?"

"नहीं. डर री कोई वात कोनी. मैं तो निगैं ई करणनैं आयो ?" म्हारैं मुंहड़ै सू मतोमत ई केयीजग्यो.

"निगैं कांय री ?" मदजी पूछ्यौ.

"थांनें देख्या कोनी जिकै सूं " म्हारैं छाती पर सूं भार इण बोल वतलावण सूं हटण लागग्यो. मदजी फैर कीं बोलता, ई सू पैली मैं फेर बोलग्यो, "कांई बात मदजी. मांदगी ही कांई ?"

"तूं मांय तो आववीरा...वारैं ऊभो ई सगळो पूछसी कांई ?" वै चमक'र बोल्या अर वांरैं केवणैं में अेक निरवाळी सी अरदास ई लखाई.

मैं अबै अपने-आप नैं वीं आसरैं में वप्रणनैं त्यार करचो कै डर आसरैं रैं पड़नै रो नीं, कोई और ई हो, पण और कांई ? म्हारैं समझ में नीं

जद डोकरी गांव रै छेड़लै सूनोड़ै कुवै में दुखी हुयोड़ी जा पड़ी. चपलां पड़ी देख'र कोई रस्तै वैवतो थाणै में इत्तला कर दी अर पछै थाणैआळा ई लाश कढवाई. नैई बातां हुवैला, पण परमी वेंजी आज तीजै दिन ई ओसर कियां करसी ? ओसर तो तेरवें दिन हुवै ! म्हारी समझ में को आई नीं. मैं भोळो हुय'र पूछ्यो, "आज ओसर. आज तो तेवो हो !"

"तेवो दिनूगै हो... ओसर अब हुयसी. रातनै." मदजी निचेताई सूं बोल्या, अर अेकर थमग्या. फेर आंख्यां खिचगी अर जकै कानीं केश खुरच्योड़ा हा वीं जबाड़ै री हाड्डी ऊभरोड़ी दीखण लागगी. मैं जाणग्यो कै मदजी में अबै पीपळियै रो प्रेत आज अठै ई आय'र उतरग्यो है. वा ई हुई. मैं आगली सांस ई नी कै नीं ली. मदजी वैव्या—२ ई चमक'र उठ्या अर पेट रो जोर गळै में आयग्यो 'थाणैआळां रै वा मां लागती, मां··· निकमा कठैई रा ! डोकरी मरी भूख सूं··· कुओ तो अेक बहानो हो··· आ भूख सबनै खा जासी··· आपरै बेटै नै. आपरी बहू नै अर आं थाणैआळां नै जका वींरी लाश मागै ई न्याव नीं करयो··· भूखी रामणआळै बेटै नै बेकुंटी काढ़ण तांई देय दी··· क्यों··· ? क्योंकै परमली रो जोबन थाणै रै निजरां चढ़ग्यो. आपरी सासू री लाश रै बदळै परमली आज सज धज'र थाणै जावैली. सासू रो डील डाक्टरी चीर-फाड़ सूं उबार'र आपरो फर्ज निभावैली.' मदजी म्हारै सामी अेक—२ वाक्य बोल'र हाथ रो लटको करता' जाणै मनै ई सगळै काम रो दोष देंवता हुवै अर म्हारै माजनै में धूड़ न्हाखता हुवै. वानै हांफणी-सी चढ़गी अर लालटेण रै चांदणै में उगाड़ै डील माथै पसेवै रा रेगा निलकण लागग्या. मदजी रै लिलाड़ सूं खासा लारै सरक्योड़ा, काळा-धोळा केस छितराईजग्या अर विकराळता जाणै वांरै चैरै ऊपर चक्रवात री दांई मंड—राय रैयी ही.

मनै अजीब किस्म री घिन मांय ई मांय मथण लागली. मैं साफ महसूस कर रैयो हो कै म्हारी इण घिन रै सामीं खाली मदजी रै फूटोड़ै घर रै इण जर्जर मांय सूं भभकीजतै आसरै री भींता कै आधी दाढी खुरच'र आधी छोड़ देवणआळा गेला-गूंगा मदजी ई नीं हा ·· बल्कै इण आसरै में परमी वेंजी आपरै मोटियार साथै अर थाणो समायग्यो हो. मनै चेतै आवण लागग्यो कै परमी वेंजी री सासूआळी दुरघटना बाद लोग कैंवता कै थाणेदार भोत भलो मिनख है··· परमी वेंजी रै माथै हाथ फेर'र धीरज बधायो अर फालतू में थाणै-कचेड़ी रै चक्कर सूं धणी-लुगाई नै फारिग कर दिया मैं ई सुणी जद थाणेदार नै चोखो ई बतायो. हुई सो हुई, लारलां नै थाणैआळा घीसणै सूं बखस दिया.

'सजन !' अंधारै में मदजी री बोली नीकळी.

'हां, मदजी··· कांई हुयो थारैः अबै जीवसोरो है नीं?'

'हां···' मदजी हवळै–सी पडूत्तर दियो. म्हारै सामी, मैं आयो जणा री मदजी रो उछाव अर गेलेपणै सूं हटचोड़ो व्योहार पाछो परगट हुयग्यो. मदजी रा छैवटला बोल ई मन्नै चेतै आयग्या. परमी बेंजी री बात कैंवता–२ वै किसै पहियै रै खून लागण री बात बतावण लागग्या हा ? मन्नै ओ डर हो कै इण बात नैं पूछण सूं मदजी फेर गेला नीं हुय जावै. वांनै पूछण री हिम्मत नीं पड़ रैयी ही.

तद ई मदजी बोल्या, 'सजन, तूं ठीक सोचै, मैं गेलो नीं हूं ··'

'मैं तो थांनैं कदैई गेला नीं समझ्या.'

'मन्नै ठा है बीरा' मदजी बोल्या, 'पण अबै आ बात भोत पुराणी हुयगी. सगळो गांव मन्नै गेलो करनै परोटै. फेर म्हारै कनै कोई सफाई भी तो नीं है !'

'कियां !' मैं पूछ्यो.

'सुण !' मदजी अंधारै में अंदाज सूं आपरो हाथ वढ़ाय'र म्हारै कांधै पर मेल दियो, 'थारै मोड़ो तो नीं हुवै···?'

'मोड़ो तो हुवणो हो जित्तो हुयग्यो··· अबै कीं कोनी.'

आसरै में अंधारो ठसाठस भरचड़ो हो. तीखी गंध नैं स्यात म्हारो नाक परोट ली ही, अबै मन्नै वींरी इत्ती तिलमिलाहट को रैयीं नीं, मदजी म्हारै कांधै पर सूं हाथ पाछो हटाय लियो अर बोलण लाग्या.

जद हिन्दुस्तान पाकिस्तान रो बटवारो नीं हुयो हो. बंगाल री सींव सूं लागतै पाकीस्तान रै अेक गांव में म्हारै बापू रो ठाडो कारबार हो. वीं बखत म्हारी ओस्था थारै जित्ती ई हुवैला. वींसूं ई कांई ठा कित्तो पैली ओ घर चिणी-ज्योड़ो हैं. खैर सल्ला, म्हे तीन भाई हा. कारबार सगळो सीर में ई हो. म्हारै सैंग सूं ज्यादा कारबार पाट रो हो. गिट्टी-गोळां रै अलावा अेक ठाडो गोदाम हो, जठै सैंकडू मजूर पाट री छंटाई सफाई अर गांठा बांधण रो काम करता. वां मजूरां में ई हो अेक 'अलगै' नांव रो मजूर, समझलै कै म्हारै गेलेपणै री कहाणी इण नांव सूं ई सरू हुवै···' केयर मदजी अेकर थमग्या.

'कियां ?' म्हारी उत्सुकता परवाण चढ़ण लागगी.

म्हारै नूं छोटोड़ै नै ई वै सँग 'छोटै बाबू' कैंकता. धुंधळी सी बात म्हारै कठैई रड़कण लागगी. छोटोड़ो बेजां खर्चाळू अर कीं वेलेण हो अर म्हारै बापू जी कनै सूं आनो खाल भलांई कोई उतरवा सकतो, पण आनो नंगदी लैबणो बड़ो दोरो. मैं अलगै नै ब्यावस दिरायर भेज दियो. पण बात म्हारै जीव में ऊंडी बैठगी आ मजूरां नै हफ्तै री हफ्तै इयांई माड़ी मुड़दी मजूरी मिलती. फेर वै आधो पेट काट'र आपरै टाबरां रै पेट खात'र पइसा भेजता···जदकै म्हारै अलगै री मद्धरी जित्ता पइसां रा तो तामूळ पान ई आय जांवता. "मदजी मन्नै लाग्यो मंचली में बैठ्या ई बैठक बदळी मंचळी री पुराणी ईसां चड्ड सूं बोलगी. मैं बानैं आगै बोलण सारू उडीकण लागग्यो.

"ओ पैलो अन्याव हो, जिकै नै मैं देख्यो अर इणरी खिलाफत करी." मदजी जाणै सांस खाई हुवै, थम'र पाछा बोल्या, "छोटोड़ै नै घणी दोरी लागी. पण मैं बीनै अंतपत हंकराय लियो अर अलगै रा पइसा भेजाय दिया इणरै कीं दिनां बाद मैं देस आयो अर म्हारो ब्यांव हुयग्यो. फेर गयो, तो अलगो मिल्यो. "बाबू, अब हम झमेला ही मेट दियें हैं... घर को यहीं ले आये हैं....' बीरै बतावण में संतोष अर सुख मावै कोनी हो. फेर मैं कीं नीं पूछ्यो, तो ई वो बतावण लागग्यो. "और तो कोई रहे नहीं... अेक हमारी औरत ही रही... सो हम उसको यही न ले आये. अेकनू कोठरी ले लिये हैं. वहीं बासा कर लिये हैं...' मैं सुण'र जीव में जाण्यो, चोखी ई बात है अर म्हारी जाण में आ चोखी चालतै अेक बरस नैड़ो हुयग्यो. अर अेक दिन सुण्यो. अलगो आपरी घरआळी नै लात मार'र बारै काढ दी है अर आंप गूंगो-स्यानणो हुयोड़ो फिरै म्हारै बात की समझ में आई नीं. फेर मैं देख्यो, आ बीरी घर-विघरी बात है... फेर वो म्हारो मजूर-हेठीवाळ है, कठैई अणहूती पचायती नीं गिणीजै. मैं बीचमें को पड़्यो नीं..."

मदजी अेकदम सयत हुय'र कोई कहाणी सी केवै हा. मैं अचुम्भै रै पाणी में डूबतो तिरतो सो वां कानी जावै हो कै अे वैई मदजी है, जकां नै गांवरा टीगर पन्नो खैंच'र चिढ़ावै ? सुण्या जावै हो.

"फेर वै बोल्या." पण बात अठै ई को नीवड़ी नीं बीरा... मिनख मैं मिनख रो खून पीवण री आ म्हारै घर री बरसां पुराणी रीत ही... मन्नै ठा पड्यो कै म्हारै या म्हारै जिसै ई लोगां री मेहनत रै ताण आपरी तिजोर्‌यां भरणै रै धंधै में लाग्योड़ै सैंग परदेसां कमावण आळां री आ सदा री रीत है. अेक

सूं ऐकदम दीन–हीण हुय'र बोलता.. आपरै हाथां सूं वै जिकी लाखीणी मेहनत करता. वींरो मोल तो म्हारी तिजोर्‌यां में रोड़ीज ई जांवतो, पण इणरै सागै ऐक इसो दबदबो अर आतंक कूड़ो ई बैठयोड़ो हो कै वै आपरो आत्म-सम्मान ई बाबुआं रै चरणा में चढ़ायोड़ो राखता. तो अलगै रै दु ख री साची बात ई वै म्हारै सूं, जको अेक तरै सूं सगळै कसूर रो बरोबर भागीदार हो, आपरी आतमहीनता रै कारण लुकायोड़ो राख्यो. वो ई अळगो स्यात ताड़ी पिय'र चिनोक आतमबल जगाय'र मन्नै मिल्यो. 'अे बाबू...राम...राम...' वींरा सबद हिचक्यां में अटकै हा अर निकळती टेम धूजै हा. मैं पाछो राम राम कर'र देखण लागग्यो. मन्नै सरू सूं ई सैंग में अलगो स्याणो–समझणो अर जीव में ई चोखो लागतो. वो की ताळ ताड़ी रै नसै में डोलतो रैयो, पछै फेर बोल्यो, "ठीक नहीं रहा बाबू... ठीक नहीं रहा...!" मैं कीं नीं समझ्यो. थोड़ो डांटतो सो मैं पूछ्यो. अे अलगा, क्या. ठीक नहीं रहा रे ? ताड़ी बेसी पीने से क्या ?"

'अरे ! नहीं रे बाबू... ससाल ताड़ी से क्या ? ठीक तो वो नहीं. जन तुमारा बड़ा भाई किया.'

'अलगा !' मैं अबकै जोर सूं चिमक्यो, अलगा देख से बोलो. क्या हुआ ?'

'हुआ क्या, बूझता है...' वींरी आवाज में अबै ताडी रै सागै सागै किरोध री भी कांपणी ही, 'हमारा जोरून को खराब किया. और क्या किया ? हम उसी न के वास्ते तो लाये रहे. बाबू लोग ससाला. अपना जोरून को दोतल्ला से नीचे झांकने नहीं देता और हम गरीब आदमी का जोरू जैसे पत्तल हो गया. चाट लिया. फेंक दिया..."

'अलगा. क्या कहता है, होश तो है, न ?' मैं अठीनै वठीनै देख्या कै वींरी मन्नै कैयोड़ी सुणनआळो तो कोई नीं है. वो गांव ई नीं, बल्कै नेड़ै नेड़ै तांई रा परदेस–कमावणआळा बाबुआं रो अेक समाज, बण्योड़ो हो. मैं वीं समाज में ई जिकै री हालत अलगो बखाणै हो, म्हारै बडे भाई री इज्जत री चिंता करै हो.

'बहोत होश है 'बाबू' अलगो बोल्यो, 'लेकिन ससाला आया बहुत देर से न ! ई होस ई में कहते हैं बाबू. तुम पैसा मारते हो. सहन करते हैं...लेकिन हमारी घरआलिन की......नहीं सहन करेंगे...' अलगो कैंवतै कैंवतै खासे ताव

फारसी नानो कर'र लुगाई लियायो. आगै वीं वतायो कै वडा वावू मतलब कै म्हारा वडा भाई अेक दिन गोदाम में अलगै रो भात पुगावणनै आई जद अलगै री लुगाई नै देख ली. इणरै वाद वै अलगै पर घणा मेहरवान हुयग्या. वींनै जद-तद बगसीसा देवण लागग्या, अलगो भोळो-डाळो इणनै आपरै काम रो ईनाम समझतो रैयो. पइसा घणा रैवण लागग्या जद अलगो सिझया नै नित ताड़ी पीवण लागग्यो. दूजै कानी वै अेक दूजै मजूर नै गुपचुप आपमें रळाय'र, जको अलगै रै घरै आंवतो-जांवतो, आपरो रस्तो वैठावण लागग्या. गरीव आदमी रै पइसै सूं वढ'र किसी धर्म अर किसी मर्यादा ! अलगै री भोळी-डाळी घरआळी पाटी चढ़गी. अेक-दो और मजूरां रा ई वासा हा. आ वांरै आगै अपणै-आपनै घणीं ऊंची समझण लागगी. गोदाम में पैली आठ-दस मजूर थितू सोंवता अर भाड़ो ई कटावंता. वडोड़ै भाई केई गड़वड़्यां रा इलजाम लगाय'र वांनै दूजो ठिकाणो करणनै मजबूर कर न्हाख्या. वीं वतायो कै गोदाम में पाट री ढिगळयां माथै अलगै री घरआळी सागै म्हारा वडोड़ा भाई कांई-ठा कीनै-२ धोखो देय'र रंगरेळयां मनांवता रैया. अर अेक दिन कोई मजूर वांनै अचाणचक ई देख'र गयो परो. अलगै नै वीं नूं ठा पड़ी जद वीं घरआळी नै मारी-कूटी अर वा हांकरगी जद वींनै घर सूं काढ़ दी पण आपरै अन्नदाता मान्योड़ै वावू रै माथै ओ सही इलजाम भी वो नीं लगा सकतो हो. नीं ई कोई दूजो इण रो जिकर कर'र भगवान सरीखा वावू री वुराई कर सकतो हो. दूजी गोदामां, जकी भी घणकरी वावुआं री विरादरी री ही, रै मजूरां नै ई जै ठा पड़ी तो वै वावू-समाज रै दवदवै सूं पळयोड़ा चुप ही हा, वीं केयो, अलगै री घरवाळी केई दिन ठोकरां खाई अर पछै अठै रै अेक मुसलमान रै घर में रैवण लागगी. छेवट अलगै रै सवर रो बांध ताड़ी रै नसै सूं टूटग्यो अर मनै ठा पड़गी. मैं तरै-२ सूं निगै करली, वात सोळै आना खरी ही. फेर म्हारै वडै भाई री लांग सदा ई ढ़ीली रैयोड़ी... अेकर वापूजी वांरी अेक वावू-समाज री लुगाई रै कारणै हुंवती फजीती नै ई वड़ी दोरी दावी.

'फेर ?' मैं थोड़ो-सो ठैरते ई पूछ्यो.

'फेर मैं अलगै सारू न्याय मांग्यो. मैं वापूजी नै कैय दियो कै इण रो हर्जानो भरणो पड़सी. मैं जाणै साव भोळी वात करी होऊं, वै हंस्या, 'हर्जानो ? कुण किसो हर्जानो ?'

'अलगो,' मैं वोल्यो.

मैं कीं नीं बोल्यो.

वै फेर बोल्या, 'तन्नै हाल टैम लागसी''' उण्णा-आतप चावलौ री मोटी अर सस्ती किस्म अर वनास्पति चावळां में फरक कियां राखीजै''' आ मीजण री वात सीख''' आ हक कानूनां री वात कठै सूं सीख्यो ?'

'हर्जानो देवणो पड़सी !' मैं उथप्योड़ो कैय दीयो.

अचाणचक ई बापूजी रो धीरज छूटग्यो. स्यात म्हारी आवाज री दृढ़ता सूं ई वांरो धीरज लड़खड़ायो. अेकदम रीस में ऊंचा आंवता बोल्या, 'सुण ले, कान खोल'र. वो थारो वडो भाई है''' थारो धर्म है कै वींरी इज्जत नै बचावै. अर जै तूं घणी अवखी चाल चाली, तो वींरै घाटो पड़ै कै नहीं पड़ै, थारै पड़ जावैला'''

मैं फुर'र बापूजी सामीं गौर सूं देख्यो. वांरो इशारो सगळै कारबार, जमीन जायदाद कानी लाग्यो. मैं इण पर अवार कींनीं बोल'र इत्तो ई केयो, 'देखो वीं आदमी नै आपांरै कारणै संताप भुगतणो पड़्यो है. वीं संताप री तो कोई कीमत नीं हुय सकै, फैर भी न्याय ओ ई है कै आपां वींनै हर्जानो देवां अर वींगे घर बसावण सारू कीं करां '' आखिर बरसां लग वींरो आपारों सीर रैयो है'''

'सीर ?' बापूजी बोल्या, 'अरे ! निकरमा''' वींरो आपारों कांई सीर '' जा तूं जान वींरै सागै सीर ! गोदाम में सौ-सौ मजूरां पर अवार हुकम चलावै है, नी ! अेक दिन सुखो हाथ में लेय'र गांठ सीड़ '' पांच साग हुयां कांसो उठै''' लूण नै दाळ री ठौड़ घोळ'र खा वांरै सागै अर थारो डोळ ई इसो लागै''' तूं अे ई करसी''' जा मर आगड़ो ई म्हारै मुंहडै आगै सूं''' !'

मैं उडीकतो रैयो कै मदजी री विसांई अवै ई टूटै-अवै ई टूटै''' पण खासा देर तक म्हांरै बीच में अधारो अर सूनैड़ रळ'र बैठा रैया. खुले पड़ै बारणै मांय सूं स्यात चांदण-पख री किणी लारली तिथ रै मोड़ै ऊगणआळै चांद रो चांदणो मांय आयग्यो. इत्ती देर अंधारै में खुली पड़ी आंख्या अंधारै नै खासा सै लियो हो अर चिनेक चांदणै रै सारै ई जाणै चीजां नै चरूड़ देखण लागगी. ठंड ई रात रै सागै-सागै बढ़ी है, इण बात रो लखाव तद पड़्यो, जद बात रै ठंडै तहखानै मांय सूं इत्ती देर बाद पेशाव करणनै उठ्यो.

'सजन''' !' म्हारै उठणै रै अंदाज सागै ई मदजी चमक'र बोल्या.

नाही दिनभर गया-आटणी, सिझया गुटकी खंड ताड़ी अर भगवान रा रूप बाबू… कोई बात ई नीं… आपस में घणा ई मोर्चा, पण अेक मोर्चे पर सागै हुवण री कल्पोरना ई नीं… न्यारा-२ जिलां रा न्यारा-२ दळ… छेवट में थकग्यो. सोच्यो के आंनै भेळा करनै जगावणा मुश्किल है…सइकां सूं आंरी नाड़यां नै भगवानरूप बाबूवां अर भाग-अणभाग रो अमल देय-देय'र ढ़ीली कर न्हाखी गई है… दुनिया में कठैई कीं हुवो… आंनै कोई नीं बतावै… अै हजारूं हाथ। सूं जिकी मेहनत करै, वींरो फल कळकत्तै री मिल्यांआळा ईं पाट रो सामान परदेसां रै बाजारां में बेच'र खावै… बीच में म्हां जिसा बाबू-लोग ई कारबार रै नांव पर आंधी-पड़दी भरै…पाणी में गोडां तांई ऊभ-ऊभ'र पाट धोवणीया नै इणरो मोल नप चावळ सूं बत्तो नीं लखावै… अर नीं ई मिलै. तो अरथ ओ कै वांनै बारै सागै हुवणआळै कुन्याव रो अंदाज तक नीं… अलगो ताड़ी पी'र दो-तीन वार रोळा-रप्पा करया, पण हिम्मत कीं नीं पड़ी… पण अेक दिन नसै री हालत में अमगो नांव लियो, धाड़ूशाह — हमरा धाड़ूशाह होत रहता तो स्साला हम दिखाता कै क़ैसन अंजाम निकलता है, गरीब का घर लूटनैं का…' मैं पत्तो लगायो कै धाड़ूशाह कोई बिहारी है जकै रा आसाम में जंगळां रा ठाडा ठेका है अर लकड़ी रो कारबार है… आ भी सुणी कै वो अेक नम्बर गुंडो भी मानीजै. अलगै रै हिसाब सूं वो वींरै जिलै रो हो अर इत्तो समर्थ हो, कै वो ई वींनै न्याव दिरा सकतो. मैं छेवट धाड़ूशाह रो ठिकाणो-पतो कर लियो. मैं सोच्यो, कै धाड़ूशाह रो प्रभाव आंनै आपरै अस्तित्व रो बोध करवाय सकै. वो अेकर आयनै आपरै मुलक रा आं पीसीजता, गरीब भाई-बंदा में उठ'र लड़नै री ताकत पैदा कर सकै. मनै और कीं नीं सूझ्यो. मैं अेक दिन चुपचाप धाड़ूशाह रै ठिकाणै पूगण सारू वईर हुयग्यो. पूग'र मैं देख्यो, धाड़ूशाह वाकई धाड़ूशाह हो ! बीसेक तो हाथी ई वींरै बंध्योड़ा हा… लकड़ी रै काम में हाथी री दरकार रेवै. पण मैं पैलीवार किणी बिहारी नै इत्तो समृद्ध अर अेक जिसा लोगां रै कब्जै में आयोड़ै बजार में आपरो इत्तो ठाडो ठाठियो जमायोड़ो देख्यो. मैं मिल'र सगळी बात बताई. धाड़ूशाह सुण'र साचै ई पसीजग्यो. बोल्यो, 'स्साला को देख लेगा…' फ़ेर वो म्हारै सागै ई आयग्यो. वींरै तीन दिन बाद ई वो अेक इत्ती बडी पड़ता-ड़ना म्हारै बडै भाई नै दी कै वींरी गुंडागर्दी सूं सैंगजणा री हवा खिसकगी. वीं आपरी जुबान में कांई ठा कांई केय'र मजूरां में जोश भरयो कै हूं देखतो ई रैयग्यो वै सगळा अेकठ हुयग्या.

धाड़ूशाह ठिगणो, काळो अर गोळ मटोळ डील रो डरावणो सो दिखतो. वो ज्यूं बोलतो फरमान ई हुंवतो. वींरै फरमान मुजब अेक मजूर

मर गयो परो. अलगै री घरवाळी नै ई ाँ. पाछी अलगै रै घरै बैठाय दीवी·····
कैय'र मदजी अेक लाम्बो निसखारो लियो. अंधारै में वांरी ऊंडी बंडती सांस री आवाज गूंजगी.

"पण आ तो चोखी ई हुयी! इण सूं थांरै ऊपर कांई खराब हुयो?" मैं वांनै चुप देख'र पूछ लियो.

"बाई तो असल कहाणी है, बीरा" मदजी फेर निसखारो नाख'र बोल्या," मैं मजूरां रै वीं वगत रै आयोड़ो जोस नै सुकारथ लगावण सारू पाट मजूरां रो अेक दळ बणाय दियो. वांरी मजूरी, आराम अर दूसरी भलाई री वातां निश्चित करण री कोशीसां करी. म्हारै आं सगळां कामां सूं गिदुयां आळा म्हासूं सखत नाराज हुयग्यां. पण मैं परवा नीं करी. मन्नै तरै तरै सूं समझावण री कोशिसां करीजी. अर अेक दिन छेवटली कोशिस में हार'र बापूजी म्हा पर चिड़'र मन्नै कैयो, 'तूं म्हारो बेटो कोनीं राखस है... पण ध्यान राख... इणां राखस नै जे हूं जेवड़ा नहीं घला दूं, तो म्हारो नांव नीं···' मैं हस'र वांरी बात टाळ दी जद वै और ई घणां चिड़ग्या. अेक दिन मैं सोय'र उठ्यो ई हो, कै चार धोळा कपड़ा आळा म्हारै कमरै में आय'र घेरियो देय दियो. लारै बापूजी हा, बोल्या, 'यही है···' अर फेर वै देर नीं करी म्हनै हाथ पगां सूं पकड़ लियो. मैं कीं नीं समझ्यो. छुडावण सारू ताफड़ा तोड़तो रैयो, पण वै चार हा... हेठो लेयग्या. बारै निकळतां ई मैं देख्यो, अस्पताळ री मोटर खड़ी है.. फेर ई म्हारै कीं समझ में नीं आयो. म्हारी लुगाई वीं वगत जापो करण सारू आपरै पीरै देश गयीड़ी ही. मैं रोळो करनो चायो जणा अेक जणो आपरी मजबूत हथाळी मे म्हारा जबाड़ा भींच लिया थोड़ी ताळ में ई वै मन्नै गाड़ी में न्हाख'र दाब लियो. वीं वगत दिन पूरो ऊग्यो नीं हो मुंह अंधारो हो. गाड़ी टुग्गी... मांयनै पड़ै पड़ै रै ई म्हारै अेक सूई लगाय दीवी. फेर मन्नै चेतो नीं रैयो. कांइ ठा कित्ती देर वा मोटर चाल'र कठै पूगी, पण म्हारी आंख खुली जद अंधारै रै सिवाय कीं नीं हो... मैं हाथ फिरोळ'र देख्यो, चारां खांनी भींतां ही...फाटक स्थात दूजै कै तीजै दिन खुल्यो, जद मन्नै ठा पड़ी कै ओ पागलखानो हो...मैं अर पागलखानै! षड़यन्त्र म्हारै सामी उजागर हुयग्यो ... इयां मैं राजी खुसी हुवतै थकै ई पागल खानै मैं भरती हुयग्यो..." कैय'र मदजी म्हारै कांधै पर हाथ धर दियो, "म्हारै बाप री जबरी व्यवस्था ही, मैं बठै लाख कैयो, मैं पागल कोयनीं पण छै बरस तक वीं अंधारै कमरै सूं मैं नहीं निकाळयो गयो. पागल की हो नीं पण वां भींता सूं मैं-

मिली कै वो नदी में डूब'र मरग्यो'''ता जबरी बात आ ही कै म्हारै पागलखानै में डूबणेरी कोई नै निगै नीं ही'''पछै जद मन्नै आ ठा पड़ी कै घर आळी री मौत री खबर ई आनै खासा मोड़ी अठै मिली, तो म्हारै सामने बीरै सागै हुवण आळै जुलमरी करलोपना मंडरागी. म्हारै मुड़दै-से शरीर में रीस रा वांइटा उठ्या अर मुंहडै मांय सूं भाग आवण लागग्या. सासरैआळा मन्नै केई दिन राख्यो. म्हारै शरीर में थोड़ी सकती बापरी जद मैं पाछो निकळग्यो म्हारै बाप-भायां नै सोधणनै. श्रोर पूछतै-पूछतै पूग्यो, तो देख्यो, कै सुतंतर भारत में वो ई ठाठियो जमाय लियो. वै भाग'र भलांई रातो रात आवो, आपरै सागै बरसा सूं भेळो कर्‌योड़ो माल मत्तो लेय आया हा. मन्नै जीवतो देख'र वांनै जको अचुम्भो हुयो, वीरों इ ठा लागतो के मन्नै देखते ई पैलीपोत वै भाटो हुवैं ज्यू. हुयग्या. मन्नै लखयो कै वै अवस ही पागलखानै में म्हारै मरणै तक री व्यवस्था करी ही. अर मरण में वठै किसी घणी ताळ लागतो ! पण म्हारै माय कांई ठा किसीक जीरण-सगती ई ही कै भूख प्यास अर पड़ताड़णा रा छ बरस काट'र ई मैं जीवतो रैयग्यो. खैरसल्ला, मन्नै वांरी नीं, म्हारै बेटै री खोज ही, जको सासरैआळा रै केयै अनुसार म्हारै बाप भायां कन्नै हो'''

"थांरो बेटो !" म्हारै मुंहडे मांयसूं निकळ्यो.

"हां'''वींनै मैं देख्यो." मदजी डूबती सी आवाज में बोल्या, अेक थाकल र पीळो पड़योड़ो टाबर हो वो. मैं कीं नीं बोल्यो, म्हारा बापूजी कूड़ै मिठास-सूं बोल्या, जाणै मैं साचै ई गेलो हो अर अबै ठीक हुय'र आयो होऊं. 'अबै थांरों जीव सोरो है, नी' बेटा ?' फेर मन्नै रीस आई अर म्हारो कमजोर डील धूजण लागग्यो. मन्नै बापूजी रा लठैतां दाब लियो. फेर मैं पाछो होश में आयो जणा म्हारै बेटै रै मुंहडै सामीं देख्यो. जाणै म्हारी डूबती सांसां नै कोई ऊंची सार ली, मैं कीं संभळ्यो, जाण लियो कै आंरै बीच में रैयां ई अेक जिन्दगी री श्रोर माड़ी गत हुयसी. पक्की बात ही, वांनै म्हारै सूं जिती नफरत ही, बित्ती ई म्हारै फर्जन सूं ही, नींतर, वो फूल मुरझाय'र पीळो नी पड़तो. मैं वांनै म्हारो मत्तो बताय दियो कै म्हनै थांरै कारबार, पइसै-टकै सूं कीं नीं लेवणो. मैं देस मुतलब अठै-जठै आज हूं. जाय'र रैवणो चाऊं. वै सोरा-सोरा राजी हुयग्या. मंगतै नै भीख देवै ज्यूं वै बोल्या, 'चोखी, जाय'र मिनखा चारै सूं रेवै, तो आपांरी 'हेली' पड़ी ही है'''जा, वा तनै ई दी'''थारै ई नांव करी'''अेकर तो मन्नै फेर रीस आई, पण मैं सोच्यो कै देश रा हालात कांई ठा कैड़ा हुवै, बैठणनै धारियो तो चायीजसी ई ! अर वांरी बखसोड़ी आ 'हेली' मैं कबूल ली. "मदजी

माने ऊभी ही. 'अरे की' अडाणगत विना कांय पर दूं, तो ? सेठ आपरै फाटोड़ै गळै सूं विनै झिड़कै हा. लुगाई सेठां सूं गूंवठो काढ़ राख्यो हो···ओस्था घणी नीं ही. दोय-तीन वार फटकारीज्यां पछै वा आपरै गोदी आयै टाबर नै सेठां रै आगै कर दियो. वींरोअरथ हो कै म्हारै कन्नै ई छोरै सिवाय कीं नीं है इन्नै अडाणगत समझनो ! ज्यूं ई वा दोनूं हाथां विचाळै पकड़'र छोरै नै सेठां रै मुंहडै आगै कर्यो. सेठ रीस खायनै वीं टाबर नै जोर सूं परै करता. बोल्या, "ई कीड़ै रो कांई वटै है, थारा पइसा बोल ! टाबर सैंजोरै धक्कै सूं लुगाई रै हाथां मांय सूं छूट'र पैली तो सेठां रै तख्तै री कोर पर पड़्यो अर फेर लढ़ंद करतो पक्कै आंगणै पर, हूं कनै ई बैठो खाता कुतरै हो···म्हारो पुराणो खून अेकैसमचै नाड़ां मांय दौड़्यो. हूं ताचक'र उठ्यो अर पैली छोरै नै उठाय'र वींरी मां नै पकड़ायो, फेर उठ'र सेठांरै जाडै पड़ोड़ै गळै पर अेक साचै हाथ री पा दी. सेठ कुरळाय दियो. लठैत भागता आया अर मन्नै पकड़ लियो, वीं ई टेम नौकरी छूटगी. पण सेठ किसा इतै सूं ई मानता. सुतंत्र भारत री पुलिस-नै वै म्हारी अकल ठीक करणी भोळाई. जद अठै आज आळै दांई थाणो नीं हो···कनली चौकी सूं पुलिस आई अर मन्नै पकड़'र लैयगी थाणै में कुटीज-आयां पछै गांव में म्हारी नूंवीं ओळखाण हुयगी. सेठां रै थपड़ मारणै रै कारण अजीव सो दवदवो हुयग्यो. तद ई सुतन्नता वी हुवा फैलण लागगी. चुनावां रा दौर आया अर मैं इण हवा में सांस लेंवतो-लेंवतो नेता बाजण लागग्यो. कांग्रेस अर दूजी पार्टियां री वातां हुंवती. सगळी पार्ट्यांरी वातां विचाळै सैग सूं माड़ी-मुड़दी चर्चा कम्युनिस्ट पार्टी री हुंवती. कांई ठा किसा चुनाव हा कै अठै कम्यूनिस्ट पार्टी री अेक सभा हुई··· मैं अळगो खड़्यो सैंग वातां सुणै हो. जको आदमीं भाषण देवै हो, वींरी सगळी वातां सुण'र मन्नै लखायो कै मैं तो सरू सूं ई ई पार्टी में हूं. म्हारी वाछां खिलगी. मैं घणो पढ़्यो लिख्यो नी हो अर नीं ई मन्नै आज लग आ ठा ई ही कै मैं पाट रै मजूरां रै जिका हकां सारू लड़्यो, म्हारो ओ सुभाव ई इण पार्टी रो धरम है. मैं साचै मन सूं वीं ई वगत्त अपनै आपनै वीं पार्टी में समझ लियो. सभा खतम हुयां पछै मैं भाषण देवण आळां कनै गयो अर साव भोळप सूं क्यो कै मैं थांरी पार्टी में रळणो चाऊं. वै हंस्या. फेर म्हारै कांधै नै थपथपा'र कैयो, 'ठीक है, तुम आज से इस पार्टी में हो, बस···' फेर वे एक आदमीं नै नांव लैय'र हेलो पाड़्यो अर ओळावण-देवतां कैयो, "ये देखो, अपने नये कांमरेड···इनका ख्याल करना." वीं आदमीं मुळक'र म्हारै कानीं देख्यो अर हिवळास सूं पूछ्यो, "कांई नांव है ? 'मदन मोहन, मैं दड़ूकतो सो बोल्यो. वांरो नांव मन्नै भोत पछै ठा लाग्यो. वै

बात है, ओ अेक दिन सांसा रातनै आयनै म्हारो बारणो बजायो. मैं खोल्यो, तो ओ कोजो तरै हांफ्योड़ो हो,' 'मदा, मन्नै आवण दै''' मैं मांय आय'र सगळी वात बतासूं''' मैं इणरी घबराट देख'र बारणो छोड़ दियो. ओ बड़ग्यो जद बारणो ढक'र मैं लारै आयग्यो. केई ताळ पछै सांसा री हांफणी थमी जणा वो बोल्यो, 'वै अठै नीं आवैला, पण आय जावै, तो बारणो मत खोली !'

'कुण ?' मैं पूछ्यो.

'वै''' वो बतांवतो-झिझक्यो, फेर धीमै से बोल्यो, कनलै गांव रा सांसी !'

'सांसी'' ' मैं चिमक्यो.

'हां, मदा''' मैं थन्नै सो कीं बताय देसूं''' आधी सीर ई करांय देगू''' वो डरयोड़ो सो बोल्यो.

'ओ ई रुघाराम !' मैं जाणै अविश्वास में पड़ग्यो.

'हां ओ ई रुघाराम रे ! ओ ई. 'मदजी जोर दैय'र बोल्या, 'फेर वीं मन्नै सगळी वात बताय दी. ओ नीचली जात आळां री लुगायां सागै वांरी गरीबी अर लाचारगी रो फायदो उठाय'र आपरी काम-वासना मेटतो. पण वीं दिन तो अेण इसो काम करयो क़ै सुण'र म्हारो जीव घृणा सूं होवल्डा लेवण लागग्यो. वो बतायो कै इणरी जकी लुगाई सागै शरीर रा खाता हा, वींरी अेक चवदै-पन्द्रै वरसां री छोरी ही. ई वीं छोरी नै अेक वारै रो सेंसी बताय'र आपरै आदमी सागै परणवा दीवी. फेर वींनै पंजाब में बिकवाय दी अर आप पइसा बाट लिया.'

'ओ ई रुघाराम, जको अबार एम. एल. ए. रो चुणाव लड़्यो ?' मैं अेकदम अविश्वास सूं बीच में ई पूछ लियो,

'हां-हां ओ ई, सागी''' मन्नै सुण'र लखायो कै मदजी अबकै फेर पेट रै जोर सूं बोल्या है. म्हारै मांय भय दौड़ग्यो क़ै कठैई पींपळियै रो प्रेत वां में फेर नीं उतर जावै.

पण मदजी झट पाछा संयत हुयग्या, 'रुघाराम मन्नै केयो कै वो पैली ई इसा केयी सौदा करया अर खूब पइसा बाटया. पण अबकै वो वानै चरको नीं

बनायो कै सपोर्ट तो सपोर्ट. श्रो जकी पार्टी सूं थोड़ो-घणो संबंध बतावै, वींनै वोट ई नीं देवणो है… मैं वीनै साफ केय दियो, 'मैं थन्नै वोट नीं दूंला अर नीं ई थन्नै वोट देवण रो कोई नै केवूंला…' ई बिचाळै ई म्हारो तो सैंग सूं बडो मददगार ई छूटग्यो. श्रेक दिन अचाणचक ठा पड़ी कै का० गणपत जी री हत्या हूग्गी है. पछै सुणनै में श्राई कै वांरै गांव में हाल ई रजवाड़ै री टेम री-सी ठकराई अर रावळै री श्रणहूंती चौवराट चालती अर वै वींरै खिलाफ लोगां नै श्रेकठ करै हा. कोई रावळै रो ठिकाणेदार रीस में श्राय'र वांरै पेट में तलवार घुसेड़ दीवी… जो हुवै, मन्नै लाग्यो कै म्हारो कांधो ई टूट'र श्रळगो हुयग्यो. मैं वांरी पार्टी रो सदस्य हो कै नहीं हो, श्रा ई मन्नै ठा नीं ही. वै सदैव ई कैवता, 'बस, पार्टी नै धर्म मानै जको श्रापै ई सदस्य हुवै.' मैं गणपत जी रै मरचां सूं भाई मरै समान श्रटोळो हुयोड़ो हो, जद ई वै चुणाव हुया अर रूघाराम हारग्यो. वो दूजै दिन म्हारै कन्नै श्रायो. 'थूं ठीक नीं करी, मैं तन्नै देखूंला…' मैं पूछ्यो, 'कियां? म्हारै बारै में लोगां नै ऊंधी पा–पा'र म्हारा वोट तोड़्या…तें लोगां नै आखिर श्रा केय ई दी कै हूं लुगायां वेचण रो कारवार करूं. "मैं किणनै ई कोनी केयो हो, पण कूड़ी ससमाई लगांवता देख'र मन्नै रीस श्रायगी. मैं उवळ्योड़ो–सो बोल्यो, "हां केय दी…श्रोर नीं केई है, तो जरूर केयसूं… जा क्यूं पूंछ बाढ़ै तो बाढ़ लेवी !" वो म्हारै सामीं देख'र जाड़ भींची अर बोल्यो, 'पूंछ इसी बाढ़ सूं कै याद राखसी…'अर गयो परो।'

मदजी फेर चुप हुयग्या, खासा ताळ नीं बोल्या, वारै स्यात उजास हेठो उतरण लागग्यो हो…चिड़कल्यां ई बोलती सुणीजण लागगी, मैं बैठ्यो-बैठ्यो सोच्यो कै श्रगूण में सूरज ऊगणैरी लाली श्रबै ऊजळी पड़ती जाय रैयी हुवैली अर थोड़ी ताळ में ई तावड़ै रो धणीं श्रापरो मुंहडो काढ़'र ऊंचो श्राय जावैला.

'बेटा,' मदजी बोल्या. मैं सुण'र चिमक्यो. मदजी श्राज लग किणनै ई बेटो कदै ई नीं केयो. छोटो हुवो कै बूढ़ो–ठेरो, वै वीरो केय'र ई वतळावै.. सागै ई वै म्हारै माथै पर श्रापरो हाथ धर दियो. उजास धीरै-धीरै बीं कूड़्योड़ी, श्रधटूट बारणां री चोखट नै उलांघतो मांय श्रावण लागग्यो हो.

"ई बात नै खासा दिन हुयग्या. इण बिचाळै म्हारा बापूजी मरनै री खबर ई श्राई, पण मैं नी गयो. मैं श्रबै मांग्यो लेय'र खेत बावण लागग्यो. दो जणा जोगो धान हुय ई जांवतो…सिरकारी स्कूल में म्हारो छोरो पढ़ण लागग्यो…यो कोई बारै-तेरै बरसां रो हुयग्यो हो…श्रर…!"मदजी रा बोल डूबण लागग्या…

होतर, मैं की ठीक रैवतो, तो ई म्हारा पूर खेंच'र चिगावण लागजांवता. रुघाराम रै मूंडो-मोटर ग्रत्ती ई गयो... ग्रर म्हारी आ जूनी हेली ग्रेक साल जोर री विरखा सूं बिना सम्हाळ-संभाळ कमजोर हुयोड़ी तो ही, ही.ढह पड़्गी'र वा... ग्रर आज नी दरसै. दरसी जिको वीं कियां कमायो. वींरै ताण एम० एल० ए० ई बण्योड़ो है...

"पण मदजी ग्रबै थे इयां बकया क्यूं करो ?" मैं म्हारै खुद रै ई मांय गाद नीं टूंवण ग्राळो सवाल कर दियो.

"सुण बेटा, पांच-सात वरस मैं गेलो-गूंगो जरूर रैयो होवूंला, पछै मैं नीं. पण धीरे-धीरे चित्त ठिकाणै आयो जद मैं जाण गेलो रैंवण लागग्यो. ई गेलपणै में मैं इसी-इसी बात, जकी याणैंग्राळां नैं पछै ठा पड़ै, पैली सोधलूं... मैं रुघाराम नैं मार नीं सकूं, पण ललकार तो सकूं हूं ग्रो गेलपणो छोड़ दियो तो ग्रा ई छूट जासी..."

"पण रात तो थारैं मुंहडै मांय सूं ग्रणथाग भाग निकळया."

"हां किरोध ग्रावैं, बीरा... ग्रो किरोध म्हारो धन है... मैं लुक-छिप'र ग्रेक-ग्रेक ग्रन्याव री खबर लियाऊं. पकडीज्यां गेलो बाजूं ग्रर छूट जाऊं, नीतर ई ग्रन्याव पर धाप'र किरोध कर लूं बस, बेटा... मैं म्हारो ग्रो किरोध किणनै सौंप सूं, ग्रा ई जीव में रैंयसी. म्हनै भरोसो है कै म्हारो किरोध नीं तो म्हारै लारलां रो विरोध ग्रेक दिन ग्रां सैंग ग्रन्यावां नै. मिनख रै मिनख नै ई जरख ज्यूं खावणै नै ग्रर भूख-तिस में टावर ग्रड़ाणै राखणग्राळा हालातां नै, ग्रवस खतम कर देवैला...ग्रवस खतम कर देवैला..."

मैं मदजी रै मुंहडै सांमीं देखै हो. वांरी ग्रांख्या छीदी हुयोड़ी ही जाणै वांमें कोई ऊंठो दरसाव दीख रैयो हुवै. मैं ग्रेकर फेर ग्रासरै में चौफेर निजर दौड़ाई... खूणै में नाळी कनै पेशाव रा चाठा जम्योड़ा हा ग्रर वीं सूं थोड़ी ही दूर तीन धुंग्रै सूं काळी हुयोड़ी ईंटा राख पर पड़ी ही, जकी सूं कांइ ठा कित्ता दिन पैली मदजी चूल्हो वणायनै जगायो हो ग्रर ग्रापरी रोटी पोई ही... वींरै बाद ग्रेक तूटोड़ै काच रै टुकड़ै खन्नै काट खायोड़ो रेजर पड़्यो हो, जिकै सूं स्यात मदजी ग्रापरी दाढ़ी खुरचण री कोशिस करी ही ग्रर ग्राधी खुरच'र ई थकग्या.

मैं उठ'र धीमें धीमें पगां सूं वारै ग्रायग्यो. मदजी झोळी हुयोड़ी मांचली में देवळी ज्यूं बैठ्या हा... मन्नै लखायो कै वैं ग्रापरो सगळो धन मन्नै सौंप में देय दियो है.

रात नहीं पुगणैं रो पूछ्यां पछै कांई कैयसूं. मन्नै दर ई चिन्त्या नी ही.

□□□

[illegible] हुवै. पंच विश्वासां माथै चोट करणवाळी कहाणी 'सुगन', छोरी जनमणै रै सागै ई उणरै प्रति उपज्योड़ै मानसिक अळगाव नै चित्रित करणवाळी कहाणी '[illegible]', मानसिक विकृतियां नै उजागर करणवाळी कहाणी 'हिड़काव'. निम्नवर्ग [illegible] जुवान छोरी री व्यथा कैवणवाळी कहाणी 'हत्या', अेक उपेक्षित जात (भंगी) री दयनीय स्थितियां नै परगासण वाळी कहाणी सुळचोड़ा, मध्यम वर्गीय पारिवारिक स्थितियां नै उजागर करणवाळी कहाणी 'हुवणो नहीं हुवणो' अर इणी भांत 'गळी जिसी गळी', 'धरती कदतांई घूमैली' में महानगरीय जन-जीवण री विसंगतियां अर यंत्रणावां मुखरित हुयी है. सांवर दइया राजस्थानी रा लूंठा कहाणीकार है।

□ इण क्रम री दूजी पोथी 'सळवटां' (रामेश्वर दयाल श्रीमाली) री कहाणियां घणकरी गांव रै साधारण मिनख री अबोधता, मासूमियत अर जीवण रै प्रति आपरै निजू दृष्टिकोण री पहचाण करावै कै ज्यूं किणी वाद सूं जुड़नै री घोषणा करनी फैसन है, त्यूं ई वाद सूं नीं जुड़नै री घोषणा ई लारलै केई दिनां सूं फैसन बणगी है अर श्रीमाळी इण फैसन नै घणा वडबोला हुय'र ओकाणी है पण कहाणियां पढ'र आ महसूस हुवै कै आज रो लेखक जे ईमानदार रैय'र लिखै, तो वीं री कहाणीं मतोमत ई अेक दिशा पकड़ लेवै. अर आ दिशा ई लेखक री फैसनी घोषणावां तोड़ न्हाखै. 'जसोदा' 'कांचळी' अैड़ी ई कहाणियां है. संग्रै रै नांव आळी कहाणी 'सळवटां' अवस लेखक नै लेखक हुवणै रै अेक भावुकतापूरण शौक नै जाहिर करै. एक निकमै पात्र री अबखाया रो हिसाब देवणवाळी आ कहाणी पढ्यां पछै निरर्थकता रो अैसास करावै, कुल मिलाय'र ओ संग्रै लेखक रै रळकळावूं दृष्टिकोण रो प्रतिनिधित्व करै जिकी लेखकपणै में कोई चोखी बात नी कैई जा सकै.

□ चेतन स्वामी

ग्राम पंचायत ऊपनी (श्रीडूंगरगढ़)

प्रगति के पथ पर–

ऊपनी, निर्माण-कार्य

१. विद्यालय भवन में विद्युतिकरण
२. विद्यालय भवन की बाउण्ड्री

भावी योजनाएं

१. हौज निर्माण
२. पानी निकासी
३. गोचर भूमि का आबादी भूमि में रूपान्तरण
४. कुए-मरम्मत

कल्याणसर पुराना, निर्माण-कार्य

१. विद्युत सुविधा पहुंचाना
२. कुए विद्युतिकरण

भावी योजनाएं

१. कुए-मरम्मत
२. प्राथमिक विद्यालय खोलना
३. दुकानों का निर्माण

कल्याणसर नया, निर्माण-कार्य

१. विद्यालय में दरवाजे बनवाना
२. हरिजन मोहल्ले में टूंटी

भावी योजनाएं

१. हरिजन मोहल्ले में बिजली
२. हरिजन कुए की मरम्मत
३. गांव के कुए की मरम्मत

पुरखाराम
सरपंच, ग्राम पंचायत, ऊपनी

ग्राम सेवा सहकारी समिति

मोमासर (श्री डूंगरगढ़)

स्वतन्त्रता दिवस के पुनीत पर्व पर पंचायत के कृपकों एवं उपभोक्ताओं का हार्दिक अभिनन्दन करती है।



हमारी सेवाएं

१ पंचायत में चीनी, गेहूँ, सीमेंट का वितरण

२ कृपकों को प्रतिवर्प अल्पकालीन एवं मध्य-कालीन कृषि ऋण वितरण

सहकारी समिति के सदस्य बनकर सहकारी आन्दोलन को सफल बनाएं

दानाराम
अध्यक्ष
ग्रा. से. स. समिति

ग्राम पंचायत शेरुणा (श्रीडूँगरगढ़)

प्रगति – पथ पर अग्रसर

- भू–विहीन हरिजनों को ३६ निःशुल्क आवासीय भूखण्डों का वितरण
- बड़िया शिक्षा के अन्तर्गत भवन-निर्माण
- हरिजन बस्ती में विद्युतीकरण



पंचायत का विकास
आपका अपना विकास है

- सफाई व्यवस्था में सहयोग करें.
- जन्म-मृत्यु की सूचना पंचायत में दर्ज करावें.
- बच्चों व प्रौढ़ों को क्रमशः विद्यालय एवं प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र में भेजने में सहयोग करें.
- सार्वजनिक एवं पंचायत भूमि पर अतिक्रमण न करें.

भरतसिंह राठौड़
सरपंच

नगरपालिका मण्डल

रतनगढ़

(चूरू) राजस्थान



स्वाधीनता दिवस के पुनीत अवसर पर नगर पालिका मण्डल, रतनगढ़ सभी नागरिकों की दीर्घायु की कामना करते हुए अनुरोध करता है कि :—

१ – राष्ट्र की सम्पति आप सभी की है। इसकी सुरक्षा करना हम सभी का कर्त्तव्य है।

२ नगर पालिका करों की समय पर अदायगी करें जिससे हम आपकी सेवा अच्छी तरह से कर सकें।

३—नगर पालिका भूमि व आम रास्तों पर अतिक्रमण नहीं करें तथा इस प्रकार की कार्यवाही करने वालों की सूचना समय पर नगर पालिका प्रशासक को देकर एक सुयोग्य नागरिक के कर्त्तव्य का पालन करें।

४—राष्ट्र को कमजोर करने वाले तत्वों का विरोध करें तथा इसकी सूचना राज्याधिकारियों को दें ताकि देश सुसंगठित व मजबूत बने एवं राष्ट्र की सार्वभौमिकता व अखण्डता पर आंच न आवे।

५—संविधान से प्रदत्त मौलिक अधिकारों को उश्रृंखलता से न बदलें।

मोहन लाल ओझा

अध्यक्ष



- नागरिकों को उचित दर पर परिवहन सुविधा के लिये न्यास द्वारा मिनी बसें शीघ्र ही चालू की जा रही है.

- नगर में न्यास द्वारा तरणताल, इण्डोर स्टेडियम, रंगमंच बनाये जाने की प्रक्रिय चालू है.

- न्यास के बाद पीड़ित व्यक्तियों को हुड़कों से भवन निर्माण हेतु ऋण सुलभ कराने की कार्यवाही की जा रही है.

- न्यास ने कवि, शायर, स्वतन्त्रता सेनानी तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को रिजर्व प्रक्रिया पर एवं अर्जुन पुरस्कार प्राप्त को न्योमिनल दर पर भूखण्ड आवंटन की कार्यवाही की जा रही है.

- विकलांग वर्ष के उपलक्ष में विकलांगों को ३२ भूखण्ड जयनारायण व्यास नगर योजना में आवंटित किये गये है.

- २० सूत्रीय संकल्प के तहत ५१६ पट्टे विभिन्न बस्तियों में अनुसूचित जाति के लोगों को पट्टे वितरित किए गये तथा विभिन्न कच्ची बस्तियों में न्यास द्वारा १९३० पुराने कब्जे नियमन किए गये है.

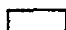
- पर्यावरण सुधार योजना के तहत न्यास ने अभी तक २३ कच्ची बस्तियों में ३९.६३ लाख रुपये इन बस्तियों में सड़कों, नालियों, रोडपाईप तथा पानी व बिजली के लाईन लगाने हेतु विकास कार्य सम्पन्न किया गया. ११ (ग्यारह) कच्ची बस्तियों के लिए राज्य सरकार से १३,१२,५००/– का अनुदान पर्यावरण सुधार योजना के अन्तर्गत प्राप्त हुआ है,

(सी० के० सदाशिवन)	(भवानी शंकर शर्मा)
सचिव	अध्यक्ष
नगर विकास न्यास, बीकानेर	नगर विकास न्यास, बीकानेर



मनवार

पानावळी



सम्पर्क-सूत्र :

राजस्थानी भासा संस्थान

अमर-निकुन्ज, ईदगाह बारी, बीकानेर-३३४००१

याद रा दाना मराव करणा पढ़ जिकां रो सम्बन्ध जीवण सूं नईं हुय'र कोरी कल्पनावां मूं हुवै। कारण कै आज साहित्य रो उद्देश्य पाठकां रो मन विलमावणो ई नीं है, वी रो काम लोगां में चेतणा रो विकास करणो है—जीवण सूं जुड़'र आपरी समस्यावां सूं जूझणो है। जीवण रो साचो रूप अर आज रै आदमी रो आर्थिक भार सूं टूटणो-कळपणो—घर अर समाज विच्चै आदमी रा बदळता सम्बन्ध—जीवण रो तर-तर उळझतो रूप अर वीं मे फस्योड़ै आदमीं री साची ओळखाण करावणियै कहाणीकारां रै रूप में कई नाव लारलै बरसां में सामै आया, वां मे गिणावणजोग है—सर्वश्री मूलचन्द 'प्राणेश', सांवर दइया, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', हनुमान पारीक, कल्याण गौतम, बजरंग शर्मा, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, रामनिवास शर्मा, चेतन स्वामी, मोहन आलोक अर बी. एल. माली 'अशान्त' आद।

'मनवार' रै इण अंक री कहाणियां में आप मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' जैड़ै लेखकां री कहाणियां ई वांचोला अर साव नूवीं नकोर कलम री पैली बानगी रूप मे हरिप्रकाश सैन री कहाणी ई वांचोला। नूवैं शिल्पगत प्रयोगां री कहाणियां भी वांचोला अर सीधै-सादै रूप में असरदार ढंग सूं लिख्योड़ी कहाणियां ई वांचोला।

'मनवार' रै आगलै अंक खातर एक अरज—सगळा नूवां लेखकां नै म्हारो नूंतो है, वै आपरी सबळी कहाणी भेजै अर आगलै अंक नै राजस्थानी कहाणी रो उल्लेखजोग अंक बणावण में मदद करै। म्हारो नूंतो जूनै लेखकां नै ई है—पण इण अरज साथै कै वै आपरै नांव रै जोम मे माड़ी कहाणी नीं भेजै, कारण कै 'मनवार' कहाणी नै परखै, वीं रो ई मोल-तोल करै, किणी रै नांव रो नीं।

'मनवार' रै इण अंक री कहाण्यां माथै आपरै दो टूक विचारां री उडीक रैसी—

—भंवरलाल 'भ्रमर'

दावें पूरी पाटी—पाटो घाघरै रो ऐरो बणियो बेटा! बोलणनै ही ठोड़ कोनी!

मर-मरी, एकमो कमाऊ मिनख सगळां री सुण'र निसास नाखी पर नुकती मरजा रै चेरै मानी सामो जोयो। फेरूं आकास सानी ऊंचो मूंडो करियो पर मन माय कैयो—मैं वां सगळां सारू कांई करियो, आ म्हारो अन्तरजामी ही जाणै।



—कीकाणी ब्यासां रो चोक, बीकानेर

कु. शकुन्तला किरण

ग़वानी परीक्षा

उणारै वायवा में पूरो आधा घण्टो लियो। घुमाय-फिराय'र सवालां पर सवाल। जेआं ही पुराट पर गरम-मिजाजी परीक्षक। जे वा इतरी त्यारी नीं करती तो आज? शोभना रो वारो उण रै पछै ही। वा पड़ताल सारू बारी रो पड़दो अळगो कर'र हुँसियारी सूं पोलै खड़ी हुयगी। लाग्यो कै विभागाध्यक्ष बारै सूं आयोड़ै परीक्षक सागै गुटबत कर नै हंस्या पर—

—बैठो! थांरो नांव?

—जी, शोभना।

—शोभना! किण भासा रो सबद है औ?

—जी, हिन्दी रो।

—इण रो अरथ कांई हुवै?

—जी, मतलब...

पर विचारै ही विभागाध्यक्ष रो रेसम रै लच्छां-सी हंसी सागै ही

श्री मनोहरसिंघ राठोड़

दुमुही

साप दीखतां ई नैं काई ठा क्यूं डर लागै ? सर्राटै भाजतो फण उठाय लाम-लाम जीभ री तीखी-तच्च अणयां होठां रै फिरतो दीखतां—वीं रा सगळा रूं ऊभा हुय जावै, गळो सूक जावै, आंख्यां मिच जावै। सांपां री न्यारी-न्यारी जात—जात सारू झैर। वो जाणै—काळै नाग में अणूंतो झैर हुवै, बापड़ो दुमुही में क्यां रो झैर ? आ जाणतां थकां भी दुमुही देखतां पाण पसीनो आय जावै। आपा मूं आंतरी जावती-जावती काई ठा कद दूजै मूंडै सूं सामैं सिरकणो सरू कर देवै—इण कारण रै अलावा एक ऊंडी बात वीं रै काळजै रूपोड़ी ही।

सारलै बरसां वो जद-जद आपरी लुगाई सामैं देखतो, दुमुही री याद आय सगळा रूं ऊभा हुय जाता—पसीनो आय जावतो। पैली इयां नीं हुंवतो। इण बातनै घणी घणी भूलणी चावै, नीं भूलीजै। सावण रा लैलूर ज्यूं उडती घणी नडती बातां घिर-घिर याद आयां जावै।

ब्याव रो साल, जीम माथै धरियोड़ी मिसरी री डळी ज्यूं हळवां-हळवां कद सिरकगी, ठा नीं पड्यो। धणी-लुगाई न्यारै-न्यारै सहरां में नोकरयां में हा। एक-दो बार लुगाई आयगी, दो-तीन बार वो छुट्टी जाय आयो। साल सिरकतां अणावै लाग्यो लुगाई जित्ती राजी विदाई रै दिन हुंवती, वा खुसी आंवती वेळां नी हुया करती।

लुगाई रै मन में जद-जद वो गयो—एक बोझ, एक भिझक आपरी लुगाई रै लिलाड माथै झूलती देखी। दोन्यां रै साव एकलै छिणां में, न्यारी-निरवाळी घड़्यां में हर वगत एक तीजी साम मुणीजवा रो वैम वीनै आवा लाग्यो।

देखतो नाचतो पण वो मन मांयी हाळ काबू नीं रैवतो। दिन ऊगतां मंजन करतो पाणको दब आवतो। मूंडो धोयां बिना हाथ धोय उतावळो जाय पटेंचो खोलतो। कागजा रै पत्ना माथै सुदोष रा दसकत ढूंढतो। सोचतो—'आं मांयली एक पाना मांयी जरूर वा हरामी दिखाई हुवैला।' पछै आखै दिन रीस में उफणतो —काम में मन नीं लागतो।

आपरै मेज में दफ्तर बड़तां सगळा वीं री चुगली करता लखावता। वो सगळां निजरा एक-एकनै तोलतो। थोडी जेज पछै हंसी सुण वो समझ जावतो बात वो रै बाबत करै हा। कई बार बिलहो री जियां हळवां पग मेल नै सुण्यो है—'दाय लागै घर आळी भी रामजस री लुगाई री जियां बारै घणी रैवै म्हारी!' पछै सगळां रो हांसणो, वो आपरै नांवनै कानां सुण वां बातांनै आखै दिन माथै में मथ्यां आवतो।

वो वी रो वैम ही नीं हो। बात री थोड़ी-थोड़ी ठा सगळांनै पड़गी। लागलै दिना दफ्तर रै दोरै (दूर) सूं रात रा पूग्यो। थाकोड़ो झट बत्ती बुझाय कड़यां पाधरी करै हो। नींद रा घिरोळा आवै हा। मतैनै जाणै तातै तेल रा छांटा कोई लगाय दिया। वै बातां आज ताणी काळजै करोत-सी चावै है।

मापलै मेहता री बीवीनै सड़क माथै ऊभी सरमा री भू पूछ्यो—'थां रै सांमलो मास्टरणी कद आवैली ?'

'अजी, कद आवै ? कद जावै ? आपां इसी दुमुंही लुगाई सूं घणो हेत नीं राखा।'

'दुमुंही कियां बताओ हो ?' सरमा री लुगाई जाणती बूझती भोळी बण नै बोली।

'अजी, थानै ठा कोनी काई ? आ मास्टरणी दूजो आदमी कर राख्यो है। वी रै माथै मोजां मारै। ओ रामजस अठै आधी भूख काढै कांई मरद है ? नहीं जणा एकर में सीधो कर नाखै।

दोनूं खिलखिलाय हांसी। वो एकर सोची—खिड़की खोल कैवूं, ओ भाभीजी रो बच्चो ! सामै पड़यां तो पूछ्यो करै कै 'बहनजी कब आयेंगी ?

जाग सी। हरियाणा रो जागां राजस्थान में मिल्यां भी सीनियरटी मारी जावै। तरक्की रो पक्को नुकसाण।'

मैंगाई री मार मे ठव्योड़ो लुगाई री नौकरी छुड़ावण री सोचतो हो रैवतो। मूं ई मूं कदे नी कैय सक्यो। लुगाई री आ जीत सुदीप री जीत लखा-वती। आ सांच बो मुदनै घणो खोटो दीखबा लागतो।

कोई दिन सपनै मे एक कानी बो खुद ऊभो दीखै। दूजै छेड़ै सुदीप मुळकतो दीसै। एक सोनै री दुमूंही दीखै। दोनूं एकण साथ चिल्लाव करै—'आ म्हारी!' 'नहीं, थारी कोनी, म्हारी!!'

दुमूंही बी रै सामी आवण लागै। बो ताळयां बजाय कूदै। सोचै—मानो आज सुदीप रै बच्चैनै हराय दियो। सर—र—र दूजै मूंडै सूं सुदीप सामै जाबा लागी। आ ल्यो सुदीप आपरी झोळी में घाल'र पीठ मोड़ ली—बो जाय—पछै दीसै ही कोनी।

आं सपना पछै जद कदै गांव छुट्या में गयो है, खेतां मे झाड़्यां रै ओटै सुदीप रो वैम हुवेस रियो। अबार बारै आय आपरी झोळी मे सोनै री दुमूंही दिखाय भाज जावैला। बो देखतो रैय जावैला। बीं री झोळी में सांप री जाग्यां बीं री लुगाई रो हांसतो मूंडो दीसतो। जको बीनै चिड़ायां जावतो। बाड़ सूं निकळ एक दुमूंही बीं रै खेत में बड़ी। बो घणी ताळ बीनै नीं देख सक्यो। सैंपू-रको घरां आयग्यो। कठैई सुदीप सांच्याणी सामैं आय नीं ऊभ जावै। माथो भरणावै लाग्यो।

घरां आय मा नै पूछ्यो—'मा! आपा रै गांव में दुमूंही सांप घणा हुयग्या दीसै? मै आऊं जित्ती वार मनै दीख जावै।'

मा मुण नै घणी राजी हुई। मुळकती बोली—'आपां रै खेत में बड़गी ही काई?'

बो इण सवाल रो काई जवाब देवै? बगनो हुयोड़ो ज्यूं मा सामो देख्यो—'मा थारो वैम है। हह—।' कैय सोचै लाग्यो—कोई रै वास्तै सुभ हुवती हुवैला, म्हारै वास्तै सफा असुभ।

✽ श्री अमोलकचन्द जांगिड़

ढळान

रात रै काळै अंधारै में हळवां-हळवां चोबारै में बाबू काळीचरण बड़ियो पर बिना कीं दिक्कत रै बत्ती जगाई। खाट पर बीं री घरवाळी सूती पड़ी ही। नैणां री पलकां बन्द जरूर दीखै ही, पण भीतर सूं भलीभांत जाग री ही। बींनै आ आस ही कै बै बीं कनै आय'र बैठेला अर बींनै धोवळ'र जगावेला तद बा बां रै गळबाथ घाल'र बांनै सुवावैली। पण बीं री इण आस पर जाणै कित्ता घड़ा रो पाणी ढुळग्यो हो अर बीं रै काळजै में एक दरद रो बंभूळियो-सो बैठग्यो हो। बा पसवाड़ो फोर लियो। बाबू काळीचरण आपरा गाभा बदळ'र दूजै माचै पर सोय लिया हा। पण बो आपरी श्रीमती री नींद खोस ली ही। बींनै जक कठै? बा दो घण्टा में जाणै कित्ता पसवाड़ा फोर लिया हा। बीं रो भीतर मारण-मरण ऊकळै हो। बा कित्तै चाव सूं सांझड़ी सूं बाट जोय री ही। बा आपरै हिरदैनै काठो करियो। बै ई नीं बतळावै तो आपणै कांई बिसर पड़्यो है? पण नित-नित री उपेक्षा किया बरदास करी जावैली? अपांलको उदास रातां किसी काटी जावैली? बीं रै काळजै में ढीम बध रियो हो। बा कांई करै? बाळणजोगी नींद भी तो आवै कोनी।

बा चाणचकै ही ऊभी हुयगी अर लांबा-लांबा सास मारया। बाबू काळीचरणनै हवां नींद नीं आई ही। बो सूत्यो-सूत्यो ही बोल्यो—'के बात है? हवी थानै नींद कोनी के?'

बाबू साहब रो इत्तो पूछणो ई जाणै बीं रै आंटीलै बाल-मननै पुचकार दियो हुवै पर बो बाग-बाग हुय'र मुळकतो हुवै। बा बांरै पलंग रै सा'रै टिक'र

ई वीं सूं प्रभावित हुवगी ही । वीं री बातां अर व्योहार सूं बीं रै हिरदै रै मांय ठेठ मन री चाहना कंपोज जांवती । बा वीं चांदणी री छायां तळै अपनै आपनै भोत सुरक्षित अनुभव करती ।

× ×

सरदी रा धवळा दिन भोत सुहावणा लागरया हा । बा एक कुरसी पर बैठी कहाणियां री पोथी पढै ही, जीसूं एकलैपण री चुभन महसुस न कर पावै । दोनूं टाबरिया इस्कूल गयोड़ा हा । खावणं-पीवणं रै काम सूं फारग होगी ही ।

नगर सूं दूर नुवीं सड़क पर वां रो बंगलो हो । नुवीं बस्ती बस री ही । आस पड़ोस में घणी चैल-पैल नीं ही । एक सुनसान सांतो बीं रै काळजैनै हिला नाखतो । इसो ओर हुय जावतो कै कदे-कदे बा बारै ऊभी हुय'र मिनखां रा मूंह देखबा खातर घण्टां बिता देवती । आसूं मेर जंगळी बोझा ऊभा हा । हवा री सुसाट रै सागै वीं रै धूजणी छूट जावती, पण वीं रै कनै कीं उपाव नीं हो । बाबू काळीचरण सुवारथ रै वसीभूत हो'र व्यापार में इत्ता खोयोड़ा रैवता कै आधी-आधी रात बगतै पूगता । ओ वीं रो नित रो नेम हो ।

अंपालै एकलैपण रै भिलमिलै नै कदे-कदे तोड़ने रै वास्तै मिस्टर शर्मा आजाया करतो । बो पड़ोसी हो अर मिलनसार हो । वीं रो गोरो गोळ चैरो आकरसक हो । वीं रै बोलणं अर ऊभै हुवणं री अदा निराळी ही । बाबू काळीचरण री पत्नीनै वीं सूं बात करण में आणंद आंवतो अर बीं रो मन वैसी सूं वैसो टैम बीं रै साथ काटणं मे घणो रमतो । पण बाबू सा'वनै बा री मुलाकात रो मालम नीं हो । वै आपरै बिजनस में बेफिकरी सूं लागरया हा ।

पगां रा खुटका सुण'र बा सामनै जोयो—'ओह ! शर्माजी ! आवो । आज छुट्टी ही कांई ?'

'तबीयत क्यूं गरम ही, सो छुट्टी ले ली । पड़्यां-पड़्यां घरां आखड़्यो बोदनो । सो थारै सूं गप-सप हांकणनै आयग्यो ।'

'आछी बात है । बैठो । शर्माजी ! अपां टैम कठै-कठै काटोला ? खातर भर दवाला नी चाहै ।'

हो ? फेर वा मोनै भागी कं वा फालतू में इत्ती बेचैन क्यूं होरी है ? कुणसो दुःख बीनै उछाळा पटकै है ? के वा वासना रो हिपाव बढारी है ? नीं, नीं ! वा एक झटकै सूं उठी घर काच रै सामीं जाय'र आपरो मूंडो जोयो। आंख्यां री मसाई घर नैं री फीकाई देख'र वा पाछी सांप ज्यूं फण ठायो—समाज सूं वा डरणवाळी नीं है। समाज रो घो काई नैतिक बल अको वीं री कोमळ भाव-नावां नैं फेप दियै।

वा एक नुवों बळ पाय'र कूंटो खोल्यो घर चाल पड़ी बारै। वीं रा पग डावळा-डावळा मिस्टर शर्मा रै बंगलै खानी बढरया हा।



—नाथजी रै मिंदर कनै, बिसाउ (झुंझुनू)

* श्री बुलाकी शर्मा

सम्बन्ध

मूंधड़ै रै हाथां में रुपिया देवतो मास्टर बोल्यो—'लै भायला।'

'घरे इत्ती कांई उतावळ ही ? देय देवतो धीरै-धीरै।'

'मोड़ो किस्यो थोड़ो हुयो है कांई ? पूरा छव महीना हुयग्या.है रुपिया लियानै। मैं तो मोत पैलां ही देवण खातर हाथ-पग मारिया, पण तावै आई ही कोनी। आज दफ्तर में फूडग्रेन एडवांस रा रुपिया मिलिया तो सीधो थारै कनै आयो हूं।'

मूंधड़ो आंगळी रै थूक लगाय'र रुपिया गिणण लाग्यो। गिण'र अचूंभो करतां बूझ्यो—'पाचसौ तीस ?'

'हां, हां।' मास्टर बोल्यो, 'तीस रुपिया ब्याज रा है।'

श्री विनोद सोमानी 'हंस'

दोय आत्महत्यावां

वै दोनूं कितरै दिनां सूं मिलै हा, मनै ठेरो नीं हो। फेरूं भी वां री चरचा हरेक जुबान पै ही।

दफ्तर सूं घरां आय नै भोजन रै खातर बैठ्यो होज हो कै घरवाळी बोली—'अबो वै दोनूं रोजीना मिलै है।'

'मिलता होसी। आपणो कांई जावै! थे तो ऊना-ऊना फुलका परूसो।' मैं कैयो क्यूं म्हारो वां दोनुवां सूं कोई सरोकार कोनी हो।

रोटी-बाटी सूं निरांत हुयनै दुकान माथै सामान बेचणै गयो तो काको बोल्यो—'थे आजकालै कांई कर रिया हो? वै दोनूं मिलता ही मिलै है।'

'मिलता होसी, काका! आपांणो कांई जावै?' मैं वै ही रट्योड़ा बोल बोल दिया।

जठीनै जाऊं बा ही चरचा हुवै। मैं एक दिन गळी रै खूणै सूं गुजरतो तो मांय ही वै दोनूं ऐडी जागा बैठ्या बातां करै हा, जठै कोई भी निजर नीं नाख सकै। मनै देख'र वै घबराया पर हूं बेगा-बेगा पगलिया धरया।

माधव अर रजनी रोजीना मिलै हा। सिनेमा माथै जावै हा। दोनूं कालेज मे साथै ही भणे हा। मकान री बारी कनै सूं माधव निसरतो तो दोनुवां रा नैण च्यार हुय जावता। दोय आत्महत्यावां हूं देखूं हो। ऐ सही मायनां में आत्महत्यावां होज हो। मैं सोचतो कै हूं फालतू ही आं सम्बन्धां में उळझ्योड़ो हूं।

कोई तो म्हारी रीस मुजब ही । वे दोनूं लिपट्योड़ा पड़्या हा ।

हूं बड़बड़्या—'कुण है ? अठीनै आवो ।'

दोनूं ही जणा बोना सूं वंध्योड़ा म्हारै पगां में आय नै लुळग्या—'कीं नै ही कैय देवोला, बापूजी तो म्हे दोनूं ही आत्महत्या कर लेवांला ।'

मैं बिना बोल्यां ही आगै रवाना गयो । मैं वांनै कांई भी नीं कैय सक्यो । कै आदमी नै म्हारो आ दोन्यां सूं कांई लेणो-देणो ? आं दिनां किणी रै भी मूंडै सूं वां दोन्यां री चरचा नीं सुणी । सब सामान्य चाल रियो है ।



—४२-४३ मानसरोवर, जीवन विहार,
आनासागर सरक्यूलर रोड, अजमेर-३०५००१

❊ प्रो. भूपति साकरिया

सभ्यता

सहर रै बारै 'मूनलिट' क्लब में आज विशेष उच्छव हो । पाणी रो छिड़काव हुयो । दीवाळी जैड़ी रोशनी करीजी । बैंड-बाजा अंगरेजी धुन बजावण लागा । क्लब रा नौकर अठी-उठी दौड़'र व्यवस्था करण में लागा हा । क्लब रै मुख्य हाल री सजावट रो तो पूछणो ईज कांई ? फरियां बधीजी ही । बदनवार लगाया नै टेबलां सजीजी—काकटेल नै स्नैकां सूं ।

अबार आठ बजिया है नै साढी आठ बजियां उच्छव है । धीरै-धीरै तांगा, मोटरां नै स्कूटरां माथै मेहमान आवण लागा । सूट-बूट सूं सजियोड़ा काळा साहब नै वणां रै साथै फुदकती उणा री मेमां । किणी-किणी साथै छबछैदार भी ही, पण सजियोड़ी नवेली नार ज्यूं—टीमटाम ।

✽ डा. मनोहर शर्मा

अन्याय री कमाई

एक मोटो सेठ घणो बूढो हुय र मांदो पड़ग्यो अर मौत रै एकदम नेड़ै आ पूग्यो पण फेर भी प्राण उण री काया नै छोड नीं रैया हा अर वाणियो वेदना सूं छटपटावै हो। सेठ जाणै हो कै मौत ही उण री पीड़ा रो एकमात्र इलाज है पण न जाणै क्यूं बा उण सूं दूर-दूर सरकै ही ?

इसी हालत में सेठ घणंमान सूं एक महात्माजी नै आपरै बंगलै में बुलवाया अर घणी-घणी नरमी सूं इण भांत निवेदन करयो—

'महाराज, जद में जवान हो तो एक साधारण-सी नौकरी सरू करी, पण आज आपरी कृपा सूं मेरै भोत वडो कारोबार है। उण दिनां में एक किरायै रै मकान में रैवतो पण आज मेरै कोठी-बंगला अर बाग-बगीचा है। पहली में एकलो छोरो हो पण वर्तमान में मेरै सब प्रकार सूं भरयो-पूरो परवार है। इण भांत अब मनै संसार में कुछ भी करणो बाकी नीं रैयो है। फेर भी मेरा प्राण इण जरजर काया नै छोड नीं रैया है अर मैं घोर पीड़ा में पड़यो हूं। आप ज्ञानी हो, अनुभवी हो। कोई इसो उपाव बतावो कै मनैं ई काया-कष्ट सूं मुक्ति मिलै'

महात्माजी सेठ री पीड़ा नै पिछाण लीनी अर इण भांत बोल्या—

'मैं आप री पीड़ा नै समझूं हूं अर किणी अंश में इण रो कारण भी जाणूं हूं। अब आप रो चित्त धन अर परवार सूं हटावो अर उण अवसरां नै याद करो, जद आप किणी दुखी मिनख रै दुख नै दूर करण सारू आप रो धन अर समय दोनूं लगाया हुवो। इसै प्रसंगां पर चित्त नै एकाग्र करोगा तो यो काया-कष्ट आपै ही समाप्त हुय जासी।'

✻ श्री दीपचन्द सुथार

पछतावो

लिछमी एक साम भागती-भागती घीसू काकै रै घरै गई। हमेस बैठा मापता पण आज भाग रा नीं मिल्या। गवाड़ी में किणी मिनख नै नीं देख'र बा धम्म-धम्म करती उणीज रफ्तार सूं पूछती-ताछती वैदराजजी रै घरै पौंची। उण बगत वै मिजाज-मसाला कर रिया हा। चैरै री उडियोड़ी हवावां नै देख'र वै सगळी बात जाण लिया पण फेर भी कैयो—'लिछमी कीकर आई ?'

आंसूड़ा ढळकावती गळगळै गळै सूं बोली—'भायजी री हालत अचाण-चक बिगड़गी। आप वेगा चालो।'

बा सुण झट गाभा पैर, थैलो लेय'र आपा-धापी पग उठावता थका डूगा रै घरै पूगा। नाड़ देखता ईज वणां हेठै सूं जमीन खिसकगी। फेर भी थैली सूं गोळी दवाईयां दी, पण दिन खूटा पछै कीं कारी नीं लागै अर वै इण असार संसार सूं [illegible]। आ बात बिजळी री भांत सगळै गांव मांय फैलगी। जिण किणी सुणियो, दुख दरसावता थका कैयो कै, 'घणी खोटी हुई, टाबरिया रुळग्या।'

थोड़ा'क दिनां तांई तो लिछमी नै लोग लुगायां धावस बंधावता रैया। घीसू काकै री बहू दया नै आपरै टाबरां री तरै राखती। ज्यूं-ज्यूं दिन घुळता गया, बात जूनी पड़ती गई। पण लिछमी री आंख्यां रा आंसूड़ा नीं तूटता। जिण रै पेट हूवै दरद उण नै ईज मैसूस हुवै। अबै घीसू काकै री बहू दुभात राखण लागी। डाळ-डोळै आ [illegible] आ पौंचां कै खावण नै ठंडी-बासी रोटी तो पैरण नै [illegible] देवती। मैण दिन घर रो काम करावती, बात-बात माथै

बर्दै रै मां पास । हुवै जावतां की जेज नीं लागै । सुगनो आज मोल रो [illegible] है । भरी-पूरी परिवार है । हर बात सूं घर माय रामजी राजी है । [illegible] पणी चतर अर समझदार है । दूजो कोई काम-काज नीं देख'र लिछमी देवी रा विरत कर'र आपरो जीवण बितावण लागी ।

जो नवीनै बुढ़ापै रै कारण घींसू रै घर री स्थिति बुरी तरै चरमरायगी । कमाण री सगत्ता नीं रैई । लाड़-कोड सूं छोरा केणां में नीं रैया । ब्याव भी कर दिया । घर रो खरचो बध गियो । कमाई रो जरियो नीं हुवण सूं खावण-पीवण रा सासा पड़ण लागा । नोकरी खातर छोरा घणा ई थठी-उठी फिरिया, बठा मांय पाणी पड़ग्यो पण अरथ कीं नीं निकळयो । छेकड़ कायो हुय'र घींसू आपरै बाळगोटियै नै चिट्ठी लिख नाखी ।

प्रिय हरकू,

सगींयान सूं रामा-सामा ।

जीवण रो मधुमास बीत गियो । अबै नदी रै किनारै रो रूंख हूं । सुहाणो बिगड़ गियो । छोरा मोटा हुयग्या । काम-धन्धो नीं लागण सूं घर री हालत खराब हुयगी । अपणायत कारणै घणो कांई लिखूं ? दुखी हुय'र जीवण में पैली बार कागद लिख्यो हूं । थे नौकरी लगा सकै तो घणो आभारी रैऊंला ।

थारो बेली—घींसू

× × ×

कागद बांचतां ईज हरकू रो हियो दुख सूं भर आयो, पर नगीन वगत पड़ूत्तर दे दियो । इण रै मुजब ऐ पाली रै वास्तै रवानै हुयग्या । बाबुवां रै संयोग सूं बातचीत हुई । अरजी मैनेजर सा'ब री मेज माथै पूगी । इण्टरव्यू हुयो । खातर नोकरी लागी । घींसू रै हरख रो ओर-छोर नीं रैयो । गांव रा देख'र सुगनो हरा नै आपरै घरै लेयग्यो । ठाठ-बाट देख'र ऐ चक्कर में पड़ग्या । चाय रो रिवा कै जग बगत लिछमी मिंदर सूं घरै आई । घींसू काकै नै पंचाणतां ईज पगां लागी । आ देख'र वीं री आंख्यां सरम सूं नीची हुयगी पर मन मांय पछताबण लागो ।

—मेड़ता सिटी (नागोर–राज.)

० श्री रामनिवास शर्मा

समय रो दबाव

पर वो दबाव इत्तो जोर सूं वधतो जावै कै म्हारो तो सिर गरणाटो खावा लाग जावै । हूं घणां ई माधूं कै आ सगळो बोध है । पण इण बोध मांय सूं एक इस्यो भूत सो दबाव होळै-होळै उठतो पर वो उठतो-उठतो इत्तो जोर सूं वधवा लाग जावै कै म्हारो मांयो तो वीं रै आगै ही भड़भेचा मारवा लाग जावै । पढ़ै सूनो-सो हुय नै मनै गूंगो कर देवै । म्हारो चेतन मन तो चमगूंगो हुय जावै पण अचेतन मन आ सगळी बातां सूं ऊंचो उठ नै देखवा लाग जावै । डाक्टर नै नर्सां नै, कम्पोण्डरां नै, वां सगळा आगै दूर वारी करनै खड्या टाबरां नै, टाबरां री मां नै, काकै-काकी नै परवार रै घणा ई मिनख-लुगायां नै । वां रा मूंडा उतर जावै जाणै वां रै डील रो सगळो खून कैय नै म्हारै मांय चढ़ाय दियो हुवै । पीळा पड़ता मूंडा, आसूं ढळकावती आंख्यां एकै सागै ही मौत रो भारी-भरकम भार उठावण रो जतन करवा लाग जावै । हूं कैवणो चावूं कै हाल तांई हूं मरियो कोनी, पण म्हारी जबान हिलै कोनी । वा जद ही हिलण रो जतन करै पतै नै बाद में एक सरणाटो-सो चालै पर वीं रै आगै ही म्हारो मन पाछो दौड़ पड़ै । मूंडै रै आगै ही म्हारै दिल मांय एक गेंद दौड़वा लागी । वा धीरै धीरै वधती जावै । नर्सां री, कम्पोण्डरां री भाग-दौड़ एकै सागै ही इयां बन्द हुय जावै जाणै चालती गाडी में ब्रेक लागग्यो हुवै ।

बाद में भागतो सरणाटो धीरै-धीरै म्हारै शरीर में फैलतो जावै पर वीं रै मांयनै ही हाडां में एक कंपकंपी हुवै । धीरै-धीरै डाक्टर, नर्सां खिसकवा लाग

... मायां कानी दूरे । वै एक नै बैंच मायै बैठग्या । धीरै-धीरै पुसर-पुसर करबा लाग जावैं । टाबर मुंडा होय आपरी मा कनै थाडा हुय जावैं । बीं री ... टाबरां नै देवै । बां रै मूंडै पर छायोड़ी मुरझांगी नै देख बा ... भगवान नै ... घणा मारा वादा कर नै प्राज एकलो छोड'र ... री हथारी करबा लाग्यो । उमड़ता आंसू मोती-सा बिखरबा लाग जावैं । ... एक ... आवाज आवै—हे मावड़ी ए ! भिभक'र उठै । देखै बीं ... नै ... दर्द सूं भरियोड़ो बाल उठै—हे मावड़ी ए ! भाग'र ... बी रै कनै । पगां में लिपटणो चावै । पण नियम री कड़ी पगां नै ... । पगां रै कनै सुता टाबर पगां आगै पाळ बांध राखी है । बा धम्म सूं बैठ जावै पर टाबरां नै छाती सूं लगाय लेवै । छाती री मार वास्य सूं गळ नै बेवा लाग जावै । छाती रै चिपक्योड़ो टाबर भिभक नै जागै अर पाछो आंख्यां मींच'र मा री छाती सूं काठो चिप जावै ।

अचेतन पर भटको लाग्यो । वो भाग'र बीं री आंख्यां रा आंसू पोंछणा ... कर दिया । जणां वां आंसुवां नै पूछै कि थे लुगाई रा हो कि म्हारा ? आंसुवां री भीड़ में एक तहलको मचग्यो । ओ के अजीब प्रश्न है ? आज तक इस्यो प्रश्न कोई करियो ही कोनी । तूं ओ प्रश्न कठै सूं लायो ? अचेतन मन रो मूंडो धोळो पड़बा लाग्यो के अजोगती बात पूछली । सकपकायो । आंसू पूंछणा भूल'र पाछो फिरबा लाग्यो जणां आंसू पूछ्यो कि पाछो कियां चाल्यो तूं थारो काम कर । मैं उत्तर देस्यूं कि ऐ आंसू किस्या है ? थोड़ो धीरज राख्यो अर थारो काम पाछो करबा लाग्या ।

आंसू पूंछतां-पूंछतां बीं री आंगळ्यां फाटबा लागी अर वां मांय सूं खून बेवा लाग्यो । होळै-होळै दबाव कम हूबा लाग्यो । अचेतन मन पाछो आयग्यो । मनै होस आबा लाग्यो । दूर बैठी नर्स कनै आयनै पूछ्यो—कियां ?

—ठीक हूं ।

मूंडै में थरमस सूं पाणी घालती बोली—पाणी थोड़ो घणो पीवो, नहीं तो ... सूख जावैला ।

● श्री सांवर दइया

ठरयोड़ो वगत

पांच बज्यां।

मदन घड़ी देखै। पालथ मरोड़ै। उबासी लेवै। उठण री सोचै। पण उठै कोनी। थोड़ी ताळ ताईं यियां ई पड़्यो रैवै। मन माठो करै। पण रैयीजै कोनी। उठै। उठ'र दातण करै। मकू सूं आ ई आदत है। पांच बजतां ई आंख खुल जावै। ऊनाळो हुवो का सीयाळो, कोई फरक कोनी पड़ै। वो एक लोटो पाणी पीवै। थोड़ी ताळ ताईं माचै माथै बैठ्यो रैवै। पछै निमटण नै जावै। पाछो आय'र न्हावै।

मदन घड़ी देखै—छव बजगी।

छोरो हाल ताईं दूध लेय'र आयो क्यूं कोनी? वो सोचै—काल तो इण वगत आयग्यो हो। पण आज कांई हुयो? आवतो ई हुवैला। आ सोच'र माचै माथै बैठ जावै। पूजा-पाठ री तो आदत कोनी। जे हुवती तो कीं वगत ई धन्धै में ई कटतो। वो सोचै—पण अबै मन ई कोनी करै। कांई पड़्यो है पूजा-पाठ में? पण ऐ तो संस्कार हुवै। पड़ै तो मकू सूं ई पड़ जावै। हुंह!

छोरो दूध देय जावै। वो उठै। स्टोव जगावै। चाय बणावै। छाणै। पीवै। टोपियो-गिलास धोवै। चाय-खांड रा डब्बा आळै में जागासर मेलै।

मदन घड़ी देखै—सात बजगी।

वो स्कूल जावै। घण्टी बाजै। छोरा कलासां में जावै। हाजरी हुवै। छोरा लैण सूं मैदान में आवै। प्रार्थना हुवै। समाचार बांचीजै। प्रवचन हुवै। जन गण

उठा'र कठै देख्यो है।

मदन घड़ी देखै—दो बजगी।

बो उठै। पाणी पीवै। पाणी पीवतां ई डकार आवै। बो पेट माथै हाथ फेरै। पेट बणग्यो काईं ? नईं। आ बात कोनी। फलको बत्तो खायो हो नीं ! रही हुवै उणा रा ई हुवै। ऊबाळै रो इत्तो स्वाद लागै ई घणो।

बो पाछो माचै माथै बैठ जावै। 'मैला आंचल' बांचण लागै। च्यारेक पाना बांचै। मन लागै, पण गैळ भी आवै। बो बांचण री कोशिश करै, पण गैळ आवै। पाछो एकानी मेल देवै। आंख्यां झपकावै। माचै माथै पसर जावै। गैळ आवै। नींद आवण लागै।

मदन घड़ी देखै—तीन बजगी।

बो उठै पेशाब कर'र आवै। पाणी पीवै। भळै डकार आवै। उबासी माथै आवै। आळस ममळै। चाय पीवणी चाइजै।

बो सोचै—हां, चाय पीयां ई आळस उडसी। बो स्टोव जगावै। चाय बणावै। छाणै। पीवै। टोपियो गिलास धोय'र धरै।

बो नै लागै कै अबै डील में की फुरती बापरी है। 'मैला आंचल' उठावै। जठै छोड्यो हो, बठै सूं आगै बांचण लागै।

मदन घड़ी देखै—चार बजगी।

—काईं कर रैया हो ? कोई हेलो पाड़ै। बो 'मैला आंचल' एकानी धरै। ऊभो हुवै। पूछै—कुण हुसी ?

बारै सूं आवाज आवै—ओ मो म्है हूं, मंगळचन्द !

—आवो ! आवो ! मदन बोलै। मंगळचन्द मांय आवै। माचै माथै बैठै।

—चाय बणाऊं ? मदन पूछै।

—नईं। अबार पी'र नीकळ्यो हूं। क्यूं फोड़ा देवो ?

—मैं ई थांरै आगै-आगै पी है अबार। मदन कैवै।

दूजा किरण लागै।

—... भर गे कालमिदो ! कों देखो हो गुणगुणावतो राजकुमार ... काम करे पर देवे । बो केंवे—पानो, चालो !

... लारे मोरवे ।

... ... तरस है । रेत मे चप्पल फट्-फट् करे । लारे धूड ई ...।

... पौन कानो देवे । इन्दिरा गांधी रो फोटू चेप्योड़ो है । हाथ ... । इन्दिरा पाको, देश बचावो । लै भई तनै लेय भाया ! धो पड्यो ... बचावे ... – जे बचा सके तूं ! भाव पाने कानो जावे । पण इणनै कांई ... किसी रोजीनै दारू लावे ? बजार जाय'र लांड थोड़ी लावे ?

... पांव कर बांवळयो कांटो चुभे । चीस-सी नीकळे । वठै ठैरे । कांटो काढ़े

—कांई मोचरा लागग्यो ? मंगळचन्द वीं नै गूंग में देख'र पूछे ।

मदन चुप रेवे । राजकुमार मुळके । केवे—लै भाई, नजीर तो आपां सूं ई पैली पूगग्यो ।

मंगळचन्द बिनै देखे । मजीर एक जणे साथै बैठ्यो 'भर-भर' रमतो निगे आवे ।

—ई आदमी रै सूय तावे आई है ।—मंगळचन्द केवे ।

वे तीनूं वठै जाय'र बैठ जावे । पीपळ री ठण्डी छीयां । और लोग ई भेळा हुवे । बातां – बातां – बातां । मम्मै-चच्चै री गाळयां । लागै हरेक बात मे दारू जरूरी है – साग में तेल-लूण दांई ।

मदन घड़ी देखे—... बजगी ।

—अबै चालो ! मदन केवे ।

—पण कुण पखोके है भाई ! राजकुमार केवे ।

—पाछे तावळ घटै ई बैठ्या हां । मंगळचन्द केवे ।

मदन सोचे—अबै टेरणो ई पड़सी । नईं तो मळै कोई मगजाणो सुणए पड़सी ।

मदन आंटी रा नाव सुण'र मन-ई-मन डरै ।

प्रोफेसर केवै--आ बरमा री ज्वालबिच आ ईज है । मैं बांडो मारणो [illegible]

राजकुमार केवै--हां, अकरम सूं बचो ई सोरावा । जणाई वीं दिन [illegible] रो टुकड़ो हाथ सूं छूटै हो । राजकुमार हासण लागै । दो दिन पैलो री बात बतावै--प्रोफेसर नै पेशाब री हाजत हुवै । बाम्बळ में दो पांवड़ा चाल'र [illegible] में [illegible] आवै । हाथ लेवै । भगाभग कूटण लागै । राजकुमार जागै । बेटरी [illegible] जावै । देखै तो मूळी रो टुकड़ो है । राजकुमार भळै हंसै ।

प्रोफेसर केवै--भाई, मावचेती राखणी जरूरी है । नाई ठा, जे पान [illegible] आवै तो ?

मदन नै भळै डर लागै

राजकुमार अर प्रोफेसर आपरै घर कानी जावै ।

मदन केवै--अच्छा, अबै मैं ई चालूं । १

मदन केवै--ठीक है, काल मिलसां !

मदन घड़ी देखै--नव बजगा ।

मांचै माथै सूतो है । पसवाड़ो फोरै । पेट भारी-सो लखावै । वो सोचै--इतरो मोटो माई, इणी कारण पाफरो आयो दीसै । भुजिया नई खावणा चाईजै हा । इतरो मोटो नई' खावणो चाईजै हो । पण दोनूं बगत माथाफोड़ी किण सूं हुवै ?

मदन नै माटो डकार आवै । वीं रो जी घबरावै । वो उठै । अलमारी खोलै । चूरण खावै । [illegible] आराम लखावै ।

मदन घड़ी देखै--दस बजगा ।

बाप रे बापरे ! मोत रे ! बोकाड़ो गूंजै ।

ओ काई हुयो ? मदन डरै । सामलै घर री बत्ती जगै । लोग भेळा हुवै । [illegible] भी आवै । देखै--आंगणै मे इसेक बरमा री ज्वाळी बैठी है । बोकाड़ा मारै है ।

[illegible] —एक बजगी ।

[illegible] । पाप मागै । भळै प्रांण मुनै । पसवाडो फोरै । सोचै— [illegible], वह निकळसां किदा ? जीमा कंयो हो है के जी.पो. [illegible] । पधार तो गया वैथै । जी.पो ई जी पो. । हाथ धोवणा [illegible], [illegible] ?

[illegible] —दो बजगी ।

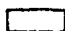
[illegible] । भळै मुनै । भळै पाप मागै । सुपनो पावै । लुगाई — [illegible] —[illegible] सपाटा—सनीमा—होटलां—भळै भायला [illegible] ।

[illegible] उठै । घडी देखी—तीन बजगी ।

बी नै विश्वास कोनी हुवै कै रात बीतगी है ।

बी [illegible] । [illegible] । जुबाणी खावै । एकर भळै घडी कानी [illegible] ।

[illegible] —च्यार बजगी !



—[illegible] गेट बीकानेर

••

[illegible] —धर्मो-गरीब री [illegible] रै प्रतीक रूप में मै [illegible] निर्माण करणो जो दरा स्वार्थी लोगां रै वा [illegible]

[illegible] कल्याण नै सूपी हो। यो झट बोल पड़यो [illegible] लोग फेर कैनै एकता में रैवण देवै [illegible] कुवारा छोड़ता रैवै, वा तो बिमारी [illegible]

[illegible] राजनीति कानी हुयगो।

—बिसाऊ (राजस्थान)

[illegible]

० श्री हरिप्रकाश सैन

आपोआप री हुंसियारी

[illegible] बम्बई जाय र्या हा। वै सोच्यो कै जोधपुर [illegible] है सो एक दिन ठै'र सगै-सगी सूं भी मिल लेवां। वै जोधपुर मे [illegible] सामान [illegible] कर मे राखो पर टिकट में एक दिन [illegible] लियो।

[illegible] भंवरजी नै देखर सगो-सगी घणा राजी हुया पर [illegible] समाचार पूछण लाग्या। भंवरजी राजी-खुशी रा समाचार

● श्री [illegible] तिवारी 'बन्धु'

आलसैटो

[illegible] : बी. एल. माली 'प्रशान्त' : भूमिका प्रकाशन, लक्ष्मण-गढ़ : मोल रु 10.00

श्री बी.एल. माली 'प्रशान्त' रो ओ राजस्थानी कहाणी-संग्रह लेखक रो [illegible] प्रकाशन । [illegible] दस कहाण्यां माय सूं छेकड़ली कहाणी रो सिरैनावों ही [illegible] ।

[illegible] कहाण्यां माय 'काजळ री हत्या', 'अंधारघुप्प', 'च्यारं कोस [illegible]', 'रावळा गेत', [illegible]' साव पोची अर बेतुकी कहाण्यां है । यां में लेखक री [illegible] मीट साफ [illegible] । श्रां कहाण्यां में न तो कोई समस्या ई [illegible] है अर न कोई दूजी काम री बात ही आई है । ऐ कहाण्यां पढ्यां [illegible] लेखक रै दिमाग में राजपूतानै गाळ्यां काढ़ण रो भूत सवार हुयोड़ो है । [illegible]' में सामाजिक समस्या रो जिकर तो करीज्यो पण छेकड़ जातां पोल [illegible] । 'रावळा गेत' में भी [illegible] विचाई वाळी समस्या उठाय'र [illegible] बात नै [illegible] दी ।

'[illegible]', [illegible]', अर '[illegible] हाथ' कहाण्यां में लेखक री मीट कीं [illegible] । यां कहाण्यां में लेखक समस्यावां रो निभाव करणनै [illegible] [illegible] निभाव कीं हुयो नी । ऐ कहाण्यां पांचों में चलणवार मानी [illegible] '[illegible]' में [illegible] पावरै पतिनै [illegible] वेविका सूं [illegible] प्रळची

थारै ना'नै टाबरियां नै चोखी शिक्षा दिराय'र

देस रा सुनागद नागरिक बणावणा चावो तो वां नै आजोपाज

नुवै सैर गाणी रै न्हारै (बीकानेर) पधार नै

श्री विश्वकर्मा विद्या विहार

के सग वावृन्ता रै मांग रामदेवजी रै मिंदर (बीकानेर) में

श्री विश्वकर्मा विद्या निकेतन

में भरती करावो !

प्रशिक्षित नै योग्य अध्यापकां द्वारा शिक्षण !

शिशु सूं हा अंग्रेजी पढाईजै !

राजस्थानी रा टाळवां कहाणी-संग्रह

उजळा आंतरा : मीठा सांस	–मूलचन्द 'प्राणेश'
नागदो	–भंवरलाल 'भ्रमर'
अमूझो कद तांई	–भंवरलाल 'भ्रमर'
अमवाड़े-समवाड़े	–सांवर दइया
धोर्ये नै आंग्या	–अन्नाराम 'सुदामा'
किलो-किलो कटको	–बी. एल. माली 'अशान्त'

म्हारै समाज में व भूत प्रेत डाकण स्याणी, झाड़ा-झपटा, टूणा-टोटका, पंडित-पुरोहितां अर अंधविश्वासां पर सामाजिक कुरीतियां सूं न्यारा-निरवाळा राखणा चावो नै विज्ञान-पुरुष पर मेहनत रो पाठ पढा'र सुख रै पगां माथै खड़ा देखणा चावो तो आज री नुवैं जूनबोध अर शनिणाम चितरण माथै आधारित

भंवरलाल 'भ्रमर'

रा लिखोड़ो राजस्थानी रा पैलो बाल-उपन्यास

भोर रा पगलिया

मंगाय'र पढाय नै देखो।

बजरंग प्रकाशन, जस्सोलाई, बीकानेर

[illegible], बीकानेर

गजल/सत्येन जोशी

फेर यूं टरका रह्या हौ, आपरी मरजी
ठोकरां ठरका रह्या हौ, आपरी मरजी

नैण झुर-झुर पावसैला, उमर भर
छोड़नै यूं जा रह्या हौ, आपरी मरजी

जेज कुण करतौ, हुकम तौ देवता
सेण वण छिटका रह्या हौ, आपरी मरजी

रैण बिछवै री अजर, ओछी उमर
अधर में लटका रह्या हौ, आपरी मरजी

रूसणौ है, मोद है, के मसखरी
भरम दे भटका रह्या हौ, आपरी मरजी

धर दियौ है काळजौ ओसीस नै
काळजौ कढवा रह्या हौ, आपरी मरजी

गीत/सलीम शेख़

हिवड़ै में है आस मिलण री साजन कद आवौला ?
म्हूं नाचूं पायल री रुण-झुण साजन कद आवौला ?

काजळिया नैणां में राता अंगारां ज्यूं दहकै,
कळियां ईं जोबण खिलगी मन-उपवन में महकै,
भंवरा वण कर म्हारा तन पर थें कद भिरणावौला ?
हिवड़ै में है आस मिलण री साजन कद आवौला ?

नींदड़ली नैणां सूं आगी नैड़ी कोनीं आवै,
आ मधु-रुत अर रात चांनणी मन्नै कोनीं भावै,
जुलम कठै कंवळी काया पै साजन कर पावौला !
हिवड़ै में है आस मिलण री साजन कद आवौला ?

ओळूं आवै निस-दिन थांरी, थूं के जुलमी जांणै,
इव तौ आजा ठार तिरस जा हिवड़ौ इव नीं मांनै,
मनसावां री सेजां माथै बैठी थें देखौला !
हिवड़ै में है आस मिलण री साजन कद आवौला ?

धमचक मचावै/आं गरीबां नैं औ सतावता
अर वै भूखै पेट सो जावै कुरळावता
जम री दाढ़ा में कुण जावै
लागै तीखा पंजा री मार
चगत नै जकार
आं री हुयग्यी औ वौपार

आ वात आज इतियास जतावै
सूंधा री आंख्यां काढी जावै
व्यवस्था रै नांव आंरौ/छळ-छित्तर रौ वौपार...
सिझ्या लाली भळकावै वांरै खून री
लागै वणजी सांझ-सवार भूख दो जूणरी

औ नखां वायरा पंखेरू
कद भैळा व्हैला ?
इण आभै री अनीति रै खिलाफ
देखां कद तांईं
चालैला, औ रगत रौ वौपार !!

मिनी कवितावां

कल्ह

नितरौ मुड़दौ
नितरी राड़
अेक वळै
दूजौ तैयार !

नौकरी

कदर
कुरसी री
जद तांईं
वैठा
जिण दिन छूटी
दीठ अपूठी !

मजूर

करै दैनगी
पूरै पेट
मजूर
कद वण्या
कुबेर !

● खुशालनाथ 'धीर'

लघुकथा

सुतंत्रता

● विक्रम सोनी

गाडी हकण लागगी ही। डब्बै में जबरदस्त भीड़-भाड़ रै होवतां थकां ई आठ-दस लोग फेरू घुसग्या। किणीं रै हाथां में फाइलां, बस्ता, किताबां नै किणीं रै हाथां में टिपण हा। ··· सिंझ्या रा अै ई थाका-मांदा चुपचाप वैठ्या-खड्या इणी गाडी सूं बावड़सी-सगळा। म्हारै अर इण छोरी री भांत जकौ के म्हारै अड़ीअड़ वेठी ही।

जिका बठै वैठा हा। उणां नै लारै सूं आवण वाळां री बोलणी, उठणी, हंसणी अर उण छोरी नै देखणौ कत्तई आछौ कोनीं लागै हौ। अर लारै सूं आया लोग वै हा के, घर सूं दफ्तर, प्रेमिका सूं साहब, करम सूं धरम, अधरम सूं राजनीति अर पेट सूं फिलम तांई री वातूणी चरचांवां करता जा रैया हा। वा, वां जुवानां सूं घणी परेसान हुयगी। वै सगळा मूंडै आयी फूहड़ बातां करै हा।

वा सरम रै मारै माथौ नीची कर'र वैठगी, पण कीं लोग उणनै देसी 'गवूं' रै रंगवाळी तौ कीं बासमती 'चावळ' री सुगंध वाळी छोकरी बतावै हा। ·· ···उण सांवळी अर मोटीसी मनमोवणी सूरत सूं म्हैं पूछ वैठ्यौ, 'थारै सागै कोई कोनीं ?'—'म्हारौ मतळब थारौ भाई, वाप काकौ - वडेरौ ?

"सगळा ई मरखपग्या अर अब अै लोग ·· ।"

"अठै ई रैवै है-थूं ?"

"हां कदै-कदास अठीनै-उठीनै ई जावूं परी।"

म्हैं उण नै रूळेट छोरी समझ'र चुप हुयग्यौ। टेसण आंवण वाळौ हो। म्हैं उठणवाळौ हौ के वा म्हनै अेक पुरज्यौ संभळाय कीं बोली, पण म्हैं सगळी निजरां रै हाकाहूक रै बीचै कीं नीं सुण सक्यौ। मुट्ठी में पुरज्यै नै दबायौ म्हैं दरूजै कांनी हालतौग्यौ अर लारै सूं सुण्यौ—के कीं जूवांन आज री दिन सारथक बणावण वास्तै उणनै भोगण री सोच मेल्या हा। टेसण आवतांई म्हैं उतरग्यौ। चारेक पावंडा आगै भरिया; परची खोल'र उण रा सळ ठीक करतौ उणनै पढण लाग्यौ - लिख्यौ हौ, "म्हनै थे बचाय लेवौ म्हैं पन्द्रै अगस्त उगणीसौ सैंताळीस री जलमी अेक जांणी-मांणी सुतंत्रता नांव री मोट्यार छोरी हूं।" म्हैं अेकदम पाछौ मुड़ियौ।

'ओऽऽ ! कुण फालतू रै लफड़ै में पड़ै ? अर म्हैं घड़ी भाळतौ-भाळतौ गेट कांनी व्हीर हुयग्यौ।

—उल्थौ : मदन रावळ मृदुल

भावनावां उकेरण वाळी नारा देय सकै जकौ कांम साहितकार रौ नीं, नेता रौ व्है श्रौ संग्रै श्रैड़ा नारां सूं भरियौ-पड़ियौ है। कीं उदाहरण देयनै म्हारी बात साफ करूं-'चेतना रौ क्रियात्म रूप ही क्रान्ति है' (पेज १२) 'वाद इन्सानियत रा श्राप-श्राप रै तरीकै सूं सोच्योड़ा विचारयोड़ा श्ररथ है श्रधूरा, इण वास्तै ही श्रै श्रादमी रै साथै पूरा नीं उतरै।" (पेज ११) "इन्सानियत चाय री केतळी में उकळ रैयी है श्रर देस भगती श्रांच में बळ रैयी है।" (पेज ४३) "क्रान्ति दरद रौ उफणतौ दरियाव है।"(पेज १९) "रात सूरज री थकांण है श्रर दिवलै री ताकत री सरूश्रात !"(पेज ९७)

जे लेखक श्रां नारां नै ई समभावण सारू व्यख्यायित कर देवतौ तौ स्यात वै निवन्ध व्हेय जावता, म्हारौ मानणौ तौ श्रौ है क' निवन्ध में लेखक श्रापरा विचारां नै साम्ही राखै भावनावां नै नीं, भावना श्रर विचार रौ फरक पद्य श्रर गद्य रौ फरक है। भावनावां नै सैंरूप उतारणौ भूंडी बात कोनीं, पण तद वा कविता व्है सकै या गद्य री श्रेक विधा। कथा-साहित में ई भावनावां री प्रस्तुति देखण में मिलै, पण निवन्ध तौ कथेतर साहित है। 'माटी सूं मजाक' भावनावां सूं भरियोड़ी है, पूरी पोथी पढ़िया श्रेक बात साफ लागै क' लेखक रै मन मांय रीस है। इण समाज श्रर राज रै प्रति, पण साहित रीस काढण री सफाखांनौ कोनीं है। रचनाकार रौ सम्वन्ध तौ रचनात्मकता सूं व्है, विध्वंसात्मकता सूं नीं, श्रर भावनावां रचनात्मक कांम कम करवावै।

रचना रौ धरम सीख देवणौ नीं है, उण सूं जे किणीं नै सीख मिळती व्है तौ वा दूजी बात है। श्रा बात सही है के रचना रचनाकार रै श्रहं ने संतोख देवै, पण इण रौ श्ररथ श्रौ नीं है क' श्रापरै श्रहं नै संतुष्ट करण सारू वौ सीख देवण री मुद्रा वणायलै। सीख देवणौ मास्टर, नेता या धरम गुरु नै छाजै, लेखक नै नीं। पण इण पौथी में लेखक श्रापरी सीख देवण री मुद्रा श्रष्ट पौर वणायोड़ी राखै।

"म्हैं केवूं थे श्रमीर नहीं, श्रादमी वणौ, कुमाणस नहीं माणस वणौ, मिनख वणौ थे, दुस्मण नहीं भाई वणौ, श्रो मद रा मतवाळौ ! ! थे चेतौ नीं श्रो मद थांनै मार देसी ...... !"(पेज ३५)

"मिनख जाग रैयौ है तूं चेत, म्हैं श्रलार्म कर रैयौ हूं-चेत ! म्हैं वार-वार में जगावण नै श्रावूंला तूं चेत ! सोच में मत ना पड़, चेत ! श्रा व्यवस्था तेरी रिच्छा नीं कर सकैली, क्यूं कै व्यवस्था तौ खुद वदळै,

"वीजी भासा-भासी भी राजस्थांनी में रुचि लेवै, वास्तै इण पौथी रै तत्वां नै हिन्दी अर अंग्रेजी में साथै ही प्रकासित करीज्या है" (सागी कलम)

'कलम रा सिकारी' पाठ में सांच अर झूठ नै स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग कर लेखक कांई करणी चावै श्रा वौ ई जांणै, लेखक नै श्रा बात नीं भूलणी चाइजै क' उणरी रचनाकर्म सबदां रै बूतै टिकियोड़ौ है। जद वौ खुद सबदां री गळत प्रयोग करै तौ अखरै। म्हैं तौ लेखक सूं आई उम्मीद कर सकूं क' भविस में वौ कीं रचनावां पाठकां नै देवैला।

● अर्जुनदेव चारण

माटी सूं मजाक (निबंध संग्रै) लेखक : बी०अेल० माळी 'अशांत'
मोल : वीस रिपिया, प्रकासक : भूमिका प्रकासण, लक्षमणगढ़, सीकर

सांस्कृतिक राजस्थांन : रीत-पांत री ओळखांण रै बधापै रौ जतन

आजादी रै पछै राजस्थांनी रीत-पांत री चोखाइयां चावी करण रा कीं खास कळाप नीं हुया। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन कलकत्ता नै धिन। गरबजोग है क' सईकड़ां कोसां बैठा राजस्थांनी राजस्थांन रै रीत-पांत रै बधापै सारू जतनां में लग्गू लागौड़ा है। उडीक राखूं क' इण सूं घर में बैठा राजस्थांनियां री ऊंग उडेला। मल्ला भाई ठाकर चाकर जेड़ी कीं वातां ने ले'अर धोवां-धोवां अेड़ी धूड़ उडावणी सरु करी क' आप राजस्थांन री छिब इज मिंगसी दीसण ढूकगी।

राजस्थांनी रीत-पांत रा घणा चावा दाठीक हेलाळू रतन साह री निगैदास्ती में त्यार हुयोड़ी पौथी 'सांस्कृतिक राजस्थान' रै च्यार पाठां में पेलड़ौ, राजस्थांनी भासा अर साहित इणी'ज नांव सूं अेक पूरी पौथी रा लिखार डा० हीरालाल माहेस्वरी रै लिख्योड़ौ। डा० माहेस्वरी रै खंवै हिस्ट्री ऑफ राजस्थांनी लिटरेचर जांभोजी अर विस्णोई सम्प्रदाय जेड़ी नांमी पौथियां अर सीतरांमजी लाळस रै सबद कोस री भूमिका लिखण रौ जस। पण सांस्कृतिक राजस्थांन में माहेस्वरी जी रौ लेख पढ़िया सूं लखावै

रेवी भलैई मरु खेतर रै मभ रेवणवाळां मोथां रै अंतस मंडियोड़ा भावां नै कद ओळखै अर इण सूं उणां रौ तल्लौ-वल्लौ ई कांई। विलायती लिखारा तौ आपरा पग जमावण सारू खिप्पत करी अर राजस्थांनी वासी नै थथोपा देवण, बिलमांवण अर आपसरी में भेजका भिड़ावण जेड़ा मुद्दा सूं कित्तीक वातां घड़ी भांगी। सो नीस तौ राजस्थांनी रीत-पांत नै मूळ सूं समभण जोग जमारौ अर ठरकौ उणां रौ ही अर नीं ही राजस्थांनी रग-रग नै सवाळ-पंपोलण री खरी मंसा। डा० रांमनाथ इणीं'ज गन री वातां लिखी है अर राजस्थांनी मिदरां रौ घणौ सवावणौ भावण वखांण करियौ है।

'सांस्कृतिक राजस्थांन' रै चौथै लेख राजस्थांनी चित्रकला रा लिखारा रांमवल्लभ सोमाणी ई इतियास रा जांणकार। चित्रकळा रा पारखियां रै हवाला सूं टंच इण लेख में अेक वात खटकण जोगी। मेवाड़, बूंदी, वीकानेर, मारवाड़, किसनगढ़ अर कोटा इत्यादि री चितरांम कळा रै वखांण में सोमाणीजी किणी खास राज क' उण रै वेटे रै समै री चितरांम कळा में खासौ फरक वताय दियौ। सांचांणी तौ चितरांम कळा री गत घसक अर जमारौ वदळण में जुग लागै।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मैलन नै घणा रंग क' राजथांनी संस्कृति री चोखायां चावी करण रौ घणौ जोईजतौ कळाप करियौ। उडीक राखां क' सांस्कृतिक राजस्थांन रौ इतियास, लोककळा, नृत्यकळा, इत्याद सूं जुड़ियौ थेकौ अंक वेगौ ई निकळसी अर इण अंक सूं अेक मोटी खोगाळ भरीजसी।

● **जहूरखां मेहर**

सांस्कृतिक राजस्थांन : प्रकासण योजणा - संयोजक श्री रतन साह
मोल : इक्कीस रिपिया प्रकासक : अ० भा० मारवाड़ी सम्मैलन, १५२-वी महात्मागांधी रोड़ कलकत्ता-७

संस्था समचार

जोधपुर/ लारलै दिनां कमलकला मंदिर कांनी सूं जयनारायण व्यास स्म्रति भवन रै रंगमंच माथै दलपत परिहार रै निरदेसण में डॉ० मोहम्मद हसन रै लिख्योड़ै नाटक 'जहाक' रौ मंचण होयौ । इणमें हिस्सौ लेवणवाळा कलाकारां में रमेस पुरोहित, सब्वीर हुसैन, नवीन पंछी, स्याम पंवार, वरकतुल्लाह खांन हा ज्यां रौ अभिनै सरावण जोग हौ । आं रै अलावा हनुवंत-सुराणा, मदन बोराणा, राजकुमार पुरोहित, असोक वैस्णव, अेस. कुमार भाटी इत्याद कलाकार ई हिस्सौ लियौ । संगीत पगस निहालचंद सरमा अर मंच री सजावट रौ कांम रमेस बोराणा रौ सरावण जोग हौ ।

जोधपुर/ लारलै दिनां साहितिक संस्था 'चरचा' कांनी सूं सूचना केन्द्र में संजीव री कहांणी 'ट्रैफिक जाम' रौ मंचण अेक नुंवै प्रयोग रै साथै होयौ । हिस्सा लेवणिया कलाकारां में रमेस पुरोहित, दौलतसिंघ चौहाण, मदन बोराणा, स्याम पंवार, राजेस पंवार, पूरणदत्त जोसी, हनुवंत सुराणा, अेस. कुमार भाटी, राजूपुरोहित अर यसपाल सरमा इत्याद हा । निरदेसण दलपत परिहार करियौ ।

—सैयद मनवर अली

जोधपुर/ राजस्थांन युवा साहितकार परिसद कांनी सूं 'राजर्सि पुरसोतम-दास टंडन सताब्दी समारोह' री पैली कड़ी में राजकीय महात्मा गांधी उ. मा. वि. रै हालमें कवी सम्मैलण सागर विस्वविद्यालै रा रीडर डॉ. लक्ष्मी नारायण दूवै री अध्यक्षता अर नेमीचंद जैन भावुक री खास मिजमांनी में होयौ । हिंदी अर राजस्थांनी में होया इण कवी सम्मैलण में लगौलग तीनूं पीढियां रा तीस नेड़ा कवी काव्य पाठ कर्‌यौ जिणमें सरवश्री डॉ. सक्तिदांन कविया, वी.आर. प्रजापति, हवीब कैफी, अरजुनदेव चारण, मीठेस निरमोही, आईदांन-सिंघ भाटी, सुसील पुरोहित, हितेस व्यास, क्रस्णा भटनागर, डॉ. इंदिरा अग्रवाळ, डॉ. कमल मोणोत, उसाराणी माहेस्वरी, सत्येन व्यास, सुसील व्यास, चन्द्रसेखर अरोड़ा, फारुक आफरीदी, विस्णुदत्त जोसी, तरुण भंभावाल, आदिल अख्तर, कांति बोड़ा, असोक दवे, दलपत परिहार, साधना छंगाणी, प्रभूप्रकास सोळंक, कमलकांत, वीणा सिंघवी इत्याद । संयोजण कर्‌यौ

स्वाधीनता दिवस के शुभ अवसर पर आपका हार्दिक स्वागत

कार्यालय कृषि उपज मण्डी, समिति, नागौर

जिला - नागौर (राजस्थान)

कृषि उपज मण्डी समिति नागौर क्षेत्रीय कृषकों के आर्थिक उत्थान के लिए कामना करती है तथा आव्हान करती है कि अपनी उपज का विक्रय मुख्य मण्डी प्रांगण में ही करें। अनाधिकृत खर्चों की कटौती से छुटकारा पाकर अपनी उपज का सही और उचित मूल्य प्राप्त कर आर्थिक शोषण से बचें।

इस नियन्त्रित मण्डी की विशेषताएँ :

खुली नीलामी, सही तौल, नकद भुगतान, न्यूनतम मण्डी खर्चे एवं आवश्यक सुविधायें।

मोहनलाल देवड़ा

सचिव

प्रशासक

पीपाड़ शहर को-आपरेटिव मार्केटिंग सोसायटी लि०,

पीपाड़ शहर, जिला - जोधपुर

स्वाधीनता दिवस पर आपका हार्दिक स्वागत करते हैं
हमारी मुख्य सेवाएँ—

१- खाद व बीज का वितरण
२- कीटनाशक औषधियों का वितरण
३- दैनिक उपयोग की वस्तुओं का वितरण

कृपया एक बार सेवा का अवसर प्रदान करें।

करामत अली

प्रशासक

शिव शंकर टाडा

मुख्य व्यवस्थापक

संपादकी

आधुनिक राजस्थानी कविता री विकास जात्रा

आधुनिक राजस्थानी कविता सारू बगत-बगत माथै नूंवा-नूंवा मत अर वाद सांमी आवता रैया। केई आरोप ई लगाया गया के राजस्थानी कविता किणी ई वाद री सबळी ओळखांण नीं बण सकी। बस दो रूप ई उभरनै आया अेक तौ मंचीय कविता रौ अर दूजौ अमंचीय मुक्त छंद कविता रौ। यूं छायावाद सूं लेय'र प्रगतिवाद तक रा तगमा ई राजस्थानी कविता रै साथै बगत-बगत माथै लगाईजता रैया। इणरै लारै केई कारण रैया। अर वै कारण हिंदी कविता-जात्रा सूं न्यारा है। इण वास्तै राजस्थानी कविता रौ मूल्यांकन हिंदी कविता नै ध्यान में राख'र करणौ वाजब कोनीं। क्यूंकै जिण हालातां सूं हिन्दी कविता गुजरी वां सूं न्यारी परिस्थितियां राजस्थानी कविता री रैयी। राजस्थानी कविता माथै अेकर सरसरी तौर सूं ई द्रिस्टी न्हाकां तौ केई महताऊ वातां सांमी आवै, जिकी के इचरज करै जैड़ी है।

इण में कठैई राजा-महाराजावां, जागीदारां क' सरकार री बडाई कोनी । आज बडाई रा बंधन तूटग्या है अर झुकाव व्यवस्था अर समाज सूं सीधी जुड़ग्यौ है इणी साथै काव्य-जात्रा में आसा-निरासा रा मांन तूटण लाग्या बठैई कविता जीवण सूं जुड़ण लागी अर मुक्त छंद आगै वदण लागौ अबै धीमै-धीमै कल्पनावां में गमण अर पलकां में रमण रौ लाळच आपौ-आप बंद हुयग्यौ । इणी प्रभावण सूं बदळता परिवेस में समाज अर व्यवस्था री जबरदस्त लड़ाई सांमी आय रैयी है । जिणमें जन-जन री पीड़ है, इन्याव अर जोर जुलम सूं सीधी टक्कर है, उछाळौ है, अर आज आधुनिक लोक जीवण रै रग-रग में कविता रमती लागै । गांवां अर स्हैरां री संस्कृति रै राचणै रै सागै तीखौपण है, खारौ पण है तौ मुधरा आखरा में मांयली मीठी अर कोजीमार है । लिखारा इत्याव सूं बाथेड़ा कर रैया है । नौकर साही नै आडै हाथां लेय रैया है । इण में पाठक आपरै भावां, विचारां अर दुख दरदां नै परोटण लाग्या है, वां री मानसिक कुंठावां मिटण लागी है । अर लिखारां नै आज जन-जन रौ सहयोग ई मिळ रैयौ है ।

इण सिरजण में नूंवी उपमावां, नूंवां विसै नूंवै प्रयोगां रै सागै-सागै बदळतै नूंवै परिवेस री तड़प है अबै आ बात कोनीं क' इण सिरजण नै लेय'र जग हंसाई होवै । सगळाई सिरजक आप-आपरी सूझ-बूझ मुजब नूंवीं दीठ रै सागै सिरजण कर रैया है, जिणमें मजूरां, करसां, आदिवासी, अछूत इत्याद निचला वरगां रौ संघर्स है सागै ई आप-आपरै असवाड़ै-पसवाड़ै रै मांनखै अर समाज री हंसी-खुसी दुख-दरद, आसावां बदळती मानतावां बदळतै जुग रा सांगौपांग चितरांम जण-माणस में रम रैया है । अर लिखवारा आज आपरी भूमिका बरौबर निभायां जा रैया है ।

उस्ताद रै बाद रै कवियां रौ लेखौ-जोखौ करां तौ लागै क' लारलै ५० वरसां सूं इण राजस्थानी कविता रै सिरजण में केई कवि जूझ रैया है, अर आठवै दसक तांई पूग'र अेक आलो-

रपट

जोधपुर में प्रगतिसील लेखक संघ रौ आंचलिक जळसौ

अखिल भारतीय प्रगतिसीळ लेखक महासंघ री जोधपुर इकाई रौ आंच-ळिक जळसौ 20-21 नवम्बर, 82 नै जोधपुर में व्हियौ। जळसै में जोधपुर, जैसळमेर, पाली, बाड़मेर अर जाळौर जिलां रा लिखारा हिस्सौ लियौ।

जळसै रौ उद्घाटण देस रा चावा कहांणीकार अर लिखारा श्री विस्णु प्रभाकर करियौ। प्रभाकरजी कह्यौ क' जै साहित रौ कीं अरथ नीं होवतौ तौ राज करण वाळौ वरग उण सूं क्यूं डरै, सरकारां क्यूं चिंता करै अर साहित री पौथियां क्यूं जब्त व्है। वांरौ मांनणौ हौ क' साहित जुगां-जुगां तांई मांनखां नै प्रभावित करै, आंदोलित करै क्यूं क' मूळ में वौ सोसण व्यवस्था माथै करारी चोट करै है। वै कह्यौ क' फ्रांस, अमरीका अर रूस आद मुलकां में जकौ क्रांतियां व्ही उणरै लारै साहित रौ मोटौ हाथ रह्यौ है।

विस्णुजी साहित नै मां री संग्या देता थकां कह्यौ क' उणनै सगळां री चिंता है अर वौ सवांनै प्यार करै। साहितकार अंतस री पीड़ सूं लिखै अर साहित में दरद पैदा करै। अर जकौ साहित दरद नीं पैदा कर सकै वौ कदेई प्रभावी नीं व्है सकै। साहितकार यथार्थ में सचाई नै सोधै अर उणनै अरथ देवै है। हरेक मिनख, लेखक या साहितकार नीं व्है सकै। साहितकार मानसिकता माथै चोट करै, साहस सूं कांम लेवै अर केई खतरा झेलै।

आपरै अध्यक्षीय भासण में संघ रा प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री मरुधर मृदुल कह्यौ क' लेखकां नै चौखै साहित नै मिटाण वाळा छड़यंत्रां सूं लोवौ लेणौ पड़ैला। आज आ बुरी हालत है क' वढिया साहित री पौथियां नै लुकाय'र घटिया साहित वाजार में आपरी ठौड़ बणाय रैयौ है।

फागण

सत्येन जोसी

रैतां-रैतां व्हेग्या म्हा-पोस्ती
सैतां-सैतां भूल गया–
    घावां री कुळण
    जीवण रौ मरम
ठंडै बायरियै री सौरम में
    रमग्या सैं जीव--
माटी
भाटा
भाखर
लेवां हां बाफारा
    डागळियै छड़क-छड़क
    लुळ लुळ नै खेवां हां
    अगर-धूप
    धाप्यां रै
लोई रा पांणी कर
    पीवां हां बूंकां भर
    नैणां री जोतां में
    पोवां चितरांम अजूं
    भर-चर में भंवियोड़ा
    ठीकरियां जीतां हां, हारां हां ठीकरियां
    नारां सूं घटियोड़ी
    ओखद नै चाट-चाट
चावां हां, चवड़ा हां...
        चावां हां....
    गूंगा बण
        गाफल री सांग करां
    दूजां री गत जीवां
    दूजां री मौत मरां

भाड़ रा भोड़ूता
पड़ भागा
पड़तौ जा
सड़तौ जा
सुपनां ई चरतौ जा
सुळग-सुळग घुटतौ जा
नैचौ कर, नैचौ कर
खांध्यां रै जेन कठै
नैड़ौ समसाण जांण
भाग मती पाळौ थूं !

पिंडत रौ नेग हाल
देणौ है आंत काट,
घर नै तौ देणी हैं ढूंढेरी
ओपमा

खेतां नै लाटण रौ
परवाणौ लिखणौ है
बळद्यां री रास
हमैं उण खूंट बंधणी है
सांसांरी फारगती
बाड्यां में करणी है
हाल कठै मिरतू री मिजमांनी
करण जोग
देख हाल सूरज खुद मांदौ है

मांदौ पड़
रिब-रिब नै टसका कर,
बूस्या भर,
आळस नै फगत अेक
इतरी वींसायंत दै ।

अर आंख्यां जमा इण हाथ
कैसी चीज है जांणी ।

घणी ई मुस्किलां सूं
मैंणती हाथां म लण व्हेणी
सिनानां सौरमी आली जमीं री
कूख में पड़णी
किरण ज्यूं फूटणी
अर फूलणी
अर फैलतां जांणी

पकड़ पवन आंगळी
सुर-लैरी ताळ देय
लय में ढळ जांणी
तावड़ियै पुस्ट व्हेय
सिक-सिकनै पाकणी
टाबरिया छोड भूल
इणनै औलाद मान
अस्ट पौर इणरी अंवेर रात जांगणी ।
काट-कूट-झपट-छांण
चमक रंग देवणी लौ देख !
अठै इज इण जमीं माथै !

अठै इज इण जमीं माथै
अै भुगतै कैद
वौ काटै सजा
बंधक बण्योड़ी है
थै वै हाथ हौ
जे रोप दौ इण बीज नै थै आज.

कालै वा फसल व्हैला'क
थांरा काट दै सैं जाळ
औ है बीज, थै हौ हाथ
थांरी जो रैयौ है बाट, लौ आवौ
अठै इज, इण जमीं माथै ।

[illegible]
जगत रा सफा खोटा है !

7

पढ़ण नै हड़मांन चाळीसौ
सुणन नै भागौत
लिखण नै
रपट थांणै री
छपण नै
जागती-जोत !

8

ऊमर रै खेजड़ै
पर
सांसां रौ टंग्यौ है
रीतौ पाळसियौ
उडै तिसाया प्राण-पंखेरू !

9

चोटियौ नारेळ
बाजै है
चारयूं मेर
संसद सूं सड़क तांई
भाजै है !

10

राधा
अहिल्या
द्रोपदी
अेकद सदी ? तन्नै !
बोल (म्हारी) गूंगी सदी ?

11

स्वागतम्
पधारौ सा !
अलविदा
पधारौ सा !!

अलेखूं कंवळा सपनां
अर वापरती काची नींद,
अर दूजी कांनी
आ कुजबरी परबसता री पीड़—
उणरी आंख्यां सांमी घूमै
टाबर री इंछावां
अर सालता सवालां सूं
जूंझै उणरौ मन,
सेवट धूजता पग
चाल पड़ै मत्तै ई उण गेलै
जिकौ अेक अंतहीण जंगळ में
गम जावै,
कानां में गूंजतौ रैवै
फगत टाबर रौ डूबतौ हाकौ—

—थे यूं अणमणा कठीनै जावौ जीसा !
दोफारां आपांनै सैर जावणौ है—
म्हनै आजादी री परेड में हिस्सौ लेवणौ है,
थे यूं अबोला कठीनै जावौ जीसा ?

मरजी रा मालक

आ मानी के डील आपरौ है
आपरौ डेरौ है
इलकै रा हाकम आप—
आप मरजी रा मालक है !

आप चावै तौ भंवता फिरै
आभै री अवखायां में
कांठळ में मिळता भुरजा सूं
आंकस राखै,
मैणी देवता फिरै वगत रा बायरां नै
पांणी आडी पाळ बांध
निरभै सोवण रौ सांग रचावै !

जुगती सूं जोड़ै हाथ
हथाळचां मांय

—पण ओजूं लग लांवण बाकी है !
—औ डील आपरौ है
आपरौ डेरौ है
इलकै रा हाकम आप—
आप मरजी रा मालक है !

अणभव रौ सार

उणरी अेक छोटी-सी दुनियां है
कीं जरूरी बातां री
सजती सुळझ्योड़ी पिछांण—
ऊपर आभै में फगत तारा है
जिका सिंझ्या अंधारौ घिरियां ऊगै
व्है जावै अदीठ
—कुदरत री धारौ है !

आखै दिन राखां जिणरी आस
वै सपनां री घड़ियां में सांमी आ जावै
अर आंख रै उघड़ियां
दीसै वै ई खाली हाथ—
वौ ई अडोळौ सूनौ आंगणौ !

कैवत री मैमा है :
मिनख रौ पिरथी माथै जीवणौ
मालक री मरजी रौ परसाद—
देव री इंछा परबारै कांई कर लै आदमी ?
नीं उणनै बडबोली कैवत सूं इतराज
नीं खुद री मन-मरजी ई साजणी,
इंछा फगत इत्ती-सी है—
जिनगांणी सोरै-सांस जी लेवै
मिनखां में वणियोड़ी रैवै लाज—
घर-बैठां गंगाजी न्हावण व्है जावै !

अै च्यारूंमेर बीगड़ता आसार
वेकावू हालात सांमी
कांई कर लै आदमी ?
जलम सूं लेय'र ओजूं तांई

करसौ-अेक

— मीठेश निरमोही

गाडां में भर-भर
अमूंझता सुपनां
बणावै अदीठ हवेल्यां
फाटोड़ी अंगरखी रै पांण
छाती तांण
करतौ रै जेठ री लूवां सूं बाथेड़ौ
मूळ सूं डाळ पांवण री
लगायोड़ी आस
बारूं मास !

सोळै आनां साचौ वौ
सांची वै हवेल्यां
अर
पराई पीड़ सींवतौ
हवेल्यां री भरम
रिनरोही में भंवतै मिरगलै री भांत
जुग-जूण जीवण
पीवण पराई पीड़
ऊंचावतौ लांठाई रा लटका
सोधतौ छींया
लिखणी चावै नूंवै जुगां रौ इतियास

बिलमावै खुदनै
पलटतौ/बदळतौ आपरौ उणियारौ
बेकळ रेत/हरियल खेत
ऊंडां अबूझ धोरां
पैछाण्यां आंधी अर बथूळां
आपरै अधमरियै मिनखपणै नै

आज री नीं
नीं जाणै कितरै बरसां री
बतावै इतियासू इतियास
क्यूं नीं जांणै मांनखौ ?
क्यूं नीं जांणै मांनखौ ??

न्याव

गूंगौ-बोळौ
आंधौ बण
बदळग्यौ-
'थूं'
ठावौ/थारौ
मुलकां चावौ नांव
न्याव !
अर
अटकण लाग्यौ
'थूं'
थारै ई दरूजां
जाणै रिनरोही में दौड़तौ-
मिरगलौ किस्तूरी री दौड़ !

अकासी माळिया बणौ
चाल आपां अडांण बणां
माथै ईंटां-चूनै री भारौ
नीचै चींथीजी जूंण ढोवां
थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै बाथेड़ा करां !

थारै-म्हारै
दुखां सूं दूबळा दाता
पगोथियां सांटता चढै रांस
रांस सूं बांचै
थारै-म्हारै खातर
विधि-विधान
नांख
बातां रै ठंडै भोभर माथै
नांखदै धोबा-धोबा धूड़
थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै बाथेड़ा करां !!

म्हारी हेमांणी जूंण

म्हूं....कांईं कोरौ डूंगर
झालबोड़ौ ऊभौ
खेजड़ौ....जाळ.... क' आक
क' तळै चेंटीज्यौ सिणियौ,
तूंबै री बेल ?
म्हारौ उघाड़ौ
पळपळतौ हेमांणी काळजौ देखतांईं
सूरज री लाडेसर किरतां
उतरै करै रमझोळ....

अळगै
सूं देखै काच
कैवता जावै
वौ रैयौ पांणी रौ छळावौ....
पांणी कठै है अठै
चौखूंट पड़ियौ है

सहीद री व्यथा

— फारूक श्राफरीदी

च्यारूं मेर नावता-भागता-फिरता
मिनख-ई-मिनख
चौराया माथै ऊभी सहीद री मूरत
सोधै मानखां में मिनखपणौ
पण दीसै कोरी भागम-भाग
कोई रोटी सारू
कोई गोटी सारू
कोई बोटी सारू
मूरत री श्रातमा दौड़ै वांरे लारै

सहीद रौ मन रोवै श्रापौ-श्राप
कांई सोच'र सहीद व्हियौ ?
इण मूरत खातर ?
टावरां रै दांणां-पांणी खातर ?
श्रमर होवण ?
नीं ! नीं !
मुलक री मुळकाई खातर !
तौ पछै श्रा दुरगत ?
सहीद री मिरतू दुरगत खातर ई व्है कांई ?

म्हनै मुगत करौ
कुत्ता रै मूत सूं
कबूतर री बीटां सूं
म्हारी छाती माथै
रंग-रंगीली टौप्यां रा पोस्टर
चोर ज्यूं चौकीदार री रूखाली क्यूं
जुश्रारियां री रमभौल क्यूं

म्हारी कविता
कुदरत रै न्याव
अर कूड़ा मानखां रै इन्याव
दोनां सूं
दो-दो हाथ करणी चावै है

म्हारी कविता आज
सूरज रौ चांदणौ
अर रात रौ अंधारौ
दोनां रै बीच
अंतस रौ उजास सोधै है

मरुथळ री माटी

मरुथळ री माटी लू माथै ई
मज कर सकै
अर गुमेज कर सकै
मिनख रै मिनखपणै माथै
रगत रै मोल माथै
आबरै मरजाद माथै

आये साल काळ सूं जूझै
काळ सूं बत्तौ
काळ रा जंजाळ सूं जूझै
जूझै वांसूं
जका काळ रा हेताळू है
अर हेताळू है काळ रौ पइसौ

मरुथळ !
कैवै अठै पांणी कोनीं
म्हैं कैवूं कैवणियां में दीठ कोनीं
पांणी माटी में कोनीं, मोटचारां में है
कैवै अठै रेत है
रेत थांनै दीसै अै हेत रा समंदर है

देवता आया थावस
थांरी पीढियां नै

म्हारै पांण ई
करी हौ छैलायां थे
कराया पोखाळौ
म्हारै डील रौ
आज नटौ हौ
थांरै वास्तै म्हैं जूंभिया
म्हारै हाथां
थे मेंहदी नीं लगाई
मुळकता भेल्या वार
टालण सांरू विघन
थांरै बाळपणै रा

कूकिया हा बेढाळै
फेरतां पसवाड़ौ
भूल गिया
कोनीं घडीजिया अजै पूरा
बगत री धार
तपतौ सूरज
चढती आंधी
म्हैं भेली
ऊभा रह्या
उफणतौ मेह
उकळती जमीन
म्हैं ढाबी
ऊभा राह्य

नींवां भरीजी उण दिन ई
जांण लियौ हौ
अेक दिन टूटणौ है
म्हैं तौ ऊभा ई इण सांरू
क' बिखर जावां
खुद कोई कोनीं तूटै
बगत तौड़ दै
सगळां नै

थूं चंवै
बीजळी खींवै
थूं म्हारी उणियार
डागळै ऊभी
नूंवी घड़त रा सपनां लेय पसरगी
छात आंगणौ बणगी
म्हैं थारौ रूपाव
कांमणी
म्हनै ओळबा री दाभ मत दै ।

माखी

चासणी मांय पड़ी माखी
कळीजै
निकलण री आस
जूंभती जूंण
व्है जावै थिर
कड़ाई सांरू माखी
रेडियौ सांरू विग्यापन ।

बटाऊ

मारग नै ऊंचायां
कद तांई फिरी बटाऊ
देख
आपरा लोईभ्भांण पग
सोध जमीन
जमीन मारग ऊंचाय लै'ई
पीयजा आभौ
उतरजा गैरी घाटियां
गमजा ।

तसवीर

निरखौ
परखौ
ने ओळखौ-
किण री है आ तस्वीर

व्है सकै-
के अै नैण किणी बगत
मिरगली रा नैणां बरगा मोवणा
घणा अचपळा
इमरत रा प्याला हा
पण आज तौ-
दौ ठींडा है, माळा है
व्है सकै-
के औ हाथ किणी बगत
पोयण वरगां रूपाळा
मखमल जिसा मुलायम रैया व्है
पण आज तौ-
आंयठण है, छाळा है

व्है सकै-
के अै पग किणी बगत
मायड़ री गोदी
फूलां री सेजां हा
पण आज तौ-
उरभाणा है, पाळा है

व्है सकै-
के औ पेट किणी बगत
लाम्बी डकारां लेवतौ
धापियोड़ौ घणौ रैयौ व्है
पण आज तौ-
आळा में आळा हैं

तौ आवौ-
देखौ, निरखौ

इण गांव मांय

— चंद्रप्रकास देवल

जड़ाजूड़ आपाधापी रै इण
जमारा मांय
म्हारै गांव रौ संकरियौ ई
जांणण लागग्यौ
लरड़ी सूं लेय'र मिनख नै लौड़णौं
जद नीं देख्यौ उण बारणौ ई
इस्कूल रौ
कदै ई नीं सुण्यौ नांव किणी सास्तर रौ

इतौ परवारग्यौ है बगत
क' सुभट दिसै
न्यारा-न्यारा खेड़ां मांय बंटियोड़ौ
गांव रौ भूगोल
अर अेकौअेक भागळ मांय चालतौ
सिलसिलौ न्यारी-न्यारी जात रौ।

इण गुणाड़ी, उण फळसै
सगळा लोग, गौ री जात
चिपकियोड़ा बैठा है
वां री वां बातां सूं
मन व्है जित्ता फंफेड़ौ
खेचौ-तांणौ
हचकौ ई नीं खावै।

चोमासा में अणूंता सांगणां
चारा ज्यूं ऊगै
ये परजीवी, फगतजीवी
रसदजीवी, रगतजीवी

अर वायरा सागै
नाचण लागौ रूंख
कत्थक नाचती किणी लुगाई दाकळ ।

उणरी न्यारी मुद्रावां अरथावतां
निकळग्यौ म्हारी जीभ रौ अंस
म्हैं सगळी पोथ्यां अर
अेकोअेक मिनख रै मूंडै सूं
भेळी कर नकामी भासा
खूंजा ताळकै करयां पाछै
पगां री आंगळियां' र अंगूठा
जमीं में रोप

आभा नीचै हाथ पसार
जीवता अड़वा ज्यूं ऊभग्यौ,
अर पगां पींदै भाळवौ करयौ इण इंछा सूं क'
म्हारै ई जड़ां फूटै
पगां तांतां छूटै

वाटलौ

अडुक मडुक नैं
खाटी सा
घी आवैं ने साटी खा
पण
अवैतौ खाटी सा नांसू वांदा है
तौ घी क्यं हूं आवै
नै क्यं हूं साटै ?
संसार साटवा मअें स है
सब जे मल्यु साटी खाई जअें
पण
काले हॉजें
रामा भावा नौ सुरौ हूकौ
काल नौ वाटला ऊपर जम्यौ
धूरौ साटे
ने साटतै-साटतै भूख उगडी आवी
त' अेनौ कानौ कापी खाईग्यौ
ने रामौ भावौ
हूका नै कूटै ने सेठ संकर नै
काल नौ पगार व्याज-व्याज मअें
लईलेवा हारू-मन-मन अअें गारै दअें ।

वापड़ी सम्पा

रूड़ी ने रूपारी
हावू नौ बटकौ
वोलै त जाणें फूलॅ भरै
ने दांत काड़तु थकु मुडु
पण्णी नै जई वेरं गाम मअें
आवी साम्पा
त' वीजी बाइयॅ ना भाव ऊतयी
हेत्ता गाम मअें
हेत्तीअ वातॅ मअें
अेनी वा वाई

बाट

● बी. श्र

इण बिरख री छींयां ऊभौ
बेसबर व्हेतौ
म्हैं-थ्हारी बाट जोवूं हूं !
आंख्यां फाड़-फाड़
ठेट खितिज तांई दीठ पसारू
मन नै बिलमातौ-बिलमातौ
फेर उतावळौ व्हूं
बात कांई व्ही
थूं कठै ई गमग्यौ तौ नीं ?

इणी मारग भागतौ-भागतौ थूं
जोवण नै गयौ हौ
थ्हारा सगळा सपनां
जिका
थ्हांरी गांठड़ी रै तींडै सूं
फिसळता/निळकता
बिखरग्या हा
गांठ खाली व्हैती-व्हैती
ठेड आंख्यां रै आडी आयगी
अर थूं चमक्यौ-अचांण चक
ज्यूं नींद में टाबर चमकै
थ्हारी उतावळी आंगळयां
संभाळै गांठ नै घड़ी-घड़ी
ज्यूं-अेक मां
नींद सूं आचांण चक चमक ऊठता
आपरा टाबर नै
बाथां भेलती संभाळै
अर डरती-फरती पूछै

पण
हांफळियोड़ौ थूं
चेता-चूक व्हियोड़ौ म्हूं
थ्हनै धीजौ नीं हौ
अर थूं भाग्यौ गयौ पाछौ
जोवतौ, उतावळौ
इणी मारग रै असवाड़ै-पसवाड़
थ्हारा गमियोड़ा-सपनां
अबै खासी देर व्हेगी है
व्हेती जावै है
म्हारौ मन भी व्है उतावळौ !

इण बिरख री छींयां ऊभौ
बेसबर व्हेतौ म्हैं
थ्हारी बाट जावूं हूं
ठेट खितिज तांई दीठ पसारतौ
फेर उतावळौ व्हूं
वात कांई व्ही
थूं
कठैई गमग्यौ तौ नीं ?

कांई करूं ?

म्हैं कांई करूं ?
या तौ केजुअल छुट्टी लेयलूं
अर रजाई ओढ'र सोचूं -
क्यूं सड़क रै अेकांनी या फुटपाथ उपर
मरयोड़ौ पड़्यौ हौ तौ मिनख-
ठंड सूं ठरियोड़ौ ?
म्हैं कांई करूं ?
म्हारै बैंक रै
अंडर ग्राउंड' लाकर वाळा
'स्ट्रांग-रूम में जाय'र लुक जांऊ
अर सोचूं -
क्यूं व्हियौ आज

लेवूं मन ही मन रांम रौ नांव !
म्हैं कांई करूं ?
छितरावूं दो-दो हाथ रो सूळां रौ झुंड-
धूजतौ
पाछा भेळा करूं
आगै सिरकूं च्यारूं खूंट जोवतौ-
'सेळ' जिनावर दांई !
मन रौ सांचौ ग्यांन
कित्तौ बेईमांन ?
लारो नीं छोडै म्हारौ-
म्हैं कांई करूं ?

लाचारी

सुद्धि पत्र सी ठरकेल जिनगांणी
पावंडै-पावंडै माथै
अेक-न-अेक आखर छोडती जावै ।

सबदां रा टुट्योड़ा सांचा सूं
बळ'र गिरतौ अणुभव छटपटावै है
अर गुजरता वगत री गोद मांय
चिप'र सू जावै है–

आपणा कमरा ई अजनबी बण'र
बी सैं अणुभवां नै बारै काड देवै
जिणां नै रोजाना बदळण आळा रंग

खनै धुंआळी सारू किचरीज्या तिनका
मयस्सर नीं होय सकै
क्यूंकै सबदां रा सांप सैं दड़ा में है

जिका आपरै सरीर माथै
संबंधा री धार लगायोड़ा
घात मांय बैठा है–

हूं इतरौ समझदार कोनीं व्है सक्यौ
जो इण धरती री आबोहवा मांय
सोरी सांस लै सकूं

हूं तौ आखरां नै समेटतौ-समेटतौ थकग्यौ हूं
अर आ कमबख्त जिनगांणी है
जिकी आपरी आदतां सूं बाज कोनीं आवैं ।

किण देख्यौ है ?

नसां मांय भाजता तणाव रै रगत नै
किण देख्यौ है ?
रंगरळियां री फिलमी उजास सूं कदै तौ
घर चोबारा-चमकै
अर कदै–कदै अेक चिड़कली री आवाज सारू

कुण कैवै आजादी कोनीं ?

भंवर भादानी

कुण कैवै है
बोलण री/आजादी कोनीं ?
खुली छूट है/सहर रै फुटरापै
गजल री नाजुकता
अर
कविता री/कलात्मक अभिव्यक्ति माथै
भासण झाड़ण री ।

छूट है अथाग/भासा नै चाटण री
कविता खातर/चांदा मामा नै चंचेड़ण
अर
भासाई दंगा करावण री ।

छूट है अणमाय
बधतै कीड़ी नगरै नै
पगां सूं/चींथण री
धोळै कवुड़ै री/गावड़ मसोसण री
अर
सिकारी कुत्ता पाळण री ।

छूट है मोकळी
जूता चाटण री/फरांटै सूं दौड़ण री
हवा सूं बात्यां करण री
अर
माटी री मूरत्यां तोड़ण री ।

छूट है उणां नै/गूंगा उधेड़
धूप चाटण री
अर

पड़ूत्तर

वधतौ जावै है
आंतरौ-हररोज
सवाल अर पड़ूत्तर बिच्चै ।

हररोज चालै है भतूळिया
सवाळां रै धोबी पिंछाट सारू
उठै है च्यारूंमेर
काळी कळूट जांमण

खुलियोड़ी आंख्यां
बूरण खातर
चालै है तीर
डूंगरां रै गोरवां सूं
आंख्यां रा कोइया
वींधण सारू
चालै है
सबद-बेधी बांण
नूंवा सवालां रा
गरभ पटकण सारू
पण सेवट
सरू हूगी है
कवायद
उठण लागगी है
आंगळ्यां
काढण सारू
घांटा उळझ्योड़ा पड़ूत्तर ।

मछली रौ न्याव

मछली रौ न्याव
नेनी रौ
मोटी रै पेट में
पूग जावणौ है
म्हारा सागर देवता !
थूं तौ आ जांणै है

म्हारै अन्तस में

आईदानसिंघ भाटी

म्हारै अन्तस में
मेहक रैया है फूल
कैवता बातां सुगंध री
मन भांगै छंद री।
म्हारी आंख्यां सांमी नाच रैया है लोग
नाचण रा न्यारा-न्यारा तार
कांकड़ां अणपार।

फूल रौ मेहकणौ
मिनख रौ नाचणौ
दोन्यूं अेक सिरकौ ई व्है
अेक सिरकौ पसराव।

मिनख रै नाच में ल'य नीं
उणरा तार वेसुरा व्है जावै
अर वां बिखराव
काया में ऊंडौ उतर जावै
बींधतौ, ऊंडौ घणौ ऊंडौ
आदमी री मजबूरियां री
बिखरयोड़ी कड़ियां री
अणकथी कैवतौ दास्तां।

आंख्यां सूं अलेखूं बातां कर जावै
वौ पसराव
नापतौ आपौ समूळ
म्हारै अंतस में महेकता फूल
अर म्हैं अेकलौ।

खेतों में पाक्योड़ौ धांन
अर चिड़ियां रौ चौबारै चुग जांणौ
टाबर सारू राख्योड़ौ दूध

च्यारूं मेर बिखरयोड़ी निजता
उणरौ कुरळाटौ पूछै–
थनै ठा है ?
इतियास किणनै कैवै ?
थनै ठा है बातां कांईं व्है ?

अर मून लीन्होड़ा होठां कांनी जोय
वौ बरड़ावै-
ख्यातां वै ही' ज नीं जिकै
थारी बड़गड़ां री टापां में सुणीजी
इतियास रौ अरथ
सन्-संवत्-तोप गोळयां रौ कोरौ
गरजणौ व्है कांईं ?

प्लासी, वाटरलू, करबला, कुरूखेतर
यां री कांकड़ां में बांध्योड़ा थारा आखर
कठैई पीड़ रै उण पगोथ्यै चढ़िया
जठै नीं रंग भीनी रातां ही
नीं बड़गड़ां री बातां अर तोपां रा गरणाटा
अदीठ कांकड़ां में कैद वांरी जूंण
उणसूं कणै'ई तौ पूछ्यौ हुतौ
गांव, नांव, ठांव–
कणै ई तौ की व्हैती पिछांण
खुद री पांण ।

म्हांरै मेहकता फूलां रा मुखड़ा
नीचा व्हैग्या
नाटगी अंतै री सुवास
आंख्यां सांमी नाच रैया है लोग
नाचण रा न्यारा-न्यारा न्याव ।

हेलाळू

पग-पग जोवतौ थारी बाट
खांचता थारी लैण
जद म्हें आगौ, घणौ आगौ आयग्यौ
थे अळगा करल्या हाथ
रिन-रोही बीच में ।

अै म्हारै मन रा मोद
इण सड़कां री धमचक मांय
पगां नै राहां सूंप दै
आंगळियां सूं अेक'र आ'र बताय
खूंट थूं मिनखां जूंण री ।
अै म्हारा घण हेताळू हेज
अेक'र तौ देख'र जाय
लाल मजीठ ज्यूं-खुद री दीठ सूं ।

बता मा !
कुण री छाती मांय उतरी पछै
वीं री लपलपाती धार

कुण रै हाथां चढ़ी
बंधी मां ?
थूं/देस/काळ
अनै संस्क्रति रै सीमाणां
क्यूं हुयी मा ?
थूं जुद्ध रै दोनूं ई पखां रै साथै
आपरै जोत रूपां डील माथै
पहर-पहर'र न्यारा पैहरावा
अर क्यूं बिंधी मा !
दोनूं ई पखां
दोनूं ई पखां रै
बोल-बाणां ।

विचाळै तौ फकत
थूं ही मा !
फकत थूं !!
क्यूं नीं छुडवाई थूं
दोनूं ई पखां री दुधारो तलवार
मा !
जणां थूं आग बरसावती
फिरती ही दोनूं ई पखां रै
रणखेतर
सावचेत
तौ क्यूं नीं बुलाई थूं
दोनूं ई पखां रै हियै
नेह री निरमळ धार !

अेक सबद

सवद
जणां असमरथ हू जावै
अरथ देवण सूं

हिरदै री हूंस

— चैनसिंघ बेचैन

म्हैं
इण इतियासां रै भाटां माथै
जिण माथै पैला सूं ईं
भांत-भांत रा केई मांडणां
मंडियोड़ा है
मंडता रह्या है
फेरूं ईं मंडैला
हां, उणीं'ज माथै
म्हारौ अेक
नेनौ सोक मांडणौ
कोरणी चावूं हूं
आ इत्ती'ज
म्हारै हिरदै री हूंस।

पण
म्हनै दीखै है के
म्हैं पैला सूं ईं
रगत चूसतै बांणियै/समाज रै
गिरवी पड़ियौ हूं
म्हारै रग-रग में
इणरै करजै रौ पूरौ-पूरौ
हिसाब-किताब
अनाप-सनाप।

म्हनै
पैला इण हिसाब रै मांड़णां नै
धोवणा है/मिटावणा है
राजी-राजी/हंसता-हंसता

दे दियौ गियौ है
म्हनै लाग्यौ के
इमरत बोलियौ
हेताळू रळकता
चौफेर भरणां/अर
गायां-भैंस्यां/छाळियां रै
मिसरी, दाळ-दूध री ठौड़
मिळावट सूं मिगसौ व्हियौ
'कमरसियल' घोळ
गळै मांय/घाल दियौ है
वाळण वास्तै अतस
के प्रकृति रा पंछीड़ा नै
पांवण सारू
पांणी रै साथै
धीमै जेहर रौ जांवण
दे दियौ गियौ है।

नींवा नूंवी कांई पड़ै-
हिरदै कोजी वापरै/करड़ाई
वगत करदै बगनौ/उणां नै बतायदे
छींयां ढळतोड़ी
छिड़ जावै लड़ाई
मच जावै रापट-रौळ
अर आपाधापी।

मिनख-बापड़ौ
बड़बड़ातौ रैवै
जीवणौ तौ कठै पछै
मरणौ री ई
मूंगाई लखावै
अणसोच्यौ अळूभाड़ौ
पसरै अैड़ौ
रमती-रमभोळां करती
परवाई व्है जावै कैद
अर गाळियां रा/संकड़ीजता मूंडा
सूरज साथै

मांयली आंख

सांवर दइया

धूंवै अर भाप में डूब्या
छापौ छांणौ हा म्है
खाकी रंग जद खार खावै
गळी-गुवाड़
भागळपुर बण जावै !

उणी बगत
सळां भरी चामड़ी
अर धौळा केस बोल्या—
कूड़....कूड़...साव कूड़
आंख्यां ही कठै
जिकौ फोड़ी
अर जे फोड़ी ई हुवै
तौ इचरज कांई
जद आंधां नै आंधां करै आंधां

ठीक है
आंख ई देखै
आंख हुवणी चाइजै
पण
आंख तौ मांय चाइजै !

थे जांणौ हौ

थे म्हांनै
जक कोनीं लेवण दचौ
थे जांणौ हौ
जे म्है

वेलछी वळै वारूंमास
दिन हुवै का रात
रोजीना आ' ई बात

म्हैं कांई कैवूं
किणनै कैवूं
अवार-अवार
म्हारी आंख्यां सांमै
गळी में रमती ऊंदरी नै
झपट'र लेयगी चीलख
म्हारी मरदांनगी माथै मूतगी
उपर सूं !

सांची कैवूं
रोजीना देखूं म्हैं
रोजीना देखै सूरज
म्हारी नीं मानौ तौ
पूछलौ-
सूरज साखी है ! सूरज साखी है !!

लटकता हाथ-पग-घांटी अर धड़
च्यारूंमेर बिकतौ ताजौ मांस
के दीखै मिंदर, धरमगढ
निंवता हाथ, पग घांटी अर धड़
अठै भिखखां रै साथै
कसाई ई चढावै परसाद टकै रौ
राजी करै भगवान नै
अणचाइजतौ मिळै
फैरुं मांनता मांनै, बोलवा बोलै

हदां तूटी लाज री अठै
सिणगारी री सेजां रा मोल हुया
बिकता रैया हाथ, पग, घांटी अर धड़
मुधरी मुळकती रैयी रात
कंवळौ फूल कुमळावतौ रैयौ

आज, दीठ रै दायरै में आवै
घणकरी रम्मतां, कितराई खेल
अथाग मिनख
अर रूखाळा बीच घिरियोड़ौ
लाज छिपावतौ
तड़ांग नागौ मिनखपणौ ।

म्हांनीजता मिनख

वै/जिणां री खैर-खबर राखतां
हाडक्यां गाळी
न्याव री उम्मीदां ही उणां सूं
बरसूं-वरस ऊंचायां फिर्‌यौ
वांरी इज्जत रौ भार
वै इज भुगतावता फिरै
म्हारी मजबूरियां नै

धुड़गी वै भीतां
छत जिण रै ऊपर छवाई ही
दुख इण बात रौ उणां नै
के म्हारा पंख क्यूं खुलग्या

दीपावली रै
ओसर माथै
हियतणी सुभकामनावां

□

किराणा रा वौपारी

पटेल रूपाराम तुलछाराम सांगर
सरदार बाजार, बिलाड़ा
जिला-जोधपुर (राजस्थान),

फोन-घर : 39

राजस्थली

साहित्यिक [redacted]

जुलाई–सितम्बर, १९८२



सम्पादक

श्याम महर्षि



सौजन्य सम्पादक

चेतन स्वामी



व्यवस्था

राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार समिति

राजस्थानी विभाग, श्रीडूंगरगढ़



सम्पर्क

सम्पादक, राजस्थली, श्रीडूंगरगढ़



सहयोग

साल दौठ दस रुपिया



आवृति

तिमाही

भोळावण क्यूं ?

खोटाई (भ्रष्टाचार) नै आपरो इष्ट अर आदर्श मानणवाळो एक वरग इणरी बुनियाद इण भांत घालै कै समझदार हुंवता हुंवता. खोटाई एक समाजू जरूरतवाळो छियादार रुंख बण जावै. छियां देवण वाळै रुंख नै काट'र फेंक देवणो कोई समझदारी रो काम नीं. पण खोटाई रा बिरछ उगावण वाळा जद देख लेवै वै उणरै रुंखां मांय सूं अेक रुंख फगत थोड़ो सो वध'र ठूंठ हुयग्यो है. अर ओ इण उग्योड़ा हराकरस रुंखां रै विचावै उभो वांरो मान घटावै, तो वांनै उण ठूंठ नै काट फेंकणो भी घणो जरूरी लखावै.

बस आईज बात इण उपन्यास में सैंचनण हुयी है 'मदजी' शोषण सूं ऊबरण--ऊबारण री कोशिसां में खुद रै ई परवार सूं ठूंठ री भांत काट फैंक दिया जावै. पग--पग माथै खोटायां सूं रुवरू हुंवता हुंवता मदजी अेक अजीव तरै रै फ्रस्ट्रेशन सूं घिर जावै. अर जद भी वै इण नै खुलासो (अभिव्यक्त) करणो चावै तो वांनै लखावै कै वांरै चौफैर मिनखां रो अणबोल जगळ हैं जको वांरी बात सूणन नै समझावण नै त्यार नीं, चिगावण नै त्यार अर इण स्थिति नै देख'र वांरै डील में बांईटा उठण लाग जावै. वै आपरी बात किणनै सुणावै कुण है जको वांरी भोळावण नै साचै मन सूं अंवेरै अर खोटायां रै विरुद्ध अेक मुहिम बणै.

उद्देश्य परक लेखण री तमाम शरतां नै ओ छोटो उपन्यास संपूरणता रै सागै निभावै. राजस्थानी में प्रकाशित वीस रै अड़ै गड़ै उपन्यासां री गिणती सूं इण उपन्यास नै निरवाळो टाळ सकां.

मालचंद लेखण रै गेलै नूंवा है पण लेखण नै परोटण वाळी समझ किणी प्रौढ सूं कमती नीं. राजस्थानी नै इणां सूं घणी घणी आसावां.

□ चेतन स्वामी

मोलावरा

मदजी मनै एकला ई मिलग्या. वै खतावळा–सा स्कूल आळी सड़क माथै आय र'या हा. जियां कै धणाकरा लोग रागळी करण खात'र वांनै बतळावै. मैं ई बतळाय लिया. "कियां मदजी अबै रात नै ?"

"कुण भाया ?" वै नैड़ा आंवता आंख्यां पर हाथां रो छज्जो बणायो. रात रो टैम हो अर तावड़ो छोड'र कोई आकरो वीजळी रो च्यानणो ई नीं हो. पण मदजी री बात में तरक लगावण रा फोड़ा तो थाणो कचेड़ी आळा ई नीं देखै, हूं क्यों देखतो. कीं हूं ई नैड़ो सिरक्यो अर वांरी आंख्यां रै छज्जै रै हेठै सो आयग्यो. वै फेर बोल्या, "ओळख्यो कोयनी !"

"ओ तो मैं हूं, सज्जन" मैं म्हारो नांव बतायो.

"जैमल रो छोरो ?"

"हां......" मैं हुंकारो दियो,

अर मदजी म्हारै औरै ई नैड़ा आयग्या. "रात रा बेगो ई घरै जाया कर बेटा...२ तन्नै ठा कोयनीं खून खराबो हुयग्यो लाठ्यां चालगी तलवारां चालगी कोई भरोसो नीं है..." छेवटली बात में वै साव हवळा पड़ग्या अर आवाज में कांपणी लखावण लागगी...

"कठै, कणै ?" हूं चिमक'र पूछ्यो.

"कठै, कणै ! "वै पाछा ऊंचै स्वर में आया अर लखायो कै म्हारै ऊणजाण हुवणै पर वांनै रीस आयगी" "टेसण रै गेलै में...वै पाछा हवळै पड़ता बोल्या;

"कांय खातर ?"

मो विराजै हो. मैं साची केऊं, मैं सैंथरो वेथरो हुयग्यो, मदजी रो चैरो ई नीं वांरो अंगअंग खींचीज्योड़ो हो अर वै पेट रो सगळो जोर आपरै बळै . मेलगा राख्यो हो, चिनीक ताळ में ईवै पींपळियै रै गट्टै माथै चढ़ग्या. अेकर सीक चुप रैया, वांरी नाक खिच'र ऊंची चढ़गी ही. पींपळियो सड़क रै अेन विचाळै अर म्हारी दूकान रे सामीसाम है. हूं देख्यो. मदजी चुप रैय'र आपरो नाक और ई ऊंचो खींच'र गट्टै रै गोळ घेरियै पर खातो—सीक चक्कर काढ्यो अर अेन म्हारी सामी आय पाछा खड़ा हुयग्या, मैं देख्यो कै वांरी निजरां ठीक म्हारै ऊपर ठैरगी वै मुंहडो ऊंचो करयो अर बोल्या, "मरग्या...सब मरग्या...हींजड़ा हुयग्या कुत्ता कठै ई—रा ! औ थाणेदारियो पादं पाद'र थाणै री कुर्सी साड़ै... स्कूल में दारू वणै, बीनै कुण म्हारो बाप पकड़ै...?"

मदजी फेर चुप हुयग्या, सांप रै फण ज्यों आपरी नाड़ नै डावै जीवणै फोरी. मैं देख्यो, अबै केई जणा रै चैरां री मुळक उतरगी अर वै मदजी कानी अचुम्भै री निजर सूं देखण लागरया.

लारै सूं अेक टींगर गट्टै माथै चढ़ग्यो अर आर मदजी रै कुड़तै रो पल्लो खीच'र भागग्यो,

"जान सूं मार देसूं..खत्म कर देसूं...ठैरो थै (कोजी—कजोगी गाळयां)" कैय'र मदजी गट्टै सूं उतरग्या अर पाछा वियां ई लटका करता, गाळयां काढ़ता पग पटकता वईर हुयग्या.

वजार रो चेळको केई देर को मिट्यो नीं. लोग मुळकता मुळकता छैवट आपरै धंधै लागग्या, म्हासूं केई ताळ पान री डांडी ई नीं उठी, म्हारै ग्राहकां मायसूं अेक बोल्यो, "कांई हुयो भाया, औ मदजी रा खटका है,... वोल, इनै ठा है कै स्कूल में दारू वणै अर थाणै आळा सूत्या है..."

"इनै कियां ठा पड़ै ?" मैं पूछ्यो,

"गेलो है रै।" वो स्याणप सूं उतर दियो" टींगरां छेड़ दियो हुवैला अर गूंग में कोई माथै में आयगी है ..." वो केय'र निरवाळो हुयग्यो,

ई वात नै केई वरस वीतग्या, पण आजूं म्हारी समझ में को आई नीं कै टींगरां रै अेक गेले नै छेड़ देवण सूं स्कूल में दारू री भट्टी हुवणै रो

वै म्हारी बात पर दर ई गौर नीं करचो फैर पूछ्यो, 'तू सजन है, नीं ?

'हां··· अेक तो···'

'तो चाल म्हारै घरै···

हूं चिमक्यो, मदजी में आज आ नूंवी गूंग किसी वड़गी ? मन्नै घरै चालण रो केवणै रो कांई अरथ ? मदजी रो घर··· वो म्हासूं अछानो नीं हो. म्हासूं ई कांई, सैंग ई जाणै कै प्रभुदयाल स्कूल रै चिपतोड़ो, फूट'र ढमढ़ेर हुयोड़ो चारूं कानी सूं चौपट मदजी रो घर है. लोग केवै, भायां-भायां री पांती में मदजी रै ओ ई घर पांती आयो कोई सैकड़ां वरसां पैली वण्योड़ै ई घर री कित्ती ई कोरां खांडी हुंवता तो मैं आप ई देखी. मन्नै आ भी ठा है कै मदजी ई ढमढ़ेर में सावत ऊबरोड़ी अेकआधी छात नीचै आपरा गूदड़ा राखै अर सुर में जच्चै जणा नावा-धोई अर रोटी–पाणी पोवा–पोई ई करै. पण मन्नै आपरै इण घर में जकै रै कनकर निकलण सूं ई मांवा टावरां नै वरजै कै ऊपर पड़जावैला, मदजी इण ठंडी–अंधारी रात में कांई जिमावण नै नूंतै ? सागै ई म्हारै मन में आ ई आई कै आज मदजी कनै कोई वडो भेद है अर वै मन्नै वतावणो चावै. फैर भी मदजी रै घर नै याद करतां म्हारी हिम्मत हंकारो भरण री नीं पड़ी, 'मोड़ो घणो हुयग्यो, मां उडीकसी··· फैर कणाई चाल सूं···

'वा भाया, कोई वात नीं मां उडीकती ई हुवैला. बेगो जाव···'मदजी री बोली निसखारो न्हाखण ज्यूं हुयगी. म्हारो अेकर तो जीव करचो, फुर'र केय दूं कै, चालो ! पण वै मन्नै उडीक्या नीं अर पाछा ई अंधारै में वड़ग्या.

अर दिनूंगै मदजी पींपळियै पर पूगग्या. वांनै देखतै ई रातआळो वांरो नूंतो मन्नै चेतै आयग्यो. मन्नै लखायो, मदजी आज कीं उदास है. अर वै साची ई केई देर पींपळियै रै गट्टै नीचै टांगड़ा लटकायां वोला–वोला वैठ्या रैया. म्हारो जीव कीं अणमणो सो हुयग्यो पण चिनीक ताळ में ग्राहकां री सुणतां-सुणतां म्हारै चेतै सूं उतरग्याा मन्नै स्यात निगै ई कों रैयी नीं कै वै पींपळियै रै गट्टै पर वैठ्या है कै गया परा, तद ई तुळ माचगी. अबै मदजी में पींपळियै रो प्रेत उतरग्यो अर हांपणी सी चढ्योड़ा मदजी पींपळियै रै हेठे खड़ा–खड़ा वोलण लागग्या, 'झूठ, सफा झूठ··· अै धरमशालावां झूठ, अै औसधालय झूठ··· ओ धर्मभवन, झूठ··· हराम रो मूत नौकरां रो लोही पीवै, वांरी इज्जत सूं खेलै··· हां, ओ ई सेठ कानदान··· रात रा आपरी सतरै वरसां री नेपाली नौकराणी नै

'नहीं, ठीक हो. दो-चार पड़ जांवती तो की दिमाग ठिकाणै आंवतो' कतरन्यां रै धार करणआळो सिकलीगर बोल्यो. ओ पींपळियै री छांयां में ई आपरी चकरी लेय'र बैठै अर मदजी रै प्रेत रो सैंगा सूं घणो संताप इणनै ई हुवै. गट्टै रै फेरिया देवता मदजी रा रोळा में ओ आपरो काम छोड़'र छैड़ै ऊभ जावै छैवट मदजी पग पटकता बईर हुवै जणा ई ओ आपरै आसण माथै जाय'र बैठै.

'ई किराड़ री आ हिम्मत ? गांव रा गेला गूंगा लारै आपरा लठैत भेजै···ओ तो केशरोजी रो संको रैयग्यो, नींतर देख लेंवता···' जेवड़ा-पागांआळा ओमजी निरवाळा सिरकता बड़बड़ावै हा.

'अेक है, यार··· ओ मदियो लावै खबर पक्की है···' बूढ़ो सा प्रेमसुखजी बोल्या.

'पक्की हुवै कै कच्ची··· लोगां रै घरां में झांकणो कीरै सूं बरदाश्त हुवै··· थांसूं-मांसूं ई को हुवै नीं, साची केऊं···' प्रेमसुखजी री वात रो जोश सामलै रै रूखै पडुत्तर सूं ठंडो पड़ग्यो. वै दोनूं सागै-सागै म्हारी दूकान आयग्या. प्रेमसुखजी नै आखै दिन पान चरण री आदत.

बजार हवळै-हवळै सागी चाकै आवण लागग्यो.

× × ×

कोई दिन दसैक हुयग्या, हूं मदजी नै नीं देख्या. स्यात ई कोई वांनै याद करै हो. हां सिकलीगर निरांयती सूं चको घुमांवतो, चिणगारयां उछाळतो पकांयत आपरै देवतावां रो सुकर मनांवतो हुवैला. म्हारै जिको जुवान पर जणै-२ नै पूछण री आय-आय'र रैय जांवती. कांई ठा कांई संकोच हो. मदजी नै याद करनै में, वांरै बाबत पूछण में. ओ ई हुवैला कै वीं गेलै-गूंगै रै ठौड़-ठिकाणै रो पूछणो कोई ओपती बात नीं है. फैर जै वांरो पूछूं, तो गांव में दोय-चार और ई गेला-गूंगा है, वांरो मन्नै फिकर क्यूं नीं है ? जीव में आंवती अर दब जांवती.

छैवट मन्नै लखावण लागग्यो कै बाजार अबकै कित्ता ई दिन। सूं सूनो पड्यो है. मन्नै तरै-२ रा वैम ई आवण लागग्या कै सेठ कानदान जी कठैई धापड़ा मदजी नै पाधरा नीं करवाय दिया हुवै. कांई ठा. सेठां रा हाथ लाम्बा है··· वांरी बरसां री धाक अर इज्जत माथै भरै-बजार कादो उछाळणो किसी सेज बात है ?

नजीक पूगग्यो कांई ठा मन्नै कियां पतियारो हुयग्यो कै मदजी अवस मांयनै है. मैं बारणै री काट खायोड़ी कड़ी नै हवळै सीक बजायी सागै . मुंहडो नैड़ी कर'र हेलो ई पाड़्यो, "मदजी .. !"

दोय-तीन हेलां पछै मांय मूं माड़ी-दवी-सी आवाज आई. "कुण है, भाई !"

"मदजी, खोलो.... मैं सजन हूं.... मैं पैली सूं थोड़ो ऊंचो बोल'र कैयो.

अर जाणै कोई करंट सूं ई पूग्या हुवै. छिण में ई बारणो चळ्डको करचो अर मदजी आसरै रै अंधारै में आपरी थितू छिब री कोरां रै कारणै ओळखीजग्या.

अबै चोफेर अंधारो पसरग्यो. जाणै अकैसमचै ई मदजी रै घर री सुनैड़ दुगणी हुयगी.

"सजन बीरा !" मदजी बोल्या.

मनै ध्यावस बंधचो कै वै मन्नै ओळख तो लियो. इत्तै में ई वै फैर बोल्या, "आव बीरा, मांय आयज्या....!"

"पण मदजी..." मैं केयो.

"अंधारो है... अंधारै सूं डर लागै ?" मदजी कैय'र बारै आयग्या. "अेकर ठै'र मैं च्यानणो करूं."

मन्नै लखायो कै हूं कठै फसग्यो... मदजी नै जींवता जागता देखतां ई कांई ठा कियां म्हारै जीव में वांरै खातर ऊपज्योड़ी बेचैनी छांई-मांई हुयगी अर इण माहौल री अमूजणी घर करगी. सोच्यो कै ओ मदजी कांई आदमी है ? अबै पड़ै अबै पड़ै जिसै इण आसरै में निर्भै हुय'र कींकर बैठ्यो रेवै ! और ई केई प्रश्न उठै हा. इत्तै में ई कांई ठा कठै सूं अेक काळो पड़्योड़ो लालटेण लियां मदजी पाछा आयग्या. मैं फुर'र देखण लागग्यो, वै फुर्ती सूं लालटेण रो गोळो उतारचो अर आपरी धोती री लांग सूं वींनै मांय बारै सूं पूंछण लागग्या. फैर लालटेण नै कान नैड़ै लेय'र बजायनै तेल हुवणै नीं हुवणै रो पतियारो करयो. स्यात तेल हो, क्यूं कै वै भट ई दियासळाई काढ़ी अर घस'र वत्ती रै

आयो. छैवट में अेक मजबूती जीव में लायो अर चौखट सूं तीन-च्यार पांवडा अळगा ऊभा मदजी रै नेड़ै पूगग्यो. अर इरै सागै ई म्हारी नाक में अेक तीखी सी गिंद समायगी. आसरो खास वड़ो नीं, लालटेण रो चांदणो भेळो हुयनै जाणै कीं सैंजोर हुयग्यो. चोफैर तिरेड़ा चालयोड़ी--मेली वदरंग भींता... आंगणै रो कच्चे पक्कै रो कीं अन्दाज नीं लाग सकै...भींता रै हेठै हेठै झड़ेड़ै चूनै पलस्तर री ढिगल्यां उपर पुराणी फैशन री छात, पण सूळयोड़ी अर कठैई-कठैई धवूर ई निकळयोड़ा. पण सैंग सूं माड़ी ही वा गिंध, जकी रै वावत मैं झटपट अंदाज लगायो कै अवस मदजी रात-वेरात अठैई पेशाव करता हुवैला.

"वैठ" कई देर मन्नै आसरो निरखतां हुयगी जणां मदजी वोल्या अर अेक कानी छोटा-छोटा पागां री एक मांचली, जकी री वणाई झोळी हुयनै हेठी टिकगी ही अर जकी पर मेल री कोई लूंठी वाटी री शकल में अेक गूदड़ पड़यो हो, पड़ी ही, मन्नै वांवाळियो पकड़'र खींच लियो. मंचली री ईस पर हूं आखिर टिकग्यो. मदजी लालटेण आपरै पैली ठावै करयोड़ै कीलैं पर टांग दी अर आयनै म्हारै सामी वैठग्या.

"थांनै सी नीं लागै ?" पूछणै रै सागै सागै ई मन्नै चेतै आयो कै मदजी तो गेला गूंगा है अर मन्नै फैर एक छटपटाहट महसूस हुवण लागगी.

"तन्नै ठा है, आज रातनै परमी मास्टरनी कांई करसी ?" म्हारै पूछणै पर जाणै साव ध्यान नीं गयो हुवै. मदजी अचाणचक आपरी आवाज में कौतक भर'र मन्नै ओ सींग-पूंछ वायरो सवाल पूछ न्हाख्यो.

"परमी मास्टरनी ?" म्हारो चिमकणो स्वाभाविक हो.

"हां वा करसी आज आपरी सासू रो ओसर !" केयर मदजी आपरै आधी ढाढ़ी आळै गाल पर हाथ धरयो अर आंख्यां नचाय'र थिर हुयग्या. मन्नै सागै ई चेतै आयो कै तीन दिन पैली परमी वेंजी री सत्तर वरसां री सासू कुए में कूद'र आपरी जान देय दी. लोग तरै-तरै री वातां करै. वां मांय सूं अेक वात आ ई ही कै परमी आपरी सासू कनै सूं सगळो माल मत्तो तो जद ई मीठी वण'र तचकाय लियो हो. अवै डोकरी वीं तांई भार ही अर वा डोकरी रो काण-कायदो तो अळगो. वींनै टैमसर रोटी-टुकड़ो ई नीं घालती...केवै, मरी जकै दिन दिनूंगे डोकरी पर स्कूल जांवता परमी वेंजी हाथ ई उठायो अर डोकरी रो वेटो ई आपरी लुगाई नै सै दीवी. दोपारै वेटो-वहू वारै गयोड़ा हा

अेक छिण मन्नै लखायो कै मदजी साव कूड़ा बोलै. मैं वांरै सामीं देख्यो. वांरी आंख्यां में ओजूं ई उबाळ हो, डील पर पसेवो हो अर चेरै री विकराळता तर-तर वढ़ती लखावै ही. कांई ठा कांई हुयो कै म्हांरी अेक छिण सारू मदजी री बातां नै वांरी गेल समभ्रण री श्रद्धा घोरै पर मंडोड़ै आखरां दांई मिटगी. मदजी, मन्नै लाग्यो, अबै अवस भाटो उठावण सारू हेठा लुळैला अर सदीव री भांत पग पटकता, जाणै अबार जाय'र आपरै वखाणोड़ै कुन्याव नै मटियामेट कर देसी, धूड़ उडांवता बईर हुय जावैला. पण अेड़ो नीं हुयो. छेवट में मदजी दांतां रा कड़ीका बोलाया अर इत्ता ई बोल्या, 'आंतड़चां आगलै पहियै सूं चिपगी पण नहीं आ पुलिस आपरै हाथां सूं लेजाय'र लारलै पहियै रै खून चेप दियो, आगलो पहियो साफ हो··· साफ···' मदजी री धिग्गी-सी बंधगी अर चेरै पर दुख रै सागै-२ किरोध अर आतंक उगटण लागग्यो मैं खड़ो हुयगो, पण म्हारी ओर घणो मदजी रै नेड़ै जावण री हिम्मत नीं पड़ी··· वांरै मुंहडै मांय झाग भरीजग्या.

वांरै स्यात डाफर तेज हुयगी. कोई वरतण पड़नै रो खड़को पाड़ौस में सुणीज्यो. म्हनै खासा देर बाद अहसास हुयो कै म्हारा पग धूजै है, पण मदजी री दांई दांत भलेई ना कटीड़ उपाड़ो, मुट्ठयाँ भींचिज्योड़ी है··· धूजता पग अर भींचिजती मुट्ठयां, मन्नै लखायो कै दोनूं ई मदजी सूं जुड़ग्या हा. म्हारा नीं रैया.

अचाणचक ई मदजी दड़ी हुवै ज्यूं उछळग्या अर झोळी हुयोड़ी मंचली में पड़ग्या.

× × ×

वीं रात मैं घरै नीं पूग्यो.

मदजी मांचली में पड़तै ई दोलड़ीज'र ऊंधा हुयग्या. फैर देर तक वांरै शरीर में वाइंटा आंवता रैया. मैं ईस पर वैठ्यो वांरी कमर पर हाथ फेरतो रैयो. कोई दो घंटा नेड़ै वटीज'र मदजी पाछा ढीला पड़ना सरू हुया.

वै उठ'र वैठा हुयग्या. लालटेण में स्यात तेल निवड़ण लागग्यो, वा झप-झप करती मांदी पड़णी सरू हुयगी. जांवतै चांदणै में हूं मदजी री आंख्यां मे झांक्यो' जाणै आंधी थमग्यां पछै री थिर जम्योड़ी गर्द हुवै, वठै मन्नै अेक सूनी-सी छांया लखाई.

छेवट लालटेण बुझगी.

'सुण्यां जा''' सगळी बात बतासूं''''' मदजी मिठास अर धीरज सूं बोल्या. 'तो म्हारै गोदाम में काम करणआळा घणकरा मजूर बिहारी हा. अलगो ई वां मांय सूं अेक हो. सगळा मजूर हफ्तै री हफ्तै आपरी मजूरी लेंवता अर आपरै खर्चे रै अलावा पइसा टका भेळा करबो करता. दो-तीन महीनां सूं आं पइसां नै कणई डाक सूं आपरै टाबरां नै भेज देंवता अेक दिन सिझ्या पड़ी मन्नैं अेकलो देख'र डरूं-फरूं-सो अलगो म्हारे कनै आयो. 'कहो, अलगा''' कैसन खबर हैं ?' मैं वींनै मज क रै ढ़ंग सूं पूछ्यो.

'खबर का बताई बाबू, आपसे अेकठू बात पूछना रहा ?' वो सिर-क'र म्हारै नैड़ो आयो अर हवळै-सी बोल्यो.

'कहो''' मैं केयो.

वो केई ताळ भेळो-२ हुँवतो रैयो, फैर जाणै खासो दोरो हुयो हुवै, बोल्यो, 'बाबू, डाक से भेजा पइसा कितना रोज में पहुँच जाता है ?'

'कहां ?'

'घर''' वीं केय'र आपरो गांव-मुकाम बतायो.

'हफ्ता-पन्द्रह दिन में, और क्या ?' मैं वींनै वां दिनां रीडाक री रफ्तार रै हिसाब नै निगै राख'र कैयो. वींरो चेरो म्हारी आ बात सुण'र उदास हुयग्यो.

'हमरा तो चार महीनैं से भी नहीं पहुंचा.' वींरै केणै में लाचारगी-सी ही.

'नहीं पहुंचा?' मैं बोल्यो. ,तुमको कासे पता चला, रसीद नहीं आया ?'

'रसीद के तो कुनो बात नाहीं''' हमरे गांव से लोग आये है, वही कहिन हमको.' बो केयो.

'किससे भिजवाया ?' वो अेकर-दोवार म्हारै कनै सूं ई भिजवाया. आप दर ई पढ्यो लिख्यो नीं हो.

वींरै चेरै पर लाचारगी और गैरी हुयगी, जाणै नांव लेवणै आडै कोई सिला धरीजोड़ी हुवै. वो होठ दो-तीन वार हिला-हिला'र रैयग्यो. मन्नै अेक अंदाज लागणो सरू हुयग्यो. मैं पूछ्यो, 'छोटे बाबू से ?'

'जी''' वीं डरतै-२ हुंकारो भरयो.

इसै ई परिवार में जलम'र ई मैं सरू सूं ई वां खून पसीनो अेक करण आळां रै बीच में रैयनै वांरै दुख दर्द सूं कियां जुड़ग्यो आ अेक अचुंभै री वात है. मैं सरू सूं ई गोदाम रो काम देखतो. केवूं कै छोटे थकै सूं ई गोदाम में मजूरां कनै म्हारो जीव घणो लागतो. वै गोदाम में चौफेर खिडोड़ी गीली–सूखी पाट रै बीचै गिध अर उमस री परवा नीं करतां थकां, चिपचिपै डीलां पर पाट रा फफूंदा लियां आपरै पेट रै खाडै नै सिभया अैक मुट्ठी सस्ता चावळ अर लूण सूं वुरण री उम्मीद सूं लाग्या रैंवता. मन्नै वांनै काम करतै, बातां करतै अर गोदाम रै ई अेक कानी ईंटा रै चूल्हे पर चावळ सिजोवंतै देख'र अेक अजीव रस मिलतो. वापूजी छटै छमास गोदाम रो चक्कर लगांवता. नींतर दिनभर वोरी साफ करयोड़ी, वाछयोड़ी अर गांठा बांधोड़ी पाट रा गिद्दी पर वैठ्या-वैठ्या घाटै-मुनाफै रैं हिसाव सूं भाव तौल करता रैंवतां हफ्तै रै दिन कस-वढ लगाय'र गिद्दी पर ऊंडा वैठ्या ई वांरी मजूरी वगाय देंवता. म्हारै मन में हरमेस इण वात री पीड़ रैंवती कै जिकां रै ताण म्हांरो देश परदेश री हेल्यां, घर खेत में ठाठ–वाठ है. वै कांई ठा कद तक मोटे चावळ सागै लूण री फाक्यां लैय'र आधो पेट भरता रेवैला ? खैरसला, औ तो कांई ठा कित्तो पुराणो इतिहास हो. पण अलगै सागै हुई जिकी वात मन्नै हिलाय न्हारव्यो.

भन्नै म्हारै मांयनै मदजी री वात सुणन री खासी खतावळ लखावण लागगी. मैं वांनै विसांई लैवण में खासा ताळ लगावंता देख'र कैयो, "अलगे सागै इसो कांई हुयो ?"

"वताऊं, वीरा. वताऊं" मदजी वोल्या," अेक दिन रात नै मैं गोदाम सूं दिन भर रै काम काज नै दरज कर'र गिद्दी जांवतो हो, तद ई अलगो मिलग्यो. वींरै मुंहडै मांय सूं ताड़ी रो भभको आवै हो. इयां वो ताड़ी तो पैली ई कदैई पींवतो. पण आज तांई ऊल–फेल कदैई नीं देख्यो. वींरा पग साचा को टिकै हा नीं, पण वो आपरी जाण में आवै म्हारै कानी ई हो. लारला केई दिनां सूं वो गोदाम में काम ई नीं करतो. पण वींरा सागीवाळ ई कोई साफ–साफ कारण नीं वतायो कै वो असल में काम क्यूं नीं करै. वस. इत्तो ई ठा पड़्यो कै वो आपरी घरवाळी नै मारी–कूटी अर घर सूं काढ दीवी. वै लोग आपरी गरीवी रै भार सूं इत्ता दव्योड़ा हा कै जिकै री जेब में च्यार पइसां हुंवता, वो ई वांनै भगवान दीखतो. वांरै आ वात कांई ठा कित्ता वरसां सूं घर करयोड़ी हीं कै सेठ-वावू लोग भगवान समान है, जिका म्हांरो अर म्हांरै टावरां रो पेट भरै...अर इण भगवानपणै रो ई वोभ हो कै वै वावू लोगां सागै अणहूंतै कायदै–कंवळास

में आय'र नाड़ ऊंची करी पण सागै ई वींरो नसां में लड़खड़ावतो, डील जवाब देयग्यो. वीं अेक होवल्ड़ो करचो अर माथो पकड़'र बैठग्यो. इत्ती देर में दोय दूजा मजूर पूगग्या. मैं अलगै ने घरै या गोदाम लेजा'र सुवावणो सुण'र गिद्दी आयग्यो. गिद्दी में पूग्यो, तो देख्यो, म्हारो वो ई बडो भाई जको नै अलगो गाळ्यां काढ़ै हो, गिद्दी पर बैठ्यो सोयां सूं पैली फेरणआळी आपरी माळा फेरै हो. रीस तो इसी आयी कै उठाय'र पंसेरी री करम में मेल दूं. पण सोच्यो, अलगो ताड़ी पियोड़ो वकै हो, कालनै कूड़ो वैम ई हुवै. पण मैं इण बात री खोज खबर लेवण री पक्की कर ली. 'मदजी फैर विसांई लेवणनै ठैरग्या.

'नींद तो कोय नीं आवै, सजन ?' वै कीं ताळ पछै मनै हिवळास सूं पूछयो.

'आया करै ?' मैं पडूत्तर दियो, 'मैं तो थांरी बात रो रस लेऊं... अर भळै विचाळै-२ हुंकारो ई दूं नीं !'

'हां, आ तो साची. पण वीरा, थारै ओ धड़को हुवैला कै कठैई ओ आसरियो ऊपर नीं आ पड़ै, थांरी नींद तो ई धड़कै सूं ई उडोड़ी हुवैला.

'ओ धड़को तो मिटग्यो.'

'तो सुण्या जा, 'मदजी बोल्या,' दूजै दिन मैं गोदाम गयो अर वठै सूं अेक जणै नै छांट लियो, वींनै काम रै सागै लेय'र बईर हुयग्यो. म्हारी गिद्दी रै लारै थोड़ै-से आंतरै पर अेक नदी वैवती. वींरै बांध बांध'र अेक सड़क ई बणा-योड़ी ही, जकी सिंझ्या-दिनूंगै बाबू लोगां रै घूमणनै-फिरणनै काम आंवती. वीं पर लेजाय'र मैं अलगै री बात टोर दीवी. केई ताळ तो वो जाण भोळो बणतो रैयो. पछै सगळी ही जिसी बता दीवी. वो बतायो कै अलगै नी घरआळी घणी फूटरी अर अलग अर वींरै ऊमर में खासा फर्क हुवणै रै कारण जुवान मोट्यार है. अलगे रा मां-बाप छोटै-थकै नै ई छोड़'र मरग्या. वीं आखी ऊमर मजूरी कर'र देश में थोड़ी जमी लीवी, जद जाय'र वींनै बींदणी मिली. वीं बतायो कै आ वठै री अेक रीत है कै जद तांई थोडी-घणी जमीन नीं हुवै, कोई लुगाई वीं सूं नीं परणीजै. तो अलगो आपरी आधी ऊमर गाळ दी, जद जाय'र वीं सूं थोड़ी जमीं लीरीजी. वींरो ब्याव हुयै नै घणा वरस नीं हुया, अेक टाबर वापरचो पण अलगै नै अेक दिन अठै ई वींरी मौत रो समाचार मिलग्यो, वींरै बाद टाबर-टींगर नीं हुयो. अलगो घणाकरो मजूरी तांई इत्तो दूर रैंवतो रैयो. अबकै वो दोरो-सोरो

'आ बात माड़ी है, पण इसो अलगो कांई हुयग्यो अर कांई वींरी
ुगाई हुयगी जिको हर्जानो भरासी•••?'

'वै थोड़ै ई केवै. ओ तो मैं केऊं कै आपांनै वींनै हर्जानो देवणो
ाहीजै. वींरी लुगाई आज दूजै रै सागै बैठी है. इण दिनां सूं वो दुःख रै कारण
जूरी नीं कर सक्यो•••इण सगळी वातां में कसूर भाई रो है•••' मैं खुल'र
मझायो.

बापूजी केई ताळ वात नै जाणै मुंहडै में चूसी हुवै मुंहडो चलायो
र फेर बोल्या. 'वो थारो बडो भाई है... खबरदार है, वींरै खिलाफ कोई री
कालत म्हारै आगै करी तो••• हां माड़ै काम नै माड़ो ई केईजै, आपां वींनै
रजसां••• पण आखी उमर आपांरै लूण रै तांण पळणियै नै हरजानो दैय'र रैया
द तो खा लिया कमाय'र...।

म्हारै बापूजी री वात तीर सी गड़गी. आपरो बेटो इत्तो माड़ो हुवत
लाखीणो अर वो मजूरी करनै आंरो लूण खावणै रै कारण ईं हीणो ?
न्नै म्हारै अर बापूजी रै विचाळै अेक साफ खाई दीखण लागगी. पण मैं ई गेल
ां छोड़ी. बोल्यो, "फेर तीन बरसां पैली थै हजारूं रुपियां री थैली सटै भाई री
टती इज्जत कियां बटोर लाया...?"

"वा इज्जत मिनखां में जांवती•••" वै आंख्यां तरेर'र बोल्या, 'वो
ारो बेटो है...मैं जींवतो हूं जितै मिनखां में वींरी इज्जत हेटी कियां हुवै ?"

'आ मिनखां में कोयनी कांई ? सैंग मजूरां नैं ठा है. वैं बोलै नीं
ातैं ई ठीक ! बोलग्या जद ?"

"मिनख-मिनख में ओ ई तो फरक हुवै" वै मन्नै समझावणी सी
. 'अै केय देवै, तो आंरै आपस रै सिवाय गिनरथ कठै कुण मानसी कै अलग
घरआळी इसी रूपवती है कै म्हारो बेटो वींरै ऊपर न्योछावर हुवै ?

मैं देख लियो कै आं तिल्लां में तेल कोयनीं पण छेकड़लो हथियार
रतण री ई मैं बाकी नीं छोड़ी. 'जै वै सगळा अेकठ हुय जावै•••'

'हुवो भलांई•••' बापूजी निसफिक्री सूं बोल्या, 'आगै ई हुया कदेई ?
ह्यां नै आनै-आनै री ताड़ी पी'र कुण लड़सी....?"

'नीं, मैं जाऊं कोनी थोड़ो निरवाळो हुय'र आऊं…' मैं धीरज बंधावणै ढंग सूं बोल्यो.

बारै, जाणै सगळी फूटोड़ी-खिरच्योड़ी भींता चांदणीं में पुतगी हुवै. खासा सोवणी लाग रैयी ही. अेक अजब बात ही कै म्हारै मांय रात जागणै रै भारीपणै री ठौड़ अेक अनोखो कोड समाय रैयो हो. जाणै में कोई अणमोल चीज परापत करली हुवै.

× × ×

मैं आयनै बैठ्यो'र ईसां भळै नाराजगी-सी प्रगट करती चरड़ चूं बोली. और चावै कीं हो, मदजी री आ सांळ का ओरो, जो भी हो, नियायो इसो जाणै कोई ऊंडी खोदोड़ो घूरी ई हुवै. वारै दांत डांफर बजाय न्हाख्या. मांयनै बड़तै ई काळजै निवास पूगग्यो.

मैं बैठ'र अंधारै में फगत काळी छायां-सी दीखता मदजी रै मुंहडै रै अनुमान सूं देख्यो अर रोज दिनूंगै दूकान जायां पैली अळै दांई जाणै न्हा-धोय'र नूंवो हुयग्यो होऊं, बोल्यो, 'मदजी रात थोड़ी ई री दीखै… झांझरको हुवण आळो लागै… बात वेगी-वेगी बताय दो… !'

'बताऊं बीरा बताऊं !' मदजी में जाणै हिवळास री बाढ़ आयगी हुवै, वै म्हारै माथै नै सोध'र वीं पर खासा ताळ तांई हाथ फेरता रैया. फेर बोल्या, 'तो कठै तांई केई ? हां… मैं बापूजी नै केय दियो कै हर्जानो भरणो पड़सी अर भाई नै अलगै खन्नै सूं माफी मांगणी पड़सी… इणरै बदळै में वै मन्नै ई उल्टो ज्ञान देवण लागग्या. केयो कै तूं वींसूं छोटो है अर लक्षमण जैड़ो भाई बणनो आपांरै घरम री आण है… वै मन्नै हर तरै सूं दबायो, पण मैं नीं मान्यो कैय दीयो कै नींतर मैं मजूरां सागै हुय'र रोळो करसूं… सगळी गिदयां गोदामां में इज्जत खराब कर देसूं… आखिर बापूजी उथप्योड़ा-सा बोल्या, 'वा तो, थारै जी में इत्ती घणी दया हैं, तो पांच रिपिया देय दै'र धर्मादै री ओळी खींच दे… म्हारा कान खुस'र हाथ में आयग्या. अलगै रै इत्तै बडै संताप री जबरी कीमत लगाई नीं… मैं फेर बठै नीं ठैरयो. आय तो गयो पण सोच्यो कै मैं बापूजी नै बकार तो आयो… अबै इयां हुयसी कींकर… ! बठै म्हारै अेकलां रै गोदाम में ई सौ नैड़ा मजूर काम करता… सगळी गोदामां रा मिलाय'र तो कोई हजारूं ई हा… पण तीन-चार दिनां लगोलग हूं वांसू मिल्यो… वांरै जम्न में पाट, पाट रै

दौड़्यो अर कठैई गंदगी में लिटतै. अेक गधै रै जेवड़ी घाल'र टोर लायो. धाड़ू शाह सँग मजूरां नै लियां म्हारी गिद्दी पूग्यो. वींरै चेरै पर वैठी अेक नीं ओळखीजण जेड़ी क्रूरता अर वींरो इत्ती देर रो निर्णय अेक सागै ई ऊभरग्या, जद वीं गिद्दी में बड़तै ई लारै फुर'र पूछ्यो, 'ई दोनू में कौन बा ?' गिद्दी पर बापूजी अर म्हारो वडो भाई दोनूं बैठा हा. स्यात अलगो नैड़ो ई हो. वीं भाई खानी ईशारो करचो. अेक छिण री ताळ लागी. धाड़ू शाह आपरा छोटा-छोटा पगां सूं गिद्दी पर गुडाळिया हुयो अर भाई री गुद्दी नै पंजियै सूं पकड़'र खींच ली. बापूजी सैंथरा वेंथरा हुयग्या. धाड़ू शाह इण सूं आगै भाई नै टिप्पो दियो तो वै सीधा गिद्दी सूं बारै जांवतो ई ठेरयो. बारै मजूरा री भीड़ ही... कीं लोग देखणआळा ई भेळा हुयग्या. इत्तै नै में देख्यो, बापुजी कोजी तरै रोळो करयो, 'अरे ! राम वचन ! कहां मरा रे"'अरे बंदूक लाओ"'" मन्नै ध्यान हो कै गिद्री री हिफाजत सारू वै चार लठैत अर अेक बंदूक ई राखै''' धाड़ू शाह लारै मुड़'र बोल्यो.' स्साला कितना गोली होगा तुमरे पास ! बाहिर देख. कितना आदमी को मारना पड़ेगा... चुपचाप वौइठ नहीं तो खींच लेंगे तुमको भी बाहिर !

"कर भाई नै धिगांणै गधै पर ऊंधै मुंहडै बिठाय दियो अेक मजूर कठै सूं ई पींपो उठा लायो अर आगै आगै बजांवतो चालण लागग्यो. आ जातरा अेक अेक घर अर अेक अेक गिद्दी आगकर निकळी. लारै मजूरां री फौज.... बीच में गधै पर मुंहडो कोजो कर'र बैठ्या म्हारा बडा भाई, आगै-आगै निर्भय भाव सूं बैवतो धाड़ू शाह."

मदजी बिसांई लेवण लागग्या. बारै सूं कठैई कठैई भजन कीतन रै बिचाळै बिजाळै कूकड़ो बोलण री अर बीजी आवाजां सुणीजण लागगी. दिन पगलिया मांडतो आवै हो, पण म्हारा कान मदजी री केवणी सुणन नै ओजूं ई उतावळा हा. वे बोल्याः

"बस... धाड़ू शाह री भगवान समान बाबुआं नै इण भांत दियोड़ी पड़ताड़णा सूं मजूरां रै अणहूतै विश्वास नै घणो जबरदस्त धक्को लाग्यो अर वै बाबुआं रै आतंक री गिरफत सूं छूटग्या... वीं बगत वांनै देखण सूं लागतो कै अे आपरै हकां सारू इत्ता ई जोश रै सागै अेकठ हुयनै जुट पड़ै तो असल ताकत जिकी पर बारो वास्तव में हक पूगै, वांरै खन्नै आय जावै. खैरसल्ला. इण सगळी उतपात रो नेतृत्व तो धाड़ू शाह करयो पण वठै रै बाबू समाज री निजरां में हूं ई आयो. वै अेक अपराध मान'र इन्नै म्हारै माथै मंढ दियो धाड़ू शाह मायो.

माथो पटक-पटक'र रोळो करतो कणाई म्हारी घर्भण लुगाई तो कणाई अळगे अर दूजे मजुरां रा पेट म्हारे आगै-आगै फिरता रेवता... मैं साची गैलो हुयग्यो. कूक-कूक'र वांने हेला करतो...वो पागलखानो कांई हो, म्हारे बापूजी री म्हारे खातर मुकर'र कर्योड़ो यातना-गृह हो...हूं घणा रोळा करतो जद दो-दो दिन रोटी-पाणी नीं मिलतो...धोळा कपड़ांअळा कमरे में आयने मन्नै कूट-कूट'र आंखळो कर देवता. अर एक दिन मन्नै लखायो के मैं साचै ई पागल हुयग्यो हूं ई दरम्यान बारै सूरज कठीनै ऊगतो अर कठीनै विसूजतो, मन्नै ठा नीं पड़्यो अर कैद..." मदजी अेक लाम्बो निसखारो लियो. "फेर मैं पागलखाने सूं निकाल दियो गयो. बारै आयो जितै दुनियां रा रग ई बदलग्या. म्हारो दिमाग एकदम खतम हुयग्यो हो, पण आ मैं समझग्यो के मुलक री फंटवाड़ो हुयग्यो है...म्हारा वै ई पुराणा कपड़ा जिका मैं पैर्‌या आयो हो, मैं पाछा पैर'र आयग्यो. कपड़ा म्हारे डील पर झोळियो हुयग्या. उजास में मैं म्हारे शरीर नै सांवळे देख्यो, हाथ--पग तूळयां ज्यूं हुयग्या हा. मैं कठै जाऊं ? कोई मारग नीं दीखतो. मन्नै भौत बाद में ठा पड़ी कै हूं बिहार रै ई अेक बौत बड़ै पागलखाने में कैद हो.. म्हारा बापूजी म्हारी इण कैद व्यवस्थारी कांई ठा कित्ती कीमत चुकाई हुवैला...मंगतो हुवै ज्यूं मैं केई दिन ठोकरां खाई. फेर निठां-सी मैं सागी ठिकाणै पूग्यो. पण हालात बदलग्या हा. फंटवाड़ै में ओ गांव पाकिस्तान में आयग्यो हो ओर अठै रा सगळा हिन्दुस्तानी का तो छोड'र चला गया परा हा, का मार--काट में पूरा हुया. गांव ऊजड़ोड़ा पड़्या हा. आदमी तो आदमी, बठै कोई भींत ई सागी हलात में ओळखीजणी मुश्किल ही. मैं पुराणी जाण-पिछाण रै सारै कीं पतो लगायो...म्हारै परिवार आळा रातो रात अठै सूं भागग्या हा अर आ ई हालत दूजा परवारा. री हुई हुवैला.

बतावण आळै बातायो कै माहौल बड़ो भयानक हुयग्यो हो......रात-दिन सागै रेवणआळा ई अेक दूजै रै गळै कानी छुर्‌यां लेय'र भाज्या, अबै माहौल सांत हो... पण मनै नां सती री खोज ही ना उपद्रव री... मैं तो म्हारी गर्भणी लुगाई रो पतो करणो चावतो... जद फंटवाड़ो हुयो ई हो, सींवा री व्यवस्था इत्ती मुस्तैद नीं ही...मैं गयो ज्यूं ई पाछो आयग्यो. म्हारै आगै मारग हो, मारग कठै जावै, मन्नै कांई ठा नी हो...म्हारै जीव में अब अेक ई ठिकाणो हो, वो हो म्हारो सासरो .. पण वो ई तो कोई नेड़ो नी हो... कठै हूं बंगाल में भटकै हो अर कठै राजस्थान. खैरसला, फोड़ा भुगत तो भुगततो पूग्यो तो म्हारी मुट्ठी भर उबर्‌योड़ी छाती ई दरक गी... म्हारै छोरो हुयां छैप, घरवाळी नै खासा दिनां सूं म्हारे घरवाला लेयग्या. सासरै आळा नै म्हारै बारै में तरै-तरै री वातां सुणनै

अेकर फेर बिसाई लेवण लागग्या…म्हारै डील में बैठे-बैठे रै सगीड़ा ऊपड़न लागग्या. सच्चाई रै मोर्चे डटण आळो इत्तो बडो आदमी आज इण गत बैठ्यो है ? अनेक सवाल म्हारै मांय तीखै तीरां ज्यूं उठण लागग्या. पण मदजी अठै आयनै ई अेक सोरी-सुखी जिन्दगी क्यूं नीं पाय सक्या ? ओ सवाल खासी उंतावळ मचावै हो. मदजी हा कै बिसाई नै खासी लांबी खांचली……

"थे देश आयग्या, फेर कांई हुयो ?" मैं छेवट पूछ्यो, तो मन्नै लाग्यो कै म्हारी बोली कांपै ही अर हूं गळगळो हुयग्यो हूं.

"सुण बीरा !" मदजी जाणै उदासी री कांटा आळी बाड़ फदाक'र बोल्या, "म्हारै छोरै नै लेय'र मैं अठै आयग्यो……मैं कोई दसैक बरसां सूं देश पूग्यो हो. अठै रा हालात ई खासा बदळ्योडा हा. लोगां मन्नै ओळख्यो ई नी अर ओळख्यो जका अचुंभो कर-कर'र पूछ्यो कै म्हारै बारै में तो वै कीं ओर सुणीं ही कै मैं नदी में डूब'र……पण, मोड़ा-बेगा वै मन्ने परोट लियो. मैं अठै अबै कांई करुं ? पेट भरण रो सुवाल हो. कन्नै अेक राती पाई नीं ही, मर'र पाछै आवण आळै पर लोग भरोसो कांई करै ? घणीं मुश्किल हुयगी' पण आपरो देश, आप रो ई हुवै. पास-पाड़ोसी केई दिन कटाया. छेवट में थोड़ो-घणो काम करण लागग्यो. वां दिनां में आज रो ओ कस्बो गांव-सो ई हो. घणी दुकाना नीं हीं. अठै रा घणकरा मिनख परदेशां ई कमांवता. वां ई दिना अठै छोगराजजी री एक दुकान ही जकी में वै दुकानदारी तो कम अर अडाणगत रो काम घणो करता. केयां-सुण्यां वै मनै आपरै मुनीम राख लियो. बापूजी रै लिहाज रो बखाण कर-कर'र वै अणहूंती मेहरबानी जताई, पण मैं जाण्यो कै आपां नै पेट पाळणो है, इण सारू लागग्यो. आ हेली जद फूटोड़ी नीं ही… मैं अर म्हारो छोरो इण में रैवण लागग्या. केई बरस निकळ्या…अर तद ई सेठांरी नोकरी मैं छोड़ दीनी. सेठ अडाणगत रै धंधे में कसाई सूं ई बढ़'र हा. लुगायां रा घाघरिया तकात अडाणै मेल लेवता. कित्ता खेत'र कित्ता घर सेठां रै गोडै हेठै हा. इण रो कोई अंदाज नीं हो. गामरा किरसाणा नै सेठ रै आगै कळपतां देख'र म्हारी छाती भरीज जांवती. किताई मिनख-लुगाई ब्याज में सेठां रै हाळीपो करता. म्हारी आंख्यां आगै रैय-रैयनै अलगो आय जावतो. पाट री गिंध में दिनूगै सूं सिंझ्या ताई माथो दियोड़ा वै मजूर अबै कठै है ? बातां याद करनै हियो फाटण लागतो-अेक साल काळ पड्यो. चौफेर भूख रा भतूलिया बाजै हा. भूखा-तिसा लोगां री सेठां रै भीड़ लाग जांवती. वीं दिन रो नजारो मन्नै अेकदम याद है. अेक लुगाई आपरै टाबर नै गोदी में लियां सेठां

हा का० गणपतजी. वीं दिन रै बाद वै मनै सागै राखण लागग्या. वै कनै रै ई गांव रा हा, अर घणांकरा अठै ई रेंवता. वांरै साथ सूं म्हारी समझ बढ़ी अर कित्ती ई इसी बातां, जकी रै बारै में मैं कदैई सोच्यो नीं हो, मैं जाणग्यो. मन्नैं लखायो कै म्हारै जिसा परिवारां में सिवाय बाणिकी पढ़ाई रै टाबरां नै कीं नीं पढ़ावणों वांनै धन रै सिवाय सैंग बातां सूं अणजाण राखणै री कित्ती सूगली रीत है. म्नै ई लो, घरै मास्टर आयनैं थोड़ी–घणीं अंग्रेजी सिखाई, बापूजी बैठ–बैठ'र बाणिकी सिखायी अर मैं काम में पड़्ग्यो. दीन–दुनिया सूं आंख मींच'र, चावै मिनखरी खाल ई उतारनीं पड़ै, पईसो कमावणों'र भेळो करनो, म्हारै जिसै खान दानां री पीढ़्यां सूं आ ई शिक्षा चालती आई, इण शिक्षा में दुनियादार बण'र आदमी कांई हुय सकै, इण रा उदाहरण म्हारा बापूजी अर अठै रा ई केई राय बहादुर बाजणवाळा सेठ हुय सकै. खैरसला, का० गणपतजी रै सागै सूं म्हारै दिमाग री किंवाड़्यां–सी खुलगी. पार्ट्यां, राजनीति अर देश-विदेश थोड़ा-घणा म्हारै समझ में आवण लागग्या. मन्नै लागतो कै मैं कुअै मांय सूं निकळर पैलो-पोत उजास में आयो हूं. "फेर कीं ठेर'र मदजी बोल्या," आं बातां नै थोड़ा ई दिन हुया हा कै म्हारी आ हालत हुयगी."

"आ हालत ? "मैं समझ्यो नीं," म्हारै चेतै-सूं आ उतरगी ही कै अै वै ई मदजी है जकां नै लोग गेला–गूंगा मानै अर टींगर छेड़ै."

'हां बीरा, आ हालत···' मदजी बोल्या, 'तूं रुघाराम नै तो चोखी तरै जाणै है नीं ?'

'हां, क्यू ?' मैं बोल्यो.

'सुण, ईंण भी जद ई नेतागिरी सरू करी ही, ईरै बाप सदा सेठां री लठै ताई करी अर इलाकै रो नामी लठैत हो. वो मरतो आपरो कमायोड़ो खासा पइसो छोड़ग्यो हो. अबै तो ईं री आपरी मोटरां चालै, पण जद ई रो बाप जींवतो हो, इनै आपरी कमाई रो अेक पईसो ई नीं देंवतो. लठैत रो बेटो हो, इण बात रो इणमें जोम हो. सरू सूं ई ओ वेलेण हो. पण म्हारै घर सूं इण रो घर घणो अळगो नीं हो, अबै ई नीं है, थन्नै ठा है···'

'हां, म्हारै घर सूं दो गळी उरियां ई है, थांसूं कठै दूर है ?' मैं खुलासो करतो कैयो.

वै फैर बोल्या, 'हां, तो मैं पददेस सूं आय'र ई घर में रैयो जणा वो म्हारै कन्नै आवणो जावणो सरू कर दियो मैं इणनै मितरचारो ई समझ्यो. फैर ओ रात–विरात ई आंवतो अर अठैई सोय जांवतो··· इणरै वेलेण हुवण री थोड़ी-घणी बात-चीत तो सुणतो, पण म्हारै आगै कदेई कीं नीं आयो. मैं सेठां री नौकरी छोड दीवी ही अर कॉ० गणपतजी रो सागो पकड़ लियो हो··· तद री ई

देय सक्यो. वीं रात ज्यूं ई वो वठै पूग्यो, वै सैंग अेकठ हुय'र वींनै मारण नै त्यार हुयग्या.

'अर वै पुलिस में केय दियो जद ?', मैं शंका प्रगटी.

'पुलिस सार वै ओजूं जाणै ई कोनी,' रुघाराम बोल्यो, 'फेर वै किसी छोरी मांगै है, वै तो केवै कै जिका पइसा मैं बांट्या है, वै वांनै देय दूं...'

मैं कीं नीं बोल्यो, फकत सुणतो रैयो.

'आज मैं अेकलो पड़ग्यो. काल तो वांरो बंदोवस्त कर ई देसूं... आज वै तावै आवण जिसा नीं है... सिझ्या सूं संझ्या बैठा है पकांयत म्हारै घरै संभाळसी... मैं थन्नै इण अहसान रै बदळै इण सौदे री सीर कराय देसूं... पण वात थारै तक ई राख्यै...'

म्हारै गळै में थूक अटकग्यो मैं वींनै गटक'र केयो, 'सीर-पांती तू ई राख, वीरा...'

पण, वो बोल्यो.

'पण कांई ? म्हारै कोई नै ई केवण री अड़ी कोनी,' मैं वीं सूं पिण्ड छूटावणो चांवतो.

वीं दिन बाद उण म्हारै घरै आवणो कम कर दियो. स्यात वींनै लखाव पड़ग्यो कै वीं गळत आदमी नै राजदार बणाय लियो. अर आ ई ही... म्हारै मांय वींरी करतूत पाकै पचियै दांई दूखण लागगी. मैं जठै तांई वींरै इण चलित्तर नै उजागर नीं कर देऊं, म्हारो जीव हल्को नीं हुवैला. आ लखावण लागगी.' कैय'र मदजी विसाई लेवण लागग्या.

'ओ रुघाराम जिको आज इत्तो बडो नेता बण्योड़ो है, इसो ?' मैं घिन सूं भीज्योड़ो बोल्यो.

'घिन, हाल घिन कठै ?' मदजी सरू हुया, घिन री बात तो वा ही जकी वैण म्हारै सागै करी. ओ अठीनै नेतागिरी ई सरू कर दीवी. गांव जद तक बढ़तो-२ कस्बो बणग्यो. तहसील अर नगरपालिकावां खुलगी. वो स्यात इण गांव रो पैलो नगरपालिका चुनाव हो... रुघाराम वार्ड-मेंमवर रै चुणाव में खड़ो हुयो. म्हारै कन्नै आय'र बोल्यो कै मैं वींरो सपोर्ट करूं. मन्नै का० गणपत जी

कमरे में अबै उजास भरीजग्यो हो. मैं वां कानी देख्यो, "आधी दाढ़ी अर बिखरोड़ा धोळा केसां रै बावजूद अबैं वै बित्ता विकराळ नीं दीखै हा. चेरे पर दुःख अर थकान लखांवती. बस. वै बोल्या;

"मैं हरमेस अन्याव सूं भेंटा लिया. अर इण रै लारै ई मैं गेलो हुयग्यो. मैं केऊं कै म्हारै जिसो गेलो हर एक नै हुवणो चाइजतो...मैं अकेलो पड़ग्यो...वो जींवतो हुवतो तो मैं वींनै ई इसो गेलो बणावतो...."बांरी आंख्यां में आंसू ढ़ळकग्या. मैं समझग्यो कै वै आपरै बेटै नै याद करै हा.

'बीरै कांई हुयो ?' "मैं वींरी मौत रो कारण जाणन सारू पूछ्यो."

'कांई हुयो ? "मदजी री जाड़ भींचीजगी अर लखायो कै अबकै तो अवस इ पींपळियै रो प्रेत उतर ई सी. वै बोल्या, " ई रुघाराम वीं नै वजार सूं आंवतै नै आपरी ट्रक नीचै देय'र मार काढ़्यो...वींरी आंतड़्यां ट्रक रै पहियै सूं चिपगी अर वो काकड़ियै दांई फीसग्यो... वीं दिन दियाली ही. लोग सिंझ्या नै दिया जगावण सारू,तेल-घी खरीदैं हा...मैं पूग'र वींरी आंतड़्यां भेळी करी... उफ्फ...!ड्रायवर ट्रक छोड़'र भागग्यो हो. फेर पुलिस आई...ट्रक नैं जबतैं कर लियो अर छोरैरी खिड्योड़ी काया या कूड़ा-साचा फोटू खींच'र मन्नै सूंप दी... इती ताळ तो मैं भाटो हुवैं ज्यूं रैयो, पण अबैं म्हारैं मांय बाइंटा उठ्या...मैं चिरलाटी मार'र भागग्यो, "रुघला...थूं-थूं...मार्यो है, म्हारैं छोरैं नै...मैं थन्नै नीं छोडूं ला...."लोगां मन्नैं पकड़्यो. मैं पूर फाड़न लागग्यो. घूड़,उछाळन लागग्यो. फैर मन्नै लोगां जरू झाललियो अर म्हारै सामीं ई वीं रैं क्षत-विक्षत शरीर नैं गांठड़ी बांध'र चिता पर मेल दियो. मैं कोझी तरह हुयग्यो जद लोग, मन्नैं मांचैं रै बांध दियो. म्हारो कीं जीव टिक्यो, तो मन्नै ठा पड़ी कै थाणै में रुघाराम आपरी ट्रक रैं ड्रायवर नै लाय'र खुद हाजिर कर दियो अर चलाण हुयग्यो कै छोरो लारलै पलिए नीचैं आय'र मर्यो है...ड्रायवर रो घणो कसूर नीं है. सुण'र मैं फैर कोझी तरह हुयग्यो. थाणै आगैं जाय'र रौळा करण लाग्यो, जद थाणै आळा मन्नैं गेलो करा'र देय'र चार-पांच सिपायां सागै घरै पुगवा दियो, "मदजी छिणेंक थम'र बोल्या, "अर मैं गेलो हुयग्यो, बेटा..."

मन्नैं लखायो कै म्हारी आंख्यां में ई कठैई पाणी है. मैं कोरां पर आंगळी फ़ैरी तो आ बात साची निकळी.

मैं जाण्यो कै कहाणी खतम हुयगी, पण मदजी फेर बोल्या, "तीन-चार बरस म्हारी आ हालत रैयी. मैं बाजार जावतो अर म्हार वैं ई सगीड़ उठता. मैं उलफ़ैल बोलण लागतो. धीरै-धीरै आ थरपीजगी कै मदजी गेला हुयग्या.

कहाणियां री दोय पोथ्यां

☐ धरती कदतांई घूमैली : सांवर दइया, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर, मोल : पक्की जिल्द १५-५० रिपिया सादी जिल्द ११-२५ रिपिया,

☐ सळवटां : रामेश्वरदयाल श्रीमाली, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर, मोल : पक्की जिल्द १५-५० रिपिया सादी जिल्द ११-२५ रिपिया.

मिनख री समझवान हुवण री प्रक्रिया रै सागै-सागै ई उणनै जीवण रै प्रति अेक रुझान जागै — जीवण नै समझण री एक दीठ उणरै साम्है उघड़ै पण ज्यूं-ज्यूं उणरी वा समझ परिपक्व हुंवती जावै त्यूं-त्यूं ई उणरो नजरियो जीवण रै खातर अणखावणी अर उचाट व्यवहारिकता रो मुद्दो बण जावै. जीवण नै सावळ जी ई नीं सकै, सावळ ईच्छया मुजब भोग ई नीं सकै. अवखायां रो अेक मोटो समंदर उणरै चौफेर हबोळा खांवतो रेवै. अेड़ै में वो निरूपाय हुय'र कांई करै, किण भांत वो इण उथप्योड़ी जिंदगाणी नै बदीत करै. जीवण री खारी-मीठी अनुभूत्यां नै रेखांकित करणवाळी कहाणियां संगम सूं छप्योड़ी आं दोनूं पोथ्यां में है.

☐ धरती कदतांई घूमैली, सांवर दइया री तेरह कहाणियां रो संग्रह है, जीवण बोहार मैं आवणवाळी छोटी-छोटी बातां नै कहाणी रै माध्यम सूं उकेरण में सांवर दइया बेजोड़ है. इणां री हरेक कहाणी में इयां लखावै जाणै इण कहाणियां रै पात्र रै रूप में कठै न कठै मैं (पाठक) हूं—अर आ हीज लेखण री

ग्राम सेवा सहकारी समिति
शेरूणा (श्रीडूँगरगढ़)

स्वतन्त्रता-दिवस के पुनीत-पर्व पर पंचायत के
कृषकों एवं उपभोक्ताओं का हार्दिक
अभिनन्दन करती है :-



हमारी सेवाएं

१. पंचायत में चीनी, गेहूँ सिमेन्ट का वितरण

२. कृषकों को प्रतिवर्ष अल्पकालीन एवं मध्यकालीन कृषि ऋण वितरण



सहकारी समिति के सदस्य बनकर सहकारी आन्दोलन को सफल बनाएं ।

सीजोराम भादू
अध्यक्ष
ग्रा. से. स. समिति

जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी कार्यालय
चूरू (राजस्थान)



गणतन्त्र दिवस के पुनीत पर्व पर हम चूरू जिले के नागरिकों का अभिनन्दन करते हुए अपील करते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा में वे अपना पूरा सहयोग करे। जब तक प्रौढ़ों में शिक्षा की सुगन्ध नहीं फूटेगी तब तक हमारा राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। चूरू जिले में चल रहे हमारे कार्यक्रम एवं सेवा से अगर आप खुश हैं तो औरों से कहिए। अगर किसी प्रकार की शिकायत हो तो हमें लिखिए।



आर. के. रंगा
जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी चूरू

स्वतंत्रता दिवस की ३६ वीं वर्षगांठ के उपलक्ष पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

राष्ट्र की प्रगति के लिए हमारे राष्ट्रीय अभियान

शिक्षा अभियान, कौमी एकता, छुआछूत मिटाना, पर्दा प्रथा समाप्ति, दहेज प्रथा का अन्त, पिछड़े को पहले, छोटा परिवार, पेड़ लगाना तथा अंध विश्वास उन्मूलन करने में सहयोग करें।

इकबाल हुसैन खान
विकास अधिकारी

नानू राम
प्रधान

पंचायत समिति, श्री डूंगरगढ़
(चूरू) राज०

ग्राम पंचायत उदरासर
(श्रीडूँगरगढ़)



प्रगति के पथ पर

❀ ग्राम उदरासर, बिरमसर एवं लाखणसर में दुग्ध-सहकारी समिति के भवनों का निर्माण.

❀ लाधड़िया में पेयजल कुण्ड का निर्माण.

❀ जालबसर में सार्वजनिक कुए की मरम्मत.

❀ ग्राम पंचायत उदरासर के जालबसर, बिरमसर, लाखणसर व उदरासर पक्के मार्ग से जुड़े.



सरपंच
रामेश्वर लाल शर्मा



कार्यालय नगर विकास न्यास, बीकानेर

१. नगर विकास न्यास, बीकानेर नगर के सुनियोजित विकास के लिए आपके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा करता है।

२. न्यास की जयनारायण व्यास नगर नागणेचीजी जवाहर नगर एवं ट्रांसपोर्ट नगर विभिन्न योजनाओं में आवासीय एवं व्यवसायिक भूखण्ड नीलामी से खरीद कर लाभ उठावें।

३, पत्रकारों को रियायती भूखण्ड आवंटन किये जाने हैं, जिसके लिए आवेदन पत्र लिए जा रहे हैं।

४. नगर के सुनियोजित विकास में न्यास की भूमि पर अनाधिकृत अतिक्रमण रोकने के लिये न्यास को अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें.

नगर के चहुमुखी विकास में सन्नध इस संस्था की कतिपय उपलब्धियां

गत वर्ष में १,०३,८० २४९/– लाख रुपये व्यय कर नगर के सौन्दर्यकरण को बढ़ाया.

❀ नगर के विभिन्न मुख्य चौराहों पर प्रकाश की समुचित व्यवस्था हेतु सोडियम लैम्प लगाये जा चुके हैं एवं शेष स्थानों पर लगाये जा रहे हैं, विभिन्न कच्ची बस्तियों में लगभग २०० स्ट्रीट लाईट फिकसचर लगाये जा चुके हैं. इसी वर्ष ३० सोडियम लैम्प व २०० स्ट्रीट लाईट फिकसचर नगर के विभिन्न स्थानों पर लगने के आदेश दिये जा चुके हैं.

कृ. प. उ.





राष्ट्रीय पर्व स्वाधीनता दिवस पर

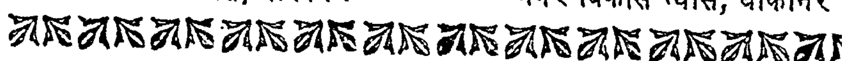
- नगर विकास न्यास बीकानेर नगर के सुनियोजित विकास के लिए आपके सक्रिय सहयोग व योगदान का स्वागत करता है.
- न्यास की जयनारायण व्यास नगर, नागणेचीजी, जवाहरनगर एवं विभिन्न योजनाओं में आवासीय एवं व्यवसायिक भूखण्ड नीलामी से खरीद कर लाभ उठावें.
- नगर के सुनियोजित विकास में न्यास की भूमि पर अनाधिकृत अतिक्रमण रोकने के लिए न्यास को अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें.
- जनसाधारण विशेषकर पिछड़े क्षेत्रों में समस्याओं के समाधान के प्रति जाग्रत विश्वास.

नगर के चहुमुखी विकास में सन्नध इस संस्था की कतिपय उपलब्धियां

- गत वर्ष में १,०३,८०,२४९/- रुपये व्यय कर निर्माण और विकास कार्यों की रफतार को तेज किया.
- न्यास ने हुड़को से बाढ़ पीड़ित व्यक्तियों को भवन निर्माण हेतु ऋण स्वीकृत कराया हैं.
- पच्चास कच्ची वस्तियों के जरूरतमन्द नागरिकों को १-१-८१ से पूर्व के हजारों कब्जों का नियमन.
- पर्यावरण सुधार योजना के तहत न्यास ने अभी तक २३ कच्ची वस्तियों में ३९.६३ लाख रुपये इन वस्तियों में सड़कों व नालियों पानी, विजली की लाईन लगाने हेतु विकास कार्य सम्पन्न किया गया. ११ कच्ची वस्तियों के लिए राज्य सरकार से १३,१२,५०० रुपये का अनुदान पर्यावरण सुधार योजना के तहत प्राप्त हुवा. इन इन वस्तियों में विकास कार्य की प्रक्रिया चालू हैं.

(सी० के० सदाशिवन)
सचिव
नगर विकास न्यास, बीकानेर

(भवानी शंकर शर्मा)
अध्यक्ष
नगर विकास न्यास, बीकानेर



सम्पादकीय

राजस्थानी कहाणी री बात करां जद आंख्यां सामै बातां-ख्यातां रो ढिगलो लाधै, का पछै विजयदान देथा रै हाथां संपादित 'बातां री फुलवाड़ी' रा कई-कई खण्ड। हां, आ बात जरूर उल्लेखजोग है कै वां री भासा रळकवीं-टळकवीं है। वां भासा नै नुवों मोड़-मिजाज दियो। पण तारीफ खाली मोड़-मिजाज री ई करी जा सकै, विषय री मौलिकता री नीं। कारण कै लोककथावां तो जनता री धन हुवै अर इण री इस्तेमाल करणिया में खाली विजयदान देथा ई नीं, दूजाई घणा ई लेखक है। वां भी लोककथावां नै आपोआप रै ढग सु किचोई।

संसार री बात छोडो, भारत री प्रान्तीय भासावां में ई कहाणी खासी चावी विधा रै रूप मे थोपतां जागां पूगयोड़ी है अर जे आ कथां तो ई घणू ती बात कोनी कै आज साहित री सगळां सु वत्ती चावी विधा रै रूप में कहाणी ई रैयगी है। इण री कारण ओ है कै कहाणी में जीवण री जिको सांगोपांग चित्रण लाधै अर जिण सबळै रूप में लाधै वो दूजी विधावां में कम ई लाधै—अठै म्हारो मकसद दूजी विधावां नै हीणी साबित करणो नीं है—फगत इत्तो ई कैवणो चावू कै हरेक विधा री आपरी सामर्थ हुवै अर बीं मुजब ई वा जीवण री बदळती अवखायां अर उळझनां नै सामै राखै अर इण असरकारी ढंग सु सामै राखै कै बांचणियो मांय तांई हिल जावै।

आ बात दूजी भासावां रै लोगां खातर खासा अचरज री हुय सकै कै राजस्थानी—जकी च्यार करोड़ लोगा री भासा है—में आज रै दिन एक ई कहाणी-पत्रिका कोनी। बियां'स कई पत्रिकावां आपरै अंकां में कहाणियां छापती रैवै। पण बीं सू काई बात वणै कोनी।

इणी बात नै ध्यान में राख'र 'मनवार' आपरै हाथां पूगती कर रैया हां। 'मनवार' नै ऐड़ी कहाणी पत्रिका बणादण री कोशिश में हां कै बीनै लोक-कथावां री खुरचण खाय'र नई जीवणो पड़ै अर ना ई वां कहाणियां खातर

❋ श्री मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी'

न्याय

लुगाई—मनै एकलीनै ई किंयां डण्ड देवो हो ? म्हारै जिसो खोटा करतब करण वाळी बीजी रांडांनै भी तो डण्ड मिलणो जोईजै ।

पंच— थां रै पाप रो भांडो फूटग्यो, समझगी ! नहीं जणां धोती मांय कुण नागो कोनी ?!



अन्तरजामी

घरवाळी—थां रै लारै आय'र मैं कांई सुख भोग्यो ? माईतां मनै कूवै मांय नाख दी ।

छोरी—काकै म्हारो कांई करियो ? त्यूं वार-टाकड़ ही ओळू कोनी । सातू-स्वाड़ री रळी मरगी ।

छोरो—म्हारो तो बंन्यां लारै मूंडो लूयो है, काकै कियो कांई है ? हूं तो म्हारै पगां माथै ऊभो हूं ।

बूढो बाप—वाह रे बेटा वाह ! मन री मन में ही राख दी सगळी । टाबर तो गूंगला ही रुखाळै है ।

बूढ़ी मां—दरसण-डेरा अर तीरथ-बरत सैं ऊंधा टंगग्या । जायोड़ो ही कैये में कोनी । कांई करां ?

सुणीज्यो—अबार सरम करै। विया सांतरी इण्टेलीजेण्ट अर मेहनती छोरी है।

मेहनती ? इण्टेलीजेण्ट ? पर भळै शोभना ? वा चकरीजगी। फेरूं सवाल हुयो—रामायण कुण रची ?

—जी, तुलसीदास।

—आठवैं परचै में निबन्ध कांय पर लियो ?

—जी, नई छविता री शैली पर।

अर नई कविता सुं पिंड छुडावण सारू विभागाध्यक्ष झट उणनैं उठ जावण रो सिगनल दे दियो। फकत चार मिनटां में वा चैंळकै चढी बारै आयगी।

पूछ्यां वा बतायो कै डोकरो भासाविज्ञान में ही माथो चाटै हो।

आंकपानो आयो तो उण रै बासठ आंक आया अर शोभना रै बयांसी। जे वा ही फूठरी हुंवती अर का उण री भांत 'हर' सु 'संबंध' जोड़ती तो . !



द्वारा—एच.एल. राजगोपाल, मदार गेट, अजमेर

मनवार करणी अर करावणी आपस रै प्रेमभाव री निसाणी। इण री आपणै कमी कोनी। ध्यान राखण री बात आ है कै 'मनवार' रो मान राखीज्यां ही भळै मनवार करण सारू मन हुळसै। मान राखणो आपरो काम अर भळै 'मनवार' सारू हाजर रैवणो म्हारो काम। 'मनवार' रो मान इणनै सरब भांत पोखणै छाडा कांई ?

बींनै पाछो मोटर बिठावती वेळा लुगाई री आंख्यां मगूंती हांसण लाग जावती। वा खुद चिड़ी जियां फुदकती। रूरू में बो ऐ सगळा हेत रा आखर जाण नीं गिनारतो।

ब्याव रै एक बरस पछै घर में अदीठ आदमी री छीयां बींनै दीखै लागी। एक-एक बातनै वेम री निजरां तोलै लाग्यो। एकर बो छुट्टी गयो। आखै दिन लुगाई रो कमरो फरोळतो रैयो। सिझ्या लुगाई आयां सामैं एक कागद पटक बोल्यो—ओ मिदर रै लारलै छेड़ै तनै कुण बुलावै हो ?

आपरी पोल खुलगी समझ भी वा काठी अणजाण हुयगी। 'इण कागद री पूछो हो कांई ? मैं थांनै दिखाबा इण कागदनै किताब में छोडगी।' पछै हांसी—म्हांरी स्कूल रै संगीत मास्टरजी रो कागद है। मैं लड़क्यांनै सिखाऊं। ऐ मास्टरजी घणा हंसोड़ अर चोखा है। छोटी-छोटी बातां परच्यां में लिख नै देवै।' ओरूं जोर सुं हांसी। वीं दिन वा चोर निजरां सूं धणी रै चेहरैनै देख लजखाणी पड़गी ही। हांस्यां जावै ही।

लुगाई री वातां सूं बो जाणग्यो—आपरै हेताळू री बातां कांई चाव सूं रस लेय-लेय सुणाई है !' बो भी हळवां-हळवां हांसै लाग्यो। आपरी गिणी-मिणी छुट्यां रो ध्यान कर'र 'मूड' खराब करणो नीं चा'यो। सोच्यो कोई पक्को सबूत मिल्यां देखां ! 'दुनियां में घणो भांत रा लोग है।' आ कंय खुद बात बदळदी।

ब्याव पछै बो सोचतो—पढी-लिखी लुगाई मिली है, इणनै कालेज री बातां घणै चाव सूं बतावां, साथै पढवाळी छोरयां सुं हेत-मेळ री झूठो कांण्यां बणाय सुणावां, बै मन री मसखरयां मन में रैयगी। सगळो चाव फुर्र-र हुयग्यो। वै बातां बोदी लागै लागी। बदळै में लुगाई आपरी प्रीत रा नाटक परतख दिखावै लागी। बो घबरायोड़ो रैवै लाग्यो। हर बगत काळजै में सूई खटकती—माथै में एक सवाल घड़ी-घड़ी उथळीजतो—इण रै ओर भी कोइ प्रेमी है कांई ?

कदे सोचतो—आपां झूठो सोच तो नीं करां हां ? कांई ठा बापड़ो सुदीप स्याणो सरीफ संगीत रो मास्टर हुवैला। ऊंची-पाधरी बातां माथै में क्यूं भंवळ खावै लागी ? लुगाई रै सैर में गयां ऐ बातां घणी घेरा देती। वो मनड़ैनै नेठाव

हमारा मन नहीं लगता।' थनै सगळो ठा है जणा घणी नेड़ी बणबा री कोसीसां क्यूं करया करै ? म्हारी लुगाई दूजो मिनख कर राख्यो है तो थारो -- क्यूं बळै? थनै चोखो लागै तो तू ई करलै।

वो मांय-मांय सोचै हो। सड़क सूं हांमी रो एक जोरको भचीड़ वीं री खिड़की रै लाग्यो। मेहता री बीबी खड़ाक देणी आपरै घर रा किंवाड़ बंद कर लिया। नींद रा आवता घिरोळा समदरां पार चल्या गया।

रातनै कद नींद आई ? ठा नीं। दिनूगै उठ्यो जणा सगळो डील करड़ो हो। जाणै अबार लांबी मुसाफरी सूं बावड़्यो हुवै। माथै रै मथवार चढ्योड़ो हो। वेगो-वेगो त्यार हुय दफ्तर सारू रवानै हुयो। मेहता री बीबी सामैं सूटर बणती ऊभी ही। बोली—'भाई साहब, कब आये ?'

'रातनै।' ओ साव छोटो पडूतर देय मेहता री बीबी रो चेहरो देखै लाग्यो। बाथरूम में न्हावतीनै रामजस देख ली हुवै जियां सरमायगी। वीं पुणचै रै बंधी घड़ी देख उतावळो-उतावळो लांबा डग भरतो रवानै हुयग्यो। मेहता री बीबी औरूं कीं पूछ्यो हो कै नीं, वींनै ठा नीं पड़्यो।

निसंक नींद आवणी बंद हुयगी। घड़ी-घड़ी पसवाड़ा फोरतो रैवै। एक घण्टो नीठ नींद आवै, पछै सपनो सरू—वीं री लुगाई मास्टर सुदीप रै कमरै में सूती है। दोनूं आपसरी में बतळाता दीखै। दोन्यां री हांसी गूंजै। एक-दूजै रै धक्का मुक्की करता दीखै। वीं रो डील ओ सपनो देख तणीजतो जावै। वो एक सिलानै सरकाय दोन्यांनै मारणी चावै। एक सिलधर दीखै। वो सिरकावै—औरूं सिरकावै। एकदम ऊपर लाय पटकणी चावै। आगै वो सिलधर नीं सिरकै। पूरो जोर लगावै। इण जोर लगावण में नींद भच्च देणी टूट जावै—सगळो सरीर पसीनै में हळाबोळ। बैठो हुय सोचै—हरामी सुख री नींद सूता हुवैला। तूं अठै डोढसौ मील आंतरो बैठो कांई कर सकै ? रोजीना सुदीप री जीत हुवै।

इण डोढसौ मील रै आंतरनै कम करबा री जद-जद सोची, वीं री लुगाई गळगळी हुय जावती—'म्हारी १०-१२ बरसां री नोकरीनै अबै छोडबा में

मन रिगदोळीजता सेवट लुगाईनै छोडबा री पक्की-पकावट सोच ली। जिंदगी म्हारी थोड़ी मेलीजगी, फेरूं नुवैं सिरैं सूं सरू करां। बाप बीं रै सोचनै समझ हांमळ भर ली। मा आ बात सुण आंख्यां में आंसू लियाई। बेटै रो घर हरया-भरयो देखबा री आस पल्लै बांध्यां ही—बेटा! आपां बडा आदमी कोनी, न दूजो ब्याव करबा जित्ता पइसा खरच कर सकां। थारै दो-दो बैंना बैठी है। बहूनै छोडयां कड़ूंबै में नाक कट जाई। कठै रा ही नीं रैवांला! थारी बैंनां रा ब्याव हुवणा मुसकल हुय जावैला। थारो बहू म्हारा घणाई कोड करै। थे दोनू जणा एकण साथ रैवण लागो जणै सगळी बात ठीक हुय जाई।

मा री बातां सुण मन कीं मोळो पड़ग्यो, बातां सगळी खरी ही। वकील री राय लेवण में सो-पचास रिपिया खरच करयां केई सवालां री सुळां सामैं आसी—जियां लुगाईनैं हिस्सो देवणो पड़सी, कोर्ट में आ मानणी पड़सी कै म्हारी लुगाई रो चरितर खराब है, आ दुजै आदमीनैं घणी ज्यूं मानै लागी। मन में घणी उथळ-पुथळ हुई। माथो गरणाट्यां चढग्यो।

जवानी रै सांतरै सपनां रा पांखड़ा लाग्या दिन, रुणझुण करती रातां वो घुट-घुट नैं काढी। अब बगत पसवाड़ो लेय चुक्यो हो। सुदीप भी वो सै'र छोडग्यो। लुगाई घर रै घाटै-नफै री राय देवै लागी। पुराणी बातां, धरती री खे आकास चढै जियां अळघी लाग्यां जावै। मन में धीजो बंध्यो। अब लोगां री बातां सूं रीस नीं आवै अर न धूण नीची घालणी पड़ै।

कदे-कदे सपनां में अब भी दुमुही वीं रै सामैं आवती दीखै—दूजै मूंडै सूं चालबा नीं लाग जावै—सुदीप झोळी में घाल भाग जावैला। इण डर सूं आपरी झोळी में घालण सारू दोनूं हाथां सूं पकड़बो चावै, सारै सूती लुगाई रै बीं रा हाथ फसीज जावै। बा बेगी-सी जागै, सिराणै रो खटको दाब नैं बत्ती जगावै—'थे कांई बोलै हा? इयां कांई नूवैं-नादीदां री जियां करण लाग जावो।'

बो आधी नींद में उथळीजती आंख्यां सूं लुगाईनै बरोबर देख्यां जावै—देख्यां जावै। अबै इण दुमुही रै एक मूंडो ही है, आ जाण जीवनै नैछो आवै। बत्ती जगती रैवै—बो देख्यां जावै।



—जी–५१, सीरी कालोनी, पिलानी

बोली—कै करूं ? नींद कोनी भावै ।'

बाबू बिना बोल्यां ई सुता रैया । बा आपरै मन री साळ में नूवीं अनभूत्यां सहेज री ही अर गैलड़ै जोबन रै लुभावणै दिनांनै हेला मारै ही । बा आपरै धणीनै भी उण वखत रै बाड़ै में बांवळियो थाम'र वाड़णो चावै ही, जठै आपरी देही अर मन री मालिस सूं ताजगी भरणो चावै ही । पण बाबू री उदासीनता बीं रै काळजैनै ओजूं भैंधी । बां रै मौजूदा जीवण में अयालका दिनां री तारतम कम नीं होरयो हो । बां दोनुवां रा बै सुवरण दिन ऊमर रै साथै अस्त हुयग्या हा ।

'थांनै खाणो लाद्यूं ?'

'ऊं हूं !' बाबू आपरै धधै रै चक्कर में खोयोड्योड़ा हा ।

'कठै गोठ-गाठ में चल्या गया हा कै ?'

'नीं तो !'

'तो इंब नटण रो कारण ?

'नीं-नीं, कीं बात कोयनी । बस भूख नीं है ।'

बीं रै भीतर रो सगळो सुख धूळ में रळग्यो हो । अबार ताणी बीं री कल्पना रै सजायोड़ै माळियैनै ठेसतां कीं देर नीं लागी । कित्तो लळक सूं, कित्ते प्यार सूं बा बीं रै पलग रै नेड़ै आई ही । बीं री नकार बीं रै नीर भरयै नैणां रो नाळो खोल दियो । बा आपरै माचलै पर जा पड़ी । पण बीं री आटी-पाटींनै परै करणियो खुद परै पड़ियो हो ।

बा कित्ती बातां सोच मेली ही अर न जाणै कित्ती मन री गांस बारै फैंकणै री जचा मेली ही अर न जाणै कित्ती टाबरां ज्यूं किलकारयां भरण री मनस्या ही, पण बाबू सा'ब नै 'न जाणै कित्ता' री बातां सुणनै री फुरसत कठै? बै आप री उधेड़बुन में मस्त हा । बांनै बीं रै भीतर रा हेला सुणनै रो औसाण कठै हो ? क्यूं कै बां रो दिमाग तो खाली पइसै री गुळाई में घूम रियो हो ।

बा आप री दिन-कटी करण सारू पड़ोसी शर्मा सा'बनै कदे-कदे चाय रै वखत पर बुलवा लेती । बो बडो खुसमिजाज आदमी हो । बा पैली मुलाकात में

'जरूर। पण घर बसाणँ सूं पैली घर में आवण आळीनै मैं भलीभांत समझणो चावूंलो। अभी अयांली नारी री खोज में हूं।' बो भाव में उळझणो-उळझतो भी चुपचाप वीं रै खानी देखतो जावै हो। श्रीमती रै चैरै री चित्या-रेखा नै स्यात बो पढणँ में सफल हुवतो जारयो हो। बा इण मिनख रो अपणापण अर संनेह जाण'र भोत प्रभावित ही। वींनै लाग्यो कै बा आप रै मोट्यारनै भी इण आदमी रै विचारां री तरयां देखणो चावै है। असल में बा चावै है कै वीं रो पति आपरी पत्नीनै समझणँ री चेस्टा करै कै बा इत्ती ऐस-आराम री सुविधा पाकर भी दुख रो जीवण क्यूं जीवै है? वीं रै मन में एक भय बड़ियो। स्यात बा इण तीस बरस रै जवान खून में आपरो पति देखणो चावै है।

मिस्टर शर्मा उठणो चाहयो। बा रोक्यो—'चाय तो पीता जावो।' शर्माजी पाछा बैठग्या।

× × ×

बाबू काळीचरण नींद में ठोरै हा पर बा खाट पर पड़ी थाकेलै सूं ऊबगी ही। आंख्यां में नींद नीं ही। बा पसवाड़ा घणां फोरया पण दिमाग में चैन नीं हो। बा ऊभी होय'र बत्ती जळाई। पण वींनै क्युं सूझै नीं हो कै बा अब के करै। बा अठीनै-बठीनै डिगीजता पगांनै थाम्या। थोड़ो ताळ पछै बाबू काळीचरण रै पलंग खनै आय'र ऊभी हुयगी। बिजळी री धवळी रोसनी में बाबू री उघाड़ी पीठनै देख'र वीं रै दिमाग में पाछली रोमानी बातां घुमीजण लागगी। वीं रै हिरदै में एक सरणाटै सूं लकीर-सी खिचीजगी। बा पलंग पर आडी हो'र हळवां-हळवां बां री मगरयां पर हाथ फेरै लागी। वींनै आ लागी कै अब बै जागेला अर वींनै घणो-घणो प्यार करैला। काम सूं पीड़ित बा इत्ती चिपकगी ही कै बाबू जाग जावै।

'के बात है? नींद कोनी आवै कांई?' एक छोटो-सो सूखो-सूखो सवाल सरका'र पाछो खुर्राटो भरै लागो। बा के कहूतर देवती? पसवाड़ो फोर लियो। एक भीतर घुटती पीड़ा रो नाळो उफणरयो हो। वीं री ढळती देही में जवान इच्छावां किलोळां करै ही। वीं रै सगळै डील में भांत-भांत री हळचळ होयरी

'पण — !'

'पण-वण कईं नीं है, मूंघड़ा। तनै ब्याज रा देवणा ई पड़सी। मैं जांणूं कै आपां चोखा भायला हां। पण धन्धो, धन्धो हुवै। — सम्बन्धां नै देख'र घड़ी री टेम तूं म्हारी लाज राख दी, आ ही किसी कम बात है?'

'पण ऐ तीस रुपिया —।'

'अरे यार! ऐ घणा कोनी। एक रुपियै सैंकड़ै रै हिसाब सूं है। इत्ता तो राखणा ही पड़सी।'

'अठारवीं सदी री बातां कर रेयो है कांई, मास्टर?' मूंघड़ो भुंभळा-ग्यो—'एक रुपियै सैंकड़ै माथै रुपिया मिल्या करै है कांई? कोई जीनस अडाणै राख'र ई लोग दोय रुपिया सैंकड़ै सूं देवता दोरा हुवै। बिना अडाणै चार रुपियां री रेट है। — आपां भायला हां, इण खातर एक रुपियो तोड़ रैयो हूं। पड़ब्याजनै ई बाद देय रैयो हूं। फेरूं ई ब्याज रा नुव्वै रुपिया बणै हैं, भाई।'

सुण'र मास्टर रो गळो सुखग्यो। बोल्यो—'बकाया साठ रुपिया देय देसूं। अबार तो।'

'अरे कोई बात नीं, देय दिये। — एक महीनै तांई पुगाय देसी तो इण रकम माथै ब्याज को लगावूं नीं। — सम्बन्धां नै देखणा ई पड़ै, मास्टर।'



—भांवावाला हाऊस, जसुसर गेट रै बारै, बीकानेर

दुनियां रा लूंठा आदमी मानता आया है कै टाबरां नै भणावण सारू मातभासा सूं बेसी सबळो अर जोगतो साधन न तो कोई हुयो अर न हुवण री आस।

एक दिन सैं बदळचो थको सीन निजर आयो। रजनी रै बूढ बापूनै इण बात री ठा पड़गी ही। मारा-कूटो भी हुई बतावै हा अर बारी माथै पड़दा लटकणा लागग्या हा। मनै कोई कैयो कै अबै रजनी रो इलाज हुयग्यो है।

हूं एक दिन फोटू खिचावा फोटूग्राफर री दुकान गयो। घरआळी भी साथै ही। जोड़ां रा भांत-भांत रा पोज दिखावण में फोटूग्राफर लाग्योड़ो हो। अचाणचूक एक मॉडर्न पोज सामै आयो। 'रजनी'—म्हारै मूंडै सूं निकळचो अर 'माधव'—घरआळी रै मूंडै सूं। फेरूं म्हे दोनूं ही मून हुयग्या।

थोड़ै दिनां पछै माधव रो काको मनै कचेड़ी में मिलग्यो। रामां-सामा हुई। बातां-चीतां हुई अर चाय पीवणै लाग्या। बातां रो मोड़ माधव कानी आयो। काको बोल्यो—'मैं माधवनै एक दिन बरज्यो, पण बो कैवै कै म्हारो कांई दोस है? बा रजनी नित ही म्हारै लारै लाग जावै।'

मैं सुणतो रैयो। फेरूं बोल्यो—'ताळी एक हाथ सूं नीं बाजै काकाजी। फेरूं कांई थे दोन्यां रो ब्याव करणनै राजी हो?'

'नीं सा, नीं। वा किण जांत री अर म्हे किण बिरादरी रा'हां। ओ काम तो हुय ही नीं सकै। रजनी रै बापनै चायै कै बो कण्ट्रोल राखै।'

'बात तो थे साची कैबो हो। पण कदैई रजनी रो पग भारी हुयग्यो तो फेरूं कियान बचोला? कोरट खुल्योड़ो है। रजनी कैय देसी कै ओ काम माधव रो होज है। गवाही देवणिया तो सईकड़ूं ही मिल जासी।' जोर देवतो मैं बोल्यो।

काको थोड़ो गम्भीर हुयग्यो। एक चाय रो आडर फेरूं दीनो। 'अब कांई करां, बाबू साब?' चिन्ता री रेखावां बीं रै चेहरै पै साफ दीसै ही।

'करो कांई? दोन्यांनै ही समझाय देवो। दोन्यूं ही जवान है। सगाई-सगपण बिगड़ जासी।'

काकै रै मगज में आ बात उतरगी।

आं दिनां कोई चरचा नीं सुणी ही। एक दिन अंधारै मैं घरां आवतो हो। गळी रै बीं खूणै में म्हारी निजर पड़गी। कोई चीज दीखी नीं। मैं बैटरी

हाल चहक उठियो । तरै-तरै रा इत्तरां री सुवास महकी । रोशनियां झबूकी । अंगरेजी अभिवादन नै उणां रै उत्तरां री धीमी-पतळी आवाजां सुणीजण लागी । चमकता चेहरा नै दमकता कपड़ां—सैंग खुम ।

पार्टी सरू हुई । लोगां पीयो नै खायो ।

इतरै में बैंड नाचण री धुन बजाई । जोड़ा नाचण लागा । रॉक एण्ड रॉल । सैंकड़ां पग नै हाथ एक गति सुं चालै हा । कमरां लुळ रही है । छातियां जुड़ रही है नै सांसां सुं सांसां मिळ रही है । बैंड री गति तेज हुवण रै साथै ईज नाचण री गति वधगी नै एकाएक रोशनी बंद हुयगी । घोर अंधार ।

बीसेक मिनटां पछै आछी रोसनी पाछी आई नै अठी-उठी लोग कपड़ा सावळ करण लागा । रोशनी तेज हुयगी नै जोड़ा हंसी-खुशी रा ठहाका मारण लागा ।

जोड़ा पाछा बहीर हूआ नै एक तांगै में दो जोड़ा आय नै बैठा । तांगो चाल रह्यो हो नै मि. दत्त आई. सी. एस. कह्यो कै आज तो मजो आयगो । म्हारी पार्टनर बडी गुदगुदी नै जवान ही ।

मि. फिरोज मेहता आई. एफ. एस. कह्यो कै यार मैं तो लूंसीज गयो । म्हारी पार्टनर तो एक अधबूढी ही—सूखी, खेलड़ा ज्यूं ।

इतरै में उड़क री तेज रोसनी में मि. दत्त जोयो कै उणां री बींटी मिसेज फिरोज मेहता री आंगळी में ही नै उणीज टैम मि. फिरोज मेहता जोयो कै उणां री बींटी मि. दत्त री मा सा रै पहुंरियोड़ी ही । दोनूं पक्का दोस्त ।

चारां री निजर जुड़गी नै नीची हुयगी । तांगो आपरी गति सूं चालतो जावै हो ।



—साकरिया सदन, वल्लभविद्यानगर (गुजरात)

इतरी बात सुणतां ही सेठ आपरै दिमाग पर पूरो जोर लगाय लीन्यो पण उणनै एक भी इसो अवसर याद नीं आयो जद बो आपरै परवार रै अलावा किणी दूजै मिनख री पीड़ा मेटण सारू अथवा जरूरत पूरी करणै खातर आपरै धन अर समय रो एक साथै उपयोग कर्यो हुवै। इसी हालत से बाणियै री आंख्यां सूं आंसुवां री धारा बह चाली अर बो महात्माजी रै मूंडै कानी देखै लागो।

महात्माजी सारी बात समझ लीनी अर फेरूं बोल्या—'तो पछै एक काम करो – न्याय सूं कमायोड़ो आपरो धन परवार खातर न्यारो टाळ लेवो अर बाकी जितरी भी सम्पत्ति अन्याय सूं अर्जित करी है, बा सगळी सवार ही धरम-पुन्न रै कामां में लगाय देवो। इण तरीकै सूं काम कर्‌यां आपरी पीड़ा आसानी सूं मिट सकै है।'

इतरो सुण'र सेठ बोल्यो—'महाराज, मैं न्याय सूं कमायोड़ै धन रो अर अन्याय सूं उपार्जित सम्पत्ति रो न्यारो-न्यारो निर्णय नीं कर सकूं। इण बंटवारै सारू आप कोई सीधो-सो तरीको बताय देवो तो बडी कृपा हुवै।'

महात्माजी गंभीर हुय'र बोल्या—'जिकी सम्पत्ति आप परवार खातर छोडणी सोच राखी हो, बा सगळी दान-धरम में लगाय देवो अर जिको धन आप धरम-पुन्न में लगावणो तय कर मेल्यो है, बस बो ही परवार खातर राख लेवो। मेरै विचार सूं आपरी समस्या रो यो हीज एक समाधान है।'

इतरो सुणणो हो कै उणी क्षण बाणियै रा प्राण-पखेरू उण री काया नै छोड'र उडगा।



—कैलाश निकुंज, रानी बाजार,
बीकानेर (राजस्थान)

टुवकारती-फटकारती। इण सूं बा सूख'र खेलर ज्यूं हुयगी। मांस ग्रांख्यां मांय रैंवण लागीं। आ हालत देख'र पाड़ोसियां नै घणी दया ग्रावती पण उपाय करै तो काई करै, कीं समझ नीं ग्रावती। ग्राखर तंग हुय, छोटै भाई नै लेय'र भाग छूटी। घींसू लोक-लाज रै डर सूं ग्रठी-उठी गोता खा-खूय'र पतो लगायो। मोकळी गरजां करी, पण काळजै लाग्या डामां सूं आ संसार री रीति-नीति नै ग्राछी तरै जाणगी कै ग्रो संसार दुखां रो घर है। मोह-माया रो भूठो जजाळ है। सगळा ग्रापो-ग्राप री रोटी नीचे खीरा देवण मांय लाग्योड़ा है। बेमतलब कुण कैरी ग्रर क्यूं परवा करै? छेवट घींसू हतास हुय'र पाछो ग्रायो। इण पछै गांव रा मौजीज मिनखां माजनै मांय धूड़ नाखता थकां कयो कै, थारै भाई तो मोकळै लोगां री सेवा कर कर'र घर रो घरकोल्यो कर दियो ग्रर तूं इण रै दोय टाबरां नै नीं पाळ सकियो। हमेस ऐडी केई बातां सुण-सुण'र इण रा कान पक गिया, पण घींसू करै तो काई करै? घर मांय इण रो भी वस नीं चालतो।

लिछमी बारै-तेरै बरस री काल री छोरी। कद लम्बो, रंग गोरो ग्रर घणी चतुर। नानी दोनूं नै हाथ रै छालै ज्यूं राखै, पण ग्रा भी जलम-दुखियारी। कमावण वाळो कोई नीं। मजूरी कर'र मोरो-दोरो पेट पाळै। लिछमी रै पगफेरै सूं ग्रबै इण रो हाथ सोरो फुरण लागो तो दूजै कानी वंतळ सूं जीव भी। घर-गिरस्ती रो सगळो काम बा फुरती सूं कर लेवती। इण रै सागै-सागै ग्रा भाई री पढाई-लिखाई रो पूरो खरचो रात'र दिन सिलाई-बुणाई रो काम कर'र निकाळ लेवती। ग्रा हिम्मत देख'र पास-पड़ौस री लुगायां इण रा बखाण करती नीं थाकती।

ज्यूं-ज्यूं लिछमी मोटी हुवती गई, इण रो रूप भी दूज रै चांद ज्यूं बधतो गयो। ग्रा देख'र सगाई खातर मोकळा मिनख नानी री खुसामद करण लाग्या। तरै-तरै रा लोभ-लालच दिया, पण वा हामळ नीं भरी। हियै लाग्या डामां सूं बीं रो तो जीवण ईज बदळ गियो। बस! एक ईज धुन सवार हुई कै सुगनै नै हर भांत सूं भणाय'र ऊंचो उठावणो। ग्रा इणरै लारै सगळो त्याग चुकी ही। ग्रबै बाट जोय रैई ही मन मांय संजोयै सुपनै रै साकार रूप री।

※ श्री जगदीश कश्यप

दर्प-काल

थपथपाट री आवाज सुण'र जद्द लोह जेड़ो मजबूत मिनख दरबाजो खोल्यो तो देख्यो कै उणरै सामै खूबसूरत नौजवान खड़्यो हो—'सुण्यो है तनै थारै शरीर पर घणहूंतो घमण्ड है। तूं आज ताणी सगळै पैलवानां नै पछाड़्या है।' आवणियो सगळी एक सांस में बोलग्यो।

'काई तूं भी थारी हाडक्यां-पांसळ्यां तुड़ावण सारू आयो है?' पैलवान रीसां बळ'र पूछ्यो— पण थारो नांव तो बता!'

'समय।' आवणियो होळै सी कयो।

'खैर, तूं कोई भी हुवैलो। आव, म्हारै पिछवाड़ै रै अखाड़ै में।'

दोनूं अखाड़ै मे उतरग्या। हाथ मिलावतां ही उण फूठरै नौजवान मजबूत मरद रै चैरै पर सांगोपांग झापड़ मारी। वो पैलवान लड़खड़ायो अर उणी बगत धूड़ चाटण लागो।

जद उण री आंख्यां खुली तो उण रो जोड़-जोड़ दर्द करै हो। उण रै चैरै पर माख्यां भणभणावै ही। वो बेजां ही दोरो उठ्यो अर डिगतो-पड़तो आपरै कमरै मे आयो। काच में आपरी सकल देखतां ही डर सूं चिरळी मारी। उणरै चैरै पर झुर्‌यां पड़गी। लम्बी दाढ़ी देख'र एकर तो वो खुद नै पहचाण ही को सक्यो नीं। हाथोंहाथ उण कनै पड़्यो मुग्दर उठायो अर खटाकदेणी काच पर मार्‌यो। छणाण करता काच रा टुकड़ा धरती पर खिंडग्या जकां में उण बूढै री सैंकड़ां सकलां उण री जवानी पर आंसु ढळकावती ही।

जावै अर म्हारी पीड़ा बधबा लाग जावै । होठां री कपकंपी एक फुसफुसाहट में बदळ जावै । हे मावड़ी ए ! अर अचेत में मन धीरै-सी कैवै—अरे बा तो मोत बरसां पैली मरगी । अबै बीं नै क्यूं याद करै ? थारी कनै थारा टाबर खड़्या है, लुगाई खड़ी है बां नै याद कर । चेतन मन बां सगळां कानी देखै । पीळा पड़ता मूंडा एक हळकी खुशी री लैर लेवता दीखै । बो बोलै, चुप रैवै । याद तो मा नै करै । इयां करता-करता दोन्यां में पाछो झगड़ो बधबा लाग जावै जणा म्हारै डील में सुई रो जको सरणाटो चालै बो होळै-होळै ठंडो पड़तो जावै । एक नर्स पल्स देखै, आख्यां सूं खोजै । बा मे चमक आवै । दोन्यूं हाथ एकै सागै ही पिस्टन जियां उठै, नशै री सुई पाछी म्हारै हाथ में होळै-सी लगाय देवै । एक बार तो मनै इस्यो मालम पड़ै कै म्हारै कीं हुवै । पछै तो हूं निढाळ हुय नै पड़ जाऊं । भीड़ सगळी खिंडबा लाग जावै । हू परायै री औलाद-सो बेहोस पड़्यो रैवूं । चेतन मन मूंडो माय घाल नै पड़ जावै ।

अचेतन मन पाछो चालै । रेस्टरूम कानी । डाक्टर ऊंचो मूंडो करियां सिगरेट रै धूंवै रा छल्ला बणावतो दीखै । सामै पड़ी टेबल पर चाय सूं उठती भाप सिगरेट रै धूवै सामी फीकी-फीकी लागै । कणांई-कणांई सिगरेट जोर सूं खींच नै नाक सूं धूवों छोडै जणां. लो मालुम पड़ै कै सगळी चीजां रो अस्तित्व इण धूवै रै सिवाय कीं कोनी । अतै नै फाटक खुलै । डाक्टर रै मूंडै पर एक कसाई रो भाव फैलै । 'रुपिया ५० फीस रा लागसी, भगवाने को दे देना । जाओ अबै रोगी ठीक है । नशै सूं दो-तीन घंटा बेहोस रेवैला ।' फाटक पाछो बन्द हुय जावै । मन सोचै ओ कसाई है । म्हारी मौत रो इण रै सामै कीं प्रश्न कोनी । हू जीवूं या मरूं, इण नै तो आपरी फीस सूं मतलब है । जे फीस नहीं मिलै तो देखै-भाळै कोनी । सड़क पर मरतै कुत्तै में अर म्हारै में कीं फरक कोनी । सिरफ रुपियां रो फरक ही सगळै फरक री जड़ है । भगवान कनै आयनै देखूं जद टेबल पर गिणीजता रुपिया जाणै म्हारी मौत री घड़ियां गिणीजै, म्हारो मोल रुपियां सूं है, जीवण रै लारै नहीं । हूं सगळां सूं लारै हूं अर रुपिया सगळां सूं आगै । यां सूं ही सगळां रो मोल हुवै । मन पर करारी चोट लागै । बो तिलमिलाय

माथो हिलायो, तोळै री जीभ नहीं।

होळै-होळै सगळा घरवाळा कनै आवा लागग्या। बां सगळां रा चेहरा सन्तोष सु भरियोड़ा हा। पण घरवाळी कानै देख्यो जणा मालूम पड़ियो कै बीं री आंख्यां में एक अजीब तरह री हलचल है। सगळा आंख्यां सू बातचीत कर नै चल्या गया। घरधिराणी कनै स्टूल पर बैठी जणा मोलूम पड़ियो बीं री आंख्यां में एक भयंकर ज्वार उठ रियो है। गोदी में बैठो टाबर हांचळ चूंघै हो पण जणा कणा ही बीं रै मूंडै कानी देखै हो जणा मालूम पड़ै हो कै बीं री आंख्यां में सु एक तेज परसन निकळै ही जको म्हां दोन्यां रै बीच घूमै हो।

बा आपरो हाथ म्हारै लिलाड़ पर फेरबा लागी। जणा म्हारो दबाव ढीलो पड़बा लाग्यो अर आंख्यां में एक झपकी री लहर भागबा लागगी। पलकां रै नीचै छिप्योड़ी खुमारी फैलबा लागगी। थोड़ी देर ताईं हूं गैलाईजग्यो। अचेतन मन पाछो सिचल्यो हुवा लाग्यो।

गोदी में सूतै छोरै नै देख्यो। लुगाई नै माथै पर हाथ फेरतां देख्यो। चेतन मन नै सुतै नै देख्यो। आंख्यां आंसुवां रै तळाव डूबती देखी। बीं रो प्रश्न बीं में तिरतो देख्यो जणा बो पाछो भाग्यो। अर म्हारै माथै पर पाछो दबाव रो जोर बधवा लाग्यो।



—पारीक चौक, बीकानेर

'मनवार' राजस्थानी कहाणी-साहित्य रै बिगसाव रो संकळप लेय'र आपरै सामैं है। ओ संकळप लेखकां रै साथै ही ग्राहकां रै सहयोग बिना पार को पड़ै नीं। आज ही आपरी कहाणी भेजो नै सालाना चन्दो भेजो।

मन हुवै। छोरा क्लासां में जावै।

एक क्लास सूं दूजी क्लास। दूजी सूं तीजी। चौथो घण्टो खाली है। वो लाइब्रेरी में बैठै। अखबार बांचै। काल रो अखबार है। आज रो तो सिञ्झ्या आसी। मोटर गांव सूं दिनूगै जावै। सिञ्झ्या पाछी आवै। बीं बगत अखबार आवै।

आधी छुट्टी हुवै। सैंग स्टाफरूम में भेळा हुवै। गप्पां चालै। चाय चालै। निंदा चालै—जिका बठै नहीं हुवै, बां री। सामै बैठां री तो तारीफ करणी ई पड़ै।

घण्टी पाछी बाजै। छोरा आवै। भळै हाजरी हुवै।

पांचवों घण्टो खाली है। वो स्टाफरूम में बैठो भींतां ताकै। छात में लाग्योड़ी पट्टियां गिणै। कमरै में पड़ी कुर्सियां गिणै। कमरै री खिड़कियां गिणै। खिड़कियां में लाग्योड़ा सरिया गिणै।

मदन छट्ठो घण्टो लेवै। सातवों घण्टो लेवै। आठवों घण्टो लेवै। टणण—टणण—टणण—!

पूरी छुट्टी हुवै। छोरा घरां कानी न्हाठै—ऊछरयोड़ै एवड़ दांई।

मदन घड़ी देखै—बारह बजगी।

वो घरां आवै। कपड़ा बदळै। लुंगी बांध'र स्टोव सूं मगजमारी करै। चकलै माथै लोवो धर'र बेलण चलावै। तवै माथै सिकती रोटी देखै। रोटी बणावै। बेमन सूं खावै। खावतै नै याद आवै कै छोरो दही देयग्यो हो नीं। दही रै कारण एक फलको भळै जमा लेवै। पछै बरतण-भांडा धोवै। च्यार फलका प्लेट में ढक'र धर देवै। सिञ्झ्या काम आसी। भुजिया तो पड़्या ई है। एक टंक तो टळसी।

मदन घड़ी देखै—एक बजगी।

वो आचै माथै आडो हुवै। घड़ीक आंख लागै। उबासी आवै। औंफ्फ! आ ऽ ऽ! कैय'र पसवाड़ो फोरै। माचो चर्रर्र बोलै। लिलाड़ माथै आयोड़ो भावो पूंछै। तकियो छाती हेठै दाबै। ऊंधो हुय'र जमीन देखण लागै। पाछा पजगा।

मदन मंगळचन्द कानी देखैं । मंगळचन्द मदन कानी देखैं ।

—राजकुमार कामी चालां ? मंगळचन्द बोलै ।

—चालो ! मदन कैवै ।

वै दोनू टुर जावै ।

मदन घड़ी देखै—पांच बजगी ।

राजकुमार रो कमरो । कमरै में मून तिरै । मंगळचन्द राजकुमार कानी देखैं । राजकुमार मदन कानी देखै । मदन वां दोनां कानी देखै ।

—आवो 'तीन-दो-पांच' खेलां । राजकुमार कैवै ।

—आया तो ई वास्तै ई हा । पण''''! मंगळचन्द कैवै ।

वै 'तीन-दो-पांच' खेलण लागै । हार-जीत चालै । पण तीनां रो ई मन कोनी लागै । मदन नैं उवासी आवै । मंगळचन्द ई उबासी खावै ।

राजकुमार पूछै—चाय बणावूं ?

—हां''', बणाय लै । दो घण्टा हुयगी पीयी नैं । मंगळचन्द कैवै ।

राजकुमार चाय बणावै । चाय पीवतो-पीवतो ई मदन नैं पूछै—क्यूं, किसो'क लाग्यो गांव ?

—ठीक है । मदन कैवै । आवाज ऐड़ी, जाणै ऊंडै कूवै मांय सूं आई हुवै ।

—मन लागतो सो लागसी । मंगळचन्द कैवै ।

—हां ऽ, आ बात तो है ई । राजकुमार हामळ भरै ।

मदन मरयोड़ै मन सूं मुळकै—थांरी बात ठीक है ।

मदन घड़ी देखै—छव बजगी ।

राजकुमार कैवै—चालो, गट्टै माथै चालां ।

बो पजामो खोलै । पैंट पैरै । बुश्शर्ट पैरै । कांगसियै सूं पट्टा बा'वै ।

मंगळचन्द कैवै—कांगसियो मनै ई झलाई देखाण !

—च्यार तो केस है । कांई करसी लाडो ? राजकुमार कैवै । कांगसियो वीं नैं झलावै । वीं रा च्यार केस देख'र मदन मुळकै ।

—हाल तो मोटर ई कोनी आई। नजीर 'मर' बणाय'र गोटी चरतो बोलै—ऊतावळ ना करो। जे दो बाज्यां जीतग्यो तो थांरी चाय पक्की। थे म्हारी जीत खातर माळा फेरो भाई!

—मोटर आवै जित्तै तो ठैरणो ई पड़सी। राजकुमार कैवै—आज तो म्हारो बेलो प्रीतमसिंघ आसी। सैर सूं साग-भाजी लासी। पछै घरां चाल'र रांधसी-पकासी। आप खासी, मनै खणासी।

मदन नै लागै—ओ तुक सांतरी मिला लेवै। जे बीस-पच्चीस जणां बिच्चै इणी ढग सूं बोलै तो लोग इण नै कवि रूप में थरप देवै।

—लै भाई, आ बाजी तो जीतग्यो! एक बाजी मळे बाकी है। नजीर कैवै—थे इयां ई माळा फेरबो करो। चाय पक्की हुवण आळी है।

बीं री बात सुण'र मगळचन्द हंसै। मंगळचन्द नै हंसतो देख'र राजकुमार ई हंसै। बां दोनां नै हसतां देख'र मदन खासी मुळकै—मरचोड़ै मन सूं।

घर्रर्र... घर्रर्र...। आवाज़ सुणीजी। मगळचन्द कैवै—लागै, मोटर आवगी।

राजकुमार कैवै—हां भाई, तैयार हुय जावो 'आई-टॉनिक' लेवण खातर।

—थारी आ आदत जावै कोनी? मंगळचन्द कैवै—भाया, ओ गांव है। आं लखणां कदेई जूतां पड़वासी तूं।

—मैं तो जीवूं ई टॉनिक लारै ई हूं। राजकुमार कैवै।

मदन घड़ी देखै—आठ बजगी।

मोटर आवै। प्रीतमसिंघ मोटर सूं ऊतरै। खांधै माथै बंग अर हाथ में साग रो थेलो। बीस-पच्चीस आदमी ऊतरै। दसेक लुगायां ऊतरै। राजकुमार बानै घड़ी'क ताकै।

मदन पूछै—कांई साग-पात ल्याया हो?

प्रीतमसिंघ बही बांचण लागै—घीयो है, भींडो है, कांदा है, आलू है, हंकोळी छाप भुजिया है।

राजकुमार कैवै—चाल भाई, बेगो चाल। रोटी करणी है। जीमणो

—पाणी रो लोटो भरण नै चायी जणा बिच्छू खायग्यो। कोई बतावै।

छोरै री मा देवर नै कंवै—जावो, झाड़ागरजी नै बुलाय लावो।

बीं री मा हरिराम बाबै रो प्रसाद घर फेरी वालै।

—परसूं गळी में कुम्भारो नाग नीकळयो। बाबै रै प्रसाद बोल्यो जणा ई शांति हुई। एक डंरा कंवै।

आं री बातां सुण'र मदन नै डर लागै। बो बठै सूं भाग जावै।

मदन घड़ी देखै—इग्यारै बजगी।

आज री नींद तो गई भाग रै भाड़ै। बो सोचै—बांडो-बिच्छू रो नांव सुण्यां पछै बियां ई नींद कानी आवै।

बो पसवाड़ो फोरै। सोचै—आज मंगळवार है। मोटा-मोटो बोल्यो तो सोमवार ई है। इयां कियां पार पड़सी? घर री याद आवै। जीसा, मा अर लुगाई रा चेहरा आंख्यां आगै तिरण लागै। झणमणो हुय जावै। भळै सोचै—पण जे काल ड्यूटी ज्वाइन नईं करतो तो ओ आर्डर कैंसिल हुय जावतो। भळै खुड़िया रगड़णा पड़ता। राज री नौकरी में एकर तो बसणो ई ठीक रंवै। जीसा कैया करै। ठीक है सा। ऐ बसग्या। देखो अठै सूं कद निकळीजसी!

मदन घड़ी देखै—बारै बजगी।

बीं नै झपकी आवै। भळै आंख खुलै। बो पसवाड़ो फोरै। डील हमो अकड़ीजग्यो। घरतो सोवण री आदत है। पण अठै माचै माथै सोवणो जरूरी है। नींतर बिच्छू-कांटै रो डर रंवै। परसूं ई गळी में कुम्भारो नाग नीकळयो। डंरा रा बोल बीं रै कानां में गूंजै। काई ठा, फिरतो-फिरतो इनै ही आय जावै तो? बीं नै लखावै कै रूं खड़ा हुयग्या है। धूजणी-सी छूटै। लखावै—गळो सूखग्यो है। तिस लागगी। उठणो पड़सी। बो हींयो खावै। तिस बधै। उठणो पड़ै। लोटो भरै। गटागट पीवै। पाणी पीवतै नै कसारचां री आवाज सुणीजै। पेशाब री शका हुवै। मोखी कानी जावै। भींत रै सारै कीं हिलतो लखावै। वैम जागै—बांडो तो नीं है? भींट टिका'र देखै। नीं, कीं कोनी। खाली वैम है।

डरतो-डरतो पाछो आवै।

✻ डा. उदयवीर शर्मा

गोजरी

एक बडे व्यापारी रो नौकर आपरी गोदाम में एक चालणी सूं गोजरी नै छाण'र गेहूं अर जौ न्यारा-न्यारा करै हो। एक कानी जौवां रो ढेर होरयो अर दूजी कानी गेहुंवां रो कूढ़ो लागरयो। दोनुवां नै अळगा-अळगा कर दिया।

जौवां रै क्यूं उदासी आ री। पीळा होरया। खालड़ी खुदड़ी हो री। गेहूं आपरै मोद में हा। प्रसन्न हा। गोळ-मटोळ चोखा पाणीदार होरया। नाज-समाज में बां री गिणती बडेरां में हुवै, इण बात रो जाणै बां रै गुमेज हो। जौवां रो साथ छूटण रो बां रै धोखो कोनी हो। पण जौ इण स्थिति सूं राजी कोनी हा। बडोड़ां सूं साथ छूटण रो बां नै दुख हो। मन में पिछड़पण रो भाव हो।

व्यापारी रै नौकर नै जौवां एक प्रश्न कर्यो—तूं म्हांनै भायां सूं अळगा क्यूं करया? बडोडां रो साथ क्यूं छुटायो? म्हे एक साथै बीज्या गया, एक पून-पाणी में पळया, बडा हुया, रंग-रेळी करी। रळ-मिल'र आपरी जिन्दगानी काटै हा। भाईचारो पाळै हा। तूं यो कांई करयो? म्हांरो साथ क्यूं छुटायो?

नौकर पडूतर दियो—मनै तो मेरै मालिक रो हुकम हो। हुकम मुजब काम करणो मेरी नौकरी रो अंग है। इण सूं हट'र मैं कांई नीं जाणूं!

जौ बोल्या—जद दरकार हो, म्हांनै एक कर बेवै अर जद दरकार हटज्या, म्हांनै न्यारा-न्यारा फांटण में लाभ दीखै, जणा आपरै लाभ ताणी म्हांनै फांट गेरै। यो कांई व्यौहार?

बताया ग्रर मनवारां राखण में मस्त हुयग्या ।

भवरजी रो सगो डोढ स्याणो हो । बो देख्यो कै भवरजी नै सिझ्या री गाडी सूं ही बिदा कर देवां तो ठीक रैसी । जद गाडी छूटण में घण्टै'क भर रो वखत रैयो तद सगोजी बोल्या—ग्राप तो ग्रवै बंबई पधारो ! मैं थोडो पइसां रो तगादो कर ग्रावूं । नईं तो देवाळ भी ग्राज ही बंबई ग्राळी गाडी सू बडीर हुय जासी । ग्रर भुळकता थका सगोजी घर सूं बारै निकळता ग्रापरै छोरै नै हेलो पाड्यो—काळू ! तूं सगोजी नै गाडी चढाय दीजे ।

पण भवरजी भी कम स्याणा को हा नीं वै सगोजी नै कैयो—ग्राप गाडी सूं पांच मिंट पैली ई ग्राय जाया । ग्रापरै साथै ही बातां करता ठेसण चालसां । मनै कीं सांमणो तो है कोनी ।

ग्राखिर काळू तो सगोजी नै बुलावण रो कैय'र बारै गयो परो । घर में सगीजी हा सो वै भी ग्रापरी हुंसियारी करी । माचिस लावण रो बहानो कर'र पाड़ोसण सूं बातां करण लागा ।

गाडी छूटण रो वखत हुयग्यो जद भवरजी सोच-सोचा'र घर में एक लटाण पर पड़्या गाभां लारै जाय बड़्या ।

सगोजी, काळू ग्रर सगीजी थोडी ताळ पछै भेळा हुय'र ग्रापोग्राप री हुँसियारी रो बखाण करण लागा । सगो बोल्यो—मैं किसो'क करी ? फोकट में भायलां रै साथै सिनेमा भी देख्यो ग्रर सगै सूं पिंड भी छुटायो ।

काळू बोल्यो—मैं किसी'क करी ? मामी रै घरै छोरै री बधाई देय'र कीम भी लियो ग्रर ग्रबै टेमसर घरां भी पूग लियो ।

उचक'र सगी बोली—थे मनै काई कम समझो हो ? पाड़ोसण रै घरां बातां रा छपका लगाया इतरै तो मा'यजी नै बम्बई ग्राळी गाडी पकडणी पडी ।

भंवरजी कद चूकण ग्राळा हा ? फटाफट लटाण सू नीचै ऊतर्‌या ग्रर बोल्या—मैं किसो'क नीकळ्यो ? ग्राप लोगां री पड़ीक में हाल ताणी ग्रठै ही जम्योड़ो हूं । ग्रबै तो काल री गाडी सूं ही बम्बई जावणो हुसी । क्यूं, सगोजी बोलो किसी'क रैई ?

—ग्रार्यसमाज रै सामनै, जेळ कनै, बीकानेर

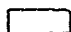
हुय जावै । 'भिखारी' में भारत री गरीबी रो रोजगो सामरथ लोगां री होणी मनगत सार्थ परकासीज्यो । जे पोथी में 'अंधारघुप्प' कहाणी नीं हुवती तो पाठकां पर इण कहाणी री छाप सागीड़ी रैवती । 'चिगळचोड़ा हाथ' पोथी री चोथी कहाणी है । एक मजूर री लाचारी रो फायदो लोग किण भांत उठावै आ बात लेखक इण में दरसाई अर सांतरी निभाई ।

पोथी री सिरै कहाण्यां में 'किली-किली कटको' अर 'धाटी डोरा कांगसी' कई जा सकै । 'किली-किली कटको' में धोखो देय'र धापरै नाजोगै बेटै नै परणा-वण आळै बाप री गत बिगाड़तां छोरी री माई आपरी बैन री ऐड़ै बणी सूं पिंड छुडावै । 'धाटी डोरा कांगसी' में राजस्थान रै गांवां री संस्कृति री चित्राम उकेरतो लेखक एक जवान विधवा री पीड़ वरणै । फकत आ एक ही कहाणी पाठक पर आपरी छाप छोडण आळी बणी ।

खास बात आ है कै इण पोथीनै राजस्थान साहित्य अकादमी १९८०-८१ रो दो हजार रुपियां रो राजस्थानी गद्य रो पुरस्कार भी दियो है ।

श्री 'प्रशांत' इण संग्रह में राजस्थानी संस्कृति री जको कसूमर काढ्यो वो देखणजोग है । बाप रा हाडका 'लाल कोथळी' में घलवाया है । लाल कोथळी में तो ब्याव री बेळा रुपिया घालीजै । माईनां रा फूल कोथळी में नीं, कोथळियै में घालीजै अर मिनख रा फूल धोळै नै लुगाई रा लाल कोथळियै में घालीजै । इणीज भांत डाब री जागां दूब सूं जळांजळी भी दिराईजी है अर कांधियांनै जीमण सारू बैठाया है । जे ऐड़ी सगळी बातां गिणाईजै तो एक नूवीं कहाणी भळै त्यार हुय जावै ।

श्री प्रशांत री आं कहाण्यां मांय काम री बातां थोडी पर अळसेटो घणो बधोड़ो लखावै । फसल में निदाण री घणी जरूरत है । जे लेखक खुदनै सुधा-रण री लगन राखसी तो आं सूं राजस्थानी कहाणी घणो-घणो आस राख सकै ।



—पाबूबारी बीकानेर